www.patheykan.com

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव (स्वराज-75)
पर प्रकाशित विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पाक्षिक

पाथेय कण

श्रावण शुक्ल 4 व भाद्रपद कृष्ण 5, युगाब्द 5124, वि. 2079, 1 व 16 अगस्त, 2022 (संयुक्तांक)

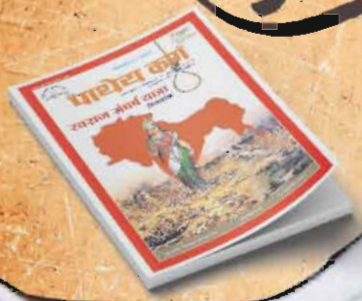

स्वराज संघर्ष यात्रा-2

₹ 30

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

नगर निगम बीकानेर

15th August Independence Day

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

HAR GHAR TIRANGA

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

शहर की सफाई एकमात्र नगर निगम की जिम्मेदारी नहीं है। क्या इसमें शहरवासियों की कोई भूमिका नहीं है ? हमें इस मानसिकता को बदलना होगा।
आजादी के इस पर्व पर बीकानेर शहर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का संकल्प ले,
शहर तभी साफ होगा जब स्वच्छता में सबका साथ होगा।

महापौर, बीकानेर

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देशभर में आयोजित होगा

तिरंगा महोत्सव

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत

13 से 15 अगस्त के बीच हर घर पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाएगा।

HarGhartiranga.com

ध्वज पिन करके अपनी प्रतिबद्धता दिखाएँ 13 से 15 अगस्त 2022

स्टेप 1	स्टेप 2	स्टेप 3	स्टेप 4
"ध्वज फहराएँ" पर क्लिक करें	सोशल लॉगिन/अपने विवरण भरें	अपने स्थान को एक्सेस करने की अनुमति दें	अपने स्थान पर ध्वज लगाएं

अपने आस पास सफाई रखे

कचरा कचरे पात्र में डाले

पोलीथिन बैग की जगह कपडे के बैग का उपयोग करे

सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग ना करे

पाक्षिक
पाथेय कण

श्रावण शुक्ल 4 व
भाद्रपद कृष्ण 5
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

1 व 16 अगस्त, 2022
(संयुक्तांक)
वर्ष 38 : अंक 09

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
संजय सुरोलिया

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

मुद्रण प्रभारी-मुकेश कुमार बागड़ा

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
संपर्क - 9929722111

आवरण चित्र परिचय

भारत से उखाड़े गए ब्रिटिश उपनिवेश के पेड़ की जगह स्वाधीनता की कोंपलें प्रस्फुटित होते देखकर सामान्य जन खुशियां मनाते हुए। ऊपरः राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी बाएं से क्रमशः ठाकुर कुशाल सिंह, विजय सिंह पथिक, मोतीलाल तेजावत, केसरी सिंह बारहठ, जयसिंह 'प्रभाकर', भील कन्या काली बाई, गोविन्द गुरु, अर्जुन लाल सेठी, नानक भील और महाराजा सादुल सिंह।

स्वराज संघर्ष यात्रा -2

'स्वाधीनता का अमृत महोत्सव' (स्वराज-75) के अवसर पर भारत, विशेषकर राजस्थान में हुए स्वातंत्र्य समर एवं उसके अनाम/अल्पज्ञात नायकों और वीरांगनाओं के बारे में पाठकों तक तथ्यात्मक सामग्री पहुँचाने की दृष्टि से पिछली दीपावली (अक्टूबर 2021) पर 'स्वराज संघर्ष यात्रा' विशेषांक निकाला गया था। इसी कड़ी में प्रस्तुत है एक और विशेषांक – **स्वराज संघर्ष यात्रा-2**

अनुक्रमणिका

04/ संपादकीय
06/ स्वाधीनता का अमृत महोत्सव – दत्तात्रेय होसबाले
07/ भारत के 'स्व' को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता – डॉ. मनमोहन वैद्य
11/ अंग्रेजों की भू-राजस्व नीति के कारण किसान मेवाड़ छोड़कर जाने को हो गए थे उतारू – मदन मोहन टाँक
13/ स्वाधीनता के संघर्ष में जनजातीय बलिदान का प्रतीक मानगढ़ धाम – डॉ. कैलाश सोडाणी
15/ मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में जनजातीय आन्दोलन – डॉ. प्रणव देव
21/ स्वतंत्रता संग्राम में नानक भील का बलिदान – डॉ. मोहनलाल साहु
24/ नीमूचाणा : किसान आंदोलन से जन आंदोलन तक – धर्मपाल सिंह यादव
28/ अमानवीय 'जरायम पेशा' कानून के विरुद्ध मीणा समाज का संघर्ष – पंकज मीणा
31/ अंग्रेज सेना को धूल चटाने वाला लोहागढ़ दुर्ग – गुलाब बत्रा
33/ भरतपुर के सत्यभक्त जी – डॉ. कुशलपाल सिंह
34/ धौलपुर के विलक्षण क्रांतिकारी छतर सिंह और पंचम सिंह – डॉ. राकेश कुमार शर्मा
39/ 1857 की क्रांति तथा 55वीं पंजाब रेजीमेंट की बलिदान गाथा – के. छगनलाल बोहरा
41/ दक्षिण भारत के स्वाधीनता संग्राम के नायक – ऐश्वर्या चौहान
43/ अल्लूरी सीताराम राजू – डॉ.चक्रवर्ती श्रीमाली
46/ भारतीय स्वाधीनता संग्राम और असम के क्रांतिकारी – डॉ. पवन तिवारी
48/ 16 वर्ष के क्रांतिकारी नानी गोपाल को दी गई थी काले पानी की सजा – के. छगनलाल बोहरा
51/ डॉ.हेडगेवार की जेल से रिहाई पर कांग्रेसी नेताओं ने किया था स्वागत – डॉ. रामकरण शर्मा
53/ भारतीय स्वातंत्र्य यज्ञ में सिंधु प्रदेश की आहुतियां – डॉ. सुरेश बबलाणी
57/ गोवा मुक्ति के लिए राजस्थानियों ने भी किया था संघर्ष – डॉ. अर्चना द्विवेदी
60/ गोवा मुक्ति के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का योगदान – संकलित
62/ भारत विभाजन में हिंदू सिंधियों के साथ अन्याय – तेजभान शर्मा
65/ भारत विभाजन की विभीषिका और ज्वलंत प्रश्न – पवन कुमार
69/ अखण्ड भारत-स्वप्न और यथार्थ – देवेन्द्र स्वरूप
77/ क्या भारत का विभाजन अटल, सत्य तथा स्थायी है? – संकलित
78/ भारत के स्वाधीनता दिवस पर श्री अरविंद के पांच स्वप्न – सूर्य प्रताप सिंह राजावत
80/ संस्कृत कवियों ने दी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा – डॉ. नाथूलाल सुमन
83/ राष्ट्र की जय चेतना का गान – वंदेमातरम् – विजय सिंह माली
86/ भारत के स्वत्व जागरण में संघ गीतों की भूमिका – डॉ.विपिन चंद्र
91/ स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी की भूमिका – कश्मीरी लाल
94/ 'स्व' के संघर्ष में भारतीय विज्ञान यात्रा के अल्पज्ञात नायक – डॉ. नारायण लाल गुप्ता
102/ भारत के अमृत काल का संदेश – डॉ. निमिषा

साक्षात्कार

100 / राम हमारे 'स्व' के प्रतीक हैं (श्री आलोक कुमार से संपादक की बातचीत)

कविता

76/ जो पाया उसमें खो न जाएं – अटल बिहारी वाजपेयी
88/ वंदेमातरम् के नारे ने... – डॉ. शिवराज भारतीय

सभी पाठकों व विज्ञापनदाताओं सहित देशवासियों को स्वाधीनता के अमृत महोत्सव की शुभकामनाएं।

सम्पादकीय

मम् करणीयम्

(1)

भारत के स्वाधीन होने पर लोग प्रसन्न थे, उत्साहित थे, उधर नवगठित पाकिस्तान से हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों के समाचार आने लगे। लोग समझ नहीं पा रहे थे कि स्वाधीनता मिलने पर खुश हों या अपने ही बंधु-बांधवों पर हो रहे अमानुषिक अत्याचारों पर दुःखी! बताते हैं कि 15 अगस्त को जवाहर लाल नेहरू के पास लाहौर से फोन आया था, उन्हें बताया गया कि 'लाहौर के हिंदू इलाकों को पानी की सप्लाई काट दी गई है। लोग पानी के लिए घर से बाहर निकले तो जवान माता-बहिनों को उठा लिया गया। बहुतों का कत्ल कर दिया गया।' सुनकर नेहरू जी की आंखें आंसुओं से भीग गई थीं।

प्रश्न यह है कि, क्या इस स्थिति का पूर्वाभास नहीं था? भारत के स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान मुस्लिम लीग और कट्टरपंथी मुसलमानों के व्यवहार पर आंखें क्यों मूंद ली गई थीं? मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त, 1946 को 'डायरेक्ट एक्शन डे' घोषित कर उस दिन कोलकाता व अन्य इलाकों में हिंदुओं का जो नरसंहार शुरु किया था, क्या उसे नेता जानते नहीं थे? मुस्लिम तुष्टीकरण का परिणाम भारत-विभाजन के रूप में सामने आया था। आम मुसलमानों की बात नहीं सुनी गई। कट्टरपंथियों के आगे नत-मस्तक होते रहे।

दुःख इस बात का है कि विभाजन के समय ऐसी त्रासदी देखने के बाद भी 'मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति' पर पुनर्विचार नहीं किया गया। क्यों नहीं हिंदू और मुसलमानों के साथ एक सा व्यवहार किया गया? आखिर देश के मूल समाज को कितना दबाओगे? कितना तोड़ोगे? हिंदू तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की बात करता रहा है। उसके दर्शन को छोड़कर अपने 'वोटों' के लिए 'समुदाय विशेष भवन्तु सुखिनः' की परम्परा कैसे चल पड़ी थी? यद्यपि ये नेता उस 'समुदाय विशेष' के आम-जन को भी सुखी नहीं कर पाए। परन्तु इनकी इस नीति से कट्टरपंथियों के हौसले अवश्य बुलंद होते गए।

क्यों सब कुछ जानते-समझते नेतागण शुतुरमुर्गी चरित्र प्रकट करते रहे?

(2)

देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वालों को सत्ता से दूर रखा गया। देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देने वाले बहुतों को फांसी हो गई थी, शेष की जवानी जेलों में खप चुकी थीं। भारत स्वाधीन होने पर वे रिहा अवश्य किए गए, परंतु तब तक उनका शरीर अशक्त हो चुका था। उन्हें चिकित्सा, पौष्टिक भोजन तथा अच्छा परिवेश देने की आवश्यकता थी। यह तो हुआ ही नहीं, सत्तासीनों द्वारा उनकी उपेक्षा की गई। जिन परिवारों के लाल फांसी पर चढ़ गए थे- उन परिवारजनों को स्वाधीन भारत में सम्मान दिया जाकर उनकी भरपूर सहायता करने की आवश्यकता थी- वह नहीं हुआ। चन्द्रशेखर आजाद की माँ को स्वाधीन भारत में जंगलों से लकड़ियाँ चुनकर लाने और उन्हें बाजार में बेचने पर होने वाली नाममात्र की आय पर जैसे-तैसे अपना गुजारा करना पड़ा। भगत सिंह के साथ असेम्बली में बम का धमाका करने वाले बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास की सजा देकर काले-पानी भेज दिया गया था। काले-पानी में उनके साथ हुई क्रूरता ने उनके शरीर को जर्जर और अशक्त कर दिया था। स्वाधीनता बाद भी वे 23 वर्ष जीवित रहे। धन की कमी के कारण वे ठीक से अपनी चिकित्सा तक नहीं करा पाए। दत्त को कभी सिगरेट कंपनी का एजेंट तो कभी ट्यूरिस्ट गाइड बनकर किसी तरह अपना जीवन यापन करना पड़ा। उन्हें सत्ता में भागीदारी तो छोड़िए, कोई सम्मान तक नहीं दिया गया। बटुकेश्वर दत्त ने ट्यूरिस्ट गाइड का कार्य करते समय किसी को बताया होगा कि वे वही बटुकेश्वर हैं जिन्होंने असेम्बली में बम फेंका था तो सुनने वालों के मन पर क्या संस्कार हुए होंगे? देश के लिए प्राणों की बाजी लगाने वालों की यह दशा देखकर किसे प्रेरणा मिली होगी? कमोबेश यही स्थिति सभी जीवित रह गए क्रांतिकारियों व उनके परिवारों की थी। जिस स्वाधीनता के लिए उन्होंने संघर्ष किया-

देश स्वाधीन होने पर उन्हें ही वह 'स्वाधीनता' नसीब नहीं हुई।

(3)

स्वाधीनता के बाद जिन्हें सत्ता मिली, उन्हें स्पष्ट ही नहीं था कि देश को किधर ले जाना है। उन्होंने गांधी जी के 'हिंद स्वराज'को नकार दिया था। भारत की पहचान और भारतीय 'स्व' के विपरीत Narratives (धारणाएं) बनने दी गई और अभारतीय तत्वों को प्रमुखता मिलती रही। अंग्रेज जो तंत्र छोड़कर गए थे वही चलने दिया। 'स्व'–तंत्र पर विचार ही नहीं हुआ। यदि कहीं हुआ तो उन विचारों की अनदेखी की गई।

(4)

जिन महापुरुषों ने कांग्रेस नेतृत्व से बाहर रहकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और बलिदान दिए उनकी उपेक्षा की जाने लगी। बाबा साहेब अम्बेडकर, राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे सेनानी इसी श्रेणी के हैं। कुछ देशभक्तों के त्याग और उच्च बलिदान को नकारते हुए उनके चरित्र हनन तक का प्रयास किया गया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस और वीर सावरकर जैसों के साथ ऐसा ही बर्ताव हुआ। देशभक्त संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर कीचड़ उछाला गया। तथ्यों के विपरीत इस संगठन को अंग्रेजों का सहयोगी बताया गया।

(5)

प्रत्येक देश की अपनी एक पहचान होती है। उस पहचान को स्पष्ट करने वाले 'स्व' होते हैं। प्रत्येक देश के सभी राजनीतिक दल और आमजन उस 'पहचान' को बनाए रखने के लिए एकमत रहते हैं। इस दायरे से बाहर के मुद्दों पर मत भिन्नता के कारण कई राजनीतिक दलों का निर्माण होता है। परन्तु भारत में ऐसा नहीं हुआ। भारत के अधिकांश राजनीतिक दल न तो 'भारत की पहचान' से परिचित हैं और न वे जानते हैं कि भारत का 'स्व' क्या है। क्या किसी देश में वहां का बहुसंख्यक समाज ही अपने को उपेक्षित महसूस करता है? नहीं ना! परंतु भारत में ऐसा ही है।

(6)

भारत के जिस किसी क्षेत्र में हिंदू अल्पसंख्यक हुआ या जहां हिंदू भाव में कमी आ गई– वे क्षेत्र भारत से अलग होते गए। स्पष्ट है कि **हिंदू के साथ ही भारत का अस्तित्व है।** हिंदू नहीं रहेगा तो क्या 'भारत' कहीं रह पाएगा?

(7)

तो करना क्या होगा ?

फिर से कोई भी भारत माँ के टुकड़े करने की सोचे भी नहीं, इसकी पुख्ता व्यवस्था करनी होगी। इस बात की चिंता करनी होगी कि **भारत के किसी भी क्षेत्र में हिंदू अल्पसंख्यक न होने पाए।** जहां हिंदू अल्पसंख्यक हो गए हैं, वहां क्या करना है, इस पर विचार करना होगा। भारत के सत्तासीनों को दिवंगत हो गए क्रांतिकारियों–सेनानियों और उनके परिवार जनों से, उनके प्रति की गई उपेक्षा के लिए क्षमा याचना करनी चाहिए। जो देश के लिए बलिदान हो गए उनके जन्म स्थानों पर उनका स्मारक बनाकर प्रति वर्ष कुछ सार्थक आयोजन आरंभ हों– ताकि वे आज भी प्रेरणा–स्रोत बन सकें।

भारत की पहचान और भारत के 'स्व' पर सभी दलों को सहमत होना होगा। भारत की शिक्षा नीति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, न्याय, प्रशासन सब को 'भारत केंद्रित' बनाना होगा। नई पीढ़ी को कैसे संस्कार युक्त किया जा सकता है, कैसे उसमें भारत–भक्ति जगाई जा सकती है, इस पर विचार कर कार्यान्वित करना होगा। कुछ संगठन और व्यक्ति इस कार्य में लगे हुए हैं, उन्हें प्रोत्साहन देना होगा।

(8)

यदि कोई राजनीतिक दल इन कार्यों से मुँह मोड़ रहा है, तो चुनावों में जनता को उन्हें सबक सिखाना होगा। राजनीतिक लोग जनता का मूड भांपकर ही बोलते हैं और अपनी नीति निर्धारित करते हैं। जिस दल ने सत्तारूढ़ रहते सर्वोच्च न्यायालय में हलफनामा देकर 'राम' का अस्तित्व ही नकारा था, उसी के कर्णधारों ने राम मंदिर निर्माण प्रारंभ होने पर उसका स्वागत किया था। भारत की पहचान और भारत के 'स्व' की स्थापना में लगे दलों को सत्ता में लाना होगा। ●

– रामस्वरूप अग्रवाल

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव

● दत्तात्रेय होसबाले
सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आज जब देश की स्वाधीनता को 75 वर्ष हो रहे हैं तो इस अवसर पर देश का हर नागरिक उल्लासित है। हमारे देश ने तमाम व्यवधानों और संकटों को पार करते हुए इन 75 वर्षों की यात्रा तय की है। यह यात्रा अपने आप में रोमांचित करने वाली है। आज जब हमारे देश की स्वाधीनता को 75 वर्ष हो रहे हैं तो देश की उपलब्धियां, चुनौतियाँ सभी हमारे सामने हैं। कैसे एक राष्ट्र ने स्वतंत्र होते ही विभाजन जैसी त्रासदी का सामना किया और विभाजन के कारण हुई हिंसा का दंश झेला। इसके तुरंत बाद सीमा पर आक्रमण का सामना किया, परन्तु ये चुनौतियाँ हमारे राष्ट्र के सामर्थ्य को हरा नहीं पायीं। हमारा राष्ट्र इन चुनौतियों का सामना करते हुए अपने लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करता रहा। आज हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि कैसे हमारे देश के नागरिकों ने विभाजन और आक्रमण के दुःख झेलने के बाद 1952 में लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व को मनाया और भारत में लोकतान्त्रिक सरकार की स्थापना की।

यह भारतवासियों का सामर्थ्य और इच्छाशक्ति ही थी, जिसने 1947 के बाद लगातार भारत के छूटे हुए हिस्से गोवा, दादरा एवं नगर हवेली, हैदराबाद और पुडुचेरी को फिर भारत भूमि में मिलाने का प्रयास जारी रखा और अंत में नागरिक प्रयासों से लक्ष्य की प्राप्ति की। कई बार यह प्रश्न आता है कि एक राष्ट्र जिसको राजनीतिक स्वतंत्रता केवल कुछ वर्षों पूर्व मिली हो, इतना जल्दी कैसे कर सकता है? इसको समझने के लिए हमें भारत के समाज को समझना होगा। भारत का समाज सभी प्रकार के आक्रमण और संकट को सहते हुए भी अपने एकता के सूत्र को नहीं भूला। यदि भारत के स्वतंत्रता संग्राम को समझने का प्रयास करेंगे तो पाएंगे कि संघर्ष के पदचिन्ह नगरों, ग्रामों, जंगलों, पहाड़ों व तटीय क्षेत्रों हर जगह मिलते हैं। चाहे संथाल का विद्रोह हो या दक्षिण के वीरों का सशस्त्र संघर्ष, आपको सभी संघर्षों में एक ही भाव मिलेगा। सभी लोग किसी भी कीमत पर स्वाधीनता चाहते थे और वो यह स्वाधीनता केवल अपने लिए ही नहीं, अपितु अपने समाज और सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए चाहते थे।

स्वाधीनता के लिए भारतीय समाज की व्याकुलता इतनी थी कि वह इसके लिए हर प्रकार के त्याग और हर प्रकार के मार्ग पर चलने को इच्छुक थे। यही कारण है कि भारत की स्वतंत्रता के लिए लन्दन, यूएस, जापान हर जगह से प्रयास हुए। लन्दन स्थित इंडिया हाउस तो भारतीय स्वाधीनता का एक प्रमुख केंद्र बन गया था।

भारत का स्वाधीनता आन्दोलन इतना व्यापक था कि उसने भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक सभी विभाजनों के परे जाकर भारत के जनमानस को एक किया। इसके लिए किसी एक का नाम लेना बेमानी होगा क्योंकि भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में अनेकों लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी। इनमें से कुछ का नाम हम जानते हैं और कुछ का नाम नहीं जानते हैं। यह एक आन्दोलन था, जिसके असंख्य नायक थे। मगर हर नायक का मकसद एक ही था।

यही कारण है कि स्वाधीनता के बाद देश को परम वैभव की ओर ले जाने का भाव देश की जनता के मन में था और यह इसके लिए राजनीतिक नेतृत्व पर निर्भर नहीं था। इसी कारण जब देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर हमले का प्रयास, आपातकाल के रूप में हुआ तो देश की जनता ने उसकी सम्हाल की और स्वयं ही संघर्ष किया।

आज जब हमारी स्वाधीनता को 75 वर्ष हो रहे हैं तो हमें यह भी विचार करना होगा कि स्वाधीनता के शताब्दी वर्ष तक हमारे लक्ष्य क्या होंगे? आज जब सम्पूर्ण विश्व कोरोना और वैश्विक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है तो एक राष्ट्र के रूप में हमारे क्या लक्ष्य होने चाहिए? इसमें कोई संदेह नहीं कि पिछला दशक भारत के लिए अनेकों उपलब्धियों से भरपूर रहा है। चाहे वह भारत के नागरिकों को मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करने का विषय हो, जिसमें स्वास्थ्य, आवास और वित्तीय समावेशन का विषय हो, यह सब यही परिलक्षित करता है कि भारत का समाज और नागरिक सशक्त हो रहा है। यह भारत की मेधा शक्ति ही है, जिसने कोरोना के समय, सबसे कम समय में सबसे सस्ती और सबसे सुरक्षित वैक्सीन का निर्माण किया। जिसने पूरे विश्व की सहायता की और करोड़ों जीवन की रक्षा की।

इन सभी बातों के बाद भी, भारतीय समाज और एक राष्ट्र के रूप में हमें कई आंतरिक और बाह्य संकटों का न केवल सामना करना है, अपितु उसका समाधान भी ढूँढना है। भारत को अभी भी समरसता के लिए और प्रयास करने होंगे क्योंकि समाज जितना समरस होगा, उतना सशक्त होगा। इसलिए इस पर और भी कार्य करने की आवश्यकता है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था तमाम संकटों के बाद भी आगे बढ़ रही है, मगर भारत की बढ़ी आबादी की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इसे और तेजी से प्रगति करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि हम भारतीय उद्योगों और उपक्रमों को बढ़ावा दें। इसके बिना हम भारत की रोजगार की अपेक्षा को पूरा नहीं कर पाएंगे। भारत सही मायने में तभी सशक्त होगा, जब भारत स्वावलंबी होगा।

भारत की स्वाधीनता को जब आज 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं तो यह आवश्यक है कि हम विचार करें कि क्या भारत के नीति प्रतिष्ठान, वर्तमान के भारत की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं के अनुरूप हैं। अगर वह नहीं हैं तो उसमे परिवर्तन कैसे हो सकता है, इस पर भी विचार की आवश्यकता है। आज हम बहुत सी ऐसी व्यवस्था देखते हैं, जिसमें एक साधारण आदमी अपने को असहज और असमर्थ पाता है, चाहे वह आज की न्यायिक व्यवस्था हो या राजनीतिक व्यवस्था। ये एक साधारण आदमी की पहुंच में सहजता और सुलभता से कैसे पहुंचे, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

भारत वैश्विक चुनौतियों का सामना तभी कर सकता है, जब उसकी आंतरिक व्यवस्था मजबूत हो और आंतरिक व्यवस्था न केवल आर्थिक या न केवल सामाजिक सशक्तिकरण पर निर्भर है। भारत की आंतरिक व्यवस्था का समाधान आर्थिक और सामाजिक दोनों चुनौतियों के समाधान में निहित है। ●

भारत के 'स्व' को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता

• डॉ.मनमोहन वैद्य

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान और स्वाधीनता के पश्चात् भी, भारत की पहचान और भारत के 'स्व' को बार-बार नकारा गया। यह किस मानसिकता की उपज है?- इसका विलेषण करने की आवश्यकता है। उस 'अभारतीय मानसिकता' से उबरकर अपने 'स्व' को प्रकाशमान करने से ही भारत की समृद्धि का रास्ता निकलेगा। प्रस्तुत है, इस संपूर्ण परिदृश्य को समेटते हुए डॉ.वैद्य का एक विचारोत्तेजक लेख

भारत के सिवा दुनिया में शायद ही ऐसा कोई देश होगा जहां के समाज के मन में हम कौन हैं? हमारे पुरखे कौन थे? हमारा इतिहास क्या रहा है? इस के बारे में कोई सम्भ्रम या भिन्न भिन्न मत होंगे। पर भारत में, जो दुनिया का सबसे प्राचीन राष्ट्र है और जहां सब से समृद्ध समाज रहने के बावजूद हमारी इस विषय पर सहमति नहीं है। इसका एकमात्र कारण यही दिखता है कि हम एक समाज और एक राष्ट्र के नाते अपने स्व को पहचानना और उसे आत्मसात् करना नहीं चाहते। कुछ उदाहरण देखें।

द्वितीय विश्वयुद्ध के विनाश के उपरांत (1945) ब्रिटेन, जर्मनी और जापान ने नई शुरूआत की थी। सैकडों वर्षों के संघर्ष के बाद-1948 में इज्राएल ने भी अपने राष्ट्र को पुनः प्राप्त किया था। भारत ने भी शतकों की गुलामी और शोषण के उपरांत और देश विभाजन के बाद 1947 में स्वाधीनता प्राप्त की थी। लगभग एकसाथ नए सिरे से शुरुआत करने वाले इन देशों को आज हम देखते हैं तो भारत की तुलना में इन चारों देशों की स्थिति बहुत अच्छी दिखती है। क्या कारण रहा होगा?

एक सामाजिक चिंतक के अनुसार जब तक एक समाज के नाते हम कौन है यह हम तय नहीं करते, हम अपनी दिशा और प्राथमिकताएँ तय नहीं कर सकते। यही अंतर हैं भारत और इन देशों की विकास यात्रा में, जो कि क़रीब एक साथ ही शुरू हुई थी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का 'स्वदेशी समाज'

'अपने स्वदेशी समाज' इस ऐतिहासिक निबंध में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिखते हैं कि हमें सब से पहले हम जो है वह बनना पड़ेगा। यह अद्भुत संयोग ही है कि आज जब हमारा देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाने जा रहा है तब एक ऐसा कालखंड आया है जब एक राष्ट्र के नाते भारत अपने स्व के आधार पर अपनी एक नई पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है – परंतु इसका भी विरोध क्यों होता है इसपर विचार होना चाहिए।

भारत के आधुनिक इतिहास में हमें दिखता हैं कि भारत की यह पहचान, भारत का यह स्व जो सदियों पुराना है, सर्वविदित है, सुस्पष्ट है उसे ही नकारा गया। इसे नकारने को liberal, intellectual और progressive कहलाने का फौशन चल पड़ा। स्पष्ट दिखता है कि भारत ने चूँकि अपनी विकास यात्रा की दिशा अपने स्व के आलोक में तय नहीं की इसलिए भारत का उसकी क्षमता (potential) के आधार पर जितना विकास अब तक होना चाहिए था वह हम नहीं कर सके। भारत के इस स्व के प्रकट होने के कई अवसर आए परंतु दुर्भाग्य से उन्हें लगातार नकारा गया।

वन्देमातरम् गीत को मान लिया सांप्रदायिक

हम जानते हैं कि 1905 में बंगाल के विभाजन के विरुद्ध हुए जन आंदोलन का उदघोष वन्देमातरम् गीत बना था। ''वन्देमातरम्'' ने हज़ारों युवकों को, क्रांतिकारियों को स्वाधीनता के आंदोलन में कूदने की, देश पर मर मिटने की प्रेरणा दी। वन्देमातरम् भारत के स्व का सहज प्रस्फुटन था। कांग्रेस के अखिल भारतीय अधिवेशनों में इस का गौरवपूर्ण गान होता था। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पंडित विष्णु

दिगम्बर पलुस्कर जैसे दिग्गज गायक इसे स्वरबद्ध कर कांग्रेस के अधिवेशनों में गाते थे। हिंदू-मुसलमान सभी इससे समान रूप से प्रेरणा पाते थे। फिर अचानक 1921 से यह केवल हिंदुओं का गीत और साम्प्रदायिक(communal) कैसे हो गया? इसके पीछे की मानसिकता को समझना आवश्यक है। 1905 से 15 वर्षों तक जो देशभक्ति का स्वाभाविक प्रस्फुटन था वह अचानक साम्प्रदायिक कहकर कैसे और क्यों नकारा गया, यह समझना आवश्यक है।

राष्ट्रध्वज संबंधी सर्वसम्मत निर्णय को नकारा गया

एक और उदाहरण देखें। स्वतंत्र भारत के ध्वज का सर्वप्रथम नमूना विवेकानंद शिष्या भगिनी निवेदिता ने 1905 में बनाया। दधीचि ऋषि के तपस्वी देहत्याग से बना वज्र चिह्न अंकित ध्वज उन्होंने बनाया। पर आगे वे लिखती हैं, unfortunately we had a Chinese war flag as model in front of us, so we made it black on red. But it doesn't appeal to Indians. So, next one will be yellow on saffron. 1906 के कांग्रेस अधिवेशन में भगवे कपड़े पर पीला वज्रचिह्न ऐसा ध्वज प्रदर्शित हुआ था।

इसके पश्चात् विविध ध्वजों के विभिन्न नमूने प्रस्तावित हुए। 1921 में भारत के सभी समुदायों का प्रातिनिधिक चरखांकित – तिरंगा ध्वज बनाया गया। 1929 में मास्टर तारासिंह के नेतृत्व में एक सिख प्रतिनिधि मण्डल महात्मा गांधी जी से मिला और उन्हों ने अलग-अलग समुदायों के प्रातिनिधिक ध्वज की कल्पना का विरोध किया और सभी के बीच रही एकता को दर्शानेवाला राष्ट्रीय (National) ध्वज बनाने पर ज़ोर दिया और कहा यदि अलग-अलग समुदाय के प्रतिनिधित्व का ही विचार करना है तो सिख समुदाय का पीला रंग ध्वज में जोड़ा जाए। इस पर समग्र विचार कर सुझाव देने के लिए कांग्रेस कार्यकारी समिति ने एक ध्वज समिति का गठन किया। इस में पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मास्टर तारासिंह, पट्टाभि सीतारामैय्या(संयोजक), काका कालेलकर और डॉक्टर हार्डीकर थे। ध्वज समिति ने राज्य कांग्रेस समिति और सामान्य व्यक्तियों से प्रचलित राष्ट्रीय ध्वज के लिए आपत्ति और सुझाव माँगे।

सब की बातें सुनकर ध्वज समिति का सर्वसम्मत निर्णय रहा कि भारत का ध्वज विशिष्ट(distinct), कलात्मक(artistic) और असाम्प्रदायिक (non-communal) हो। यह सर्वानुमति से तय किया गया कि वह एक ही रंग का हो।और यदि कोई एक रंग जो सबसे विशिष्ट है, जो सभी भारतवासियों को समान रूप से स्वीकार्य है और जो भारत जैसे प्राचीन राष्ट्र के साथ दीर्घकाल से जुड़ा है वह भगवा या केसरी रंग है। इसलिए आयताकृति भगवे कपड़े पर नीले रंग में चरखा यह भारत का ध्वज होगा यह निर्णय ध्वज समिति ने सर्वानुमति से लिया। यह निर्णय क्यों नहीं स्वीकार हुआ? वह कौन सी मानसिकता थी जिसने भारत का यह स्वाभाविक और सुविचारित स्व नकारा? यह तथ्य भी विचार करने योग्य है।

तिरंगे का सम्मान

1947 में स्वाधीनता के पश्चात संविधान द्वारा समृद्धि, शांति और पराक्रम को दर्शाता धर्मचक्रांकित तिरंगा हमारा राष्ट्र ध्वज स्वीकारा गया। यह हमारा राष्ट्र ध्वज है। उसका सम्मान तथा संरक्षण करना और अपने कर्तृत्व से उसका गौरव बढ़ाना हम सभी भारतीयों का कर्तव्य है। यह निर्विवाद सत्य है।

शिक्षा का 'अभारतीय चरित्र'

इसी तरह स्वाधीनता के पश्चात भारत की शिक्षा में जो मूलभूत सुधार अपेक्षित था वह भी नहीं किया गया। 1948 में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में बने शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में शिक्षा के अभारतीय चरित्र (The Un-Indian Character of Education) के बारे में वे स्पष्ट कहते है कि-

One of the serious complaints against the system of education which has prevailed in this country for over a century is that it neglected India's past, that it did not provide the Indian students with a knowledge of their own culture. It has produced in some cases the feeling that we are without roots, in others, what is worse, that our roots bind us to a world very different from that which surrounds us.

The chief source of spiritual nourishment for any people must be its own past perpetually rediscovered and renewed. - society without a knowledge of the past which has made it would be lacking in depth and dignity.

It was assumed that education should not stop with the development of intellectual powers but must provide the student, for the regulation of his personal and social life, a code of behavior based on fundamental principles of ethics and religion. Where conscious purpose is lacking, personal integrity and consistent behavior are not possible.

इससे सिद्ध होता है कि आध्यात्मिकता यही भारतीय चिंतन का आधार है। उसी के प्रकाश में शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। परंतु कांग्रेस के शासन काल में, उन्हीं के द्वारा नियुक्त शिक्षा आयोगों की अनुशंसाओं (recommendations) को लागू नहीं किया गया। शिक्षा आयोग का गठन करने वाले कांग्रेस के ही नेता थे। फिर भी उस आयोग

> "वन्देमातरम्" ने हज़ारों युवकों को, क्रांतिकारियों को स्वाधीनता के आंदोलन में कूदने की, देश पर मर मिटने की प्रेरणा दी। वन्देमातरम् भारत के स्व का सहज प्रस्फुटन था। कांग्रेस के अखिल भारतीय अधिवेशनों में इस का गौरवपूर्ण गान होता था। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जैसे दिग्गज गायक इसे स्वरबद्ध कर कांग्रेस के अधिवेशनों में गाते थे। हिंदू-मुसलमान सभी इससे समान रूप से प्रेरणा पाते थे। फिर अचानक 1921 से यह केवल हिंदुओं का गीत और साम्प्रदायिक कैसे हो गया?

> आध्यात्मिकता ही भारतीय चिंतन का आधार है। उसी के प्रकाश में शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। परंतु कांग्रेस के शासन काल में, उन्हीं के द्वारा नियुक्त शिक्षा आयोगों की अनुशंसाओं को लागू नहीं किया गया। शिक्षा आयोग का गठन करने वाले कांग्रेस के ही नेता थे। फिर भी उस आयोग की अनुशंसा को लागू करने से रोकने वाले कौन लोग थे, कौनसी मानसिकता थी?

की अनुशंसा को लागू करने से रोकने वाले कौन लोग थे, कौनसी मानसिकता थी? आज भी उस दिशा में जब प्रयास होते हैं तो उसे शिक्षा का भगवाकरण के नाम पर विरोध किया जाता है। इसके पीछे की मानसिकता क्या है – इसका विश्लेषण होना आवश्यक है।

की गई 'संस्कृत' की अवहेलना

भारत की सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है यह निर्विवाद तथ्य है और संस्कृत ही है जो सभी भारतीय भाषा–भाषियों को सरलता से समझ में आती है। जैसे, मलेशिया में तमिल भाषी भारतीय बड़ी संख्या में हैं। वहाँ के हिंदू स्वयंसेवक संघ के प्रचारक श्री रामचन्द्रन तमिल भाषी है। संघ शिक्षा वर्ग के दोनों वर्षों का उनका प्रशिक्षण तमिलनाडु प्रांत में हुआ। तृतीय वर्ष के लिए(25 दिन) वे नागपुर गए। वहाँ सभी बौद्धिक हिंदी में ही होते थे जो उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आते थे। बाद में जब तमिल भाषी शिक्षार्थियों के लिए तमिल में उनका अनुवाद होता था तभी वे उसे समझते थे। उन्होंने मुझे बताया कि 25 में से केवल एक ही बौद्धिक उद्बोधन वे सीधा(बिना अनुवाद के) समझ सके क्यों कि वह संस्कृत में हुआ था। संस्कृत भाषा सभी भाषाओं से नज़दीक है इसका यह ज्वलंत प्रमाण है। भारत रत्न डॉक्टर बाबासाहेब अम्बेडकर समेत तत्कालीन अनेक नेताओं का यह स्पष्ट मत था कि भारत में सभी को संस्कृत की शिक्षा दी जाए। भारत के ज्ञान का सारा खजाना संस्कृत में है और सभी भारतीय भाषाएँ संस्कृत से नज़दीक है, संस्कृत से ही निकली है। भारतीय एकात्मकता के बोध के लिए भी यह उपयुक्त है। परंतु किस मानसिकता के कारण इस महती सुझाव को नहीं स्वीकारा गया?

मातृभाषा छोड़कर अंग्रेजी में शिक्षा

दुनिया के सभी शिक्षाविद मानते हैं कि बालक की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। नए विषय समझने के लिए और बालक के मानसिक, बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा मातृभाषा में होना आवश्यक है। अच्छी अंग्रेज़ी भाषा सीखने के लिए सभी विषय अंग्रेज़ी में सीखना आवश्यक नहीं है। दुनिया के केवल 9% लोग ही अपनी मातृभाषा से अलग अन्य भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं। भारत ऐसे कुछ देशों में आता हैं। सभी विषयों की शिक्षा अंग्रेज़ी में देने के नाम पर अपने यहाँ अंग्रेज़ी का वर्चस्व इतना बढ़ा दिया गया कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वालों के मन में एक हीनता का भाव निर्माण होता दिखता है। यह भारत के स्व भाव के विपरीत है। महात्मा गांधी जी समेत अनेक चिंतकों द्वारा मातृभाषा में ही प्राथमिक शिक्षा पर बल देने के बावजूद ऐसा क्या हुआ कि इस बात की अनदेखी की गयी?

भारत तो था उद्योग प्रधान देश

बहुत दीर्घकाल तक भारत सम्पन्न था, विश्व व्यापार में भारत का सहभाग सर्वाधिक था। हम अनाज नहीं बेचते थे। चमड़ा, धातु, लकड़ी, पत्थर की बनी वस्तुएँ, कपड़ा, मसाले, हीरे आदि के व्यापार के लिए भारतीय दुनिया भर में जाते रहे हैं। इसलिए भारत कृषि प्रधान देश था ऐसा कहने के स्थान पर भारत उद्योग प्रधान देश था यह कहना अधिक उचित होगा। ये सारे उद्योग घर–परिवार में होते थे और ये परिवार ग्रामीण भारत में रहते थे। भारत के ग्राम समृद्ध होते थे। लेकिन यूरोप के प्रभाव के कारण भारत ने स्वाधीनता के पश्चात् शहर केंद्रित विकास की दिशा पकड़ ली। शहरों में भीड़, स्पर्धा, अपराध और आपसी सम्बन्धों का बिखराव बढ़ता गया और ग्राम उपेक्षित, पिछड़े, सुविधा विहीन होने लगे। शहर में बसना प्रतिष्ठा का और ग्रामीण भाग में बसना पिछड़ेपन का लक्षण माना गया। यांत्रिक युग के कारण अधिकाधिक लाभ कमाने के मोह के मकड़जाल में मनुष्य फँसता चला गया।

भौतिक और आध्यात्मिक विकास– दोनों आवश्यक

भारतीय जीवन की विशेषता यह रही है कि भारत ने भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक विकास दोनों को समान महत्व दिया है, किसी एक को नहीं। ईशावास्य उपनिषद में एक श्लोक में स्पष्ट कहा है कि जो केवल भौतिक समृद्धि के पीछे दौड़ता है वह गहरे अंधकार में प्रवेश करता है। उसी श्लोक में आगे कहा है कि जो केवल आध्यात्मिक साधना में रत रहता है वह और गहरे अंधकार में प्रवेश करता है। उपनिषद आगे कहता है कि भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति दोनों को साथ साथ साधना ही जीवन है। इन दोनों को एकसाथ साधने का योग्य परिवेश ग्रामीण जीवन में है। ग्राम में आय कम है पर व्यय भी कम है। इसलिए अच्छा जीवन जीने तथा कमाने के लिए बहुत दौड़ भाग नहीं करनी पड़ती है। कमाने के साथ साथ आध्यात्मिक साधना के लिए पर्याप्त समय और योग्य परिवेश, वातावरण ग्रामीण जीवन में हैं। इसलिए स्वाधीन भारत की विकास यात्रा की दिशा ग्रामीण विकास की हो यह

> दुनिया के केवल 9% लोग ही अपनी मातृभाषा से अलग अन्य भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं। भारत ऐसे कुछ देशों में आता हैं। सभी विषयों की शिक्षा अंग्रेज़ी में देने के नाम पर अपने यहाँ अंग्रेज़ी का वर्चस्व इतना बढ़ा दिया गया कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वालों के मन में एक हीनता का भाव निर्माण होता दिखता है। यह भारत के स्व भाव के विपरीत है।

महात्मा गांधी भी चाहते थे। उनका हिंद स्वराज मुख्यतः इसी पर केंद्रित है। संविधान को स्वीकार करते समय भी-19 से 22 नवंबर 1948 की चर्चा में संविधान सभा ने यही अपेक्षा व्यक्त की थी कि जल्द ही हम ग्राम स्वराज के पथ पर अग्रसर होंगे। परंतु पश्चिम के समाजवाद और पूंजीवाद के द्वंद्व में फसकर हम अपना समावेशी और पर्यावरण पूरक विकास का रास्ता भूल गए।ग्रामीण भारत में शहरों की सभी सुविधाएँ दिए जाने का आग्रह पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर अब्दुल कलाम का भी था। समृद्ध, सुखी, निरामय और आध्यात्मिक साधना में रत ऐसा जीवन जीना यही जीवन है यह भारत का विशिष्ट विचार रहा है और भारत की पहचान भी। यही भारत के स्व की अभिव्यक्ति है। यह दिशा हम ने क्यों नहीं ली?

'Welfare State' की अवधारणा है अभारतीय

'स्वदेशी समाज' में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर कहते हैं कि welfare state यह पश्चिम की कल्पना है, भारतीय नहीं। परम्परा से भारतीय समाज राज्यशक्ति पर कभी अवलम्बित नहीं था। वह समाज जो अपनी आवश्यकताओं के लिए राज्य पर कम से कम अवलम्बित है वह स्वदेशी समाज है। परम्परा से केवल न्याय, विदेश सम्बंध और सुरक्षा ये विषय ही राज्य के अधीन होते थे। बाक़ी सभी विषय शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, अर्थोत्पादन, संगीत, कला, मंदिर, कथा, मेले आदि सभी समाज के अधीन रहते थे।

समाज को लौटाने का भाव नहीं रहा

विवेकानंद की शिष्या भगिनी निवेदिता ने कहा कि जिस समाज में लोग अपने परिश्रम का पारिश्रमिक अपने ही पास न रखकर समाज को देते हैं, उस समाज में, ऐसे एकत्रित पारिश्रमिक की पूँजी के आधार पर समाज सम्पन्न- समृद्ध बनता है और समाज सम्पन्न- समृद्ध बना तो समाज का हर एक व्यक्ति सम्पन्न- समृद्ध बनता है। परंतु जिस समाज में लोग अपने परिश्रम का पारिश्रमिक समाज को न दे कर अपने ही पास रखते हैं,

> समाज को देना यह चैरिटी है और समाज को लौटाना यह धर्म है। समाज से हमें बहुत मिलता है, उसे वापस लौटाना-इसे ही धर्म कहा है।

उस समाज में कुछ व्यक्ति तो सम्पन्न- समृद्ध बनते हैं पर समाज दरिद्र रहता है।

समाज को अपनेपन के भाव से देना, यह समाज का ही है, उसे लौटाना माने जीवन सार्थक होना ऐसा माना गया है। इसीलिए विवेकानंद केंद्र की प्रार्थना में कहा गया है -

जीवने यावदादानं स्यात् प्रदानं ततोऽधिकम्।
इत्येषा प्रार्थनास्माकं भगवन् परिपूर्यताम्॥

(अर्थ-जीवन में हम जितना स्वीकार करते हैं उससे अधिक लौटा सकें यह हमारी प्रार्थना हे भगवन! आप पूर्ण करो।)

समाज से हमें बहुत मिलता है उसे वापस लौटाना इसे ही धर्म कहा है। religion या उपासना इससे अलग है। उपासना धर्म के लिए होती है। धर्म का अर्थ है, प्रत्यक्ष आचरण करना, समाज को लौटाना। समाज को देना यह charity है और समाज को लौटाना यह धर्म है।भगिनी निवेदिता के अनुसार सामाजिक पूँजी को समृद्ध करना

> सेकुलरिज्यम पर चर्चा करने के पश्चात् भारतीय संविधान में स्थान नहीं देने का सर्वानुमति से निर्णय लिया गया था, फिर भी उसे चुपके से किसी भी प्रकार की चर्चा- बहस किए बिना संविधान के प्रस्तावना में (जो कि अपरिवर्तनीय है ऐसा संविधान ही कहता है) जबरदस्ती से समाविष्ट किया गया। धर्म की बात करना साम्प्रदायिक (कम्यूनल) माना जाने लगा है।

यही धर्म है। और धर्म भेदभाव नहीं करता है, वह सभी को जोड़े रखता है, सहायता करता है, साथ बाँधे रखता है। यही स्वदेशी समाज का आधार है।

सब जगह 'धर्म' भाव ही था

स्वाधीनता के समय भारत के निर्माताओं के मन में यह धर्म भाव स्पष्ट रहा होगा। इसीलिए भारत की लोकसभा में धर्मचक्र प्रवर्तनाय' लिखा है। राज्य सभा में सत्यं वद धर्मं चर, उच्चतम न्यायालय का बोधवाक्य यतो धर्मस्ततो जयः और भारत के राष्ट्रध्वज पर जो चक्र अंकित है वह धर्मचक्र है। चक्र घूमने के लिए ही होता है। समाज को लौटाने का प्रत्येक छोटासा प्रयास धर्मकार्य है और ऐसे छोटे छोटे प्रयासों से धर्मचक्र चलता है, गतिमान होता है, प्रवर्तमान रहता है।

लोकसभा, राज्यसत्ता, उच्चतम न्यायालय, राष्ट्र ध्वज जैसे प्रमुख स्थानों पर जिस धर्म का स्पष्ट महत्वपूर्ण उल्लेख है उस धर्म की कहीं कोई चर्चा नहीं है। बल्कि धर्म की बात करना साम्प्रदायिक (कम्यूनल) माना जाने लगा है। और जिस secularism को चर्चा करने के पश्चात भारतीय संविधान में स्थान नहीं देने का सर्वानुमति से निर्णय लिया गया फिर भी उसे चुपके से किसी भी प्रकार की चर्चा- बहस किए बिना संविधान के preamble में (जो कि अपरिवर्तनीय है ऐसा संविधान ही कहता है) ज़बरदस्ती से समाविष्ट किया गया। उस secularism जैसे अभारतीय शब्द के अर्थ को परिभाषित किए बिना ही उसका धड़ल्ले से उपयोग किया जा रहा है।

अभारतीय मानसिकता से निकलना होगा

ये सब किस मानसिकता की उपज है? इसका विचार करना होगा। उस अभारतीय मानसिकता से उबरकर शुद्ध भारतीय विचार को प्रतिष्ठित करने से ही अबतक नकारा गया भारत का स्व पूर्णार्थ से, अपने पुरुषार्थ से पूर्ण प्रकाशमान होगा तभी भारत अपने स्व-गौरव के साथ मज़बूती से अपना वैश्विक कर्तव्य पूर्ण करने के लिए तत्पर होगा।

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह हैं)

किसान आंदोलन में मातृशक्ति की भूमिका

अंग्रेजों की भू-राजस्व नीति के कारण किसान मेवाड़ छोड़कर जाने को हो गए थे उतारू

(सकरावास का कृषक आंदोलन)

● मदन मोहन टाँक

अंग्रेजों द्वारा भारत में परम्परागत राजस्व वसूली (उपज के आधार पर लगान) को समाप्त कर भूमि के आधार पर भू-राजस्व वसूली की पद्धति लागू की गई। राजा-महाराजाओं ने अंग्रेजों के दबाव में इस पद्धति को अपने यहां भी लागू किया। इसके विरोध में सकरावास के किसान मेवाड़ से मालवा की ओर पलायन करने को हो गए थे उतारू। मातृशक्ति ने इस आंदोलन में निभाई थी सक्रिय भूमिका।

अंग्रेजों की नीतियों के विरुद्ध सन 1875 में मेवाड़ के किसानों का अपने परिवार, गाड़ियों, हल और बैल लेकर मालवा की ओर पलायन इतिहास में एक उल्लेखनीय घटना है।

अंग्रेजी पोलिटिकल एजेन्ट के कारनामे

मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह के शासन काल (1842-1861) में पोलिटिकल एजेन्ट द्वारा सबसे पहले सरकारी अधिकारियों के माध्यम से ठेका देकर राजस्व वसूली की पद्धति लागू की गई और इसमें अंधिकांश ठेके कृपापात्रों को दे दिए गए, जिसमें खूब भ्रष्टाचार हुआ। अंग्रेज पोलिटिकल एजेन्ट द्वारा जानबूझ कर फैलाई गई अव्यवस्था का उद्देश्य परम्परागत भू-स्वामित्व तथा प्रचलित पद्धति से राजस्व की वसूली, पंच पटेलों के नेतृत्व में ग्राम स्वशासन, न्याय व्यवस्था और कृषक पटेलों के नेतृत्व को भी समाप्त करने के लिए भूमिका तैयार करना था। अंग्रेज भारतवर्ष में एक जैसी राजस्व व्यवस्था लागू करना चाहते थे।

17 नवम्बर, 1861 को अल्प वयस्क महाराणा शम्भूसिंह मेवाड़ के महाराणा बने। महाराणा के अल्प वयस्क होने से मेवाड़ में रीजेन्सी काउन्सिल की स्थापना की। कर्नल ईडन की ओर से अंग्रेजों ने मेवाड़ में अंग्रेजी राजस्व नीति थोपने की ब्रिटिश सरकार की नीति के अनुरूप 'भू-राजस्व सर्वे की योजना' सरकार के सामने प्रस्तुत की गई।

इस नीति का मेवाड़ में व्यापक विरोध होने के कारण राज्य शासन के प्रत्येक विभाग में परिवर्तन करने का अंग्रेज अधिकारियों का उत्साह ठंडा पड़ गया परन्तु उनके प्रयास रुके नहीं।

अंग्रेजों द्वारा जमींदारी सेटलमेंट से किसानों में आक्रोश

वर्ष 1871-72 में अंग्रेजों द्वारा राजस्व पद्धति में परिवर्तन के लिए जमींदारी सेटलमेंट का प्रयास किया गया तथा इसमें विफल रहने पर 1872 में तीन वर्ष के लिए एक त्वरित, बिना लम्बी प्रक्रिया के सेटलमेंट किया गया।

इस सेटलमेंट में सारी जमीन नाप कर उसका उपजाऊपन और सिंचाई की सुविधा के अनुसार वर्गीकरण करके प्रत्येक किसान की जमीन पर नकद लगान तय कर दिया गया। अब कोई भी किसान अपनी जमीन के कितने भी हिस्से पर खेती करे तथा मौसम के कारण फसल खराब हो जाए तो भी उसे नियत लगान चुकाना ही था। किसानों में इस बात की शिकायत थी कि किसी भी तरह की खेती नहीं करने पर भी लगान तो चुकाना ही था। नई व्यवस्था में कृषकों की हालत खराब हो गई। अत: कृषकों के घरों में असन्तोष बढ़ गया।

जनता द्वारा मेवाड़ छोड़ने का निर्णय

1875 में बनास नदी में बाढ़ आ जाने से सकरावास के अधिकांश खेतों की फसल बह गई अथवा खराब हो गई। अत: इस राजस्व वसूली व्यवस्था का व्यापक विरोध हुआ। किसानों का प्रतिनिधि मंडल वरिष्ठ किसान रत्ना जी व उनके पुत्र नन्दा जी टाँक के नेतृत्व में उदयपुर पहुंचा। इस प्रतिनिधि मंडल की बात को नहीं सुना गया। प्रतिनिधियों ने वापस सकरावास आकर गांव में सभी महिला-पुरुषों से मिल बैठकर चर्चा की। **तब रत्ना जी टाँक की पत्नी (नन्दा जी की माँ) ने सभी महिलाओं से बात कर मेवाड़ छोड़कर मालवा जाने का प्रस्ताव रखा जिसे लगभग सभी लोगों ने स्वीकार किया।** रेलमगरा हाकिम चतुरभुज गोटेवाला को सूचित कर दिया कि यदि महाराणा स्वरूप सिंह के समय की राजस्व व्यवस्था (Rules and System) की पुन: स्थापना नहीं की गई तो हम सभी मेवाड़ छोड़कर मालवा की ओर निकल जाएंगे।

समझाइश का प्रयास

2 नवम्बर, 1875 को रेलमगरा हाकिम चतुरभुज गोटेवाला ने बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों के लाव-लश्कर सहित पलायन की सूचना महाराणा को भेजी। इस पर माल हाकिम (Revenue Secretary) द्वारा जिला हाकिमों को लोगों को समझाने के लिए भेजा गया।

मेवाड़ छोड़ चले जाने के कृषकों के निर्णय से मेवाड़ में खाद्य सामग्री के उत्पादन पर तो प्रभाव पड़ता ही, राज्य की आर्थिक स्थिति भी विकृति की ओर जाने लगती। तत्काल महकमा खास द्वारा लालचन्द पंचोली को लोगों को समझाने के लिए रेलमगरा भेजा गया। उन्होंने लोगों को महाराणा के आने तक रुकने हेतु समझाया, रत्ना जी, नन्दा जी आदि रुक गए। पर कुछ लोग मालवा चले गए। महाराणा तथा पोलिटिकल एजेन्ट राज्य से बाहर थे इसलिए महकमा खास अंतिम निर्णय लेने में असमर्थ था। 3 नवम्बर को पोलिटिकल एजेन्ट को मौका रिपोर्ट भेजी गई।

सकरावास गांव से उदयपुर आते समय नन्दा जी की मां अपने साथ निशानी के रूप में खेजड़ी का एक पौधा लेकर आई जिसे उनके लिए आंवटित स्थान हाथीपोल के अन्दर कारीगरों के मुहल्ले में लगा दिया जो अब एक वृक्ष का रूप ले चुका है।

दिया मांग-पत्र

7 नवम्बर को रत्ना जी व नन्दा जी टाँक ने किसानों की ओर से लालचन्द पंचोली को 26 मांगों का मांग पत्र दिया। इसमें 1871-72 के सेटलमेन्ट को समाप्त करने की मांग प्रमुख थी। महकमा खास के लालचन्द ने लोगों में फूट डालने का प्रयास किया। पर नन्दा जी की माँ के नेतृत्व में महिलाओं ने एकता का परिचय दिया। लगभग तीन सप्ताह बाद किसानों की मांग स्वीकार किए जाने के आश्वासन पर लोगों ने गांव लौटना स्वीकार किया।

पंचोली लालचन्द ने 6 दिसम्बर को बातचीत के लिए किसान प्रतिनिधियों को उदयपुर बुलाया। रत्ना जी व नन्दा जी टाँक वार्ता के लिए उदयपुर गए व आश्वासन के अनुरूप उनकी सभी मांगे मान ली गई। 26 मांगों के मान लिए जाने से पता चलता है कि अंग्रेजी प्रभुत्व के स्थापित होने के पश्चात् राज्य में कितने परिवर्तन किये गए थे।

गौरवशाली घटना

कृषक आन्दोलन के इतिहास में महिला-पुरूष एवं बच्चों द्वारा की गई अभूतपूर्व हड़ताल की यह गौरवशाली घटना है। इतने बड़े पैमाने पर परिवार सहित राज्य छोड़ने की धमकी को क्रियान्वित करना किसानों की संगठन कुशलता का अनुपम उदाहरण है।

उदयपुर आने का निमंत्रण

मांगें मान लिए जाने के बाद महाराणा के सलाहकार बिहारीलाल जानी व कविराज श्यामलदास ने रत्ना जी व नन्दा जी टाँक को उदयपुर शहर के विकास के लिए उदयपुर आने का निमंत्रण दिया। यहाँ यह भी बताना आवश्यक है कि रत्ना जी व नन्दा जी एक कुशल शिल्पी थे। उन्होंने वापस गांव आकर अपने परिवार में बात कर उदयपुर जाने का निर्णय लिया पर इस बीच रत्ना जी की मृत्यु हो गई। बाद में नन्दा जी व उनकी मां ने उदयपुर आने का निर्णय लिया।

सकरावास गांव से उदयपुर आते समय नन्दा जी की मां अपने साथ निशानी के रूप में खेजड़ी का एक पौधा लेकर आई जिसे उनके लिए आंवटित स्थान हाथीपोल के अन्दर कारीगरों के मुहल्ले में लगा दिया जो अब एक वृक्ष का रूप ले चुका है। इसके पास स्थित पोल को वर्तमान में 'खेजड़ी की पोल' कहा जाता है। खेजड़ी के वृक्ष को सभी लोग पूजते हैं व आसपास के लोगों से बात करने पर पता चला कि यह वृक्ष एक डोकरी ने लगभग 100-150 वर्ष पूर्व लगाया था। नन्दा जी टाँक के उदयपुर आने पर महाराणा द्वारा उन्हें कृषि के लिए रेलवे ट्रेनिंग स्कूल वाली जमीन तथा 1882 में धोली बावड़ी पर रहने के लिए जमीन दी।

नन्दा जी द्वारा उदयपुर में वासदरे मगरे पर सज्जनगढ़ तथा मोतीचोहट्टा में लेन्सडाउन हॉस्पीटल, (अभी आयुर्वेद हॉस्पीटल) हाथीपोल बाहर सराय तथा धोली बावड़ी का निर्माण कराया गया।

अंग्रेजों द्वारा परंपरागत भू-राजस्व परिवर्तन कई स्थानों पर कृषक आंदोलन का बड़ा कारण बना। परन्तु अंग्रेज चालबाजी, शक्ति और साधनों के आधार पर भू-बन्दोबस्त के प्रयास में सफल रहे। मेवाड़ के किसानों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य की ताकत के विरुद्ध कड़ा प्रतिरोध सम्पूर्ण भारत में किसान आन्दोलन के इतिहास में एक गौरवपूर्ण अध्याय है।

आन्दोलन में महिला नेतृत्व अपने आप में महत्वपूर्ण घटना है। अभी तक किसी इतिहासकार द्वारा प्रकाश में नहीं लाए जाने के कारण इतनी महत्वपूर्ण घटना से लोग अनजान ही रहे।

(लेखक उदयपुर में भूजल वैज्ञानिक हैं)

स्वाधीनता के संघर्ष में जनजातीय बलिदान का प्रतीक

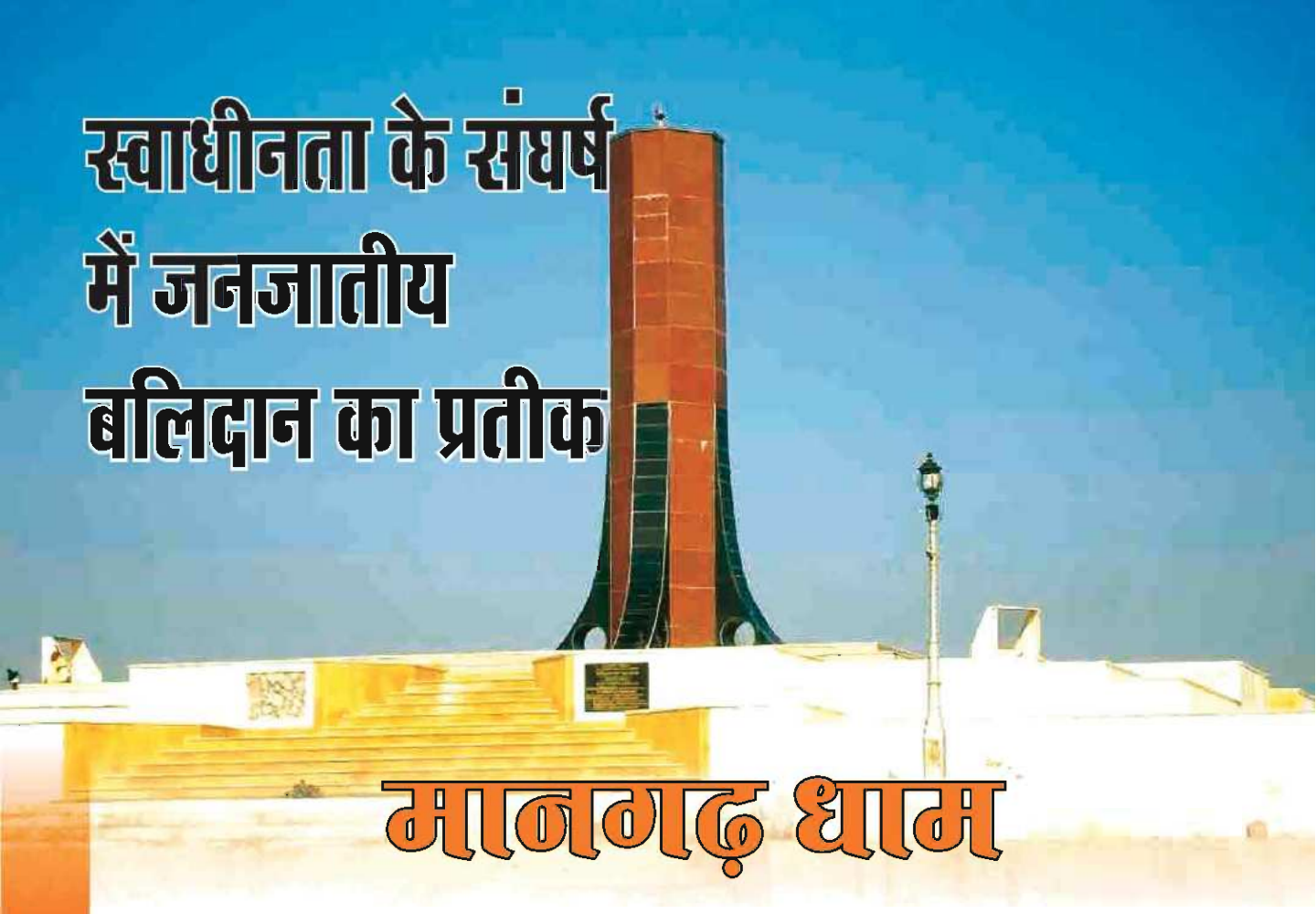

मानगढ़ धाम

● डॉ. कैलाश सोडाणी

गोविन्द गुरु द्वारा भीलों में उत्पन्न की गई जागृति और एकता से घबरा गए थे अंग्रेज और रियासती राजा। शुरू हो गए थे भीलों पर उनके अमानवीय अत्याचार। 17 नवम्बर,1913 को मानगढ़ में हो रहे महासम्मेलन में हजारों भीलों की भीड़ एकत्रित हुई थी। यह अंग्रेजों को सहन नहीं हुआ। बड़ोदा और खैरवाड़ा से अंग्रेज बटालियनों ने भीड़ को घेर कर हमला कर दिया था। बलिदान हो गए 1500 जनजातीय बन्धु-भगिनी। गोविन्द गुरु व 900 लोग बंदी बना लिए गए। अंग्रेजों के आतंक और क्रूरता का प्रतीक था मानगढ़ नरसंहार।

भारतीय स्वतत्रंता संग्राम की महायात्रा में राजस्थान की माही, सोम, जाखम की सदानीरा गंगा सदृश नदियों के वरदान से सिंचित वनवासियों के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। यह भी सत्य है कि इतिहास लेखन की यह त्रासदी रही है कि स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समाज के बलिदान को इतिहास में वह स्थान व नाम नहीं मिला जिसका वह हकदार था क्योंकि इतिहास लेखन की कलम अशिक्षा के कारण जनजाति बन्धुओं के हाथ में नहीं थी।

गोविंद गुरु का आविर्भाव

अंग्रेजी दासता में बंधी देशी रियासतों के शासन में गरीबों एवं पिछड़ों की सेवा करना भी चुनौती पूर्ण था। ऐसे युग में अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा स्वाधीनता की लौ वागड़ क्षेत्र में जीवंत करना एवं रखना एक अदम्य प्रेरक पुंज महात्मा द्वारा ही संभव है, वह अमर नाम है- गोविन्द गुरु। ढोल-मंजिरों की ताल और भजन की स्वरलहरियों से आम जनमानस को स्वाधीनता के लिए उद्वेलित करने के लिए गोविन्द गुरु ने 1890 में 'संप सभा' नामक संगठन बनाया। 'संप' अर्थात् मेल-मिलाप व एकता, व्यसनों व कुप्रथाओं का परित्याग तथा अंग्रेजों के अत्याचारों का मुकाबला करने जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन। बांसवाड़ा जिले के मानगढ़ धाम को इसका केन्द्र बनाया गया।

भगत आंदोलन से भयभीत अंग्रेज व राजा

गोविन्द गुरु ने समस्त जनजाति क्षेत्र के लोगों को अपने भगत आन्दोलन से जोड़ने के लिए गांव-गांव में 'धूणी' की स्थापना की तथा 24-25 धूणीयों पर एक धाम की रचना की। इस प्रकार 1800 धूणीयों एवं 72 धामों के माध्यम से जनजागृति का काम किया जा रहा

था। स्वाधीनता की अलख जगाई जा रही थी। गोविन्द गुरु के भगत आन्दोलन से अंग्रेज एवं स्थानीय रियासतें भयभीत होने लगीं। उन्होंने षड्यंत्रपूर्वक इस आन्दोलन को कुचलने का प्रयास किया। भीलों को बिना अपराध जेलों में डाला जाने लगा। शराब में मूत्र मिलाकर जबरदस्ती पिलाया गया। माँ-बहनों का अपहरण व बलात्कार होने लगा। आन्दोलन के केन्द्र धूणीयों में पेशाब व शराब डालकर भ्रष्ट किया जाने लगा। गोविन्द गुरु ने अपने अनुयायियों से कहा ''शान्तिपूर्वक इन अत्याचारों का प्रतिकार करो, अन्याय सहना भी पाप है। चाहे राजा हो या अंग्रेज इनसे डरने की जरूरत नहीं है।'' जनता में जोश आ गया। थानों का घेराव होने लगा। अनेक पुलिस स्टेशनों में आग लगाई गई। गढरा थानेदार गुल मोहम्मद की हत्या कर दी गई। इन घटनाओं से भील समुदाय का मनोबल बढ़ गया। भगत आन्दोलन में तेजी आ गई।

आई थी भारी भीड़

प्रतिवर्ष की भाँति मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 17 नवम्बर, 1913 को महासम्मेलन के अवसर पर हजारों की संख्या में भगतों की भारी भीड़ एकत्रित हुई। गोविन्द गुरु ने हुंकार भरी कि हमारा मार्ग धर्म का है, इसलिए विजय सुनिश्चित है परन्तु सावधान रहना है। अंग्रेज इस विशाल संख्या को देखकर चुप नहीं बैठेंगे, हमला करेंगे। अन्तत: अंग्रेजों को देश छोड़कर भागना पड़ेगा।

अंग्रेजों ने भेजी बटालियनें

दूसरी ओर डूंगरपुर, बांसवाड़ा व कुशलगढ़ की रियासतें तथा अंग्रेज मिलकर यह योजना बना रहे थे कि सैनिक बटालियनें मानगढ़ भेजकर एकत्रित जन समूह को कुचल दिया जाए। 12 नवम्बर, 1913 को मेजर बैली के नेतृत्व में बड़ौदा से और मेजर स्टोइकले के नेतृत्व में खैरवाड़ा से सैनिक बटालियन मानगढ़ के दोनों छोरों पर पहुँच गई। इसके अलावा देशी रियासतों के सैनिक दल भी आनन्दपुरी पहुंच गए। 16 नवम्बर को एक धमकी भरा पत्र अंग्रेजों ने गोविन्द गुरु को भेजा, जिसमें लिखा ''आप भारी संख्या में एकत्रित हुए हैं, यह हमें स्वीकार नहीं है। हमने चारों ओर से आपको घेर लिया है आप सभी कल प्रात: सूरज निकलने से पूर्व पहाड़ी से नीचे उतर जाएं, अन्यथा हम मशीनगनों से सभी को भून देंगे। गुरुजी कहते है – वे अंग्रेजों की चुनौती को स्वीकार करते है और अब मैं संघर्ष करते हुए स्वाधीनता प्राप्त कर के ही चैन लूँगा।

गोविंद गुरु

हमला, संघर्ष और नरसंहार

कहीं कोई भय एवं निराशा नहीं। सर्वत्र उत्साह का वातावरण बन गया था। जन समूह अंग्रेजों के हमले का प्रतिकार करने के लिए कटिबद्ध था। 17 नवम्बर, 1913 को प्रात: 6.00 बजे अंग्रेज बटालियनों ने रायफलों व मशीनगनों से हमला बोल दिया। भील समुदाय टोपीदार बंदूकें व तीर कमान से कब तक मुकाबला करते ? लगभग 1500 आदिवासी बलिदान हो गए, हजारों घायल हो गए तथा गोविन्द गुरु को गिरफ्तार कर लिया गया। गोविन्द गुरु व 900 लोगों को संतरामपुर जेल में बन्दी बनाया गया। देश भर में इस भारी नरसंहार की सर्वत्र निन्दा हुई। अंग्रेजों के खिलाफ उग्र वातावरण का निर्माण हुआ।

अंग्रेजों के आतंक एवं क्रूरता के नंगे नाच से जलियांवाला बाग की भाँति मानगढ़ बलिदान का अमर स्मारक बन गया। गोविन्द गुरु के बलिदान को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु राजस्थान एवं गुजरात में गोविन्द गुरु के नाम से विश्वविद्यालयों की स्थापना प्रशंसनीय कार्य है।

वागड़ की पुण्य धरा की कोख से जन्मे अनेक स्वतंत्रता सेनानी माही की पुण्य भूमि को युगों-युगों तक गौरवान्वित करने हेतु मर-मिट गए। नाना भाई खाट, काली बाई, भीखा भाई, भोगीलाल पण्ड्या, गौरीशंकर उपाध्याय, चन्दूलाल गुप्ता, हरिदेव जोशी, अमृतलाल परमार, देवराम शर्मा, किशनलाल गर्ग, शिवलाल कोटड़िया, कुरीचन्द जैन, धूलजी वर्मा, भैरवलाल वर्मा, तुलसीराम उपाध्याय, लालशंकर जोशी, प्रताप वर्मा जैसे सैकड़ों सेनानियों को शत-शत नमन।

दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय समाज द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गए संघर्ष के कारण यहां की धरा में आज भी उस पवित्र खून की पावन गंध है। आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास में हम उसे यथेष्ठ स्थान व सम्मान दिलाएं। यही स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के अवसर पर अमर बलिदानियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर एवं गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा के पूर्व कुलपति हैं)

मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में जनजातीय आन्दोलन

● डॉ. प्रणव देव

मेवाड़ का एकी आंदोलन शासकीय अन्याय के विरुद्ध जाग्रत समाज के सफल संघर्ष का प्रेरक उदाहरण है। इसमें जातिगत समन्वय-एकता इस आंदोलन की सफलता का आधार स्तम्भ था। स्वतंत्रता अर्थात् शासकीय अन्याय से मुक्ति का यह पठनीय इतिहास अध्याय है।

मेवाड़ के सामन्तवादी समाज में जनजातियों के मुक्तिदाता के रूप में चर्चित श्री मोतीलाल तेजावत का जन्म 8 जुलाई, 1887 ई. (वि.सं. 1944, ज्येष्ठ शुक्ल प्रथमा) को मेवाड़ रियासत की फलासिया तहसील के कोलियारी गांव (अब झाड़ोल तहसील उदयपुर जिला राजस्थान) में ओसवाल परिवार में हुआ था। जनजातीय समाज के प्रति इनके प्रेम को देखते हुए इन्हें 'जनजातियों का मसीहा' व 'बावजी' कहकर सम्बोधित किया जाता रहा है। श्री तेजावत के पिता श्री नन्दलाल तथा माता श्रीमती केसरबाई थी। पांचवी कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त होने के बावजूद इन्हें हिन्दी, उर्दू एवं गुजराती भाषा का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त था। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे 8 वर्ष तक झाड़ोल ठिकाने में कामदार के पद पर कार्यरत रहे। इस दौरान स्थानीय लोगों के प्रति सामन्त एवं उनके कारिन्दों के दमनकारी व्यवहार को देखा जिससे दुखी होकर सेवा से त्याग पत्र दे दिया। ठिकाने की नौकरी छोड़कर परचूनी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। जनजाति क्षेत्रों में घूम-घूमकर मिर्च-मसाला बेचते हुए पोसीना ठिकाने में सामलिया नामक स्थान पर लगने वाले मेले में नियमित रूप से दुकान लगाते थे। इस प्रकार जब वह भीलों के अत्यधिक निकट पहुंचे तो उनके कष्टों से द्रवित होकर इन्होंने उनके उत्थान हेतु कार्यक्रम आरम्भ किए। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती लहरबाई ने इनके सामाजिक जागरण के कार्य में कदम-कदम पर पूर्ण समर्पण के साथ सहयोग दिया था। सन 1917 ई. में भीलों के साथ-साथ गरासिया जनजाति ने भी जमींदारों के शोषण से मुक्ति के लिए आन्दोलन आरम्भ किया।

एकी आन्दोलन का शुभारम्भ

श्री मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में आदिवासियों ने जमींदारों के शोषण से उत्पीड़ित होने पर सन 1917 ई. में महाराणा को शिकायत-पत्र भेजा। महाराणा ने समस्याओं पर विचार किया। किसानों को कुछ रियायतें दी। कूंता की राशि मुखिया की सलाह से तय होगी। कूंता के समय पेटियां नकद लेने की व्यवस्था की गई। बेगार समस्या की जांच कराई जाएगी। महाराणा की इन रियायतों से किसान संतुष्ट नहीं हुए। विवश होकर भील-गरासियाओं ने आन्दोलन आरम्भ कर दिया।

श्री तेजावत के नेतृत्व में सन 1921 ई. में वैशाख पूर्णिमा को चित्तौड़ जिले के मातृकुण्डियां नामक स्थान में लगने वाले मेले में 'एकी आन्दोलन' का शुभारम्भ किया गया। एकी आन्दोलन का नारा ''ना हाकिम ना हुकम''था।

एकी आन्दोलन का मूल उद्देश्य भारी लगान, अन्यायपूर्ण लगानों और बेगार से किसानों को मुक्त करवाना था। खालसा क्षेत्र में रहने वाले भीलों को यह निर्देश दिया गया कि वे जमींदार को बेगार न दें। खालसा क्षेत्र के मादड़ीपट्टा के भील किसानों ने 8 जुलाई, 1921 को जागीरदार को कर व बेगार देने से मना कर दिया। 13 जुलाई को जवास के कामदार ने गाँव के गमेती से कर वसूलने के लिए सिपाही भेजे, लेकिन भील किसानों ने कर देने से इन्कार करते हुए कहा कि जब तक खालसा क्षेत्र के भीलों का महाराणा मेवाड़ कष्ट निवारण नहीं करते तब तक वह कर नहीं देंगे। इतना ही नहीं, मोतीलाल तेजावत की सलाह से समस्त भोमट क्षेत्र के भीलों ने जागीरदारों को कर देना बन्द कर दिया।

महाराणा को ज्ञापन

केशर खेड़ी के भोज में महाराजा को ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। तेजावत के नेतृत्व में सात-आठ हजार किसान पिछोला झील पर एकत्रित हो गए। ''मेवाड़ पुकार'' नामक 21 सूत्री मांगों का आवेदन-पत्र महाराजा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। महाराणा ने तीन महत्वपूर्ण मांगों (वन सम्पदा, बैठ-बेगार एवं सूअरों) के अलावा सभी मांगे स्वीकार ली। महत्वपूर्ण मांगों की अस्वीकृति के कारण किसानों ने राजकीय आदेशों की अनुपालना न करने का निर्णय लिया। इन 3 मांगों के लिए श्री तेजावत ने जगदीश मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े होकर घोषणा की कि भील किसान इन मांगों के प्रति राज्य के आदेशों की अनुपालना नहीं करेंगे। यद्यपि दोनों राज्य और आन्दोलनकारियों के बीच समझौते का मार्ग प्रशस्त हुआ था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप मेवाड़ के आदिवासी किसान एक होकर तेजावत के नेतृत्व में संगठित हुए। एकी आन्दोलन मेवाड़ की सीमा के बाहर ईडर, सिरोही, पालनपुर, दांता, विजय नगर, प्रतापगढ़ आदि कई रियासतों में फैल गया था।

झाड़ोल का आन्दोलन

दुर्भाग्य से महाराणा द्वारा स्वीकृत की गई बाकी मांगों को आचरण में परिणत नहीं किया गया। तेजावत की क्षमता और शक्ति का सम्पूर्ण समर्पण आदिवासियों की सेवा के लिए था, अब तेजावत ने उदयपुर से झाड़ोल की ओर प्रस्थान किया उसके साथ सैंकड़ों भील थे। रास्ते में इनकी संख्या बढ़ती ही जा रही थी। झाड़ोल के जागीरदार वर्ग ने यह अफवाह फैलाई कि तेजावत झाड़ोल में लूटपाट करना चाहता है। राज्य की ओर से हाकिम अमरसिंह राणावत के नेतृत्व में पुलिस फोर्स भेजी गई। तेजावत से जब अमरसिंह राणावत ने पूछा कि क्या तुम झाड़ोल को लूटना चाहते हो तो उसने इस अफवाह को निर्मूल बताया। राणावत श्री तेजावत के उत्तर से संतुष्ट हो गया और उदयपुर लौट गया। परिणामत: झाड़ोल, कोलियारी व मादड़ीपट्टा में यह आन्दोलन फैल गया।

तेजावत और उनके साथियों ने बदराना गांव में एक बैठक का आयोजन वि.सं. 1978 ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी एवं अमावस्या को किया। जिसमें लगभग 500 से 700 भील प्रतिनिधि एकत्र हुए थे। **झाड़ोल में आन्दोलन का श्रीगणेश करने के लिए 5 व्यक्तियों को चुना 1. बाला लुहार 2. नीला शंकर ब्राह्मण 3. किशन जोशी 4. लच्छीराम साधु 5. अम्बावा कुमार।**

झाड़ोल के ठाकुर ने 19 अगस्त, 1921 ई. को श्री तेजावत को भीलों को भड़काने और उन्हें भूमि कर न देने एवं बेगार करने से रोकने के कथित अपराध में गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी की खबर तेजी से फैली जिससे शीघ्र ही जवास, पहाड़ा और मादड़ीपट्टा गाँव के लगभग 7 हजार भील झाड़ोल में एकत्रित हो गए और उन्होंने संघर्ष करते हुए श्री तेजावत को छुड़ा लिया।

इस मुक्ति से उत्साहित होकर अब मोतीलाल तेजावत दुगुने उत्साह से एकी आन्दोलन में जुट गए। अक्टूबर 1921 को पानरवा जागीर के भील भी एकी आन्दोलन से जुड़ गए और उन्होंने पानरवा के राणा को भूमि लगान देना व बेगार करना बन्द कर दिया। तेजावत ने महकमा खास को

शिकायती पत्र प्रस्तुत किया। महकमा खास ने भी भूमि बन्दोबस्त प्रारम्भ करने का आश्वासन दिया। आन्दोलनकारी इस आश्वासन से संतुष्ट नहीं हुए। नवम्बर 1921 ई. को जूड़ा जागीर के किसानों ने भी लगान देना बन्द कर दिया। इतना ही नहीं बिना अनुमति के आरक्षित वनों में पशुओं को चराना तथा सुअरों का शिकार करना प्रारम्भ कर दिया। मादड़ी ठिकाने के किसानों ने अपनी समस्याओं का मांग पत्र पूर्ण विवरण के साथ जागीरदार को प्रस्तुत करते हुए उन्हें समाप्त करने का अनुरोध किया।

पड़ोसी राज्य डूंगरपुर में बेगार खत्म हुई

इस आन्दोलन के प्रभाव को देखते हुए पड़ोसी राज्य डूंगरपुर के महारावल ने यह सोचकर कि भील आन्दोलन उसके राज्य में न फैल जाए, जुलाई 1921 ई. में ही अपने राज्य में बेगार समाप्ति के आदेश करवाए। भीलों का विश्वास था कि मोतीलाल तेजावत गांधी बाबा के दूत है। वे उसे अवतारी पुरुष मानते थे। जिससे भोमट क्षेत्र के ज्यादातर ठिकानेदार भयभीत थे। फलत: दिसम्बर 1921 ई. में उन्होंने मेवाड़ के रेजीडेन्ट से प्रार्थना की कि तेजावत को गिरफ्तार करवाया जाए। दूसरी ओर तेजावत की सलाह पर भील मुखियाओं ने कोटड़ा में स्थित असिस्टेन्ट पोलिटिकल सुपरिटेन्डेन्ट को एक मांग पत्र भेजकर यह लिखा कि रबी फसल पर सवा रुपया और खरीफ फसल पर 15 सैर मक्का लगान के रूप में देंगे। वे किसी अन्य प्रकार की बेगार नहीं करेंगे। इसके बाद जब झाड़ोल ठिकाने का राजस्व अधिकारी लगान वसूल रहा था, उस समय श्री तेजावत ने 200 भीलों के साथ वहां पहुँचकर उससे एकत्रित राजस्व छीन लिया।

परिणामस्वरूप 31 दिसम्बर,1921 को महाराणा ने तेजावत को पुन: गिरफ्तार करने के आदेश प्रसारित करते हुए भौमट के कोटड़ा और खेरवाड़ा क्षेत्रों में 50 से अधिक भीलों के एकत्र होने पर रोक लगा दी और तेजावत को गिरफ्तार करने वाले को 500 रुपये का इनाम देने की घोषणा की, साथ ही ठिकानेदारों को सलाह दी की वे पोलिटिकल सुपरिटेन्डेन्ट से चर्चा कर अपनी प्रजा की उचित मांगें स्वीकार करें और क्षेत्र में शांति स्थापित करें।

रियायतें

अगले वर्ष सन 1922 ई. में श्री तेजावत के मेवाड़ से सिरोही जाने पर जवास, पाड़ा, छम, थाना और मादड़ी खेरवाड़ा जैसे भोमट क्षेत्र के ठिकानेदारों ने

> जहां एक ओर भीलों में सांस्कृतिक संतरण का श्रेय श्री गोविन्द गिरी को जाता है, वहीं सामाजिक जागरण की अलख जगाने का श्रेय मूलत: श्री मोतीलाल तेजावत को ही दिया जाना चाहिए।

नए नियमों की घोषणा कर दी। इन नियमों के अनुसार बेगार में थोड़ी ढील दी गई और लाग-बागों में कमी की गई। मेवाड़ सरकार ने भूमि लगान में 12 से 20 प्रतिशत की छूट दी। यह रियायतें ब्रिटिश अधिकारियों के साथ चर्चा करने के बाद मेवाड़ राज्य के रेजीडेन्ट की अनुमति से भोमट क्षेत्र में 1 जनवरी, 1922 ई. से लागू की गई थी। बेगार के बदले निर्धारित दरों से मजदूरी देने के भी नियम बने।

श्री मोतीलाल तेजावत जनवरी 1922 ई. में सिरोही चले गए। एकी आन्दोलन का संचालन करते हुए भील-गरासियों की सभाओं को सम्बोधित किया। किसानों को किसी भी प्रकार का लगान न देने का निर्देश दिया। भील-गरासियों ने कर नहीं दिया। जिन किसानों ने कर दिया उनकी फसल को नष्ट कर दिया। उत्तेजित आदिवासियों ने राजस्व अधिकारियों के घरों को लूट लिया।

6 मई,1922 का जनसंहार

दीवान ने 5 अप्रैल, 1922 को एजीजी से सैन्य कार्रवाई करने की विनती की। 12 अप्रैल को फौज ने सियाना गांव पर आक्रमण कर दिया। जिसमें जन-धन की काफी हानि हुई।

सिरोही राज्य के रोहिड़ा तहसील के बालोलिया, नयावास व भूला गांव में किसानों ने लगान जमा नहीं करवाया। थाने में आग लगा दी। मणिलाल कोठारी की मध्यस्थता से भीलों व एजीजी में समझौता हुआ। लेकिन एजीजी व सिरोही राज्य प्रशासन समझौते का पालन नहीं कर सके और उन्होंने जनजातियों को लगान चुकाने के लिए कहा। लगान न चुकाने पर सैन्य कार्रवाई की धमकी दी। 6 मई, 1922 को सेना ने अन्धाधुन्ध गोलियां चलाई जिससे गांवों में आग लग गई। अनेक लोग मारे गए। इस नरसंहार घटना की सर्वत्र आलोचना की गई। राजस्थान सेवा संघ ने अपनी रिपोर्ट में मृतकों की संख्या 50 व घायलों की संख्या 150 बताई। इन गांवों के मुखिया ने किसी भी आन्दोलन में भाग न लेने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप महाराव ने कई रियायतें प्रदान की। जिन किसानों के घर जल गए थे उनसे इस वर्ष लगान की वसूली नहीं की गई। घर निर्माण के लिए जंगल से लकड़ी व घास लाने की अनुमति दी गई। चोरी किए गए पशुओं के सम्बन्ध में छानबीन करने के लिए एक समिति का गठन किया गया। इन रियायतों से आंदोलन अस्थाई तौर पर शांत हो गया।

नीमड़ा का भील सम्मेलन और जनसंहार

यह सम्मेलन 7 मार्च, 1922 ई. तत्कालीन विजय नगर के नीमड़ा गांव में सम्पन्न हुआ था। जिसमें श्री तेजावत के नेतृत्व में हजारों की संख्या में भील एकत्रित हुए तथा इन निहत्थे आन्दोलनकारियों पर पुलिस ने अन्धाधुन्ध गोलियां चलाई जिसमें सैंकड़ों आन्दोलनकारी मारे गए।

इस जघन्य जनसंहार के बावजूद

मोतीलाल तेजावत हताश नहीं हुए और उन्होंने सन 1923 में पोसीना व सिरोही राज्य में भील व गरासियों को संगठित कर आंदोलन का सूत्रपात किया। सरकार को शंका होते ही श्री तेजावत की गिरफ्तारी के आदेश प्रसारित करने पड़े। श्री तेजावत को पकड़वाने वाले को एक हजार रुपये का इनाम देने की भी घोषणा की गई। सरकार तेजावत को पकड़ने में असफल रही।

महात्मा गांधी द्वारा आत्मसमर्पण की सलाह

महात्मा गांधी ने यंग इंडिया में एक लेख लिखकर श्री मोतीलाल तेजावत को आत्मसमर्पण की सलाह दी। समस्या के समाधान के लिए समझौते का मार्ग बताया। अतः 8 वर्षों तक भूमिगत रहने के बाद 4 जून,1929 ई. को ईडर राज्य के खेड़ब्रह्म गांव में पुलिस की उपस्थिति में आत्मसमर्पण कर दिया। श्री तेजावत को कारावास की लम्बी सजा दी गई।

महात्मा गांधी के सहयोगी मणिलाल कोठारी के समझाने के बाद 23 अप्रैल, 1936 के दिन तेजावत को इस शर्त पर रिहा किया गया कि वह महाराणा की अनुमति के बिना मेवाड़ राज्य से बाहर नहीं जाएगा और किसी भी राजनैतिक गतिविधि में भाग नहीं लेगा।

दिसम्बर 1939 में श्री तेजावत ने आगरा के समाचार पत्र 'सैनिक' में मेवाड़ के आदिवासी क्षेत्रों में जाने के अपने उद्देश्य की घोषणा की। सामाजिक सुधार की पहल पुनः प्रारम्भ करते हुए आदिवासी क्षेत्रों का दौरा किया तो पुनः मेवाड़ सरकार ने 24 जनवरी, 1946 ई. को इन्हें कोटड़ा में गिरफ्तार कर लिया। सन 1947 में देश को स्वतंत्रता प्राप्त होने पर इन्हें मुक्त कर दिया गया। मेवाड़ में किसान आन्दोलन के प्रणेता और जनजातियों के अनन्य प्रेमी इस स्वतंत्रता सेनानी का निधन आजादी के बाद 5 दिसम्बर, 1963 ई. खेड़ब्रह्म, पालनपुर गुजरात में हुआ।

श्री मोतीलाल तेजावत ने भीलों में अभूतपूर्व जागृति का संचार किया। जहां एक ओर भीलों में सांस्कृतिक संतरण का श्रेय श्री गोविन्द गिरी को जाता है, वहीं सामाजिक जागरण की अलख जगाने का श्रेय मूलतः श्री मोतीलाल तेजावत को ही दिया जाना चाहिए। श्री गोविन्द गिरी ने भीलों को संगठित कर **'सम्प सभा'** का गठन किया, तो श्री मोतीलाल तेजावत ने भीलों में जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास करते हुए उनके अधिकारों की प्राप्ति के लिए **'एकी आन्दोलन'** का सूत्रपात किया। जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार व मेवाड़ एवं सिरोही राज्य की सरकारें भीलों को समान अधिकार व रियायतें देने के लिए बाध्य हुईं। मेवाड़ में प्रजा-मण्डल आन्दोलन के सशक्त कार्यकर्ता श्री मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में हुए जनजातीय आन्दोलन ने मेवाड़ के भील समाज को स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए मूलाधार का कार्य किया।

(लेखक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़ में इतिहास विभाग में सह आचार्य हैं)

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)
जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है
PSB UniC
आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर घर तिरंगा
पीएसबी गृह लक्ष्मी
सावधि जमा योजना
योजना की विशेषताएं
केवल महिलाओं के लिए
विशेष सावधि जमा योजना
परिपक्वता अवधि: 551 दिन
ब्याज: कार्ड दर* + 0.25% अतिरिक्त
ऋण/ ओवरड्राफ्ट सुविधा उपलब्ध
*नियम व शर्तें लागू
1800 419 8300 (टोल फ्री)
हमारा अनुसरण करें @PSBIndOfficial

100+
Hospitals
Pan India

INDIRA IVF
FERTILITY & IVF CENTRE

टोने-टोटके नहीं प्रभावी
इनको मत होने दो हावी

भारत के ग्रामीण आदिवासी अंचलों में आज भी संतान प्राप्ति के लिए निरक्षर लोग टोने-टोटकों, झाड-फूंक व अंधविश्वासों का सहारा लेते है। साक्षरता घर-घर तक पहुंचाने व नि:संतानता से मुक्ति के लिए आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों का प्रचार-प्रसार आवश्यक है।

परामर्श हेतु कौन दम्पति सम्पर्क कर सकते हैं?

कम शुक्राणु | धीमी गतिशीलता
निल शुक्राणु | खराब गुणवत्ता

बंद फेलोपियन ट्यूब | अनियमित पिरियड
अण्डों में खराबी | गर्भाशय में रसोली

नि:संतानता के क्षैत्र में है इन्दिरा आईवीएफ एक जाना पहचाना नाम

उपलब्ध सेवा - फर्टिलिटी जाँच • IUI • IVF • ICSI • लेज़र हेचिंग • ब्लास्टोसिस्ट • हिस्ट्रोस्कोपी • लेप्रोस्कोपी • डोनर सर्विसेज़

इन्दिरा आई.वी.एफ. हॉस्पीटल प्राइवेट लिमिटेड

44 अमर निवास, कुम्हारों का भट्टा, एम.बी. कॉलेज के सामने, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर (राजस्थान)-313001

अधिक जानकारी हेतु 7665009964 | विजिट www.indiraivf.com

• 111 Fertility Centres PAN India • More than 1,00,000 successful IVF cases • Experienced team of 250+ Fertility Doctors

'बेटी बचाओ-बेटी पढाओ' अभियान में सहयोग करें। भ्रूण लिंग परीक्षण करवाना जघन्य अपराध है यह कार्य हमारे यहां नहीं किया जाता है।

Prenatal Sex Determination & Sex Selection is illegal and not done here.

Disclaimer : The models used in the creative is just for illustration purpose only.

स्वतंत्रता संग्राम में नानक भील का बलिदान

बरड़ (बूंदी, राजस्थान) किसान आंदोलन के विशेष संदर्भ में

● डॉ. मोहनलाल साहु

कई प्रकार की लागतों, बेगार, ऊँची दरों पर लगान, युद्धकोष के लिए कर व रिश्वतखोरी से त्रस्त बरड़ के किसानों ने गांव-गांव में चलाया आंदोलन। राज्यादेशों की अवहेलना, कर न देना तथा राज्य कर्मचारियों को खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं कराने पर डटे थे किसान। 2 अप्रैल, 1923 को डाबी की सभा में राज्य ने चला दी गोलियां। शहीद हो गए नानक भील-झंडा गीत गाते हुए।

जब स्वतन्त्रता की अलख जगाई जा रही थी, तब राजस्थान के जंगलों और पहाड़ियों में रहने वाली भील जनजाति भी इस अलख से अछूती नहीं थी। यहाँ यह कार्य गोविन्द गुरु और मोती लाल तेजावत कर रहे थे, जिन्हें ''जनजाति समाज का संगठक'' भी कहा जाता है। ये राज्यों के शोषण व दमनकारी नीतियों के विरुद्ध छोटे-छोटे आन्दोलन के माध्यम से स्वतन्त्रता के लिए लोगों को जाग्रत कर रहे थे। अंग्रेजों ने फसल या जोत पर लगान लेना बंद कर भूमि पर लगान वसूलने की परम्परा रियासतों के माध्यम से आरंभ की थी। इस कारण फसल नष्ट होने पर भी किसानों को लगान देना पड़ता था। जागीरदारों-जमींदारों द्वारा चंवरी कर, तलवार बंधाई कर जैसे कई करों तथा बेगार प्रथा के विरोध में बिजोलिया में किसान आंदोलन आरंभ हो चुका था।

बूंदी राज्य में आंदोलन

बूंदी राज्य के किसानों को भी कई प्रकार की लागतें, बेगार व ऊँची दरों पर लगान देना पड़ता था। इनके अलावा स्थाई युद्धकोष के लिए कर वसूला जाने लगा। त्रस्त किसानों ने बिजोलिया किसान आंदोलन से प्रेरणा लेकर 1922 में बरड़ में आंदोलन आरंभ कर दिया। बरड़ क्षेत्र की सीमाएं बिजोलिया से सटी हुई थीं। राजस्थान सेवा संघ के पंडित नयनूराम आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे। गांधी जी के असहयोग आंदोलन के कारण भी किसानों में सामाजिक व राजनीतिक चेतना उत्पन्न हुई।

बरड़ क्षेत्र के अनेक गांवों में किसानों की सभाएं हुईं। इन सभाओं में ग्रामीण जनों ने खद्दर का उपयोग बढ़ाने, विदेशी कपड़ों का उपयोग रोकने, शराब नहीं पीने व अश्लील गीत न गाने आदि सम्बन्धी निर्णय किए।

सभा करने पर लगायी गई रोक

मई 1922 के अंत में राज्य काउंसिल के दो सदस्यों को किसानों की शिकायतों की जांच हेतु नियुक्त किया गया। उनके साथ पर्याप्त सैन्य दल भी भेजा गया था जिसमें तोपखाना, घुड़सवार एवं पैदल सेना सम्मिलित थी। कुल मिलाकर 200-250 सैनिकों का लवाजमा उनके साथ था। इन्होंने जगह-जगह अपने कैम्प लगाए तथा वहां लोगों को बुला-बुलाकर यह आदेश सुनाए कि सभा करने पर राज्य की ओर से पाबन्दी है। इस कार्रवाई द्वारा उनका उद्देश्य किसानों को आन्दोलन न करने के लिए आतंकित भी करना था।

तीव्र हुआ प्रतिरोध

किन्तु इन सबका किसानों की आन्दोलनात्मक गतिविधियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मई 1922 के अन्तिम दिनों में किसानों की सभाओं का आकार भी अधिक बढ़ गया था। 29 मई को लम्बाखोह नामक गांव में एक सभा आयोजित हुई जिसमें लगभग एक हजार किसान सम्मिलित हुए थे। इस सभा में किसानों ने राज्य काउंसिल के सदस्यों के सैनिक अभियान की खिलाफत का निर्णय लिया और तय किया कि सभी स्त्री व पुरुष अगले दिन निमाना जाएंगे जहां सैन्य दल सहित राज्य के उच्च अधिकारी पहुंचे हुए हैं। दूसरे दिन 30 मई, 1922 को निमाना में 4 से 5

हजार के बीच किसान स्त्रियों सहित पहुंचे। बिजोलिया पद्धति पर किसान पंचायत का गठन किया गया। पंचायत की साप्ताहिक बैठकें करने का प्रावधान रखा गया।

भयभीत राज्य द्वारा दमन

किसानों की बढ़ती हुई गतिविधियों से भयभीत होकर राज्य ने किसान दमन को तीव्र कर दिया था। 10 जून, 1922 को डाबी में 18 किसानों को गिरफ्तार कर बूंदी जेल भेज दिया। सैन्य दल के सदस्य अनेक गांवों में ये धमकियां देते हुए घूमें कि यदि किसान (ग्रामीण जन) कोई भी सभा करेंगे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। किसानों की गिरफ्तारी का क्रम वहीं नहीं रुका तथा 13 जून, 1922 को राजपुरा, नारौली एवं लम्बाखेह में 17 लोग गिरफ्तार किए गए।

महिलाओं की सहभागिता

रास्ते में 300 महिलाओं के जत्थे ने गिरफ्तार किसानों को मुक्त करवा लिया। राज्य सैन्य दल ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए लाठी एवं भालों का खुलकर प्रयोग किया। इस घटना में काफी महिलाएं घायल हुई। राजस्थान सेवा संघ ने इस घटना का खुलकर विरोध किया। इस अवसर पर राजस्थान सेवा संघ ने एक परचा प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था 'बूंदी राज्य में स्त्रियों पर अत्याचार।' इस परचे में महिला आन्दोलनकारियों पर पुलिस के अत्याचारों को उजागर करते हुए इसकी भर्त्सना की गई। राजस्थान सेवा संघ ने इसे लेकर काफी हंगामा खड़ा किया। परिणामतः राज्य ने कुछ छूटें दी, परन्तु बरड़ क्षेत्र के ग्रामीणों ने राज्य द्वारा घोषित छूटों को अस्वीकार कर दिया तथा राजस्थान सेवा संघ के निर्देश पर आन्दोलन यथावत चलता रहा।

गांव-गांव में सभाएं

14 जुलाई,1922 को बूंदी से 14 मील दूर लोइचा नामक स्थान पर एक सभा हुई जिसमें 1200 स्त्री, पुरुष एवं बच्चों ने भाग लिया। इस सभा में यह तय किया गया कि वे भारी संख्या में बूंदी महाराजा के समक्ष पहुंचकर मांगों के समर्थन में अपना पक्ष प्रस्तुत करेंगे। इस प्रकार की सभाएं गांव-गांव में चल रही थी। सभी सभाओं में किसानों ने किसी भी स्थिति में अपनी एकजुटता को बनाए रखने की शपथ ली। डाबी एवं गराड़ा में क्रमशः 28 जुलाई व 3 अगस्त,1922 की सभाओं में किसानों ने यह निर्णय किया था कि वे राज्य के आदेशों की अवहेलना करेंगे तथा भुगतान करने पर भी राज्य कर्मचारियों को खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं कराएंगे।

अक्टूबर 1922 में बरड़ का किसान आन्दोलन खेराड़ क्षेत्र की ओर बढ़ रहा था। बरून्धन जिले के निवासियों ने राज्य के सुरक्षित घास बीड़ों में चराई हेतु अपने पशु हांक दिए थे तथा उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि जब तक उनकी मांगें नहीं मान ली जाती तब तक वे ऐसा अनवरत रूप से करते रहेंगे।

1922 के आरम्भ में जनवरी से मार्च के दौरान रणवीर सिंह नामक जागीरदार ने इस आन्दोलन का सक्रिय समर्थन किया। इनकी उपस्थिति में 12 फरवरी, 1922 को तीरथ नामक गांव में एक सभा आयोजित हुई जिसमें 3 हजार किसान एकत्रित हुए थे। इस सभा में उसने किसानों को करबन्दी के लिए उत्साहित किया। 13 मार्च, 1922 को पराना नामक गांव में आयोजित एक सभा में निर्णय लिया गया कि गांवों में आन्दोलन के संदर्भ में जांच करने के लिए आने वाले अधिकारियों के साथ केवल पंचायत ही वार्ता करेगी।

इस निर्णय से किसानों की एकता भविष्य के लिए भी सुरक्षित कर दी गई थी। अधिकारियों को भी यह निर्देश दे दिया गया कि वे आन्दोलन के सिलसिले में केवल पंचायत से ही बात करें।

नानक भील का स्मारक

नानक भील द्वारा जागृति

आंदोलन के दौरान गोविन्द गुरु और मोती लाल तेजावत को आदर्श मानने वाला एक साहसी, निर्भीक और जागरूक युवा नानक भील पूर्ण निष्ठा और लगन के साथ क्षेत्र के हर गांव, ढाणी में झण्डा गीतों के माध्यम से लोगों को जागृत कर स्वराज का संदेश पहुंचा रहा था। आन्दोलन दिनों-दिन मजबूत होता जा रहा था, जिससे किसानों के हौसले काफी बुलन्द थे।

बलिदान हो गए नानक भील

2 अप्रैल, 1922 को डाबी में आयोजित एक सभा में किसानों ने बगैर सीमा शुल्क दिए खाद्यान्नों को कोटा ले जाने, राजस्व के भुगतान रोकने तथा राज्य कर्मचारियों को खाद्य सामग्री न देने सम्बन्धी निर्णय लिया। इसी बीच किसान सम्मेलन न होने देने के सभी प्रयास विफल होने पर सभा स्थल पर राज्य पुलिस पहुंची तथा इस सभा को रोकने का प्रयास किया। पुलिस के आदेशों की अवहेलना होने पर बूंदी के पुलिस अधीक्षक ने भीड़ पर गोली चलाने के

आदेश दे दिए। पुलिस द्वारा किसानों पर की गई गोलीबारी में झण्डा गीत गाते हुए युवा नानक भील के सीने पर तीन गोलियां लगीं और वे बलिदान हो गए।

ग्रामीण जनता ने इस बलिदानी नानक भील की देह को गांव-गांव में घुमाया और प्रत्येक घर से प्राप्त नारियलों से बनी चिता पर लेटाकर अंतिम संस्कार किया। राजस्थान सेवा संघ के दबाव से बूंदी के शासक ने जांच हेतु विशेष आयोग नियुक्त किया।

इस घटना के सम्बन्ध में स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधरी ने अपने संस्मरण में लिखा है कि, 'बूंदी के बरड़ इलाके से समाचार आए कि वहां की सेना ने किसानों और उनकी स्त्रियों तक पर हमला कर दिया है। नानक नामक एक भील मारा गया। गोलियों से घायल कुछ अजमेर भी पहुंचे। इस बार भी मैं और सत्य भक्त जी मौके पर भेजे गए। बरड़ की जनता से हमारा परिचय तो था ही। बिजोलिया से लगे हुए, बूंदी के इस बीहड़ इलाके में हम कई बार जा चुके थे, हरि जी वहां कठोर तपस्या की स्थिति में काम कर चुके थे और पं. नयनूराम जी वहीं से गिरफ्तार होकर बूंदी जेल में पहुंच चुके थे। हम जांच के लिए पहुंचे तो वातावरण बड़ा क्षुब्ध था। राज्य की घुड़सवार सेना ने सत्याग्रही स्त्रियों पर घोड़े दौड़ाकर और भाले चलाकर पाश्विक हमले किए थे। इन बहादुर बहनों ने अपने मर्दों का साथ देकर बेगार, लाग-बाग और लगान की ज्यादती का विरोध किया था। रिश्वत बूंदी का सबसे बड़ा अभिशाप था। ऊपर से नीचे तक प्राय: सभी राज कर्मचारी जनता को खुले हाथों से लूटते थे। बरड़ की प्रजा ने इसकी भी खुली मुखालिफत (विरोध) की थी।

नानक भील बन गए प्रेरक

राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा ने उसी समय नानक भील की याद में एक गीत 'अर्जी' शीर्षक से लिखा। नानक भील न केवल बरड़ बल्कि सम्पूर्ण दक्षिणी राजस्थान के किसान व आदिवासियों के उत्साह का स्त्रोत बन गया था। किसान एवं आदिवासियों को जोश दिलाने के लिए बाद तक माणिक्य लाल वर्मा का यह गीत

हम जांच के लिए पहुंचे तो वातावरण बड़ा क्षुब्ध था। राज्य की घुड़सवार सेना ने सत्याग्रही स्त्रियों पर घोड़े दौड़ाकर और भाले चलाकर पाश्विक हमले किए थे। इन बहादुर बहनों ने अपने मर्दों का साथ देकर बेगार, लाग-बाग और लगान की ज्यादती का विरोध किया था। रिश्वत बूंदी का सबसे बड़ा अभिशाप था। ऊपर से नीचे तक प्राय: सभी राज कर्मचारी जनता को खुले हाथों से लूटते थे। बरड़ की प्रजा ने इसकी भी खुली मुखालिफत (विरोध) की थी।

सभाओं में सुनाया जाता रहा।

नानक भील की शहादत बेकार नहीं गई। इस आन्दोलन के दबाव में यहाँ के किसानों को कुछ रियायतें प्राप्त हुई, भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया तथा राज्य के प्रशासन में सुधारों का सूत्रपात हुआ। इस आन्दोलन ने राज्य के अनेक भ्रष्ट कर्मचारी व अधिकारियों को दण्डित भी किया था। बूंदी के लालची कर्मचारी व अधिकारियों की रिश्वतखोरी पर कुछ अंकुश लगा। साथ ही किसानों को बेगार व करों के सम्बन्ध में अनेक छूटें प्रदान की गई जो इसी आन्दोलन का परिणाम था। इस आन्दोलन ने बूंदी राज्य में स्वतंत्रता आन्दोलन का मार्ग भी प्रशस्त किया।

लगाई गई प्रतिमा

डाबी के मुख्य चौराहे पर स्थित पार्क में नानक भील की आदमकद प्रतिमा लगाई गई है। यहाँ प्रतिवर्ष नानक भील की स्मृति में 'आदिवासी विकास मेला' राज्य सरकार की ओर से आयोजित किया जाता है। राजस्थान के किसान आन्दोलन में 'बरड़ किसान आंदोलन' के साथ-साथ 'नानक भील' का नाम प्रमुखता से लिया जाता हैं। 'नानक भील' बरड़ का वह भील रत्न है, जिसने अपनी जनजाति की परम्परा का निर्वहन करते हुए बलिदान दिया और जनजाति के वीर योद्धाओं में अपना तथा अपने क्षेत्र का नाम हमेशा के लिए लिखवा दिया। ''नानक भील'' आज भी क्षेत्र के किसानों के दिलों में जिन्दा है।

(लेखक भारतीय इतिहास संकलन समिति, चित्तौड़ प्रांत के अध्यक्ष हैं)

नीमूचाणा : किसान आंदोलन से जन आंदोलन तक

● धर्मपाल सिंह यादव

अंग्रेजों के हस्तक्षेप से रियासतों में लागू की गई लगान की नई व्यवस्था एवं अन्य करों के विरुद्ध किसानों का संघर्ष राजस्थान के कई भागों में हुआ। अलवर के महाराजा जयसिंह किसान हितैषी और देशभक्त थे परन्तु ऐसे राजा को अंग्रेज हटाना चाहते थे। राजा जब माउंट आबू गए तब पीछे से अंग्रेजों ने प्रधानमंत्री से मिलकर षड्यंत्र रचते हुए किसानों की सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया। किसानों ने इसके विरोध में नीमूचाणा में एक बड़ी सभा की, जिसे घेरकर अंग्रेजों ने बिना सूचना दिए गोलीबारी करते हुए नरसंहार किया। सैकड़ों किसानों का बलिदान हो गया। दो घंटे तक यह जनसंहार चलता रहा। प्रस्तुत है इस घटना का पूरा विवरण।

14 मई, 1925 ज्येष्ठ मास की सप्तमी तिथि, विक्रम संवत् 1982 वृषभ संक्रांति का दिन समय लगभग प्रात: 10 बजे। नीमूचाणा गांव के सामान्य-जन, स्त्रियां अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त थे। अचानक मशीनगनों की आवाज से आसमान थर्रा उठा। पानी भरकर ला रही महिला सोनी धड़ाम से गिरी उसके सिर पर रखा मटका गिरकर फूट गया और उससे बहते पानी का रंग देखते ही देखते लाल हो गया। उसकी पेट की आंतड़िया बाहर आ चुकी थी और खून निकलकर टूटे मटके से निकले पानी के साथ मिलकर दूर तक जा रहा था। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई थी। लोग घरों से निकलकर सुरक्षित स्थान की ओर भागने की कोशिश कर रहे थे। जो गोली के सामने आता जा रहा था नीचे धड़ाम से गिरता जा रहा था। मनुष्य क्या ? पशु क्या? मशीनगन से निकली गोली किसी को नहीं पहचान पा रही थी । देखते ही देखते गांव के कच्चे घर जल उठे। लोग अपना सब कुछ छोड़ जान बचाने हेतु पक्के मकानों की ओर भागे क्योंकि बाहर नालों और खेतों की ओर भागने का रास्ता ही नजर नहीं आ रहा था। जिधर भी मुँह करे उधर सैनिक ही सैनिक और आग उगलती उनकी बंदूकें।

नीमूचाणा राजस्व

नीमूचाणा गांव आज अलवर जिले की बानसूर तहसील में स्थित है। उस समय यह अलवर रियासत के बानसूर निजामत में राजस्व गांव हुआ करता था। जो आज भी उस हृदय विदारक सुबह की गवाही दे रहा हैं। नीमूचाणा राजस्व में उस समय 11 गांव सम्मिलित थे। जिनमें अलवर जिले के बुटेरी, कराणा, उगावास, श्यामपुरा, कल्याणपुरा, सागर, खेड़ा और कोटपूतली के राजनोता, चतुर्भुज आदि गांव सम्मिलित थे।

आंदोलन की शुरुआत

इस आंदोलन का अंकुर बानसूर निजामत में फूटा एवं थानागाजी निजामत भी इससे प्रभावित रही। इस आंदोलन में कृषक वर्ग ने शुरुआत की। क्रांति के किसान नेताओं ने प्रारम्भ में अपनी मांगों को लेकर एवं अंग्रेजों के राजनैतिक हस्तक्षेप से लगान व्यवस्था को प्रभावित करने का विरोध किया। वे भली भांति इस बात से भिज्ञ थे कि तत्कालीन राजा जयसिंह ने कृषि एवं कृषकों के सुधार के लिए समय-समय पर अनेक साहसिक निर्णय लिए हैं। स्वयं एक अंग्रेज अधिकारी चेम्सफोर्ड ने सन 1920 में उनके प्रशासन की भूरी-भूरी प्रशंसा की थी। इस कारण किसान नेता अंग्रेजों के राजनीतिक एजेंट के हस्तक्षेप को समझ चुके थे। उन्होंने कई बार अपनी मांगों को लेकर महाराजा से मिलने की कोशिश भी की। परन्तु अंग्रेज अधिकारियों ने प्रभाव का उपयोग करके मिलने नहीं दिया। जिसके परिणास्वरूप किसानों में क्रांति की चिंगारी भड़क उठी। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर अनेक जगह सभाएं की। विशेषकर चतुर्भुज गांव जो कि जयपुर रियासत का हिस्सा था, श्यामपुरा, कल्याणपुरा, सागर, खेड़ा, बीजापुर, बासु व उगावास आदि थे। जनता में राजनैतिक चेतना स्पष्ट दिखाई देने लगी।

दिल्ली तक गए किसान

करीब 200 क्रांतिकारी किसान काश्तकार

महासभा दिल्ली में अपनी मांगों को लेकर गए और अपनी मांगों को ध्यान में रखते हुए एक 'पुकार' नामक पर्चा निकाला जिसे महासभा के सदस्यों में बांटा गया । ये सभी घटनाक्रम अपनी मांग ब्रिटिश सरकार के समक्ष रखने के इरादे से किए गए थे। क्योंकि समस्त अधिकार परोक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार के पास ही थे।

लगान न देने का निर्णय

समय के साथ-साथ जनता में चेतना की जागृति होने लगी। सभी वर्गों के लोग किसानों के हित में खड़े होने लगे। सभाओं के माध्यम से गांव-गांव, घर-घर जागृति पहुँचने लगी। अंतत: सरकार को यह जागृति विद्रोह लगने लगी और उसने इसे चुनौती समझ कर प्रतिक्रिया व्यक्त करना शुरू किया। किसानों ने अपनी कोई मांग पूरी नहीं होने से महाराज तक अपनी बात पहुँचाने के लिए लगान (भूमिकर) नहीं देने का फैसला किया एवं बड़ी सभा करने का निश्चय किया।

बड़ी सभा के लिए नीमूचाणा तय

क्रांतिकारियों ने सभा हेतु जगह चिन्हित करनी प्रारम्भ कर दी। पहले यह सभा बुटेरी में होनी निश्चित की गई फिर कराणा में करने का निर्णय हुआ। अंत में सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए सभा नीमूचाणा में होना निश्चित हुआ। नीमूचाणा गांव भौगोलिक रूप से नदी-नालों और रेत के ऊँचे टीलों के बीच स्थित था। यहाँ पर आने के लिए दुर्गम रास्ते थे। किसानों को गुप्त रूप से खेतों और गहरे नालों-खाइयों से होते हुए एकत्रित होना संभव हो सकता था। अत: सुरक्षात्मक दृष्टि से नीमूचाणा उपयुक्त माना गया। दूसरा उस समय नीमूचाणा 'सेठाणा' कहा जाता था। सेठ-साहूकारों की भूमि पर क्रांतिकारियों को सभी सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हो सकती थी। उपरोक्त सभी कारणों को ध्यान में रखकर नीमूचाणा को केन्द्र बनाया गया। 14 मई को सभी किसानों एवं क्रांतिकारियों को निश्चित तिथि पर वहाँ एकत्र होने का सन्देश दे दिया गया।

सुयोग्य राजा जयसिंह

इस आंदोलन के समय अलवर रियासत में महाराजा जयसिंह गद्दी पर थे। वर्ष 1903 में जब राजा जयसिंह ने सत्ता सम्भाली उससे पूर्व अलवर में ब्रिटिश अधिकारियों ने शासन व्यवस्था सम्भाल रखी थी। महाराजा जयसिंह बहुत ही सुयोग्य शासक थे। अंग्रेज अधिकारियों ने जो शोषण एवं लूटपाट मचा रखी थी उसको तुरन्त प्रभाव से समाप्त किया और प्रशासन, कर व्यवस्था, कृषि व्यवस्था आदि सभी क्षेत्रों में सुधार हेतु आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया।

राजा जयसिंह योग्य प्रशासक के साथ-साथ बहुत बड़े देशभक्त थे। अल्प समय में ही उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। ब्रिटिश सरकार उनसे ईर्ष्या करने लगी। देशभक्त राजा जयसिंह ने राजभाषा उर्दू को बदलकर हिन्दी कर दिया एवं धार्मिक शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया। मदरसों से मिलने वाली धार्मिक शिक्षा को अमान्य घोषित कर दिया। जिससे मुस्लिम लीग ने ब्रिटिश सरकार को महाराजा के विरुद्ध भड़काया। चूँकि 1857 की क्रांति से अंग्रेजों ने सबक लेते हुए भारत के राजाओं को कमजोर करने का एक षड्यंत्र रचा था जिसका उद्देश्य था देशभक्त राजाओं से शासन के अधिकार छीनना और उसके स्थान पर स्वयं का अधिकारी नियुक्त करना अथवा स्वयं के वफादार को गद्दी पर बिठा देना। इसके लिए उन्होंने सभी राजाओं को विश्वास में लेकर 'नरेन्द्र मण्डल कमीशन' की स्थापना की। जिसमें यह बिन्दु आवश्यक रूप से पारित करवाए गए कि यदि किसी राजा की प्रजा राजा से असंतुष्ट हैं या व्यवस्था में कमी हैं तो उसको गद्दी का त्याग करना होगा एवं ब्रिटिश सरकार उसको अधिगृहीत कर लेगी।

चूँकि 1857 की क्रांति से अंग्रेजों ने सबक लेते हुए भारत के राजाओं को कमजोर करने का एक षड्यंत्र रचा था जिसका उद्देश्य था देशभक्त राजाओं से शासन के अधिकार छीनना और उसके स्थान पर स्वयं का अधिकारी नियुक्त करना अथवा स्वयं के वफादार को गद्दी पर बिठा देना।

छोटी सी रियासत के राजा जयसिंह अपनी शासन कुशलता एवं देशभक्ति से अल्पायु में ही इतने विख्यात हो गए कि वो नरेन्द्र मण्डल कमीशन के 'नक्षत्र' बन गए। वे चैम्बर ऑफ प्रिंसेज के चेयरमैन थे। 28 फरवरी, 1920 को चेम्सफोर्ड ने कहा था अलवर का शासन प्रबन्ध उत्तम है। प्रजा की प्रसन्नता तथा सांत्वना और भी बड़ी बात है जिस पर अलवर नरेश का पूरा ध्यान है महाराजा ने बांधों के निर्माण कार्य के द्वारा भूमि को सजल और शस्य श्यामला बनाने का जो प्रयत्न किया है उससे अकाल का भय नहीं रहेगा और कृषक प्रजा सुखी रहेगी। उदयपुर, अलवर, भरतपुर इत्यादि राजा देशभक्त होने के कारण अंग्रेज सरकार की आँखों की किरकिरी बने हुए थे। परन्तु अलवर के राजा जयसिंह की ख्याति देखकर वे सीधे दबाव नहीं बना सके।

राजा के पीछे से अंग्रेजों का षड्यंत्र

गर्मियों के दिनों में अलवर रियासत के महाराजा जयसिंह छुट्टियां मनाने माउंट आबू गए हुए थे, तब प्रधानमंत्री को विश्वास में लेकर षड्यन्त्र रचा गया क्योंकि प्रधानमंत्री मुस्लिम था एवं महाराजा की ख्याति से ईर्ष्या रखता था। 7 मई,1925 को एक कमीशन ने बानसूर व थानागाजी के किसान नेताओं से मिलकर उन्हें समझाने का प्रयास किया था और अपनी रिपोर्ट सरकार को दी तथा सारी परेशानियों से अवगत करवा दिया था परन्तु प्रधानमंत्री ने इस पर जरा भी ध्यान नहीं दिया।

हथियार रखने व सभा करने पर प्रतिबंध

कमीशन के प्रयास असफल रहने पर

ज्यूडिशियल मिनिस्टर मिठ्ठन लाल ने इस संदर्भ में एक आदेश जारी करके बानसूर, थानागाजी, राजगढ़, मालाखेड़ा और बहरोड़ की जनता पर यह पाबन्दी लगा दी की जिनके पास बन्दूक, तलवार या अन्य कोई हथियारों का लाइसेंस नहीं है उनके द्वारा हथियार रखना अपराध होगा। यह आज्ञा 11 मई, 1925 को लागू कर दी गई थी एवं सभा करने पर पाबन्दी लगा दी, स्वयं प्रधानमंत्री ने 11 मई,1925 को एक आज्ञा जारी की।

सेना ने घेरा नीमूचाणा

इस आज्ञा के साथ अलवर रियासत की सेना बानसूर तहसील की नीमूचाणा में जहाँ 14 तारीख को सभा होने की जगह पर पहुँच गई।

14 मई,1925 को सेना ने गांव को चारों ओर से घेर लिया एवं पानी के कुओं पर अधिकार कर लिया। सरकारी सेना को ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सहायता से 4 मशीनगन नौराणा, महाराष्ट्र से उपलब्ध करवाई गई जिनको सभा स्थल के चारों ओर टीलों पर स्थापित कर दिया गया और बन्दूकों, तोपों से लैस घुड़सवार सैनिकों ने सम्पूर्ण गांव को घेर लिया। सभा शांतिपूर्वक चल रही थी जैसा कि क्रांति की रूपरेखा बहुत ही बारीकी से तैयार की गई थी। इसलिए इस सभा में किसानों के साथ-साथ सभी वर्गों एवं जातियों के लोग (महिला-पुरुष, बच्चे-बुजुर्ग सहित) शामिल होकर अपनी राजनैतिक चेतना का आभास करवा रहे थे। सरकारी आंकड़ों के अनुसार सेना के अधिकारियों के साथ 4 मशीनगन, 2 तोपों और 200 पैदल सैनिकों तथा 100 घुड़सवार सैनिकों को भेजा गया था। इन सबका नेतृत्व जनरल छाजू सिंह कर रहा था जो प्राइम मिनिस्टर एवं अंग्रेज राजनीतिक एजेन्ट का पिट्ठू था ।

बिना पूर्व सूचना दिए गोली चलाई दो घंटे तक गोलीबारी

जनरल छाजू सिंह ने बिना सैशन जज की अनुमति के ही, बिना सूचना दिए तथा सभा को अवैध घोषित कराने की मुनादी कराए बिना ही तुरत-फुरत में आंदोलनकारियों पर गोली दागने का आदेश दे दिया। मई की भीषण गर्मी और राजस्थान के नीमूचाणा में रेतीले टीलों में गर्मी से व्याकुल ग्रामीण गोलियों की बौछार से बचने के लिये घरों की ओर भागे तो सेना ने घरों में आग लगा दी। प्यास से व्याकुल ग्रामीण ज्योंहि कुओं की ओर भागे तो बर्बर सिपाहियों द्वारा उन पर गोलियां चला दी जाती। बच्चों और महिलाओं तक को नहीं बक्शा गया। आग से बचने के लिए ग्रामीण और क्रांतिकारी नालों की ओर भाग रहे थे तथा अंधाधुंध फायरिंग की चपेट में आते जा रहे थे। तोप से निकले गोलों और आग लगने से चारों ओर धुआँ फैल चुका था। कुछ ग्रामीण इस धुंए की आड़ में महाजनों की पक्की हवेलियों तक पहुँचने में सफल हो गए। भागते हुए लोगों पर भी गोलियां बरसती रही। इस घटना के बारे में इतिहासकार भगवानदास केला ने लिखा है कि, ''दो घण्टे तक फायरिंग चलती रही। जिसमें मशीनगन 42 मिनट काम में ली गई। सेना ने औरतों, बच्चों और जानवरों को भी नहीं छोड़ा।''

ठाकुर कुशल सिंह, संतलपुर के भूर जी, विशालू के ठाकुर सुरजन सिंह, नीमूचाणा की सीता देवी, राधा देवी, कन्हैया नाई, जमना बनिया इत्यादि सहित सैकड़ों क्रांतिकारी महिला-पुरुष-बच्चों ने अपना बलिदान दिया।

हो गए बलिदान

इस बर्बरता पूर्ण कृत्य में सैकड़ों पुरुष, महिलाएं घटनास्थल पर ही बलिदान हो गए। सैकड़ों घायल हो गए, सैकड़ों पशु मारे गए। कई लापता हो गए। स्वतंत्रता सेनानी शोभालाल गुप्ता के अनुसार 353 झोपड़ियाँ जल गई। लाखों रुपये का नुकसान हुआ। ठाकुर कुशल सिंह, संतलपुर के भूर जी, विशालू के ठाकुर सुरजन सिंह, नीमूचाणा की सीता देवी, राधा देवी, कन्हैया नाई, जमना बनिया इत्यादि सहित सैकड़ों क्रांतिकारी महिला-पुरुष-बच्चों ने अपना बलिदान दिया।

किसानों से शुरू हुए इस आंदोलन में सभी प्रकार की आयु, वर्ग एवं जातियों के जन-सामान्य ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था जिससे बलिदानियों में सभी जन-सामान्य की सूची बहुत बड़ी हैं। इस घटना के तुरन्त बाद तीन दर्जन से अधिक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर सेना ले गई और उनके साथ जेल में दुर्व्यवहार किया गया एवं प्रताड़ना प्रारम्भ कर दी।

महाराजा पहुँचे नीमूचाणा

इस अमानवीय एवं बर्बतापूर्ण अत्याचार का समाचार जैसे ही माउंट-आबू में महाराजा जयसिंह को लगा, वे अपना दौरा वहीं रद्द करके तुरन्त नीमूचाणा की ओर निकल पड़े। महाराजा जयसिंह की संवेदनशीलता का परिचय इसी बात से होता हैं कि तीसरे दिन महाराजा नीमूचाणा पहुँच चुके थे। आग से राख हुए गांव में जैसे ही पहुँचे महाराज का हृदय करुणा से भर आया और आँखों से आँसू बह निकले। प्रजा के मध्य पहुँचकर महाराजा ने क्षमा प्रार्थना की और राहत की पेशकश की जिसको स्वाभिमानी क्रांतिकारियों और सेठों ने मना कर दिया। गिरफ्तार किए गए क्रांतिकारियों से 25 सितम्बर, 1925 को महाराजा जयसिंह ने मुलाकात की और उन्हें रिहा करवा दिया।

महाराजा जयसिंह ने 19 जुलाई, 1925 को दरबार में भाषण देते हुए बताया कि वे स्वयं नीमूचाणा होकर आए हैं। वहाँ की जनता के प्रति पश्चाताप प्रकट किया है। महाराजा ने प्रजा को अपने पुत्र के समान बताते हुए उनकी सुख-सुविधा का आश्वासन दिया। ठा.श्योनाथ सिंह ,

नीमूचाणा का आंदोलन वास्तव में अंग्रेजों की गलत नीतियों के विरुद्ध था। जिसका प्रारम्भ किसानों से हुआ परन्तु समय के साथ-साथ यह सभी वर्गों-जातियों अर्थात् जन-सामान्य तक पहुँच गया। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में अंग्रेज अधिकारियों एवं अंग्रेजी सत्ता का आतंकवादी-चरित्र साफ दिखाई देता है।

एक्स कैप्टन मंगालांसर, ठा.रामनाथ सिंह आलमपुर के पत्र से स्पष्ट होता है कि महाराजा किसानों की मांगों से तथा गोली चलाने के लिए फोर्स भेजने की घटना से अनभिज्ञ थे। यह सब अंग्रेज अधिकारियों, बाहरी एजेंसियों एवं प्रधानमंत्री का षड्यन्त्र था। जिससे महाराजा को बदनाम करके अलवर रियासत की शासन व्यवस्था ब्रिटिश सरकार के हाथों में लेना चाहते थे। किसानों की मांगों को पूर्ण करके एवं घटना से प्रभावित जन-सामान्य को सहायता राशि भेंट करके महाराजा जयसिंह ने अंग्रेज राजनैतिक एजेन्ट के मनसूबों पर पानी फेर दिया।

महात्मा गांधी ने इस घटना के बारे में जब विभिन्न बातें सुनी तो उन्होंने भी इस पर दु:ख व्यक्त किया और इसे ''दोहरी डायरशाही'' की संज्ञा दी।

महाराजा के विरुद्ध षड्यंत्र

कुछ समय पश्चात अंग्रेजों को अपने मनसूबों को पूरा करने का अवसर मिल गया। राजा जयसिंह की लोकप्रियता ब्रिटिश सरकार के लिए चिंता का कारण बनती जा रही थी। 1928 में भरतपुर का शासन हथियाने के बाद अलवर को निशाना बनाने में मुसलमानों (मेवों) ने ब्रिटिश सरकार का साथ दिया और षड्यन्त्र का ताना-बाना बुना और राजा की सेना को घेरकर हमला शुरू कर दिया। परिणाम स्वरूप सेना से प्रतिकार किया तो अंग्रेज सरकार ने लोकप्रिय शासक महाराजा जयसिंह की मर्जी के विरोध पर भी वित्त एवं पुलिस विभाग अपने हाथ में ले लिया।

प्रधानमंत्री एफवी वायली और इबटसन ने महाराजा की राय मानना बन्द कर दिया और इन अधिकारियों की रिपोर्ट के आधार पर मई 1933 में 48 घंटे में राज्य छोड़कर जाने का आदेश दे दिया । प्रारम्भ में दो वर्ष के लिए परन्तु बाद में इसे बढ़ाकर 15 वर्ष कर दिया। निर्वासन अवस्था में 1937 में महाराजा ने पेरिस में देह त्यागी।

उपसंहार

नीमूचाणा का आंदोलन वास्तव में अंग्रेजों की गलत नीतियों के विरुद्ध था। जिसका प्रारम्भ किसानों से हुआ परन्तु समय के साथ-साथ यह सभी वर्गों-जातियों अर्थात् जन-सामान्य तक पहुँच गया। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में अंग्रेजी अधिकारियों एवं अंग्रेजी सत्ता का आतंकवादी-चरित्र साफ दिखाई देता हैं। उस समय के राष्ट्रीय समाचार पत्रों यथा प्रताप, तरुण राजस्थान, रियासत, यंग इण्डिया इत्यादि सभी ने क्रांतिकारियों का पक्ष लिया।

अलवर का यह आंदोलन इतिहास का ऐसा आंदोलन हैं जिसमें जन सामान्य ने किसानों का साथ देकर अंग्रेजों की नींद उड़ा दी थी। जिससे चिंतित होकर उन्होंने इसे कुचलने का अमानवीय दुष्कृत्य किया जिसे इतिहास कभी क्षमा नहीं कर सकता।

स्वतंत्र भारत के सभी नागरिकों की ओर से बलिदान हुए अमर सेनानी, वीर पुरुष, महिलाएं एवं बच्चे सादर श्रद्धांजलि के अधिकारी हैं।

(लेखक इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रांत के संगठन मंत्री हैं)

अमानवीय 'जरायम पेशा' कानून के विरुद्ध मीणा समाज का संघर्ष

● पंकज मीणा

स्वतंत्रता प्रिय, साहसी और अन्याय के विरुद्ध लड़ाकू जनजातियों को दबाने के लिए अंग्रेजों द्वारा बनाए गए 'जनजाति अपराध कानून' जैसा ही अमानवीय 'जरायम पेशा कानून' जयपुर रियासत में भी अंग्रेजों की शह पर लागू कर सम्पूर्ण मीणा जाति को अपराधी घोषित कर दिया गया था। इस अन्याय के विरुद्ध संगठित होकर मीणा समुदाय ने लंबा संघर्ष किया। प्रजामंडल के माध्यम से पूरा हिंदू समाज उनके साथ खड़ा था। अंततः 28 वर्ष के लंबे संघर्ष से सफलता मिली।

भारत देश के विभिन्न भागों में स्वाधीनता से पूर्व जहां सीधा शासन राजाओं का था वहां स्वतंत्रता आंदोलन की जगह सुधार आंदोलन हुए। अंग्रेजों के द्वारा बनाए कानूनों को राजा यथावत अथवा थोड़ा बहुत बदलकर कठोरता से लागू करते थे। राजस्थान की वीरभूमि पर इनके विरोध में ऐसे ही कई बड़े आंदोलन हुए। ऐसा ही एक बड़ा आंदोलन 'जरायम पेशा एक्ट हटाओ आंदोलन' हुआ। जिसका प्रमुख केन्द्र राजस्थान का ढूंढाड़ व शेखावाटी क्षेत्र था। इस आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता थे जनजाति समाज के श्री लक्ष्मीनारायण झरवाल, श्री बद्रीप्रसाद दुखिया, श्री भैरोलाल काला बादल, श्री कैप्टन छुट्टन लाल, श्री भगवताराम इत्यादि।

देश का जनजाति समाज प्रारंभ काल से स्वतंत्रता प्रिय समाज रहा है। शासकों के अन्यान्यपूर्ण कानून का डटकर विरोध करना तथा उसके खिलाफ लड़ना इन लोगों के स्वभाव में ही रहा है। अन्याय के विरुद्ध जनजातियों के इस लड़ाका स्वभाव के कारण ही अंग्रेजों ने सन 1871 में ''जनजाति अपराध कानून'' (क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट) तथा सन 1874 में 'जनजाति क्षेत्र कानून' बनाया। इन कानूनों के माध्यम से जनजातियों को अपराधी श्रेणी में रखकर कठोरता बरती जाती और तरह-तरह की यातनाएं दी जाती थी। राजस्थान में गोविंद गुरु के 'भगत आंदोलन' जिसकी परिणति में मानगढ़ में नरसंहार हुआ तथा मोतीलाल तेजावत के 'एकी आंदोलन' से डरे अंग्रेजों ने जयपुर व अलवर रियासत के माध्यम से मीणा जनजाति को जकड़ने हेतु 'जनजाति अपराध कानून' व 'जनजाति क्षेत्र कानून'का मिला-जुला रूप 'जरायम पेशा कानून' बनाया। इस कानून के तहत

पारंपरिक वेशभूषा में जनजाति मीणा समाज

लक्ष्मीनारायण झरवाल

मीणा जाति में जन्म लेने वाले बालक से लेकर बुजुर्ग तक सबको अपराधी की श्रेणी में रखा जाने लगा तथा इन पर कठोर निगरानी रखी जाने लगी। इस जाति के सभी लोगों के घूमने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इस जाति के युवाओं को नियमित थाने में हाजिरी लगाने के लिए प्रतिबद्ध किया गया। इस कानून की वजह से मीणा जनजाति की सामाजिक प्रतिष्ठा को ठेस लगी, साथ ही इनकी आर्थिक व्यवस्था भी छिन्न-भिन्न हो गई। बिना किसी अपराध के घटित हुए ही संपूर्ण आदिवासी समाज को अपराधी घोषित किया और कठोर दंड दिया जाता था।

जैसा कि जनजातियों का स्वभाव होता है, अन्याय के विरुद्ध लड़ना, तो इस बार भी मीणा समाज एकजुट हुआ, परंतु सशस्त्र विरोध करने की जगह आंदोलन का रास्ता चुना। इन आंदोलनों का नेतृत्व शेखावाटी में श्री गणपत राम बगराणियां, श्री भगवताराम बुनस, अलवर में श्री बद्रीप्रसाद दुखिया, श्री कैप्टन छुट्टनलाल तथा जयपुर में श्री लक्ष्मीनारायण, श्री राजेन्द्र कुमार 'अजेय' जैसे महानुभावों ने संभाला। इन नेताओं की अगुवाई से जनता बड़ी संख्या में जुटने लगी और बड़े-बड़े सम्मेलन, धरने-प्रदर्शन इत्यादि होने लगे। ऐसा समय जब जनजाति समाज में शिक्षा नगण्य के बराबर थी तब लाखों की संख्या में जनता का जुटना अपने आप में अभूतपूर्व था।

इन्हीं नेताओं की अगुवाई में जमवारामगढ़ (1931) शाहजहांपुर (1933) जयपुर (1938), नीम का थाना (1944), गुढ़ा पोंख

अंग्रेजी कानून के अनुसरण में तथा अंग्रेजों के शह पर जयपुर रियासत में 1930 में लागू किए गए अमानवीय 'जरायम पेशा कानून' के कारण स्वच्छन्द विचरण करने वाली बहादुर मीणा जनजाति सामान्य मानवाधिकारों से भी वंचित कर दी गई थी। इसका विरोध करने के लिए सन 1933 में 'मीणा क्षेत्रीय महासभा' की स्थापना कर जयपुर शासन से जरायम पेशा कानून रद्द करने की मांग की गई। रियासती शासन ने इस मांग को अस्वीकार करते हुए येन-केन-प्रकारेण संस्था का ही विघटन करा दिया। परन्तु उस कानून के विरोध में मीणा समाज लगातार संघर्ष करता रहा।

अप्रैल, 1944 में जैन मुनि मगन सागर जी की अध्यक्षता में नीम का थाना में मीणा जनजाति का एक बड़ा सम्मेलन हुआ। वहां पर 'जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति' नाम से एक संस्था बनाई गई। सर्वश्री बंशीधर शर्मा अध्यक्ष, राजेन्द्र कुमार 'अजेय' मंत्री एवं लक्ष्मीनारायण झरवाल संयुक्त मंत्री बनाए गए। सम्मेलन में मीणा समाज में फैली बुराइयों को दूर करने, चौकीदारी प्रथा समाप्त करने तथा जरायम-पेशा जैसे कानूनों को रद्द करवाने के लिए आंदोलन करने का निश्चय किया गया।

'मीणा सुधार समिति' ने जयपुर प्रजा-मंडल के सहयोग से जयपुर शासन पर जरायम-पेशा कानून को रद्द करने के लिए दबाव डाला। समिति ने कई स्थानों पर सम्मेलन किए।

राज्य द्वारा कोई कदम नहीं उठाने पर अप्रैल, 1945 में श्रीमाधोपुर में हुई बैठक में राज्यव्यापी आंदोलन करने का निर्णय हुआ। लक्ष्मीनारायण झरवाल संयोजक बनाए गए। प्रजामंडल के सर्वश्री देशपाण्डे, रामकरण जोशी आदि भी वहां उपस्थित थे। सरकार ने झरवाल को भारत सुरक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर भारी यातनाएं दी। प्रतिक्रिया स्वरूप स्थान-स्थान पर सभाएं हुई। अंततः 17 मई, 1945 को झरवाल रिहा कर दिए गए।

31 दिसंबर, 1945 को उदयपुर में 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' का अधिवेशन हुआ। जहां जरायम पेशा कानून की निंदा की गई। जवाहर लाल नेहरु तथा ठक्कर बापा ने भी अपना विरोध प्रकट किया। परिणामस्वरूप 4 मई,1946 व उसके पश्चात क्रमशः जरायम पेशा कानून में ढील देना शुरू हुआ, परन्तु सरकारी निर्णय से असंतुष्ट मीणा समाज ने 'मीणा सुधार समिति' के आहवान पर 6 जून,1947 को जयपुर में विशाल प्रदर्शन कर 'जरायम पेशा कानून' का पुतला फूंका तथा कानून की प्रतियां जलाई। उस दिन से उक्त कानून के अंतर्गत मीणा बंधुओं ने पुलिस थाने में हाजिरी देना बंद कर दिया। फलतः हजारों मीणा लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में यातनाएं दी गई, परन्तु पुलिस मीणा लोगों को हाजिरी देने के लिए बाध्य करने में पूर्णतया असफल रही।

अंग्रेजों द्वारा भारत की देशभक्त बहादुर जनजातियों को निःशक्त करने के लिए बनाए गए 'क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट' के अनुसरण में ही अंग्रेजों की शह पर जयपुर रियासत द्वारा बनाए गए 'जरायम पेशा कानून' को रद्द कराने में मीणा समुदाय को देश की स्वाधीनता के बाद भी संघर्षरत रहना पड़ा। प्रजामंडल के माध्यम से हिंदू समाज के सभी लोग इस संबंध में मीणा समाज के साथ संघर्षरत थे और हर तरह का सहयोग करते रहे। अंततः 1952 में उक्त कानून रद्द हुआ और 28 वर्षों के लंबे संघर्ष में सफलता मिली।

(1945), डाबला (1945), नींदड़ बैनाड़ (1945), कोटपूतली (1946), सीकर (1946), बैराठ (1946), खेतड़ी (1946), भरतपुर (1946), झुंझुनू (1946), निवाई (1946), खेजरोली (1946), पावटा (1947), टोंक (1947), दूदू (1947) इत्यादि स्थानों पर विशाल सम्मेलन आयोजित किए गए। जागृति की यह आग राजस्थान की सीमाओं से बाहर बुलंदशहर संयुक्त प्रांत (1942) और शिवपुरी (मध्य प्रदेश) तक भी पहुंची।

इन सम्मेलनों में जनजाति अपराधी कानून को हटाने की मांग प्रमुखता से उठाई जाती थी साथ ही सामाजिक कुरीतियां समाप्त करने के प्रस्ताव भी पारित किए जाते थे। इन आंदोलनों का देश भर में ऐसा प्रभाव पड़ा कि कांग्रेस के तत्कालीन नेता पंडित नेहरू ने जयपुर में (1945 में) आकर आश्वासन दिया कि वह कांग्रेस के माध्यम से अंग्रेज सरकार से इस कानून को हटाने की मांग करेंगे हालांकि यह कानून स्वतंत्रता पश्चात् समाप्त हुआ परंतु राजस्थान के मीणा समाज ने इन सम्मेलन–आंदोलनों के माध्यम से इस कदर दबाव बनाया कि अंग्रेजों को पसीना आ गया और 1944 में मीणा जाति को इस कानून से डिलिस्ट किया गया। इन सम्मेलनों के माध्यम से समाज सुधारकों ने सामाजिक रूप से भी आमूल–चूल परिवर्तन करने की शुरुआत की। जिसकी वजह से सैकड़ों वर्षों से मुख्यधारा से कटे जनजातीय बंधु आज समाज के सभी वर्गों के साथ समान रूप से जीवन यापन कर रहे हैं।

(लेखक 'सनातनी आदिवासी मीणा संस्था', राजस्थान के अध्यक्ष हैं)

भारत विकास परिषद चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र
प्रताप नगर, दादा बाड़ी, कोटा- 09 (राजस्थान)
फोन:- 07442504510 1 -502 मेल: byphosp@gmail.com

चिकित्सालय में उपलब्ध विभाग

- ओ.पी.डी. (सुपर स्पेश्यलिस्ट एवं वरिष्ठ चिकित्सक)
- मेडिसिन
- जोड़ प्रत्यारोपण
- बाल एवं शिशु रोग
- यूरोलॉजी (मूत्र रोग)
- न्यूरोसर्जरी
- जनरल सर्जरी
- मनो-रोग
- अस्थि रोग
- नाक-कान-गला रोग
- न्यूरोलॉजी
- फिजियोथैरेपी
- दन्त व मुख रोग
- चर्म एवं यौन रोग
- नेत्र रोग
- कार्डियोलॉजी
- कैंसर रोग
- आहार एवं पोषण

सुविधाएँ

- 250 बिस्तरों की भर्ती सुविधाएँ
- सुसज्जित आई.सी.यू.
- नवजात शिशुओं हेतु NICU एवं PICU
- केन्द्रीय वातानुकूलित 6 ऑपरेशन थियेटर
- सी.टी.स्केन, एक्स-रे एवं सोनोग्राफी
- एन्डोस्कोपी एवं कोलोनोस्कोपी
- आधुनिक कैथलेब,
- अच्छी शिक्षा हेतु- माधव नर्सिंग स्कूल,
- माधव कॉलेज ऑफ नर्सिंग
- भारत विकास परिषद पैरामेडिकल इन्स्टीट्यूट
- केन्द्रीय वातानुकूलित सुसज्जित आई.सी.सी.यू.
- सुसज्जित डीलक्स कमरे
- अत्याधुनिक उपकरणों युक्त पैथोलोजी लैब
- 2-डी ईको एवं कलर डॉप्लर
- डिजिटल एक्स-रे एवं 4-डी सोनोग्राफी
- एन्जियोग्राफी, एन्जियाप्लास्टी एवं डायलिसिस
- ब्लड बैंक,
- मेडिकल एवं कॉन्टिग सुविधा

24 घंटे आपातकाल भर्ती एवं एम्बुलैंस सुविधा। मुख्यमंत्री सहायता कोष के मान्यता प्राप्त चिकित्सालय। मेडिकल कार्ड स्वीकार्य।

संस्था को दिये दान को आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के तहत छूट प्राप्त है।

VEDANT
INTERNATIONAL SCHOOL
CBSE Affiliation No. 1730886
3rd Milestone, Ojatoo Chirawa - Jhunjhunu Highway (Raj.)
Contact Number : PH. 01596 296038, Mob. 9672755808
E-Mail: vedantschoolchirawa@gmail.com Website: vedantinternationalschool.co.in
Hostel facility Available
A CBSE Affiliated School
From Play Group to XII

राधाकिशन जांगिड़
जिला परिषद सदस्य, वार्ड नं. 08, सीकर (राज.)
मो. 9649940340, 7665222222 Email: radhakishanj@gmail.com

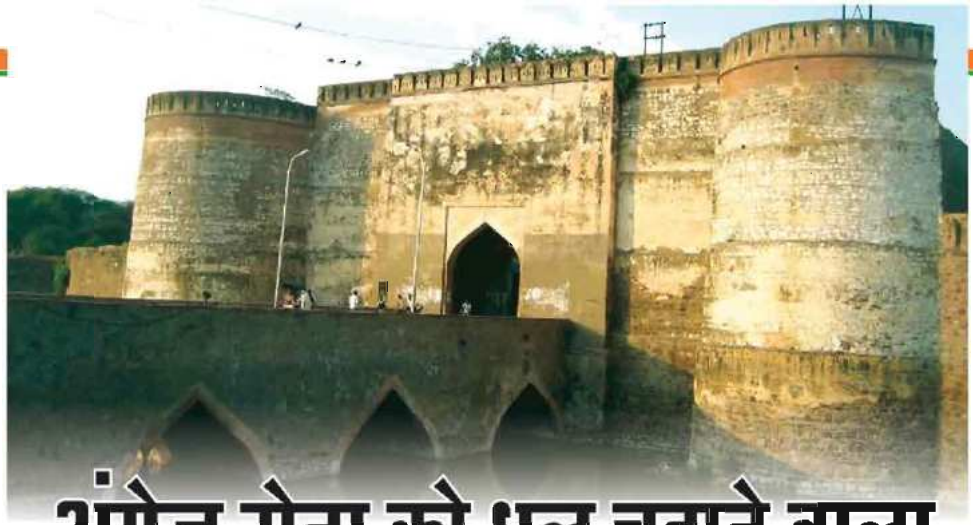

अंग्रेज सेना को धूल चटाने वाला लोहागढ़ दुर्ग

● गुलाब बत्रा

शरणागत को शरण देने की परम्परा का निर्वाह करते हुए भरतपुर के महाराजा रणजीत सिंह ने मराठा सरदार होल्कर, जिनका अंग्रेजी सेना पीछा कर रही थी, को भरतपुर के दुर्ग में शरण दी। अंग्रेजी सेना ने दुर्ग को चारों ओर से घेर कर चार बार आक्रमण किया, परन्तु उन्हें हर बार मुँह की खानी पड़ी। इस साहस, वीरता और 'भरतपुर दुर्ग' के अजेय रहने की गाथा प्रस्तुत लेख में संजोई गई है।

अंग्रेजों के औपनिवेशिक साम्राज्य में जहां कभी सूर्य अस्त नहीं होने की दुहाई दी जाती थी, ऐसी महापराक्रमी शक्ति को भरतपुर की मिट्टी ने धूल चटाकर विश्वविख्यात 'अजेय लोहागढ़' का गौरव प्राप्त किया।

भारतीय संस्कृति में प्राण-प्रण से शरणागत की रक्षा के वैशिष्ट्य की अनुपालना में भरतपुर के संस्थापक महाराजा सूरजमल ने जो अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया, उनके वंशज रणजीत सिंह ने अपने युद्ध कौशल से उसे जीवंत किया।

शरणदाता महाराजा सूरजमल

औरंगजेब की 1707 में मृत्यु एवं विदेशी आक्रान्ता नादिरशाह-अहमदशाह अब्दाली के हमलों से मुगल सल्तनत की कमर टूट गई थी। उधर महाराष्ट्र के पेशवा राजस्व वसूली का अधिकार जताने लगे। दिल्ली-आगरा के मध्य ब्रजप्रदेश में एक नई शक्ति का उद्भव हुआ, जिसने महाराजा सूरजमल की अगुवाई में नया इतिहास लिखा। एकाधिकबार दिल्ली की तकदीर सूरजमल की मुट्ठी में रही। पानीपत में 1761 के आरम्भ में सूरजमल की युद्ध रणनीति को अनदेखा करने वाले मराठा सदाशिव भाऊ को अंतिम निर्णायक युद्ध में शर्मनाक पराजय झेलनी पड़ी। इसके बावजूद पराजित मराठा सेना को भरतपुर में शरण मिली और अब्दाली के संभावित आक्रमण को महाराजा सूरजमल ने कूटनीतिक पत्र से विफल करने में सफलता हासिल की।

अंग्रेजों ने की संधि

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की पृष्ठभूमि में ईस्ट इंडिया कंपनी ने सेनापति लॉर्ड लेक के नेतृत्व में वर्ष 1803 में आगरा पर अधिकार कर लिया था। देशी राजा-महाराजाओं को अंग्रेजों का मित्र बनाने की रणनीति के अंतर्गत लॉर्ड लेक ने लगे हाथ पड़ोसी रियासत भरतपुर के महाराजा रणजीत सिंह (1775-1805) से संधि करना मुनासिब समझा।

मराठा सरदार को दी शरण

मराठा सरदार जसवंत राव होल्कर ऐसी संधि के जाल से बाहर था। उसने लगभग बीस हजार सैनिकों तथा 130 तोपों के बल पर दिल्ली फतह करनी चाही, लेकिन लॉर्ड लेक की सेना से पराजित होकर डीग-भरतपुर की ओर रूख किया। याचक शरणागत की रक्षा से जुड़ी संस्कृति का निर्वाह करने के लिए जसवंत राव होल्कर को डीग किले में शरण दी गई, लेकिन लॉर्ड लेक की सेना ने उसे 25 दिसम्बर,1804 को वहां से खदेड़ दिया। ऐसी परिस्थिति में महाराजा रणजीत सिंह ने होल्कर को भरतपुर के मैदानी दुर्ग में शरण दी। होल्कर का लगातार पीछा कर

रही लॉर्ड लेक की सेना ने डीग से कूच कर जनवरी 1805 के प्रथम सप्ताह में भरतपुर किले को घेरने की रणनीति अपनाई जो उसके माथे का कलंक सिद्ध हुई।

अजेय भरतपुर दुर्ग

लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में बने भरतपुर के अभेद्य दुर्ग को जीतने का श्रेय किसी को नहीं मिला। अनोखी समझबूझ से निर्मित मिट्टी के इस सुदृढ़ दुर्ग के चारों ओर करधनी के समान कमर से लिपटने वाली सुजान गंगा नहर ने सुरक्षा कवच के रूप में उसका मान बढ़ाया।

दुर्ग एवं भरतपुर की अतिरिक्त सुरक्षा के उद्देश्य से बाहरी इलाके में मिट्टी से परकोटे के रूप में मोटी दीवार बनाई गई जिसे लोकभाषा में 'डंडा' नाम मिला। इस परकोटे में प्रवेश के लिए ऐसे दस द्वार बनाए गए थे जो बाहर से किसी को दिखाई नहीं देते थे। परकोटे के सहारे खाई बनाई गई जिसमें पानी भरा जाता था। यह दीवार उस जमाने के रक्षा प्रबंधन का अद्भुत उदाहरण थी। लोहागढ़ विकास परिषद् द्वारा भरतपुर के स्थापना दिवस (19 फरवरी) पर 2015 में प्रकाशित स्मारिका में प्रकाशित आलेख में मूर्धन्य पत्रकार आदित्येन्द्र चतुर्वेदी ने लिखा था–'यह अद्भुत कौशल था, एक ही दीवार से दो विपरीत भौगोलिक लाभ– दूर से लड़ो तो हारो, नजदीक से लड़ो तो भी हारो। आत्मरक्षा और प्रहार दोनों का ही अस्त्र यह दीवार थी। उस कालखण्ड का अध्ययन करने वाले इतिहासज्ञ और युद्ध कौशल मर्मज्ञ इस दीवार निर्माण में निहित बुद्धिबल से चकित थे। इसी दीवार पर जगह–जगह रखी हुई भरतपुर की बजरंगी तोपें नीचे उतरकर नजदीक आने वाले शत्रु के परखच्चे उड़ा देती थीं।

अंग्रेजों का हमला हुआ विफल

भरतपुर के पश्चिम की ओर डेरा डाले अंग्रेज सेना ने पूरी तैयारी करके 7 जनवरी, 1805 को पहला हमला बोला। जाट इतिहास के लेखक ठाकुर देशराज तथा रामवीर सिंह वर्मा की पुस्तक 'लोहागढ़ की

ड्रोन से लिया गया लोहागढ़ दुर्ग का विहंगम दृश्य

यशोगाथा' में इस युद्ध का रोमांचक वर्णन किया गया है। दो दिन की गोलाबारी से दीवार में हुए सुराख से अंग्रेज सेना ने तीन हिस्सों में विभक्त होकर हमला बोला। बाईं ओर लेफ्टिनेंट रिपन, दक्षिण से सेनापति मिस्टर हाकस तथा मध्य से लेफ्टिनेंट मेटलेण्ड ने तोपों से हमला बोला। भरतपुर के योद्धाओं ने अंग्रेजों के इस हमले को विफल कर दिया।

अंग्रेजों ने दुबारा किया आक्रमण

हताशा से उबरी अंग्रेज सेना ने तैयारी करके 16 जनवरी को दूसरा आक्रमण किया और भारी भरकम तोपों का सहारा लिया। उधर दीवार के टूटे हिस्सों की मरम्मत कर ली गई। गोलों के धमाकों से दीवार का एक हिस्सा टूटने के बावजूद गोलों की बौछार के दौरान ही लकड़ी एवं पत्थरों से सुराख को पाट दिया गया। चार दिन तक दीवार तोड़ने और उसकी मरम्मत की कशमकश जारी रही।

गोलों की लगातार मार से दीवार में बड़ा छिद्र हो गया। तब भरतपुर की सेना ने मोती झील से दीवार के सहारे खाई को पानी से लबालब भर दिया। महाराजा रणजीत सिंह के बुलावे पर पिण्डारी अमीर खां भी सहायता के लिए आ पहुंचा। इस बीच अंग्रेजों ने चाल चली। उन्होंने अपने तीन देशी सैनिक किले की ओर दौड़ाए, जिन्होंने फिरंगियों से बचाने की प्रार्थना की। उदार जाट सेना ने इन देशी सैनिकों को शरण दी। लेकिन ये छलिए सैनिक दीवार तथा भीतरी हालात की टोह लेकर वापस लौट गए।

भेदी सिपाहियों की मदद से कप्तान लिण्डसे ने 21 जनवरी को खाई पार करने के लिए पुल और सीढ़ियां बनाई जो अधूरी रही। तैर कर खाई पार करने वाले डेढ़ हजार से अधिक अंग्रेज सैनिकों को रणजीत सिंह के बहादुरों ने गोली का निशाना बनाया।

उधर अमीर खां ने मथुरा से आने वाली रसद को लूट लिया। लेकिन 28 जनवरी को आने वाली रसद अंग्रेजों की सावधानी से बच गई। दक्षिण दिशा से खाई पार करने के लिए 40 फीट लम्बे और 16 फीट चौड़े बेड़े बनाने तथा सुरंग बनाने के प्रयास को विफल कर दिया गया।

तीसरे आक्रमण में भी विफल रहे अंग्रेज

सेनाध्यक्ष मि.डेन की अगुवाई में 20 फरवरी को फिर हमला बोला गया। तोपों की धुंआधार मार से दीवार का कुछ हिस्सा टूट गया। 14 अंग्रेज सैनिकों ने दीवार पर चढ़ने का प्रयास किया लेकिन महाराजा के सैनिकों ने उनकी दुर्गति करने के साथ टूटे हुए स्थान पर रखी गई बारूद को आग लगा दी।

चौथी बार अंग्रेजी आक्रमण

लॉर्ड लेक ने 21 फरवरी को चौथा बड़ा आक्रमण किया। अंग्रेज सेना के सिपाही एक दूसरे के कंधे का सहारा लेकर दीवार पर

चढ़ने लगे। भरतपुर के सैनिकों ने ऊपर से लकड़ी, ईंट व पत्थर फेंककर उनके प्रयास को निष्फल कर दिया। इसी दौरान ले.टेम्पल्टन ने दीवार के एक बुर्ज पर चढ़कर अंग्रेज सेना के झण्डे को फहराने का प्रयास किया। हमारे वीरों ने उन्हें मारकर नीचे खाई में फेंक दिया। निकट मार से त्रस्त अंग्रेज सेना मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई।

अंग्रेज सेना को हुई भारी हानि

अंग्रेज लेखकों के अनुसार लॉर्ड लेक की सेना के 103 सैन्य अधिकारियों सहित 3200 से अधिक सैनिक मारे गए। घायलों की संख्या इससे कई गुना थी।

फिर हुई संधि

युद्ध के दौरान महाराजा रणजीत सिंह से संधि वार्ता के सुझाव को अनदेखा करने वाले लॉर्ड लेक ने लगातार पराजय से निराश होकर उत्तर-पूर्व में छः मील दूरी पर फौज का डेरा डाला। उधर पिछले पांच-छः वर्षों से युद्धों के चलते महाराजा रणजीत सिंह का खजाना भी खाली हो चला था। दोनों पक्षों की इस पृष्ठभूमि में संधि का मार्ग प्रशस्त हुआ। कम्पनी सरकार ने भी अपनी विजय यात्रा स्थगित करने की मजबूरी भांप ली थी। 10 अप्रैल, 1805 को दोनों पक्षों में संधि पर हस्ताक्षर हुए।

लॉर्ड लेक की हुई किरकिरी

भरतपुर रियासत से संधि के बावजूद लॉर्ड लेक की काफी किरकिरी हुई जिसके नेतृत्व में अंग्रेज सेना को परास्त होना पड़ा। तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेजली के भाई ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन ने लॉर्ड लेक की पराजय पर टिप्पणी की कि उन्हें नगर-वेष्टन (परकोटे) का कुछ ज्ञान न था, इसलिए असफलता हुई।

स्वाधीन भारत में दुर्ग की दुर्दशा

विडम्बना यह है कि जिस परकोटे की विशिष्टता से लॉर्ड लेक को परास्त होना पड़ा, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लोगों ने जनप्रतिनिधियों की शह पर धरोहर को मटियामेट कर दिया। इस धरोहर के कुछ भग्नावशेष अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाने को अभिशप्त हैं, लेकिन इस युद्ध ने भरतपुर दुर्ग को लोहागढ़ नाम से अमर कर दिया।

(लेखक यूनीवार्ता के पूर्व समाचार सम्पादक हैं)

भरतपुर के सत्यभक्त जी

● डॉ. कुशलपाल सिंह

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक सेनानी नेपथ्य में रहकर आंदोलन को गति देने में लगे हुए थे। ऐसी ही एक स्वतंत्रता सेनानी थे भरतपुर के सत्यभक्त (चक्कखन लाल जैन)। यद्यपि इनका मुख्य कार्यक्षेत्र कानपुर और इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) था परन्तु राजस्थान के कई आंदोलनों में इनकी भूमिका रही है।

सत्यभक्त जी ने 1920 के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था। बाद में इन्होंने 'देशी राज्य और संयुक्त भारत' शीर्षक से एक लेख लिखा। इस लेख से प्रभावित होकर राजस्थान के विजय सिंह पथिक ने सत्यभक्त जी से संपर्क किया था तब दोनों साथ कार्य करने लगे। राजस्थान के सिरोही रियासत में भील आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस द्वारा किए गए दमन की जानकारी लेने राजस्थान सेवा संघ की ओर से विजय सिंह पथिक ने सत्यभक्त जी तथा रामनारायण जी चौधरी को भेजा था। घटना की वास्तविक जानकारी लेने सत्यभक्त जी दो बार सिरोही गए। जासूसों से नजरें बचाकर तथा पुलिस की नजरों से बचकर यह कार्य करना था। वापस लौटते समय पुलिस ने उन्हें सिरोही रोड स्टेशन पर रेल-डिब्बे से उतार कर हवालात में बंद कर दिया था। सत्यभक्त जी की रिपोर्ट को लंदन भिजवाने पर वहां की संसद में यह मुद्दा उठाया गया। इस प्रकार सत्यभक्त जी आजीवन देश सेवा के कार्यों में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सक्रिय रहे।

(लेखक इतिहास विषय के शोधार्थी छात्र हैं)

With Best Wishes...
Manish Dhaka
Co-Director
M.K. GROUP OF INSTITUTE
Piprali Road, Sikar-332001
Mob. 9887373682

GSTIN. 08ABMPA6664M1Z6
M: 9414042791
9314520439

AGRASEN
PAPER AGENGY
Deals In ; Chromo Art Paper, Art Card, Maplitho, Sbs Board & All Kind Of Imported Papers
Shri Shyam Kunj, A-47,
Sikar House Colony, Jaipur 302016

स्वाधीनता दिवस पर विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं
श्रीमती सन्तोष गुर्जर
प्रधान पंचायत समिति
नावां, नागौर (राज.)
श्री राजेश गुर्जर (एडवोकेट)
भाजपा मण्डल, अध्यक्ष (मागेठ)
मो. 9414251531

धौलपुर के विलक्षण क्रांतिकारी छतर सिंह और पंचम सिंह

● डॉ. राकेश कुमार शर्मा

धौलपुर के छोटे से गांव तसीमो में जन्मे ठाकुर छत्तर सिंह और ठाकुर पंचम सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देकर स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अपना तथा अपनी जन्मस्थली तसीमो का नाम अमर कर दिया।

तसीमो प्रजामंडल के कार्यकर्ता अपने यहां धौलपुर राज्य प्रजामंडल का एक विशाल अधिवेशन करना चाहते थे। प्रारम्भिक असफलता के बाद 12 नवम्बर, 1946 को राष्ट्रीय आन्दोलन के ध्वजवाहक साप्ताहिक पत्र 'सैनिक' (आगरा) के सम्पादक एवं प्रखर नेता श्री कृष्णदत्त पालीवाल की अध्यक्षता में बड़ा अधिवेशन करने में सफल रहे। इस घटना के बाद धौलपुर स्टेट के राज्याधिकारियों ने तसीमो व उसके आसपास के क्षेत्रों में अत्याधिक दमनात्मक पूर्ण कार्रवाई की लेकिन ग्रामीण जनता, जिसका 'स्व' जाग्रत हो चुका था, इन भयंकर स्थितियों में से गुजरने पर भी प्रजामंडल को मजबूती प्रदान करने लगी। इस समय स्वतंत्रता के प्रतीक तिरंगा ध्वज को स्थान-स्थान पर फहराकर जनता अपने मनोभावों को प्रकट करती थी दूसरी ओर राज्यअधिकारी इन झण्डो को उतरवा देते थे। जनता पुनः पहले की अपेक्षा अधिक ध्वज लगा देती थी। तसीमो, जो पहले ही धौलपुर पुलिस की आंखो में खटक रहा था,इस नए घटनाक्रम से राज्यधिकारियों की क्रोध की सीमा नहीं रही। अतएव अब धौलपुर के राज्याधिकारियों ने सबक सिखाने का निर्णय लिया। इसी मध्य प्रजामंडल के कार्यकर्त्ताओं ने तसीमो में 11अप्रैल,1947 को नीम के नीचे एक सार्वजनिक सभा करने का निर्णय लिया। धौलपुर स्टेट के एसएचओ अली आजम 8 अप्रैल से ही इस प्रयास में लग गया कि 11 अप्रैल की सार्वजनिक सभा आयोजित नहीं हो सके। धारा 144 लगा दी गयी। पुलिस के पूरे बंदोबस्त के बाद भी तसीमो वासी नीम के पेड़ पर झण्डा लगाने में सफल हो गए। प्रजामंडल के कार्यकर्त्ता सभास्थल के आस पास एकत्रित होने लगे। मजिस्ट्रेट व डीएसपी के साथ थानेदार अली आजम झण्डे को उतारने के लिए कटिबद्ध हो गए। जिससे सार्वजनिक सभा सम्पन्न नहीं हो सके।

थानेदार अली आजम ने जोर से आवाज दी- हम इस झंडे को उतार रहे हैं। इस घोषणा के होते ही तसीमोवासी ठाकुर छत्तर सिंह, जिसकी अवस्था 37 वर्ष की थी, सीना तानकर नीम के पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। पुलिस ने गोली मार दी और ठाकुर छत्तर सिंह वहीं गिर गए। उनके गिरते ही तसीमोवासी ठाकुर पंचम सिंह, जिसकी अवस्था 25 वर्ष थी, उसी जगह पर सीना तानकर खड़ा हो गया और उसने आवाज लगाई ''गोली मार सकते हो,झंडा नहीं उतरेगा''। पुलिस ने उसको भी गोली मार दी। ठाकुर पंचम सिंह के गिरते ही सभी प्रजामंडल कार्यकर्त्ता 'भारत माता की जय' का नारा लगाते हुए नीम के नीचे एकत्रित होने लगे तो पुलिस स्थिति की गंभीरता को देखते हुए वहाँ से हट गयी। प्रजामंडल कार्यकर्त्ताओं ने ठाकुर छत्तर सिंह व ठाकुर पंचम सिंह का सम्मानपूर्वक दाह-संस्कार किया।

ठाकुर छत्तर सिंह और ठाकुर पंचम सिंह का बलिदान व्यर्थ नहीं गया ,उन्होंने प्रजामंडल के कार्यकर्त्ताओं के आत्मबल में वृद्धि की और स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान की।

बलिदान स्थल पर आज राजकीय शहीद स्मारक माध्यमिक विद्यालय बना है तथा तसीमो में हर साल 11 अप्रैल को दोनों बलिदानियों की स्मृति में मेले का आयोजन होता है।

(लेखक राजस्थान कॉलेज शिक्षा के पूर्व प्राचार्य व भारतीय इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रांत के सह संगठन मंत्री हैं)

Vandit Agarwal
8946800187

GLOBE
TRANSPORT CORPORATION

H.O. Chandi ki Taksal, Jaipur
Ph.: 2618653,2618654,2606670
B.O. B. 237E Road No.6 D VKI JAIPUR
Ph. 2330422, 2331833, 9314049833

गोयल समूह

रिश्ता ! स्वाद और सेहत से

दीप ज्योति®

सोया ऑयल • सोया बड़ी • सोया आटा

एगमार्क सरसों तेल ग्रेड-I

ज्योति किरण®

झालदार सरसों तेल

गोयल प्रोटीन्स लिमिटेड ☀ गोयल वेजऑयल्स लिमिटेड

कवाहर, राष्ट्रीय राजमार्ग-52, जिला-कोटा (राज.) फोन : 91-744-2798200, 2798201

जयपुर कार्यालय - A-26-27, राजधानी अनाज मंडी- सीकर रोड, जयपुर (राज.) फोन : 0141-2332761- 62, 2420672

www.goyalglobal.com

NANDAN 9460079659

76 वें स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री राम लघु उद्योग

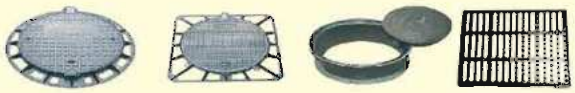

सी.आई.मेनहोल कवर के निर्माता

जी-473, रोड नं 9-ए विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर मो. 9829030600

श्रीराम परसरामपुरिया

भारत विकास परिषद, जयपुर महानगर शाखा

की ओर से स्वधीनता दिवस की

शुभकामनाएं

हमारे स्थाई सेवा प्रकल्प :

- जल मंदिर—राजकीय सीनियर सैकंडरी विद्यालय गोपालपुरा देवरी, जयपुर
- तीन सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र ▪ आरोग्य केन्द्र—गणेशपुरी,200 फीटबायपास, जयपुर
- कंप्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र—डालमिया विद्यालय केशव विद्यापीठ
- नेकी की दीवार, जामडोली ▪ शिक्षा की दीवार, जामडोली
- जल मंदिर— राजकीय सी. सै. विद्यालय, राजपुरा पातालवास, बस्सी, जयपुर
- Sanitary Napkins vending machine-Kanya Vidyala, Keshav Vidhyapeeth Jamdoli

स्वराज संघर्ष यात्रा-2
विशेषांक के प्रकाशन व
कृष्ण जन्माष्टमी
पर
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं

चन्द्रवीरसिंह चौहान, टोंक

प्रदेश महामंत्री

भारतीय जनता युवा मोर्चा, राजस्थान

Bala Ji Stone Grit, Clay Brick & HDPE Pipes Industries

Manufacturs & Suppliers

Jagadish Prasad Abadhesh Kumar (9214468255)
Manish Mangal (9214953135)
Dinesh Mangal (9258036687)

कार्यालय नगर पालिका मण्डल
नावां, जिला नागौर (राज.)

अपील "स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

1. अपने घरों/दुकानों/प्रतिष्ठानों पर गीले व सूखे कचरे हेतु दो कचरापात्र पात्र रखे।
2. पालिका के कचरा संग्रहण वाहन में सूखा व गीला कचरा डाले।
3. अपने घरों पर गीला कचरा पृथक कर पालिका के कचरा वाहन में डालें।
4. पॉलीथीन/प्लास्टिक/थर्माकोल के उपयोग पर पूर्णतया रोक लगाई जा चुकी है। इनका उपयोग, उपभोग या भंडारण करना पाये जाने पर कानूनन दंडनीय अपराध है।
5. शहर के सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टर, पर्दे, बैनर लगाना कानूनी अपराध है।
6. जन्म, मृत्यु, विवाह पंजीयन समय पर करवाये।

अध्यक्ष
नगरपालिका मण्डल, नावां

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका मण्डल, नावां

स्वाधीनता दिवस की 75 वीं वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

कमलेश कुमावत
(मारवाड़)
जिला अध्यक्ष, कर्मचारी महासंघ, राजसमंद

एच-15 , शक्ति नगर, कृषि विज्ञान केन्द्र के पास,
हाउसिंग बोर्ड, धोईन्दा जिला-राजसमन्द मोबा. 9829755353

स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

जसबीर सिंह
पूर्व अध्यक्ष राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग व
राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच

एक्यूप्रेशर द्वारा

बिना दवा, हानिरहित, शीघ्र, स्थायी उपचार

- स्लिप डिस्क (Slip Disc)
- जोड़ों का दर्द (Joints Pain)
- स्पोंडलाइटिस (Spondolitis)

अन्य उपचार : माइक्रो एक्यूप्रेशर तकनीक द्वारा चेहरे की झांइयां, बालों का गिरना, मोटापा, लम्बाई कम होना, बच्चों में सेरेब्रल, पॉलिसी का होना, न्यूरोपैथी का होना एवं नये पुराने दर्द।

एक्यूप्रेशर चिकित्सा सेवा केन्द्र
"ACU-AID" (Acupressure Wala)

केसरगढ़ कैम्पस, राज. पत्रिका कार्यालय के पास,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर
मो. 0141-2743195, 9783333195

RAMEE ROYAL
RESORT & SPA
(Amangiri Hotel & Resorts)

ASHOK KUMAR JAIN
(DIRECTOR)

Near IIM, Udaipur-Ahmedabad Highway,
Surfalaya, Balicha, Udaipur - 313002 Mob. 9414167920
Sale.udaipur@rameehotels.com www.rameehotel.com
For any enquiry : 9358449001-02-03

IIM Ahmedabad Alumni Association Jaipur

Address: D-90, Janpath, Shyam Nagar,Jaipur (Raj.) 302019
E-mail : opagarwal29@hotmail.com

Working for:
- Smt. Chunki Devi M L Bhomrajka KVS Public School
- Govt. S.M. Bhomrajka Secondary School, Kuchaman City
- Govt. Jawahar Senior Secondary School Kuchaman City
- Angan Bandi Kendras, Govt. of Rajasthan
- Seva Bharti Samiti, Jaipur
- Jaipur Cancer relief Society
- Kuchaman Pustakalaya, Kuchaman City
- Jaipur Word City Society, Jaipur
- Eye Bank Society of Rajasthan
- BITS Alumni Association, Jaipur

OmNi Foundation
रामप्रसाद महादेव भोमराजका ट्रस्ट
श्रीमती जानकी देवी भोमराजका धर्मशाला ट्रस्ट
राज्य सरकार द्वारा राज्य स्तरीय भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित
कुचामन सिटी– 341508

OM PRAKASH AGRAWAL
Chairman
B.E. (BITSP), M.B.A. (IIMA)
(Mob. 9414461888)

स्वच्छ उदयपुर स्वस्थ उदयपुर सुन्दर उदयपुर

कार्यालय नगर निगम , उदयपुर

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

–: नागरिकों से विनम्र अपील :–

1. निगम की स्वीकृति अनुसार अपना भवन बनाएं।
2. बहुमंजिला इमारतों में पार्किंग की समुचित व्यवस्था रखे एवं पार्किंग में किसी प्रकार का निर्माण न करें।
3. नगर–निगम की सम्पत्ति पर अतिक्रमण न करें, ना करने दें।
4. शहर के विभिन्न चौराहों एवं मुख्य मार्गो पर अवैध होर्डिंग न लगाएं।
5. झीलों के अन्दर एवं आस–पास गन्दगी ना करें।
6. सड़कों पर कचरा न फेंके।
7. अपने पालतू पशुओं को सड़कों पर खुला ना छोड़े।
8. जन्म–मृत्यु का पंजीयन 2 दिवस के अन्दर–अन्दर कराएं।
9. निगम द्वारा घर–घर कचरा संग्रहण का कार्य किया जा रहा है, गीला एवं सूखा कचरा अलग–अलग कर वाहन में डालें।
10. विवाह पंजीयन अवश्य करावें।
11. नगर–निगम की विभिन्न सरकारी सम्पत्तियों को नुकसान का पहुंचायें।
12. शहर को साफ एवं स्वच्छ रखें जिससे यहां आने वाले वाले पर्यटक शहर के प्रति सकारात्मक संदेश लेकर जाये।

–: निगम द्वारा किये गये विशेष कार्य :–

1. राज्य सरकार द्वारा प्रशासन शहरों के संग चलाये जा रहे अभियान में पट्टा वितरण में नगर–निगम, उदयपुर द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सम्पूर्ण राजस्थान में कीर्तिमान स्थापित किया है।
2. उदयपुर शहर के निगम क्षेत्र में वर्तमान में लगभग 3667.76 लाख के विभिन्न कार्य प्रगतिरत है जिसमें रोड़, नाली, शौचालय निर्माण, सीसी रोड निर्माण, पनघट, विद्यालय में विकास कार्य आदि सम्मिलित है।
3. शहर के प्रसिद्ध माणिक्य लाल वर्मा पार्क के पुनरूद्धार का कार्य प्रगतिरत है। इसी प्रकार देहली गेट, सेवाश्रम के पास शहीद भगत सिंह पार्क, पटेल सर्कल सहित अन्य चौराहों, गार्डन एवं वहां लग रहे फुहारों को शुरू करवाया गया।
4. मेवाड़ दर्शन दीर्घा की मरम्मत का कार्य कर उसे और अधिक सुंदर बनाने का कार्य किया गया है।
5. शास्त्री सर्कल, कोटा चौराहा एवं शहर में कई स्थानों पर हो रहे स्थाई अतिक्रमण को हटवा कर वहाँ शहरवासियों की सुविधा हेतु रोड इत्यादि का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है।
6. शहर में बढ़ रहे डेंगू के संक्रमण को देखते हुए नगर–निगम द्वारा फोगिंग मशीन से पूरे शहर में फोगिंग करायी जाती है।
7. उदयपुर शहर के आस–पास बसी हुई कच्ची बस्तियों में विभिन्न विकास कार्य सम्पादित कराए गये जिससे शहर स्लम फ्री हो सके।
8. उदयपुर शहर में धरोहर संस्थान द्वारा नगर–निगम के साथ मिलकर 5 वर्षों में 10 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है।
9. उदयपुर शहर समुचित प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध करवाने हेतु शहर के प्रमुख स्थानों पर हाई मास्क लाईट के पोल लगाये गये है एवं साथ ही शहर के विभिन्न स्थानों के डिवाईडरों पर रोप लाईट लगायी गयी है।
10. नगर–निगम, उदयपुर द्वारा गोवर्धन विलास आश्रय स्थल पर खुशियों की दुकान का लोकार्पण किया गया है। यहां पर निर्धन एवं गरीब लोगों को कपड़े, खिलौने, बर्तन स्टेशनरी सभी वस्तुएं मुफ्त में प्रदान की जा रही है।
11. शहर को हरा भरा बनाने हेतु निगम द्वारा गुलाब बाग में एक दिन में 1111 फलदार पेड़ लगाए गए।
12. उदयपुर शहर में शहरवासियों एवं शहर में आने वाले ग्रामीण पर्यटकों, नागरिकों के सुगम आवागमन उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सिटी बसों का संचालन प्रारंभ करवाया गया।
13. गुलाब बाग में 51 लाख रुपये की लागत से बने स्मार्ट टॉयलेट को पर्यटकों के सुविधा हेतु प्रारंभ किया गया है।
14. निगम द्वारा जरूरतमंद व्यक्तियों को खाद्य सामग्री का वितरण किया गया।
15. निगम द्वारा एवं निगम के विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्राप्त फूड पैकेट का जरूरतमंद व्यक्तियों को वितरण किया गया।
16. मच्छरों की रोकथाम के लिए 70 वार्डों में नगर–निगम एवं सी.एम.एच.ओ. के संयुक्त तत्वावधान में फोगिंग करवाई जा रही है।
17. टाउन हॉल लिंक रोड पर कियोस्क को पीछे लेने का कार्य व रोड निर्माण कार्य।
18. दुर्गा नर्सरी रोड पर डिवाईडर, सड़क व नाली निर्माण कार्य।
19. सुभाष नगर के गोविन्दपुरा क्षेत्र में बरसात के पानी की निकासी हेतु नाला निर्माण कार्य।
20. मावली वाला शोरूम से आयड पुलिया तक नाला निर्माण कार्य।
21. केन्द्र सरकार के स्मार्ट सिटी योजना के तहत स्वीकृत 1000 करोड में से उदयपुर शहर के अंदरूनी वार्डों में (एबीडी) क्षेत्र में लगभग 604 करोड़ के आधारभूत संरचना के कार्य प्रगतिरत है जिसमें से 85 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वाधीनता दिवस

पर पाथेय कण द्वारा **विशेषांक**

प्रकाशन की **हार्दिक**

शुभकामनाएं

Tawaniya Construction Company

Brijlal Sharma, Bigga

1857 की क्रांति तथा 55वीं पंजाब रेजीमेंट की बलिदान गाथा

● के. छगनलाल बोहरा

हथियार छिने जाने से पहले ही नॉर्थ फ्रंटियर स्थित 55वीं रेजीमेंट के सिपाहियों ने क्रांति की घोषणा कर दी थी। हथियार, गोला-बारूद और खजाने पर कब्जा कर "चलो दिल्ली-मारो फिरंगी" का सिंहनाद करते हुए दिल्ली की ओर कूच किया।

विदेशी सत्ता को अपने देश से उखाड़ फेंकने के लिए भारतीयों द्वारा की गई 1857 की क्रांति, विश्व भर में स्व प्रेरणा से होने वाली एक मात्र जनक्रांति थी जिसकी योजना, गोपनीयता और व्यापकता अपने आप में अद्वितीय थी। एक ही दिन 31 मई, एक साथ, एक समय सभी सैनिक छावनियों और प्रत्येक गांव, शहर की जनता द्वारा की जाने वाली इस क्रांति के सफल होने और अंग्रेजों को 1857 में ही भारत से उखाड़ दिए जाने में कोई सन्देह नहीं था, यदि यह निश्चित समय से पहले न फूट पड़ती और कुछ बड़ी रियासतों के राजा अंग्रेजों की सहायता न करते।

1857 के स्वातंत्र्य समर को दबा दिया गया। मामूली सिपाही विद्रोह बता कर छुपाने के प्रयास को स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने अंग्रेज सरकार के ही अफसरों और सेनानायकों के पत्र व्यवहार और दस्तावेजों के आधार पर अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने हेतु की गई महान भारतीय स्वतंत्रता समर सिद्ध किया।

भारतीय सैनिकों के छीने गए हथियार

मेरठ में समय से पहले प्रारंभ हो जाने से अंग्रेज सावधान हो गए और पेशावर, लाहौर, मियां मीर, होतीमर्दान, अमृतसर, फिरोजपुर आदि छावनियों के भारतीय सैनिकों के हथियार छीन लिए गए। फ्रंटियर के मुसलमानों व पंजाब के सिक्खों को बड़ी चालाकी से अपने पक्ष में कर लेने से उन्हें बड़ी सहायता मिल गई।

सच जो छिपाया गया

सर जॉन लॉरेंस 21 अक्टूबर, 1857 को लिखता है–"had the Sikh's Joined against us, nothing, humanly speakings, could have saved us."

(यदि सिक्ख भी हमारे विरुद्ध हो जाते तो...कोई भी, कुछ भी हमें बचा नहीं पाता)

इस देशव्यापी क्रांति को दबाने के लिए अपने ही सिपाहियों और क्रांतिकारियों पर कितनी क्रूरता और अत्याचार अंग्रेज अफसरों ने किए इसका एक छोटा उदाहरण पंजाब की 55वीं रेजीमेंट की बलिदान गाथा है जिसे भी उन्होंने दुनिया से छुपाने की कोशिश की।

सर जॉन विलियम अपनी पुस्तक "भारत में सिपाही विद्रोह का इतिहास" में लिखते हैं – "यद्यपि मेरे पास अनेक पत्र हैं जिसमें हमारे अफसरों द्वारा इस रेजीमेंट

पर किए गए अमानवीय अत्याचारों का वर्णन है परन्तु मैं इसके बारें में एक शब्द भी नहीं लिखूंगा, ताकि दुनिया इन अत्याचारों की कथा न जान सके।''

यह है अंग्रेज और अंग्रेजी मानसिकता वाले इतिहासकारों की असलियत! किस प्रकार उन्होंने विदेशियों के क्रूर अमानवीय अत्याचारों को छुपाया और भारतीयों की शौर्यपूर्ण वीरता व श्रेष्ठ बलिदानों को नजरअंदाज किया। सत्य उजागर न हो और उनका काला चेहरा दुनिया को दिख न जाए इसका भरसक प्रयास अंग्रेज बुद्धिजीवियों ने किया।

विश्व की अद्वितीय क्रांति

अंग्रेजों की गुलामी से भारत माता को मुक्त कराने हेतु क्रांति का ज्वालामुखी सारे देश में भारतीय सैनिकों और देश की जनता के दिलों में खदबदा रहा था। 1857 के प्रारंभ में ही अद्भुत गोपनीयता के साथ 31 मई को एक साथ क्रांति करने का संदेश देश की सभी छावनियों के भारतीय सैनिकों में कमल पुष्प और रोटी के माध्यम से पहुंचाया गया परन्तु ऊपर से सभी शांत और अनजान थे। बंगाल की बैरकपुर छावनी से लेकर सीमान्त पंजाब के पेशावर तक और दिल्ली से मद्रास (वर्तमान चेन्नई) तक एक साथ 31 मई को क्रांति का बिगुल बजना था, परन्तु दुर्भाग्य से मेरठ में 10 मई को ही गुस्सा फूट पड़ा।

मेरठ छावनी की क्रांति के समाचार पंजाब के अंग्रेज अफसरों के पास भी पहुंचे। उन्हें अपनी छावनियों के भारतीय सिपाहियों पर भी शंका हो गई। सर जॉन लॉरेंस ने तुरंत विश्वस्त अफसरों और अंग्रेज सैनिकों की एक सेना गठित की जिसका मुख्य कार्य ही भारतीय सैनिकों के हथियार छीन कर उनके विद्रोह को कुचलना था।

जनरल निकलसन की कमान में इस सेना ने 21 मई, 1857 को पेशावर की भारतीय सैनिक टुकड़ी को अचानक घेर लिया और उसे हथियार सौंपने के लिए मजबूर कर दिया। लाहौर, मियांमीर और पेशावर की भारतीय टुकड़ियों के हथियार छीने जाने के समाचार नॉर्थ फ्रंटियर क्षेत्र के होतीमर्दान स्थित 55वीं रेजीमेंट के सिपाहियों के पास भी पहुँचे।

55वीं पंजाब रेजीमेंट द्वारा क्रांति का सिंहनाद–''चलो दिल्ली–मारो फिरंगी ?''

हथियार छिने जाने से पहले ही नॉर्थ फ्रंटियर स्थित 55वीं रेजीमेंट के सिपाहियों ने क्रांति की घोषणा कर दी थी। हथियार, गोला–बारूद और खजाने पर कब्जा कर ''चलो दिल्ली–मारो फिरंगी'' का सिंहनाद करते हुए दिल्ली की ओर कूच कर दिया।

अंग्रेज सेना कर रही थी पीछा

पेशावर से अंग्रेजी सेना लेकर जनरल निकलसन इन्हें खत्म करने के उद्देश्य से ही होतीमर्दान आया था। वह लगातार इनका पीछा कर रहा था। 24 घंटे घोड़े की पीठ पर सवार वह इन्हें कहीं भी विश्राम नहीं लेने दे रहा था। हर मुठभेड़ में स्वातंत्र्य सैनिकों की संख्या और गोला–बारूद कम होता चला जा रहा था। निकलसन उन्हें किसी भी प्रकार से दिल्ली नहीं पहुंचने देना चाहता था।

अब गुलामी नहीं सहेंगे

सीमांत प्रदेश की होतीमर्दान छावनी से दिल्ली बहुत दूर थी। रास्ते में कई जगह अंग्रेज और पठानों की टुकड़ियां तैनात थी, परन्तु आजादी के मतवाले ये क्रांतिकारी सैनिक हर मुठभेड़ में अंग्रेजी सेना को ललकारते हुए कहते कि ''लड़ते हुए बलिदान हो जाएंगे पर अब तुम्हारी गुलामी नहीं करेंगे।''

अत्यंत विषम परिस्थितियों और लगातार पीछा कर रही अंग्रेजी सेना से संघर्ष करते हुए इन बहादुर हिन्दू सिपाहियों को कहीं भी कोई सहायता देने वाला नहीं था।

अंग्रेजों से मुठभेड़ में सैंकड़ों सैनिक बलिदान हो गए। चौतरफा घोर संकट से जूझते, बचे–खुचे इन आजादी के मतवालों ने अपना धर्म और प्राण बचाने के लिए कश्मीर के राजा गुलाब सिंह के राज्य में शरण और सहायता पाने की आशा में कश्मीर का रुख किया। परन्तु यहां भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी।

सामूहिक जनसंहार

अंततः सीमांत प्रदेश की ठण्डी पथरीली, पहाड़ी घाटियों में, भूखे–प्यासे, घायल बहादुर सैनिकों पर अमानुषिक अत्याचार करते हुए अंग्रेजी सेना ने इनका सामूहिक नरसंहार किया। **55वीं पंजाब रेजीमेंट के इन हजार से भी अधिक सैनिकों ने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए घोर यातनाएं सहन करते हुए मृत्यु का वरण कर लिया। सर जॉन विलियम को अंग्रेज अफसरों के इस घोर अत्याचारी नरसंहार पर शर्मिंदा होते हुए लिखना पड़ा**

"Brave and Sullen, they went to their doom, asking only to die like soldiers at the cannon's mouth, not as dogs in the noose of the gibbet."

(भावार्थ– वे थे बहादुर सिपाही, जो फांसी के फंदे से मरने की बजाए तोप के सामने लड़ते हुए मरना चाहते थे)

55वीं रेजींमेंट के इन बलिदानियों की तरह लाखों वीरों ने इस मातृभूमि पर अपने प्राण न्योछावर किए हैं। स्वतंत्र, अखण्ड भारत के लिए उन्होंने संघर्ष किया। यह खण्डित आजादी भी ''बिना खड़ग बिना ढाल'' नहीं वरन् उसी बलिदानी परम्परा का परिणाम है।

इतिहास के पन्नों से प्रयत्नपूर्वक गायब कर दिए गए उन बलिदानियों की कथाएं प्रकाश में लाकर पाठ्यक्रमों के माध्यम से बालकों, युवाओं के हृदय में स्थापित किए जाने की अत्यंत आवश्यकता है, तभी इन अनाम शहीदों के बलिदानों का सच्चा सम्मान हो सकेगा और भारत की भावी पीढ़ी देशभक्त, नैतिक और सच्चरित्र बन सकेगी तथा भारत माता पुनः विश्वगुरु के आसन पर स्थापित हो सकेगी।

(लेखक भारतीय इतिहास संकलन योजना, राजस्थान क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन सचिव हैं)

दक्षिण भारत के स्वाधीनता संग्राम के नायक

• ऐश्वर्या चौहान

भारत की स्वाधीनता का संघर्ष देश के हर प्रांत–हर जिले में चल रहा था। दुर्भाग्य है कि इन बलिदानियों के नाम तक देश की युवा पीढ़ी को बताने का प्रयत्न नहीं हुआ। दक्षिणी राज्यों के ऐसे ही चार ज्ञात/अल्पज्ञात स्वातंत्र्य–योद्धाओं की गाथा इस लेख के द्वारा पाठकों तक पहुंचाई जा रही है।

भारत के सभी भागों की तरह दक्षिण भारत की भी स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चाहे कर्नाटक हो, तमिलनाडु हो, केरल या आंध्रप्रदेश हो, सभी प्रांतों में स्वाधीनता की तीव्र ललक थी।

कर्नाटक के बालक दत्तु ने सीने पर गोली झेली, परंतु तिरंगा न झुकने दिया

कर्नाटक के एक वीर क्रांतिकारी का जन्म 16 अगस्त,1929 को मैसूर के बेलगांव जिले के बेलहुंगल ग्राम में हुआ। पिता लक्ष्मण रंगारी से बालवीर क्रांतिकारियों की गाथा सुनता, दोपहर पाठशाला में देशभक्ति का पाठ पढ़ता ये नन्हा क्रांतिकारी अंग्रेजी अत्याचारों से भारत माता की मुक्ति के स्वप्न देखा करता था। देश सेवा की भावना से सराबोर दत्तु बचपन में ही क्रांतिकारियों के सूचना संदेश गोपनीय रूप से यथास्थान पहुंचाने लगा। बच्चा होने से वह अंग्रेजी शासन तंत्र की दृष्टि से बचा रहा। अंग्रेजों को चकमा देना दत्तु का प्रिय खेल हो गया था और फिर एक बालक पर कोई क्या संदेह करता। 13 वर्ष का दत्तु सार्वजनिक अंग्रेजी प्रशासन को चुनौती देने लगा।

23 अगस्त, 1942 को बेलहुंगल में भारत छोड़ो आंदोलन के निमित्त शोभायात्रा निकल रही थी जिसमें दत्तु ने अपने बाल टोली के साथ भाग लिया। कंठ से वंदेमातरम् का ओजस्वी घोष लगाते हुए दोनों हाथों में तिरंगा लिए गर्व से यात्रा में आगे आगे चल रहा था। पुलिस ने यात्रा को चेतावनी दी,''रुक जाओ नहीं तो जान से हाथ धोना पड़ेगा'' सामने तनी बंदूकों से बिना डरे छोटा दत्तु हाथ में तिरंगा उठा कर गरजा ''हम नहीं रुकेंगे। हम भारत माँ के बहादुर बेटे हैं, कायर नहीं। देश की राह पर बढ़े कदम, पीछे नहीं हटेंगे हम, वंदेमातरम्!।''

अंग्रेज को करारा उत्तर मिला और फिर गोलियों की बरसात होने लगी। नन्हा दत्तु सीने पर गोली खाकर गिर पड़ा, पर तिरंगा न झुकने दिया। तिरंगा अपने साथी को थमाकर रेत की चादर ओढ़े माँ के आँचल में सदैव के लिए सो कर बलिदान हो गया।

तमिलनाडु के वकील चिदंबरम पिल्लै ने देश पर सब कुछ कर दिया था न्यौछावर

1857 की क्रांति के पहले से ही 1801 में 'पंचालन कुरुची क्रांति', 'दक्षिण भारतीय क्रांति' और 1806 का 'वेल्लोर क्रांति' सहित दक्षिण भारत में अंग्रेज विरोध के संघर्ष जगह–जगह प्रारंभ हो गए थे। स्वाधीनता हेतु संघर्ष के समय भारत के दक्षिणी भाग में कई सेनानियों में जमकर उत्साह था। राष्ट्र को स्वाधीन करवाने के लिए, तो कभी अंग्रेजों द्वारा शोषित पीड़ितों के अधिकार के लिए संघर्ष करना। जिन्होंने अपने कार्य व इच्छाओं से पहले अपने देश को रखा ऐसे अल्पज्ञात नायकों में सम्मिलित एक नायक तमिलनाडु के वल्लिनायकम ओलागनाथन चिदंबरम पिल्लै (वीओसी) का जन्म 5 सितंबर,1872 में तमिलनाडु के तूतीकोरिन जिले में

ओट्टापिदारम कस्बे में हुआ था। चिदंबरम प्रख्यात वकील होने के साथ-साथ एक श्रेष्ठ लेखक और तमिल विद्वान भी थे। 1905 में बंगाल विभाजन के विरुद्ध वे तमिलनाडु में सक्रिय हुए। तूतीकोरिन में 1906 में ब्रिटिशों के भारतीय कर्मचारियों के लिए कठोर नियमों के कारण उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी। 27 फरवरी, 1908 को चिदंबरम ने अपने दो साथियों -पद्मनाभ अयंगर तथा सुब्रमण्यम के साथ मिलकर कर्मचारियों के लिए बनाई गई कठोर नीतियों का विरोध किया जिसमें उन्होंने तूतीकोरिन में ब्रिटिश स्वामित्व वाली कोरल मिल्स में हड़ताल का नेतृत्व किया। 9 मार्च, 1906 में जब देशभक्त बिपिनचंद्र पाल की मुक्ति आंदोलन में झंडा फहराकर प्रदर्शन किया, अंग्रेज सरकार का विरोध करने पर चिदंबरम व उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। जिसकी प्रतिक्रिया में पूरे जिले को तिरुनेलवेली के लोगों ने घेर लिया। 3 मार्च को हुई घटना को 'तिरुनेलवेली विरोध दिवस'(तिरुनेलवेली एजुची) के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। चिदंबरम तथा उनके अन्य क्रांतिकारी साथियों को जेल से मुक्त किया गया। अंग्रेजों ने चिदंबरम को 20 वर्ष की जेल की सजा दिलवाई। बहुत अपीलों के बाद सजा कम करके 6 वर्ष कर दी गई। कोयंबटूर जेल में चिदंबरम के जीवन के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। 1912 में जेल से छूटने के बाद उन्हें वकील की उपाधि से वंचित कर दिया। चिदंबरम के अंतिम वर्ष इतनी गरीबी में गुजरे कि उन्हें अपना जीवन यापन करने हेतु अपनी लॉ पुस्तकें तक बेचनी पड़ी। 18 नवंबर, 1936 में उन्होंने भारतीय नेशनल कांग्रेस के तूतीकोरिन कार्यालय में अंतिम श्वास ली।

केरल की स्वतंत्रता सेनानी कुट्टीमालु अम्मा

भारत में स्वराज लाने में भारत की वीरांगनाओं ने भी अपना अतुलनीय योगदान दिया है। वर्तमान में केरल के मालवार क्षेत्र में सन 1905 में आनाकार वडकथ

परिवार में जन्मीं एवी कुट्टीमालु (अनक्कारा वर्डक्कथु) अम्मा, एक स्वाधीनता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। वे सरोजिनी नायडू से अत्यंत प्रभावित थीं। एक सक्रिय स्वदेशी की समर्थक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने अन्य महिलाओं को न केवल खादी पहनने अपितु विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने के लिए भी प्रेरित किया। 1930 में जब वल्लभभाई पटेल और मदन मोहन मालवीय जैसे नेताओं की गिरफ्तारी हुई तो उन्होंने 15 अगस्त, 1930 को अखिल भारतीय राजनीतिक पीड़ित दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। जिसमें महिला संघ में सम्मिलित महिलाओं ने अम्मा के नेतृत्व में सीधे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। 1932 में प्रतिबंध के आदेश को तोड़ने तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें 2 वर्ष का कठोर कारावास दिया गया। अपने 2 महीने के बच्चे को जेल में साथ ले जाने तथा उनके साहसिक कार्य ने महिलाओं को स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के लिए असाधारण रूप से प्रेरित किया। इसके बाद उन्हें 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिका के लिए 2 वर्ष की सजा सुनाई गई।

'फ्लैग हीरो' नरसया जी

राष्ट्र सर्वोपरि के विचार मन में लिए ऐसे ही अल्पज्ञात नायकों में शामिल है ''थोटा नरसया नायडू।'' नरसया जी का जन्म आन्ध्रप्रदेश में सन 1910 में पागोलू गाँव, दिवी तालूक (कृष्णा जिला) में एक साधारण से परिवार में हुआ था। लगभग 26 वर्ष की आयु से ही वे स्वराज आंदोलन में शामिल हो गए तथा नमक सत्याग्रह के समय श्री भोगराजू पट्टाभि सीतारमैया के नेतृत्व में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए बंदरगाह मछलीपट्टनम में कोनेर केंद्र तक मार्च किया। इस यात्रा में सहभागी होने वाले प्रदर्शनकारियों में थोटा नरसया भी थे। ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों ने कोनेर सेंटर को अतिरिक्त पुलिस बलों द्वारा घेर लिया था तथा किसी को भी इस क्षेत्र में आने की अनुमति नहीं दे रहे थे। नरसया जी के ऊपर ब्रिटिश सरकार द्वारा बर्बरतापूर्वक लाठियां बरसाई गई। यह लाठियां केवल नरसया जी पर नहीं की गई बल्कि भारत माता पर भी लाठी प्रहार का प्रतीकात्मक रूप था। लाठियों से घायल नरसया जी पूरी तरह से रक्त में लथपथ थे। फिर भी भारत की धरोहर अपने हाथ में लिए तथा मन में अपने डर पर विजय प्राप्त करके नरसया जी ने झंडा फहराया तथा सभी स्वाधीनता सेनानियों के हृदय में स्वराज की भूख इस प्रकार जगा दी कि वे रहें या ना रहें स्वाधीनता लेकर ही रहेंगे। झंडा फहराने के बाद उन्होंने पाया कि वे ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई बर्बरता में अपना एक पैर खो चुके थे। अपने दर्द से अनभिज्ञ आपके मन में केवल स्वाधीनता की भूख थी। स्वराज की चाह में पागल नरसया जी अपनी जान की परवाह किए बगैर अपने राष्ट्र तथा उसके गौरव के लिए मर मिटने से भी नहीं कतराते थे। इस घटनाक्रम के बाद उन्हें 'फ्लैग हीरो' के नाम से जाना जाने लगा। उक्त घटनाक्रम के बाद उन्हें 2 वर्ष जेल की सजा सुनाई गई थी। पहलवान नरसया जी का शरीर लोहे की भाँति मजबूत होते हुए भी उन्होंने अपना विवेक सदैव जागृत रखा। दूसरी बार 18 महीने की जेल की सजा सुनाई गई। असहयोग आंदोलन के समय 'झंडा आंदोलन' करने से उनकी भूमिका एवं परिणाम स्वरूप युवाओं में साहस के बीज बोने तक में उनका योगदान अतुलनीय है। इतने पराक्रमी, साहसी तथा शौर्य से समृद्ध नायकों की भारत भूमि सदैव ऋणी रहेगी।

(लेखिका इतिहास में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सिविल सेवा में चयन हेतु अध्ययनरत हैं)

अल्लूरी सीताराम राजू

वर्तमान आंध्रप्रदेश में जन्में अल्लूरी सीताराम राजू ने अंग्रेजों द्वारा जनजातीय लोगों पर किए जा रहे अत्याचारों के विरोध में लोगों को संगठित कर भारत से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने अंग्रेज पुलिस को चुनौती देकर अपने क्रांतिकारी साथी वीरैयादौरा को जेल से छुड़ा लिया। गोरिल्ला युद्ध में पारंगत होने के कारण पुलिस उन्हें पकड़ नहीं पा रही थी। अल्लूरी राजू ने भारत के अन्य क्रांतिकारियों का भी सहयोग किया। वे जंगलों में रहने वाले जनजातीय समुदाय में इतने लोकप्रिय और साहस के प्रतीक हैं कि लोग आज भी कहते हैं- वे अभी जिंदा हैं, देवता कभी मरते नहीं। ऐसे ही वीर नायक के कहानी से संबंधित है यह लेख।

• डॉ. व्याख्याती जानकी नारायण श्रीमाली

भारत मां के एक महान सपूत, महान क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम राजू जिन्होंने भारत की आत्मा जहां निवास करती है उन गांवों से, उन जंगलों से क्रांति की ऐसी अलख जगाई की जिस ब्रिटिश साम्राज्य का सूरज कभी डूबता ही नहीं था, उस ब्रिटिश राज को दिन में भी तारे नजर आने लगे।

जंगली जानवरों को कर लेते थे अपने वश में

अल्लूरी सीताराम राजू का जन्म 4 जुलाई, 1897 को वर्तमान आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम के पास हुआ। क्रांतिकारी वीर राजू ने स्कूली शिक्षा के साथ-साथ निजी रुचि के तौर पर चिकित्सा और ज्योतिष का भी अध्ययन किया और यह उनके व्यावहारिक अभ्यास में भी झलकता था यानि जो पढ़ा उसे जिया भी। उनमें एक विशेष योग्यता थी और वह थी जंगली जानवरों को साथ लेने की। जिन जानवरों के दर्शन मात्र से ही लोग थर-थर कांपने लगते थे उन्हें राजू चुटकियों में वश में कर लेते थे।

युवावस्था में राजू ने जनजातीय समाज को अंग्रेजों के खिलाफ संगठित करना शुरू किया तो इन विद्याओं की जानकारियों ने उन्हें अभूतपूर्व सहायता प्रदान की।

उनके पिता अल्लूरी वैंकटराम राजू ने बचपन में ही उनमें यह चेतना जगा दी थी कि अंग्रेज तो हमें गुलाम मानते हैं, वे इस देश को लूट रहे हैं और हमें अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त करवाना है। पिता का साथ तो जल्दी ही छूट गया लेकिन स्वतंत्रता के लिए जो संस्कार चाहिए उनका बीजारोपण राजू में हो चुका था। उनमें विप्लव पथ के बीज लग गए और आने वाले कुछ वर्षों में उनमें प्रस्फुटन भी हो गया। जनजातियों को मर्मांतक पीड़ा सहन करते देख उन्हें बहुत दुख हुआ।

अध्यात्म और योग का किया अभ्यास

उन्होंने 2 वर्ष तक सीता माई नामक पहाड़ी की गुफा में अध्यात्म साधना, योग क्रियाओं से चिंतन तथा तप से अपने आप को मानसिक रूप से पूर्ण विकसित किया, एक साधु की तरह जीवन जिया और यही वह समय था जब उन्होंने यह तय कर लिया कि इन जनजातियों और गिरिजनों की पीड़ा को दूर करने का बीड़ा उठाना ही होगा।

अंग्रेजी अत्याचारों के विरुद्ध किया संघर्ष

1882 के मद्रास (अब चेन्नई) वन अधिनियम ने जनजातियों से उनके वनों में जाने के अधिकार को प्रतिबंधित कर दिया। पोडू नामक जो स्थानांतरण खेती वे लोग करते रहे थे उसको प्रतिबंधित कर दिया गया। यह एक ऐसा कदम था जिसने जनजातियों की आत्मा पर चोट पहुंचाई, जनजातियां स्वतंत्रता प्रिय हैं। किसी बंधन में नहीं रहना चाहते। प्रकृति के साथ पूर्ण तादात्म्य में रहते हैं और उनको उनकी जीवन रेखा से दूर करने का जो प्रयास अंग्रेजों ने किया वह उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए। राजू ने एक बात अच्छे से समझ ली कि परिवर्तन विशेष रूप से सत्ता का परिवर्तन, राष्ट्र के भाग्य में जो गुलामी की बेड़ियां डाल दी गई हैं उन्हें तोड़ने का कार्य नारे या भाषण से नहीं हो सकता। अंग्रेज इतने भोले भी नहीं कि वह किन्हीं अहिंसक आंदोलनों से देश छोड़ जाएं या इन अत्याचारी कानूनों को वापस ले लें। उन्होंने आसपास के लोगों को संगठित किया और उन्हें यह बताया कि कैसे हम अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकते हैं।

पूरे क्षेत्र में सीताराम राजू का अत्यधिक सम्मान था लोग उन्हें एक प्रेरणास्पद व्यक्ति के रूप में देखते थे। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का भी आह्वान किया जिसका क्रांतिकारी असर भी समाज में पहुंचा। उन्होंने लोगों को संगठित किया।

चुनौती देकर साथी को जेल से छुड़ाया

उनके क्रांतिकारी साथियों में बीरैयादौरा का नाम बहुत विख्यात था। वह प्रारंभ में अपने अलग संगठन में काम कर रहे थे उन्होंने अंग्रेजों से युद्ध छेड़ रखा था बाद में अंग्रेजों ने बीरैया को गिरफ्तार कर लिया, जेल में रखा लेकिन वह निकल भागे। जब वह फिर पकड़े गए तब सीताराम राजू ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया जो कहीं देखने में नहीं आता। उन्होंने अंग्रेजों को चुनौती देकर कहा कि मैं बीरैया को तुम्हारी जेल से छुड़ाकर ले जाऊंगा। उन्होंने गोलियों की बौछार के बीच बीरैयादौरा को छुड़वा लिया। राजू और बीरैया की खोज पुलिस के लिए एक समस्या बनती जा रही थी। पुलिस के छापे विफल होते रहे। अंग्रेजों ने राजू को पकड़ने के लिए उस जमाने के अखबारों में इश्तहारों में 10 हजार रुपए नगद का इनाम घोषित किया। 1920-22 के समय में यह एक बहुत बड़ी धनराशि थी।

अन्य क्रांतिकारियों का सहयोग

सीताराम राजू ने न सिर्फ खुद काम किया, खुद संघर्ष किया बल्कि देश में बाकी जगह भी क्रांतिकारियों को एकत्रित किया,उन्हें सहायता दी। उत्तराखंड के क्रांतिकारियों से संपर्क किया। गदर पार्टी के नेता बाबा पृथ्वी सिंह को दक्षिण भारत की राज महेंद्री जेल से छुड़ाने का भरसक प्रयास किया।

गुरिल्ला युद्ध में थे पारंगत

सीताराम राजू गुरिल्ला पद्धति से युद्ध करते और नल्लामलाई पहाड़ियों में अंतर्धान हो जाते। उनके विद्रोह का नाम था 'रंपा विद्रोह'। वे पुलिस के हाथ नहीं आते, कभी वह उनका बाल बांका भी नहीं कर पाती, इसलिए पुलिस ने उनका नाम रखा था ''रम्पा फितूरी''। गोदावरी नदी के पास फैली इन पहाड़ियों में राजू और उनके साथियों का आश्रय स्थल भी था और प्रशिक्षण केंद्र भी। यहीं वे आश्रय लेते, अभ्यास करते व आक्रमण की रणनीति बनाते। पुलिस थानों पर आक्रमण करके वहां से हथियार लूट लेते और उन्हीं से अंग्रेज शासन को चुनौती देते।

अंग्रेजों को उनसे संघर्ष में मुँह की खानी पड़ी

राजू से लगातार मात खाती हुई आंध्र की पुलिस के सारे प्रयास व्यर्थ साबित हो चुके थे। अंत में मालाबार पुलिस के दस्ते राजू को पकड़ने के लिए लगाए क्योंकि उन्हें पर्वतीय इलाकों में छापे मारने का अनुभव था। मालाबार दस्ते ने भी अपना पूरा प्रयास किया लेकिन राजू का कुछ नहीं कर पाई। कई मुठभेड़ हुई पर हर बार अंग्रेज शासन को मुंह की खानी पड़ी। इसके बाद राजू को पकड़ने के लिए असम राइफल्स को उतार दिया गया। 6 मई,1924 को राजू के दल और असम राइफल्स का मुकाबला हुआ। राजू के कई साथी बलिदान हो गए। राजू फिर भी बच निकले। उनमें चीते सी फुर्ती थी,तीक्ष्ण बुद्धि थी। ईस्ट कोस्ट स्पेशल पुलिस उन्हें पहाड़ियों के चप्पे-चप्पे में खोज रही थी, पर वह उन्हें पकड़ नहीं पा रही थी,क्योंकि आदिवासियों के स्वभाव में ही निष्ठा होती है। कहीं कोई धोखा नहीं कोई विश्वासघात नहीं और जन समर्थन ऐसा कि जिसको देखकर कोई भी दांतों तले उँगली दबा ले।

एक दिन दुर्भाग्य से एक पुलिस अधिकारी की राजू पर नजर पड़ गई, वह अकेले जा रहे थे उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। वह अधिकारी राजू को पहचान तो नहीं सका लेकिन उसे लगा कि शायद यही है और उसने उनके ऊपर पीठ पीछे से वार कर दिया उन्हें गोली लग गई । राजू जख्मी होकर गिर पड़े उन्हें जब पूछा गया तो उन्होंने गर्व से कहा हां मैं ही हूं अल्लूरी सीताराम राजू। उन्हें कठोर यातनाएं दी गई और बाद में गोदावरी नदी के किनारे एक पेड़ से बांधकर उन्हें गोली मार दी गई। परंतु श्रेष्ठ आत्माएं नश्वर शरीर के नष्ट होने से नष्ट नहीं होती हैं। वे अपने कार्यों, अपने

विचारों, अपनी जनसेवा, अपने उच्च आदर्शों एवं लोकहित के कार्यों से सदियों तक मानवता का पथ प्रदर्शित करती हैं और इसके लिए सत्ता कुछ भी कर ले वह लोगों के दिलों से उनके सतकार्यों को,संघर्षों को मिटा नहीं सकती।

लोगों ने माना देवता, कहा आज भी है जीवित

आज भी उन जंगलों में यह माना जाता है कि राजू कभी मारे ही नहीं गए, वे जीवित हैं क्योंकि देवता कभी मरते नहीं। उन्हें 'मन्यम वीरूडू' कहा जाता है यानी जंगलों का नायक! एक ऐसा अनाम नायक जिसके सामने सिर्फ एक ही लक्ष्य था, वह था भारत, एक ही प्रेरणा थी, भारत की स्वतंत्रता, एक ही उद्देश्य था देशवासियों की यातना का अंत। उनके श्रेष्ठ जीवन ने राष्ट्र मार्ग पर चलकर इतनी छोटी सी अवस्था में अपने जीवन को मां भारती के चरणों में समर्पित कर दिया। इस वीर सपूत को आने वाली पीढ़ियां इन कथाओं से,सत्य घटनाओं से, इन कहानियों से, इन बलिदानों से याद रखें, प्रेरणा ले और उन्हीं के जीवन आदर्श के भारत को, हमारे प्यारे भारत को विश्व गुरु के पद पर पुनःआसीन करें।

(लेखक अभियांत्रिकी महाविद्यालय ,बीकानेर में अंग्रेजी विषय के सहायक आचार्य पद पर कार्यरत हैं)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम और असम के क्रांतिकारी

• डॉ. पवन तिवारी

भारत के अन्य क्षेत्रों की तरह सुदूर असम भी स्वाधीनता आंदोलन में पीछे नहीं था। वहां कई लोगों ने अपना बलिदान दिया। कुशल कोंवर ने जहां फांसी का फंदा चूमा, वहीं कनकलता बरुआ और भोगेश्वरी फुकनानी स्वतंत्रता आंदोलनों का नेतृत्व करते हुए अंग्रेजों द्वारा की जा रही गोलीबारी में भी पीछे नहीं हटी और वीरगति प्राप्त की। ऐसे ही असम के कुछ अनाम या स्वल्पज्ञात स्वाधीनता सेनानियों का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

श्रीमन्त शंकरदेव की पावन धरा असम भारतीय संस्कृति के प्रसिद्ध उद्घोष ''वीरभोग्या वसुन्धरा'' को चरितार्थ करती है। पूर्वोत्तर के द्वार कहे जाने वाले असम प्रदेश के क्रान्तिकारियों ने अपने द्वार पर ही ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया था। दुर्भाग्य से एकपक्षीय इतिहास लेखन ने उनके नामों को भारतीय आम जनमानस तक नहीं जाने दिया और उन्हें विस्मृत कर दिया गया। किन्तु वर्तमान ऐतिहासिक पुनर्लेखन में उन भूले हुए क्रान्तिकारियों को याद करना अब हम सभी की जिम्मेदारी बन जाती है।

असम की इस धरा पर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विरोध का बिगुल बजाने वाली कनकलता बरुआ, भोगेश्वरी फुकनानी, पुष्पलता दास, चन्द्रप्रभा सैकियानी, मणिराम दीवान, कुशल कोंवर, शंभुधन फुंगलो, भोगोई देवी, बोधुरा कोच, हरि डेका, धनदेव सरमा आदि जैसे अप्रतिम क्रान्तिकारी हुए हैं।

कनकलता बरुआ

कनकलता बरुआ का जन्म 1924 में असम प्रान्त में हुआ और बालपन से ही वे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित हो गईं।

मात्र 7 वर्ष की अल्प आयु में उन्होंने 1931 के वर्ष में ब्रिटिश विरोधी रैलियों में भाग लिया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने असम की ओर से क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया। ब्रिटिश फौज के समक्ष वे हाथ में तिरंगा लेकर अपने सहयोगियों के आत्मबल में वृद्धि करते हुए आगे आईं और ब्रिटिश गोलीबारी में अपने प्राण भारत माता के चरणों में न्यौछावर कर दिए। आज तिरंगा लिए हुए असम की दीवारों पर उभरे और चित्रांकित दृश्य उनके बलिदान की गाथा गा रहे हैं।

भोगेश्वरी फुकनानी

भोगेश्वरी फुकनानी (1872-1942) एक जिजीविषा वाली क्रान्तिकारी महिला थीं। असम के नौगांव जिले के बहरामपुर कस्बे में उन्होंने 70 वर्ष की आयु में ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन का नेतृत्व किया। इन्होंने व्यक्तिगत प्रयास से स्थानीय महिलाओं का एक संगठन बनाकर उन्हें भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सहभागिता हेतु प्रेरित किया। भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) के दौरान ब्रिटिश कैप्टन फिंस के द्वारा चलाई गई गोली से इन्हें वीरगति प्राप्त हुई।

पुष्पलता दास

पुष्पलता दास (जन्म - 27 मार्च, 1915) का सम्बन्ध असम के उत्तर लखीमपुर से रहा है। वह एक प्रतिष्ठित समाज सेवी और सक्रिय आन्दोलनकारी महिला थीं। मात्र 11 वर्ष की आयु में आपने मुक्ति संघ नामक संगठन बनाकर राष्ट्रवादी गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने

भगत सिंह की फांसी का पुरजोर विरोध किया था। वे राष्ट्रीय स्वाधीनता हेतु संघर्षरत राष्ट्रीय योजना समिति (1940-42) की सक्रिय कार्यकर्त्री रहीं और भारत छोड़ो आन्दोलन में अपने सफल नेतृत्व का परिचय दिया। स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय राजव्यवस्था में इन्होंने सांसद के उत्तरदायित्त्व का निर्वहन भी किया था।

चन्द्रप्रभा सैकियानी

चन्द्रप्रभा सैकियानी (जन्म - 24 दिसम्बर, 1901) का सम्बन्ध असम के कामरूप जिले से है। युवावस्था में वह एक अध्यापिका और बाद में प्रधानाध्यापिका भी बनी। उन्होंने गांधी जी के स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया और प्रधानाध्यापिका के दायित्व से त्याग पत्र देकर एक महिला मोर्चा बनाया तथा अपना जीवन भारतमाता के चरणों में समर्पित कर दिया। असम में अंग्रेजों के विरोध के बावजूद शिक्षा के लिए प्राथमिक विद्यालय खोला, किशोरों को नशे की लत से मुक्त कराने हेतु 'अफीम निषेध आन्दोलन' में भी सहभागिता की। भारतीय परिप्रेक्ष्य में दिए जा रहे नारे 'स्वदेशी अपनाओ' का आपने घर-घर जाकर प्रचार किया और अंग्रेजी सामान के बहिष्कार की बात की। भारत छोड़ो आन्दोलन में कामरूप जिले का नेतृत्व किया और अपनी आँखों के सामने आपने भारतीय स्वाधीनता प्राप्त होते हुए भी देखी।

मणिराम दीवान

ऐसे ही क्रान्तिकारी थे - मणिराम दत्ता बरूआ उपाख्य मणिराम दीवान। 24 दिसम्बर, 1806 में जन्में दीवान ने जोरहाट में अपना पहला स्वदेशी चाय बागान लगाया। वे 1857 की क्रान्ति से प्रभावित थे। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन में लगाया। उन्हें 26 फरवरी, 1858 को जोरहाट सेन्ट्रल जेल में फांसी दी गई।

कुशल कोंवर

एक अन्य क्रान्तिकारी **कुशल कोंवर** (जन्म - 1905) भी हुए, जिनका सम्बन्ध असम प्रदेश के गोलाघाट जिले से रहा है। आपने भारतीय स्वाधीनता हेतु आयोजित असहयोग आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन - इन तीनों आन्दोलनों में महती भूमिका निभाई। वर्ष 1942 में अंग्रेजों ने जेल में डाल दिया और बिना उनका ठीक से पक्ष जाने 15 जून, 1943 की सुबह फांसी लगा दी। ऐसे वीर को आज पूरा असम याद करता है और इनकी गाथा अब भारत का आम जन मानस भी जानेगा।

शंभुधन फुंगलो

शंभुधन फुंगलो (1850-1883) ने असम के कछारी क्षेत्र में ब्रिटिशर्स के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया। इन्होंने अंग्रेजों द्वारा विभक्त किए गए कछारी क्षेत्र के युवाओं को सैन्य-प्रशिक्षण देकर सशस्त्र विद्रोह हेतु एक बृहत् सैन्य-क्षमता अर्जित की और अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज बुलन्द की।

इनके अतिरिक्त भी असम के ऐसे अनगिनत क्रान्तिकारी हुए हैं, जिन्होंने भारतमाता के श्रीचरणों में हंसते-हंसते अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

आज आजादी के अमृत महोत्सव में हम सभी का कर्त्तव्य है कि हमारी स्वाधीनता हेतु प्राण न्यौछावर करने वाली इन हुतात्माओं को नमन करें।

(लेखक विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री हैं)

16 वर्ष के क्रांतिकारी नानी गोपाल को दी गई थी काले पानी की सजा

वहां भी किया अप्रतिम संघर्ष

● के. छगनलाल बोहरा

मात्र 16 वर्ष के नानी गोपाल को देश की स्वतंत्रता के लिए क्रांति कार्य करने पर काले-पानी की कठोर सजा दी गई। उसे तेल निकालने वाले कोल्हू में लगाने का आदेश दिया गया। नानी गोपाल ने कहा, " हम लुटेरे, हत्यारे या डाकू नहीं हैं। हम राजनैतिक कैदी हैं। हमारे साथ वैसा ही बर्ताव किया जाए।" और उसने जेलर के सभी आदेश मानने से इंकार कर दिया। नानी के साथ बड़ी क्रूरता और अत्याचार किए गए। नानी गोपाल की इसी लोमहर्षक गाथा को आलेख में प्रस्तुत किया गया है ।

भारत माँ का बंगाली सपूत 16 वर्ष का तरूण नानी गोपाल बचपन से ही मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प ले,क्रांतिकारी संगठन का सक्रिय सदस्य बन गया था। बंगाल के बड़े अंग्रेज अधिकारियों पर बम से हमला करने के आरोप में उन्हें 14 वर्ष की कठोर सजा देकर अण्डमान जेल भेज दिया गया था।

कोल्हू चलाने से किया मना

जेल नियमों के विपरीत 16 वर्ष के बालक को कोल्हू चलाने का आदेश दिया गया। नानी गोपाल ने कोल्हू चलाने से साफ मना कर दिया। गाली, डण्डे मार-पिटाई किसी बात से टस से मस न होते हुए उसने निर्भीकतापूर्वक घोषणा कर दी कि ''मैं राजनैतिक कैदी हूँ, उसी नियम से व्यवहार होना चाहिए, तब तक मैं तुम्हारी कोई बात नहीं मानूँगा।'' जेलर ने उसे हथकड़ी-बेड़ी में जकड़ कर साथियों से अलग एकांत काल कोठरी में डालने की सजा सुनाई परन्तु नानी गोपाल ने उनके किसी भी आदेश को मानने से इन्कार कर दिया। वह उनकी किसी बात का जवाब नहीं देता, न अफसरों के आने पर खड़ा होता, न नहाता, न कपड़े धोता, एक प्रकार से सम्पूर्ण अवज्ञा आन्दोलन शुरू कर दिया।

राजनीतिक बंदी जैसे व्यवहार की मांग

जितना वे उसे सजा देते वह उतना ही अधिक कठोर और बेपरवाह होता चला गया। उसकी स्पष्ट मांग थी कि, ''वह एक राजनैतिक बन्दी है और उसके साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए। हम कोई चोर, लुटेरे, हत्यारे, डाकू नहीं हैं। हम राजनैतिक बन्दी हैं और यह हमारे सम्मान का प्रश्न है, अत: हमारे साथ जुल्म किया जाना बन्द हो और राजनैतिक बन्दियों जैसा ही व्यवहार हो।''

नानी गोपाल के इस निर्भय असहयोग और कोई आदेश न मानने के दृढ़ निश्चय ने सारे जेल अफसरों को परेशानी में डाल दिया। चीफ कमिश्नर ने उसे खूब धमकाया और कहा कि तुम मर भी जाओं तो हमें कोई परवाह नहीं है पर ''तुम्हें राजनैतिक कैदियों जैसा व्यवहार यहां नहीं मिलेगा।'' नानी गोपाल ने विरोध मे जंजीरें तोड़ डाली, कपड़े फाड़ दिए। उसका एक कम्बल छीन लिया गया तो उसने दूसरा कम्बल भी फेंक दिया और रात भर नंग-धड़ंग सर्दी में ठण्डे फर्श पर सोना शुरु कर दिया।

असहनीय क्रूरता

कई दिनों तक बिना नहाए गन्दा रहने पर एक दिन कई जमादारों ने मिलकर उन्हें जबरदस्ती उठा कर पानी के हौज के पास ले गए और पकड़ कर जमीन पर लिटा दिया। सफाई कर्मचारियों ने नारियल की जटा से उसके शरीर को इस बुरी तरह से रगड़-रगड़ कर धोया कि उसका पूरा शरीर लाल हो गया और जगह-जगह खून निकल आया। जूट के तप्पड़ का बोरा जबरदस्ती उसके शरीर पर सील दिया गया परन्तु उसे भी नानी गोपाल ने रात में किसी तरह फाड़ कर फेंक दिया। मुसलमान जमादार हर समय भद्दी-भद्दी गालियों और मारपीट से उन पर हर तरह के जुल्म करते। आखिर उन्हें कोड़ों

की सजा देने का निश्चय किया गया।

जेलर मि. बेरी ने जब सावरकर को इस बारे में बताया तो विनायक जी ने नानी गोपाल जैसे बालक पर कोड़ों का प्रयोग करने के खिलाफ कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि "राजनैतिक बन्दियों पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होगी और ये जान पर खेल कर जेल में हंगामा खड़ा कर देंगे। जो भी हिंसा होगी उसके जिम्मेदार तुम होओगे।"

कोड़े मारने को कोई भी तैयार नहीं था

जेलर ने नानी गोपाल को बांधकर कोड़े मारने वाली चौखट कसवाई। सभी कैदियों को कोठरियों में बन्द कर दिया गया ताकि कोई इकट्ठा होकर दंगा न कर सके परंतु नानी गोपाल जैसे छोटे बच्चे को कोड़े मारने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। आखिर चीफ कमिश्नर ने इस मामले में बीच में पड़कर सजा निरस्त कर दी और उसे सेल्यूलर जेल से हटा कर दूसरे जिले की जेल में इस आशा से भेज दिया कि वहां कुछ दिन अलग रह कर शायद सुधर जाएगा।

दूसरी जेल में भी उसने भूख हड़ताल प्रारंभ कर दी। खाना-पीना त्याग कर वह बिना किसी से बात किए लेटा रहता। कुछ दिनों बाद उसे वापस सेल्यूलर जेल लाया गया। वह बहुत कमजोर हो गया था। इस बारे में सावरकर लिखते हैं कि मैंने उसे अनशन छोड़ देने के लिए समझाया पर वह अपने निश्चय पर अटल था। इस प्रकार अनशन करते हुए डेढ़ महिना गुजर गया। नानी गोपाल हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया था। जेल कर्मचारी उसके नाक में नली डाल कर जबरदस्ती दूध उसके पेट में उड़ेलने का प्रयास करते थे जो बहुत ही पीड़ादायक प्रक्रिया थी। नानी गोपाल ने इसका भी भरसक विरोध किया।

सात दिन तक हथकड़ी-बेड़ी में खड़े रहने की सजा

उस छोटे बच्चे के डेढ़ महीने के अनशन और कई प्रकार की यातनाओं के कारण इस नितांत कमजोर अवस्था में भी हथकड़ी बेड़ी डाल कर सात दिन तक खड़े रहने की सजा दी गई। सभी राजनैतिक बन्दी उसकी हिम्मत और शौर्य पर गर्व अनुभव करते थे।

कई बन्दियों ने भी उसके समर्थन में अनशन प्रारंभ कर दिया। उन सबको भी हथकड़ी-बेड़ी डाल कर सात-सात दिन खड़े रहने की सजाएं दी गई। मुझे तो बेड़ियां डालकर दो सप्ताह खड़े रहने की सजा दी गई।

सावरकर नहीं थे अनशन के पक्ष में

व्यक्तिशः मैं अनशन या भूख हड़ताल के पक्ष में नहीं था। यह हमें और हमारे उद्देश्य को कमजोर करती है। मैं सभी क्रांतिकारियों को यही समझाता था कि यथेष्ट भोजन और व्यायाम से शरीर में शक्ति का संचय करो और अपने लक्ष्य के प्रति अटल रहो। मरना भी पड़े तो दुश्मनों से लड़ते हुए उन्हें मार कर मरो। सभी साथी मेरी बात मान गए पर नानी गोपाल को समझाना कठिन था। वह अनशन तोड़ने को तैयार नहीं था। इस पर मैंने भी अनशन प्रारंभ कर दिया।

मेरे अनशन से सारी जेल में खलबली मच गई। चीफ कमिश्नर ने सुपरिंटेंडेंट को मेरा अनशन समाप्त कराने का दबाव डाला। मुझे सजा देने के बजाय आग्रह किया गया कि मैं अपना अनशन समाप्त कर दूं।

मैंने कहा कि-"नानी गोपाल और उसके साथ हमारी भूख हड़ताल हमारे पर किए जा रहे जुल्मों के विरोध और हमें राजनैतिक कैदियों का दर्जा दिए जाने के लिए है और हम इसे प्राप्त करके रहेंगे। नानी गोपाल की हालत बहुत खराब है अतः अनशन तोड़ने के लिए, राजी करने के लिए मुझे उससे मिलने दिया जाए।"

सरकार को झुकना पड़ा

जेलर बेरी मुझे नानी गोपाल की कोठरी के पास ले गया। नानी गोपाल बहुत कमजोर हो गया था और मेरे अनशन करने से दुखी था। मैं उसे एक ओर ले गया और समझाते हुए कहा " देखो नानी! इस प्रकार औरतों

सेल्यूलर जेल, अण्डमान

की तरह मरना भी कोई मरना है। मरना ही है तो दुश्मनों से लड़ते हुए वीरों की तरह उन्हें मार कर मरो। यह अनशन छोड़ो, यथेष्ट भोजन कर शक्ति का संचय करो और यहां से मुक्त होकर स्वंतत्रता का लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करो जिसकी हमने प्रतिज्ञा की है।'' नानी गोपाल मेरे समझाने पर अनशन समाप्त करने के लिए राजी हो गया । परन्तु हमारी हड़ताल जारी रही। अंतत: सरकार को हमें कुछ सुविधाएँ देने के लिए राजी होना पड़ा।

हम जन्मजात स्वतंत्र हैं

हड़ताल के इन दिनों में सुबह शाम जब हम भोजन की लाईन में बैठते तो जेलर हम सबकी निगरानी के लिए खड़ा रहता कि कहीं हम आपस में बातें न कर लें। एक दिन मि. बेरी जोर से कड़कता हुआ बोला ''साइलेंस'' और हम सब चुपचाप खाना खाने लगे। इतने में किसी के भाषण देने की आवाज सुनाई पड़ी, हम सभी चौंक गए और सिर उठा कर देखा तो नानी गोपाल जेलर बेरी के ''साइलेंस'' आदेश की अवहेलना करता हुआ बुलन्द स्वर में बोल रहा था। ''भाइयों ! हम स्वतंत्र हैं। हम जन्मजात स्वतंत्र हैं। एक दूसरे का अभिनन्दन करना, हालचाल पूछना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। कोई दुश्मन हमें इससे रोकता है तो हमें उसे ललकारना चाहिए। ये देखो मैं आप से बोल रहा हूँ और बोलता रहूँगा।''

क्रोध से उबलते हुए बेरी, मिर्जा खान और दूसरे पठान उसकी तरफ लपके पर उसने बिना डरे ऊंची आवाज और निडरता के साथ अपना भाषण जारी रखा। सब जमादारों ने मिल कर उसे उठा लिया और ले जाकर कोठरी में बन्द कर दिया पर उसका भाषण जारी रहा, वे उसका बोलना बन्द नहीं करवा सके।

निर्भीक हिंदू या गुलाम पठान

बाद में जमादार मिर्जा खान मेरी कोठरी पर आया और बड़ी उत्सुकता से बोला ''बड़ा बाबू ! नानी गोपाल बड़ा बहादुर और आपका सच्चा अनुयायी है। वह अपने उसूलों का पक्का है। वह एक पठान जैसा बहादुर और साहसी है, बिल्कुल मेरे जैसा पठान बच्चा।'' मैंने उसे तुरन्त जवाब दिया।'' बड़ा जमादार ! तुम गलत बोल रहे हो। तुम्हारे पिता पठान थे। तुम भी पठान हो। अगर वो भी पठान होता तो देश की खातिर यहां जेल में सड़ नहीं रहा होता। बल्कि तुम्हारी तरह वह भी मिस्टर बेरी के जूते चाटता और मौज करता, उसे इस प्रकार ललकारता नहीं। बेरी दिन को रात कहता है तो तुम भी उसकी चापलूसी करते हुए ''जी हुजूर अभी रात ही है'' कहते हो। नानी गोपाल ऐसा निडर और साहसी बच्चा है क्योंकि वह जन्मजात हिन्दू है। मैं उसके साहस, निर्भीकता और बुद्धिमानी से बहुत प्रसन्न हूँ, उसकी भरपूर प्रशंसा करता हूँ। अगर सभी पठान बहादुर और हिन्दू कायर होते तो हमने भारत से पठानों-मुसलमानों का राज कैसे उखाड़ कर फेंक दिया? मिर्जा खान का सारा घमण्ड और अकड़ गायब हो गई और खिसियाया हुआ उसका चेहरा देखने लायक था। अंततः 1920 में उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया।

(लेखक भारतीय इतिहास संकलन योजना, राजस्थान क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन सचिव हैं)

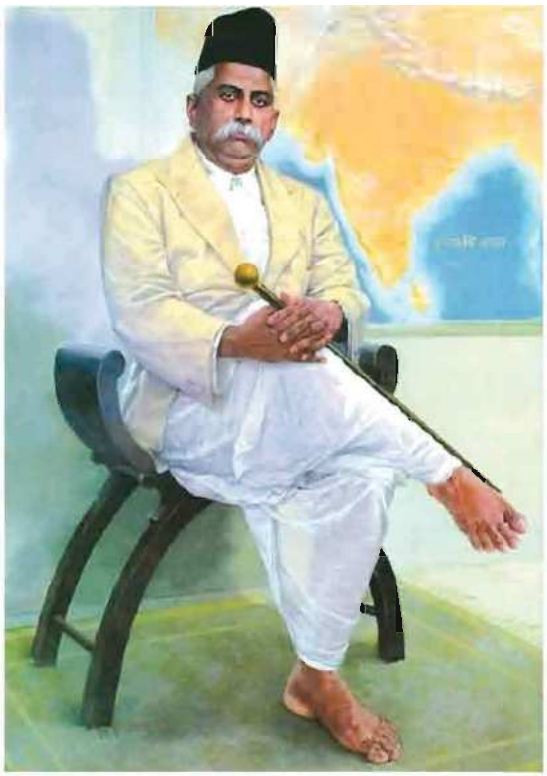

डॉ. हेडगेवार की जेल से रिहाई पर कांग्रेसी नेताओं ने किया था स्वागत

● डॉ.रामकरण शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ.हेडगेवार तत्कालीन विदर्भ प्रांत के बड़े कांग्रेसी नेता थे। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण उनको हुई जेल की सजा भुगतने के बाद रिहा होने पर मोतीलाल नेहरू, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे बड़े कांग्रेसी नेता भी उनका स्वागत करने आए हजारों लोगों के साथ स्वागतार्थ उपस्थित थे।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रारम्भ करने से पूर्व कांग्रेस के सक्रिय सदस्य एवं महाराष्ट्र में स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी नेता थे। स्वातंत्र्य आंदोलन में सक्रिय होने के कारण न्यायालय ने 5 अगस्त, 1921 के दिन डॉ.हेडगेवार को एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई थी।

जेल से मुक्ति का शताब्दी वर्ष

डॉ. हेडगेवार को 12 जुलाई, 1922 को कारागृह से मुक्ति मिली। यह वर्ष उस घटना का शताब्दी वर्ष है। जिस दिन डॉ. हेडगेवार जेल से बाहर आए उस दिन पं.मोतीलाल नेहरू एवं चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जो उस समय के कांग्रेस के बड़े नेता थे, की उपस्थिति में हजारों की संख्या में जनसमूह भारी वर्षा में भी डॉ.हेडगेवार के स्वागत के लिए नागपुर के व्यंकटेश भवन के अंदर एवं बाहर उपस्थित था। यह समाचार उस समय महाराष्ट्र के 'महाराष्ट्र' नामक समाचार पत्र में छपा था।

लगाया गया था 'देशद्रोह' का आरोप

ब्रिटिश सत्ता ने सात वर्ष पूर्व ही डॉ.हेडगेवार को संभावित खतरनाक राजनैतिक अपराधियों की सूची में सम्मिलित कर दिया था। डॉ.हेडगेवार की बढ़ती सत्ता विरोधी गतिविधियों के कारण ही मई 1921 में औपनिवेशिक सरकार ने उन्हें दण्डित करने का मानस बना लिया था। इसके लिए 24 अक्टूबर, 1920 को कटोल एवं भारतवाडा की सभाओं में दिए गए उनके दो भाषणों को आधार बनाया गया। डॉ.हेडगेवार ने इन दोनों सभाओं में अध्यक्षता की थी। सरकार की दृष्टि में डॉ.हेडगेवार अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध घृणा पैदा करने तथा उसे पलट देने के भड़काऊ भाषण देने के दोषी थे। 1921 के मामले में विचारण के दौरान डॉ.हेडगेवार ने औपनिवेशक सत्ता को अमानवीय, अनैतिक, अवैधानिक एवं क्रूर कहकर भर्त्सना की।

न्यायालय में दिया गया वक्तव्य माना गया अधिक खतरनाक

विचारण के समय डॉ.हेडगेवार ने अपने पक्ष में जो बोला था उसके बारे में पीठासीन

मजिस्ट्रेट ने कहा कि डॉ.हेडगेवार का बचाव में दिया गया वक्तव्य तो पहले दिए गए भाषण से भी अधिक देशद्रोहपूर्ण है। कारावास में डॉ.हेडगेवार ने 13 अप्रैल,1922 को जेल में ही जलियांवाला बाग काण्ड दिवस मनाने का निश्चय किया। डाक्टर जी की रिहाई के समय उनके कई मित्र डॉ.बीएस मुंजे, डॉ. एलपी परांजपे, डॉ. एबी खरे, बलवंतराव मण्डेलकर, अप्पा साहेब हैदर, डॉ.पंचखेड़े एवं वीर हरकरे तथा अन्य इनके स्वागत के लिए इंतजार कर रहे थे। डॉ. हेडगेवार ने उनकी बधाई और फूलों की मालाएं स्वीकार की तथा घर की ओर चल पड़े। रास्ते में कई जगह उनका स्वागत हुआ।

12 जुलाई,1922 को डॉक्टर जी का स्वागत समारोह चिटनिस पार्क में रखा गया किन्तु भारी वर्षा के कारण स्थान बदलकर व्यंकटेश थिएटर में रखा गया।

कांग्रेस के बड़े नेताओं द्वारा अभिनंदन

तत्कालीन कांग्रेस के बड़े नेता जैसे पं.मोतीलाल नेहरू, विट्ठल भाई पटेल, हाकिम अजमल खान, डॉ.अंसारी, सी राजगोपालाचारी, कस्तूरी रंगा अयंगर उस समय नागपुर में आयोजित कांग्रेस कार्यसमिति की मीटिंग में सम्मिलित होने के लिए नागपुर आए थे। मिटिंग की अध्यक्षता डॉ. एनबी खरे ने की। इस मिटिंग में भी डॉ.हेडगेवार का अभिनंदन किया गया, जिस पर उपस्थित लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से खुशी प्रकट की थी।

पं.मोतीलाल नेहरू एवं हाकीम अजमल खान ने डॉक्टर हेडगेवार के स्वागत में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया था। हेडगेवार का कई स्थानों पर अभिनंदन हुआ।

अन्य स्रोतों के अलावा, तीन किताबें हैं जो कुछ विस्तार से बताती हैं कि नागपुर के अजनी इलाके में जेल से रिहा होने पर डॉ. हेडगेवार का जोरदार स्वागत कैसे हुआ। ये पुस्तकें हैं : नारायण हरि पालकर द्वारा 'डॉ.हेडगेवार', एचवी शेषाद्रि द्वारा 'डॉ. हेडगेवार : द एपक मेकर' और 'आधुनिक भारत के निर्माता–डॉ केशव बलिराम हेडगेवार' राकेश सिन्हा (वर्तमान में राज्य सभा के सदस्य) द्वारा लिखित और सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित। ये पुस्तकें उस समय के कई प्रकाशनों का हवाला देती हैं।

1930 में भी हुई सजा

डॉक्टर हेडगेवार ने बाद में भी कारावास की सजा भुगती है। सन 1909 में डॉ. हेडगेवार पर लोगों को ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध उकसाने एवं पुलिस चौकी पर बम फेंकने के आरोप लगे थे। 1930 में आयोजित 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' के अंतर्गत 'जंगल सत्याग्रह' का नेतृत्व करने के कारण उन्हें 9 माह का कारावास हुआ। केशवराव को स्कूल के दिनों में अंग्रेज अधिकारी द्वारा निरीक्षण करने के दौरान 'वंदेमातरम्' का उद्घोष करने के कारण स्कूल से निष्कासित कर दिया गया था।

स्वतंत्रता के लिए मृत्यु भी स्वीकार्य

डॉक्टर हेडगेवार ने 12 जुलाई, 1922 को आयोजित कार्यक्रम में अपने अभिनंदन के पश्चात् पं.मोतीलाल नेहरू, सी राजगोपालाचारी एवं अन्य की उपस्थिति में बोलते हुए कहा था '' हमको राष्ट्र के सामने उच्च एवं महान उद्देश्य रखना होगा और पूर्ण स्वतंत्रता से कम कोई भी उद्देश्य किसी काम का नहीं होगा। जन समूह स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास जानता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने की किसी भी पद्धति या तरीके के बारे में बताना उनका अपमान होगा। इसके लिए यदि मृत्यु भी देखनी पड़े तो हम व्याकुल नहीं होंगे। स्वतंत्रता के लिए आंदोलन चलाते समय हमारे उद्देश्य उच्च एवं संतुलित मस्तिष्क से होने चाहिए।''

(लेखक विधि विषय के पूर्व आचार्य हैं)

भारतीय स्वातंत्र्य यज्ञ में सिंधु प्रदेश की आहुतियां

● डॉ. सुरेश बबलाणी

विभाजन के बाद पाकिस्तान में रह गए 'सिंध-प्रदेश' के हिंदुओं ने देश की स्वाधीनता के लिए हुए प्रत्येक आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और जेल की यातनाएं भोगी। चाहे फिर वह असहयोग आंदोलन हो या नमक सत्याग्रह या फिर भारत छोड़ो आंदोलन। हेमू कालानी को फांसी हुई। सशस्त्र क्रांति एवं आजाद हिंद फौज में भी सिंधियों की सहभागिता रही। परन्तु दुर्भाग्य कि देश स्वाधीन होने पर उन्हें अपने गांव, शहर, घर-व्यापार, जमीन-जायदाद छोड़ कर भारत आना पड़ा। प्रस्तुत आलेख में सिंध में हुए स्वाधीनता-आंदोलन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की चर्चा करते समय यदि सिंधु प्रदेश के योगदान को स्मरण नहीं किया जाएगा तो यह आंदोलन अधूरा रहेगा। महाभारत के उद्योग पर्व में पांडु की माता कुंती ने अपने पांचों पुत्रों को सिंधु की महारानी विदुला एवं उसके पुत्र संजय की कहानी बताकर महाभारत के युद्ध के लिए प्रेरित किया था। कलियुग की छठी एवं सातवीं शताब्दी में महाराजा राय साहसी का अरबों से संघर्ष एवं 713 ई. में वीर सिंधुपति महाराजा दाहिर एवं उनके पूरे परिवार का बलिदान इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है ।

अंग्रेजों ने मदद के बहाने कब्जा किया

सिंधु प्रदेश पर अरबों के कुशासन एवं अत्याचारों का अन्त करने के लिए 1840-43 के मध्य सिंध के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ नाउंमल ने ब्रिटिश व्यापारियों से मदद ली थी, किन्तु उन्हें यह कहां मालूम था कि यह मदद इस्लामी शासकों का अन्त अंग्रेजी शासन के साथ करेगी। सिंधु निवासियों का संघर्ष अरबों, मुगलों, पठानों, कल्होड़ों, मुसलमानों से होता हुआ अंग्रेजों तक पहुंच गया था।

1857 के स्वातंत्र्य समर में सहभागिता

भारत के 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में सिन्धी समाज के कदम भी पीछे नहीं थे। इस आंदोलन में सक्रिय शिवाजी महाराज के पोते चीना साहिब को कराची स्थित लश्कर की चौकी में लाकर बंदी बनाया गया था, जिसके विरुद्ध हिन्दुस्तानी सेना ने सिंध के हैदराबाद एवं सखर शहर में स्थित छावनियों में विरोध-प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों को शिकारपुर के सेठों से धन के साथ-साथ धान्य की सहायता भी मिली। कराची में आम जन भी प्रदर्शन करने के लिए सड़कों पर उतर आए थे। इतना ही नहीं शिकारपुर में अफगान सरदार हरात के सुपुत्र पीर मोहम्मद एवं शिकारपुर के सरदार अलफ खान के साथ मिलकर अंग्रेजों को अपनी धरती से निकाल कर बाहर करने के लिए सशक्त आंदोलन खड़ा किया गया। 1857 की क्रांति के मुख्य नेतृत्वकर्ता नाना साहिब एवं तात्या टोपे ने सिंधु प्रदेश का प्रवास कर आंदोलन को सफल बनाने का प्रयास किया, जिसमें जैकमाबाद के सरदार बहादुर खान खोसो, सरदार खान जखराणी, सैयद इनायत शाह, शिकारपुर के सरदार अलफ खान ने सिंधु में आंदोलन का नेतृत्व संभाला।

आर्य समाज की स्थापना

स्वामी दयानन्द सरस्वती के आर्य समाज, सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की साधारण ब्रह्म समाज जैसी संस्थाओं की शाखाएं भी सिंध में स्थापित हुई थीं, जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपनी आहुतियां दी। इंडियन एसोसिएशन की तर्ज पर सिंध में सिंधु सभा की स्थापना की गई जिसका नेतृत्व सिंध-प्रदेश के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री नांउमल के परिवार के सदस्य सेठ आत्माराम ने संभाला।

कांग्रेस की स्थापना में सहयोग

कांग्रेस की स्थापना (1885) के समय मुम्बई में पूरे हिन्दुस्तान से 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, जिसमें सिंधु सभा के

दो प्रतिनिधियों सर्वश्री दीवान दयाराम जेठमल एवं दीवान उधाराम मूलचन्द ने भाग लिया था। सिंध में कांग्रेस का दो बार अखिल भारतीय अधिवेशन 1913 एवं दूसरा 1931 में आयोजित किया गया था, जिसमें पूरे प्रदेश के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था ।

होमरूल लीग में सक्रिय

सिंध में लोकमान्य तिलक एवं एनी बेसेंट द्वारा स्थापित होमरूल लीग का कार्य भी आरंभ हुआ।

रॉलेट एक्ट का विरोध

रॉलेट एक्ट के विरोध में पूरे देश में 30 मार्च से 13 अप्रैल, 1919 तक हड़ताल का आह्वान महात्मा गांधी के द्वारा किया गया, जिसमें हैदराबाद शहर में पूर्ण हड़ताल रही। सांयकाल हैदराबाद के प्रसिद्ध होम स्टेड हाल में एक सभा का आयोजन आम जुलूस के बाद किया गया जिसके सभापति थे मुखी जेठानन्द।

सीमित स्थान होने के कारण मुख्य तीन आंदोलन एवं आजाद हिन्द फौज का ही संक्षिप्त विवरण इस आलेख में प्रस्तुत किया जा रहा है-

1920 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का सिंध प्रदेश का प्रवास था। इस यात्रा के बाद तिलक जी ने लिखा था कि जीवन के अंतिम पड़ाव में सिंधु में मेरा जो स्वागत-सत्कार हुआ एवं सिंधु के कार्यकर्ताओं का उत्साह एवं उमंग जो मैंने देखा, उसे देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। 1921 में हुए चुनावों का पूरे प्रदेश में बहिष्कार हुआ।

पूरे भारत की तुलना में सबसे कम वोट सिंधु प्रदेश में पड़े। असहयोग आंदोलन में छात्रों ने स्कूलों का बहिष्कार प्रारंभ किया। इसे प्रारंभ करने वाले थे आसनन्द मामतोरा । न्यू हाई स्कूल के मालिक एवं प्राचार्य श्री ताराचन्द शहाणी ने अपने स्कूल का नाम 'स्वराज महाविद्यालय' कर दिया तो सिंधु के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं अध्यापक श्री लालचन्द अमरडिनोमल ने

सिंध प्रांत का नक्शा

सरकारी अध्यापक तथा हासोमल बहरमल शिवदासाणी ने सहायक कलेक्टर का पद त्याग दिया। असहयोग आंदोलन में सिंध के 130 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

संपादकों को गिरफ्तारी एवं सजाएं

'हिन्दू' नामक समाचार पत्र के आठ संपादकों को, शिकारपुर के 'वतन' समाचार पत्र के चार संपादकों को विभिन्न सजाएं दी गई। एक अन्य समाचार पत्र के संपादक स्वामी गोविन्दानन्द को गिरफ्तार किया गया । 21 जुलाई, 1921 को नौशेरा से प्रकाशित समाचार पत्र 'शक्ति' के संपादक श्री खेमचन्द केसवाणी को पत्र में प्रकाशित एक आलेख के लिए 12 महीने के कारावास की सजा, श्री गुरमुखदास को तीन माह, श्री मानसिंह को एक माह की, स्वामी शिवानन्द को तीन महीने की चार बार जेल एवं अंतिम बार धारा 124 के तहत एक वर्ष की सजा दी गई ।

स्वयं को नीलामी के लिए किया प्रस्तुत

इस असहयोग आंदोलन में सिंधु प्रदेशवासियों ने लक्ष्य निर्धारित किया कि प्रदेश से एक करोड़ सदस्य जोड़ने के साथ-साथ एक करोड़ रुपए का चन्दा दिया जाएगा। इस लक्ष्य को प्राप्त कराने के लिए सखर शहर के श्री सीतलदास कीशप ने सभा के मंच पर आकर स्वयं को नीलामी के लिए प्रस्तुत कर दिया एवं घोषणा की कि वह आजीवन गुलाम बनकर रहेंगे। उपस्थित जन समूह ने निर्धारित लक्ष्य को पूरा किया, नीलामी के रूप में राशि देकर नहीं अपितु राशि दान में देकर।

स्वदेशी आंदोलन

स्वदेशी वस्तुओं के लिए गांधी जी के

आह्वान से पूर्व ही सिंधु में 1917 में श्री हरकिशनदास पारदासाणी ने खादी के प्रचार-प्रसार के लिए आंदोलन प्रारंभ कर दिया था। आपने यह आंदोलन नवाबशाह जिले के एक छोटे से ग्राम भिरिया से प्रारंभ किया , आप टंडोआदम स्कूल में प्रधानाध्यापक थे, नौकरी छोड़कर पूरे सिंध प्रदेश के प्रवास पर निकल पड़े ।

विदेशी कपड़ों के बहिष्कार एवं खादी के प्रयोग के लिए कार्यकर्ता अपने कंधे पर कपड़ा रखकर गांव-गांव, डगर-डगर खादी बेचने के लिए निकल पड़ते थे।

झंडा आंदोलन में हुई थी जेल

जमनालाल बजाज के नेतृत्व में चल रहे झंडा आंदोलन में कराची से 1 जुलाई, 1923 को 7 कार्यकर्ताओं का दल रवाना हुआ था, इन सत्याग्रहियों को एक वर्ष की सजा सुनाई गई थी।

नमक सत्याग्रह 1930

महात्मा जी के आह्वान पर प्रारंभ हुए इस आंदोलन में भाग लेने के लिए सिंध से श्री चोइथराम वलेछा, श्री सीतलदास एवं मास्टर गोविन्दराम, श्री बहरामल ककवाणी के साथ सत्याग्रहियों का जत्था रवाना हुआ था। गांधी जी के आग्रह पर इस जत्थे ने सिंध में जाकर आन्दोलन प्रारंभ किया, किन्तु डांडी मार्च में गांधी जी के साथ 78 सत्याग्रहियों में श्री आनन्द हिंगोरानी सम्मिलित हुए।

सिंधु में इस आंदोलन के तहत 13 अप्रैल,1930 को कराची में एक विशाल जुलूस निकाला गया तथा नेटी-चेटी स्थान से राम बाग में आकर समुद्र का पानी कड़ाईयों में डालकर नमक बनाया गया था । 16 अप्रैल को कोर्ट के बाहर प्रदर्शनकारियों के ऊपर गोली-बारी में सिंधु के सर्व श्री मेघराज लुल्ला (शिकारपुर) एवं श्री दत्तात्रेय (मराठा) शहीद हुए।

यहां यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए दिल्ली असेम्बली में वोट देने जाने के लिए सिंधु के सदस्य श्री हरचंदराय विशनदास जो अस्वस्थ थे, किन्तु नेतृत्व के आह्वान पर दिल्ली जाने के लिए तैयार हुए एवं रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई।

मातृशक्ति भी पीछे नहीं

स्वदेशी आंदोलन के तहत सिंध में विदेशी वस्त्रों एवं शराब की बिक्री रोकने के लिए मातृशक्ति ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मातृशक्ति पिकेटिंग (धरना) के माध्यम से इस आंदोलन को चला रहीं थीं। जिसमें कराची की जेठी बहिन, किकी लालवाणी बहिन, कस्तूर बहिन आदि प्रमुख थी। गंगादेवी पहली महिला सत्याग्रही थी जिसे गिरफ्तार किया गया था।

कराची के व्यापारियों ने भी विदेशी कपड़ों के बहिष्कार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जो व्यापारी विदेशी कपड़ों का व्यापार करते थे उन पर बायकाट कमेटी के सचिव श्री मूलजी विश्राम नरसी भारी जुर्माना लगाते थे।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के तहत सिंध से 1200 भाइयों एवं मातृशक्ति ने भाग लिया था। इस आंदोलन में भाग लेने वाली बहिन लक्ष्मी देवी को कोर्ट ने ढाई वर्ष के कारागार की सजा सुनाई थी, बाहर आकर बहिन ने अपने बयान में कहा कि मुझे केवल ढाई मिनट की सजा मिली है।

भारत छोड़ो आंदोलन 1942

भारत छोड़ो आंदोलन के लिए सिंधु प्रदेश में तीन प्रकार के कार्यक्रमों की योजना बनाई गई थी, पहली जुलूस, दूसरा मीटिंग और तीसरा सीधा मुकाबला। 8 अगस्त, 1942 को विद्यार्थियों का जुलूस निकाला गया जिसका नेतृत्व श्री तीर्थ संभाणी कर रहे थे इसलिए उन्हें गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे डाला गया।

हेमू कालानी को फांसी

सिंध प्रदेश में इस आंदोलन के तहत हर महीने की 9 तारीख को जुलूस और गिरफ्तारियों की योजना बनाई थी। गर्म दल के द्वारा तारों को काटने, रेल की पटरियों को उखाड़ने, पोस्ट के डिब्बों को आग के हवाले करना और झूठे सरकारी आदेश जारी करवाना, की कार्रवाई की गई । इसी कार्रवाई के तहत पुराने सखर रेल्वे-स्टेशन के पास 2 अक्टूबर, 1942 को रेल की पटरियां उखाड़ने वाले श्री हेमू कालानी को गिरफ्तार किया गया तथा कोर्ट ने उन्हें फांसी की सजा सुनाई। 23 जनवरी, 1943 को इस वीर युवक को जिसने अपने साथियों के नाम नहीं बताए, फांसी पर लटका दिया गया। एक 19 वर्षीय युवक का बलिदान सिंधु के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है। कराची के श्री नारायण वाधवाणी एवं श्री ऐंशी विद्यार्थी को तारें काटने के जुर्म में 3-3 साल जेल की सजा सुनाई गई ।

श्री हशू केवलरामाणी, प्रहलाद राजपाल आदि के नेतृत्व में विद्यार्थी समूह जगह-जगह स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय थे। इन समूहों के द्वारा अपने-अपने शहरों में अंग्रेजी शासन को जड़ों से हिलाने के कार्य में नकदी छीनना, कार्यालयों पर हमले, आगजनी आदि किए जाते थे।

सशस्त्र आंदोलन

सिंधु प्रदेश में उग्र आंदोलन के लिए तीन वाद प्रसिद्ध हैं पहला वाद है गुलराजाणी केस, जिसमें दो भाईयों मोती एवं शिवो ने कोटिया मेल अप एण्ड डाउन एक्सप्रेस ट्रेन में बम द्वारा विस्फोट का प्रयास किया था, दोनों भाईयों को दो-दो साल के कारावास की सजा हुई। दूसरा प्रकरण पजरापुर बम केस, बम तैयार करते हुए फट जाने के कारण श्री थीरू मंगताणी, विशनू छाबड़िया, अमर गोलानी को 5-5 साल के कारावास की सजा सुनाई गई। इन दोनों प्रकरणों में बम बनाने की प्रेरणा देने वाले मास्टर गेहाणी जी थे। तीसरा केस परचो विद्यार्थी के नेतृत्व में बम फेंकने, डकैती करने एवं आगजनी की कार्रवाई के लिए चलाया गया था जिसे लांडी शूटिंग केस के नाम से जाना जाता है, इसमें परचो विद्यार्थी को फांसी की सजा सुनाई गई थी। उसे बाद में

आजीवन कारावास में बदला गया।

संघर्ष निरन्तर जारी था। कराची एवं मुम्बई में 17 फरवरी,1947 को समुद्री फौज की ओर से आंदोलन छेड़ दिया गया था इसका स्वरूप भी 1857 के आंदोलन से मिलता-जुलता था। इस आंदोलन में 47 जहाज, 40 आग (फायर) बोट, 200 किनारे के कर्मचारी सम्मिलित थे । इस आंदोलन में एक अधिकारी, 9 खलासियों का बलिदान हुआ और 29 बुरी तरह से जख्मी हुए थे ।

आजाद हिन्द फौज

आजाद हिन्द फौज के नायक सुभाष चन्द्र बोस का भी सिंधुवासियों ने न केवल भरपूर साथ दिया बल्कि आर्थिक सहायता प्रदान कर जन बल के साथ धन बल के सहारे खड़ा करने का प्रयास किया । नेताजी को बर्मा, हांगकांग, सिंगापुर में रहने वाले सिंधी व्यापारियों ने आर्थिक सहायता प्रदान तो की ही, किन्तु अपने परिवार के युवकों को आजाद हिन्द फौज में भर्ती करने हेतु भी भेजा। यहां उल्लेखनीय है मातृशक्ति का त्याग, जिन्होंने अपने गहने उतारकर नेताजी की सहायता की थी। इन व्यापारियों में श्री होतचन्द, परसराम भागमारी, तेजूमल, हरचंदराय पमनानी, बूलचन्द नारवाणी आदि सम्मिलित थे। श्री होतचन्द एवं श्री परसराम नेताजी के मुख्य सहयोगी थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति में सिंधु के ऐसे कई वीर हैं, जिनके नाम प्रकाश में नहीं आए, ऐसे बलिदानियों के नाम पर न कभी दीप जले हैं, न कभी उनके चित्र के सम्मुख फूल चढ़े। समय एवं स्थान की मर्यादा के कारण यहां पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

ई.सन् 713 से 15 अगस्त, 1947 तक सिंधु का इतिहास संघर्ष का रहा है, इन 1234 वर्षों के संघर्ष में सिंधु निवासियों ने हमेशा त्याग ही किया और स्वतंत्रता का भास्कर भी सिंधुवासियों के लिए सबसे बड़े त्याग की परीक्षा लेने आया था। यह त्याग था अखण्ड भारत का खण्डित होना, जिसमें पूरा सिंधु प्रदेश पाकिस्तान में मिला दिया गया और सिंधु निवासियों को अपनी जननी जन्मभूमि का त्याग कर पूरे भारत के कोने-कोने में बिखेर दिया गया।

फिर से पाना है सिंधु भूमि

यहां यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि सिंधुवासियों का संघर्ष स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में भी जारी है, संघर्ष है सिंधु भूमि को पुन: प्राप्त करना और यह जिम्मेदारी है आज की युवा पीढ़ी की। वे अपने बुजुर्गों की जन्मभूमि को प्राप्त करने हेतु अपना सर्वस्व अर्पित कर दें।

तन समर्पित, मन समर्पित, और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ हे सिंध भूमि तुमको अभी कुछ और भी दूँ।

(लेखक संस्कार भारती के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र प्रमुख हैं)

गोवा मुक्ति के लिए राजस्थानियों ने भी किया था संघर्ष - बलिदान हो गए थे पन्नालाल

● डॉ. अर्चना द्विवेदी

भारत के स्वाधीन होने पर भी गोवा पराधीन ही रहा। वहां के पुर्तगाली शासक बड़े क्रूर और अत्याचारी थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी गोवा को स्वतंत्र कराने में कर रहे थे आनाकानी। तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और तत्कालीन जनसंघ ने अन्य दलों से मिलकर गोवा मुक्ति के लिए संघर्ष छेड़ा। डॉ.राम मनोहर लोहिया का भी गोवा मुक्ति के लिए बड़ा योगदान रहा। देशभर से सत्याग्रहियों के झुंड आते और गोवा में प्रवेश कर सत्याग्रह करते। इन सत्याग्रहियों को बड़ी यातना सहनी पड़ी। कई सत्याग्रहियों ने दिया अपना बलिदान। राजस्थान से भी गया था सत्याग्रहियों का दल। राजस्थान के पन्नालाल गोवा पुलिस की गोली से बलिदान हो गए थे।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में गोवा मुक्ति आन्दोलन एक ऐसा अध्याय है, जो पराधीनता के पदचिह्न के रूप में स्वतंत्रता के एक दशक से भी अधिक बाद तक हमें विदेशी पराधीनता की याद दिलाता रहा। स्वतंत्रता के लिए हुए अनवरत संघर्ष के बाद हमारा देश अंग्रेजों से तो स्वतंत्र हो गया किन्तु भारत का छोटा सा एक हिस्सा जो पुर्तगालियों के अधीन था, स्वतन्त्र न हो सका था।

पुर्तगालियों की क्रूरता

मध्यकाल के अनेक आक्रान्ताओं के इतिहास में पुर्तगालियों को प्राय: हम भूल जाते है। सन 1510 ई. से 1961 ई. तक गोवा, दमन, दीव पुर्तगालियों के उपनिवेश रहे। गोमांतक प्रदेश पर 450 वर्ष का पुर्तगाली साम्राज्य का इतिहास राजनीतिक दमन, आर्थिक शोषण और धार्मिक वहशीपन का क्रूर इतिहास है। गोवा पर पुर्तगालियों का अधिकार नि:सहाय गोवा निवासियों के लिए अपमान और मृत्यु का संदेश था। शक्ति के मद में चूर साम्राज्यवादी लुटेरों ने जो कुछ किया वह अकथनीय है। **तत्कालीन पुर्तगाली वायसराय बिन अल्बुकर्क स्वयं कहते हैं–''मैंने बस्ती में आग लगा दी, हर मनुष्य को अपनी तलवार का शिकार बनाया, जो लोग जहाँ कहीं भी मिले उन्हें मौत के घाट उतार दिया।''**

जब राम मनोहर लोहिया पहुँचे गोवा

जिस समय भारत में अंग्रेजों के खिलाफ स्वाधीनता संघर्ष अपनी चरम सीमा में था उस समय गोवा क्षेत्र की जनता भी पुर्तगालियों से स्वाधीनता की आशा लगाए बैठी थी। समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया अपनी एक निजी यात्रा में 10 जून, 1946 को गोवा पहुँचे थे। वहाँ पर पुर्तगाली अत्याचारों को देखकर डॉ. लोहिया ने 18 जून,1946 को पुर्तगाली शासन के खिलाफ सत्याग्रह करने का निश्चय किया। मडगांव

गोवा मुक्ति आंदोलन में संघर्षरत देशभक्त

राम मनोहर लोहिया

में लोहिया जिंदाबाद के नारे लगाती हुई हजारों की भीड़ ने उनका स्वागत किया। डॉ. लोहिया भाषण देने के लिए जैसे ही खड़े हुए तभी एडमिनिस्ट्रेटर मिराण्डा हाथ में रिवाल्वर लेकर लोहिया की ओर बढ़े। डॉ. लोहिया ने उसके रिवाल्वर वाले हाथ को नीचे कर दिया और फिर कहा ''धीरज से काम लो, देखते नहीं हो कितनी भीड़ जमा है। खून-खराबा होगा तो शान्ति कायम रहेगी क्या।''

लोहिया जी को गिरफ्तार कर मडगांव की जेल में रखा गया। बाद में गोवा की सीमा से बाहर ले जाकर छोड़ दिया। उनके गोवा में प्रवेश पर पांच साल का प्रतिबंध लगाया गया। लोहिया जी के कई समाजवादी साथियों ने गोवा मुक्ति आंदोलन में संघर्ष किया। मधु लिमये को इस संघर्ष में सन 1955 से 1957 दो वर्षों तक पुर्तगाली जेल में रखा था।

गोवा मुक्ति के लिए बनी समिति और सत्याग्रह

1946 से 1953 ई. तक गाँधी जी के सिद्धांत के अनुरूप तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लोकतांत्रिक प्रयासों से आंतरिक सत्याग्रह के दौर चलते रहे।

गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराकर भारतीय गणराज्य में शामिल किया जाए, इसी लक्ष्य के लिए पूना में ''गोवा विमोचन सहायक समिति'' 1954 ई. में बनाई गई। प्रारम्भ में छोटे-छोटे जत्थे गोवा की सीमा में प्रवेश कर अहिंसक सत्याग्रह करते रहे। 15 अगस्त, 1955 के दिन व्यापक पैमाने पर सामूहिक सत्याग्रह किए जाने का निश्चय किया गया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे राजनेताओं की अपील एवं प्रयासों के परिणामस्वरूप देश के कोने-कोने से गोवा को मुक्त कराने के लिए सत्याग्रहियों के जत्थे इस सामूहिक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए पूना पहुँचने लगे।

बलिदान हो गए पन्नालाल

राजस्थान से भी बड़ी संख्या में लोगों ने इस ऐतिहासिक सत्याग्रह में भाग लिया और पुर्तगालियों द्वारा दी गई कठोर यातनाओं को सहा।

राजस्थान के जत्थे का संक्षिप्त घटनाक्रम विश्लेषित किया जा रहा है-

'पुर्तगालियो गोवा छोड़ो' जैसे जोशीले नारों से बर्बर पुर्तगालियों और उनके सैनिकों की नींद उड़ गई और सत्याग्रही दल को सावधान ('शट-अप') होने का आदेश दिया। आदेश न मानने पर पुर्तगाली सैनिकों की आग उगलती गोली चली, जो झालावाड़ (राजस्थान) के हीरालाल जैन और पन्नालाल जी के बीच से निकली। पुन: नारे लगाते हुए पूरे जोश और उत्साह से पन्नालाल जी ने आगे आकर मोर्चा सम्भाला। 6-7 फीट की दूरी से सैनिकों की गोली फिर से चली और सीधे पन्नालाल जी के सीने को चीरती हुई निकली। तब भी निहत्थे पन्नालाल जी ने धैर्य नहीं खोया और अपने दल को जोश दिलाकर अपने तिरंगे की रक्षा के नारे लगाए और गोवा के लिए अपने प्राणों की बलि देकर अमर हो गए।'

सत्याग्रहियों से क्रूर व्यवहार

अब आगे की कहानी एक राजस्थान के सत्याग्रही की जुबानी बताती हूँ-''भाद्र माह के कृष्ण पक्ष के घुप्प अँधेरे और बरसते पानी में गोवानी मार्गदर्शकों के साथ हमारा जत्था रात्रि 11:00 बजे चल पड़ा। तोराखोल खाड़ी पार करके कई मील चलकर रात्रि 3:30 पर जत्था निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा। अहिंसा में हमारी आस्था और हमारा निहत्थापन उस रोमांचकता में

दीनदयाल उपाध्याय

वृद्धि ही करते थे। झण्डा अभिवादन के लिए हम गांव के एक सरकारी स्कूल में खड़े थे। झण्डारोहण के बाद उत्साह जोशीले नारों के रूप में फूट पड़ा- **''आजाद गोवा जिन्दाबाद'', ''नहीं-नहीं कभी-नहीं, भारत-गोवा अलग नहीं''**

''पुर्तगाली सैनिक की गोली से रामगंजमंडी (कोटा) के साथी श्री पन्नालाल यादव नारे लगाते हुए भूमि पर गिर पड़े और शहीद हो गए। मृत-देह को मन्दिर में रखवा कर पहरा बैठा दिया गया। मृत-देह का परीक्षण हुआ और कुछ समय बाद अमरीकी पत्रकार होमर जैक अपने फोटोग्राफर के साथ वहां आ गए। फिर हमसे सैनिकों ने कहा गया कि आप लोगों को जेल भिजवाने के पूर्व डॉक्टरी मुआयना करवाना है और एक-एक करके एक तंग कोठरी में 37 लोगों को भेड़ों की तरह भरकर ताला लगा दिया गया। करीब आधे घण्टे के बाद हमें उससे बाहर करके बैठा दिया। सारा दिन बर्बर पुर्तगालियों की नजरबन्दी में मार खाते गुजर गया। हंटरों और डण्डों से पीट-पीटकर भेड़-बकरियों से भी गुजरी हालत में हमें बस में भर दिया गया और तोराखोल खाड़ी के किनारे स्थित कैर की कस्टम चौकी पर ले आए। एक टापरी में हमें बैठा दिया गया। हम ''पैकअप'' हैं, न हिल सकते हैं न डोल सकते हैं, तेज गर्मी और दम घुटता जा रहा था। सारी रात गुजर गई, हमें मारते-मारते बेदम कर दिया। एक बजे टेलीफोन आया। सैनिकों में कुछ कानाफूसी हुई और बाहर पुर्तगाली सैनिकों में भगदड़ मच गई। सुबह हो गई, हमें शौचादि से निवृत्त होना है, परन्तु यहाँ कौन है जो हमारी सुने।

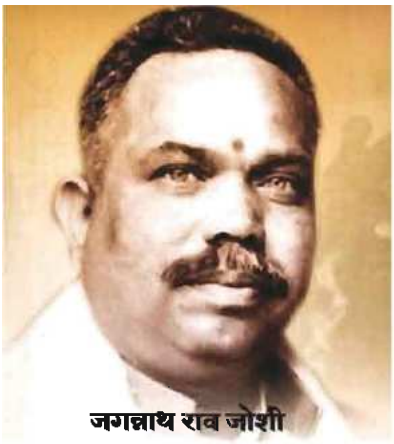
जगन्नाथ राव जोशी

8 बजे होंगे, पुर्तगाली सिपाहियों ने ना कुछ कहा, ना कुछ सुना। बस हंटर, डण्डों और लाठियों से मार-मार कर बेजान कर दिया। सैनिक चले गए। गार्ड पर बस एक गोवानी सैनिक। उसका हृदय आखिर पिघल गया। उसने हमारे लिए पीने का पानी मंगवाया। 10 बजे एक स्टीम बोट पर हमें चढ़ाया जा रहा है। सवार होने के लिए एक जीना उतरना पड़ता था, जैसे ही वहाँ पहुँचते लाठी हंटरों की मार शुरू हो जाती। स्टीमर किनारे से थोड़ा दूर है बीच में पानी को पार करना पड़ रहा है। पानी में लोहे की पत्तियाँ और कीले गढ़ी हुई थी, जिनसे हमारे पांव लहूलुहान हो गए।''

आरोन्दा से कुछ दूरी पर ही भारत गोवा सीमा मिलती थी। जिसमें हम सत्याग्रहियों को जबरन भारतीय सीमा की ओर धकेल दिया गया।

''अब हम भारतीय सीमा में आ गए थे। नागपुर मेडिकल सहायता शिविर के स्वयंसेवक प्राथमिक चिकित्सा के लिए तत्पर थे। उन्होंने हमारी मरहम पट्टी की और खाने को रोटी, चाय और पानी दिया। इस तरह 38 घण्टे पश्चात एक बलिदानी साथी की याद मन में लिए आरोंदा कैम्प में पहुँच गए। यहाँ पर सैकडों सत्याग्रही घायल अवस्था में पड़े हुए थे, जिन्हें सहायता दी जा रही थी।''

राजस्थान से गए सत्याग्रहियों की सूची

राजस्थान से भाग लेने वाले विभिन्न सत्याग्रहियों की सूची इस प्रकार है-

(1) श्री स्वामी माधवदास, कोटा जत्थे के नेता
(2) श्री हीरालाल जैन, कोटा
(3) श्री प्रभूलाल विजय, आवाँ तह. कनवास (कोटा)
(4) श्री आनन्द लक्ष्मण राव खांडेकर, नयापुरा, कोटा
(5) श्री आनन्द सिंह, सोशलिस्ट पार्टी, कोटा
(6) श्री रतनलाल हिन्दुस्तानी, झालावाड़
(7) श्री नन्दकिशोर, ग्राम मियाड़ा पोस्ट कोयला (बारां-कोटा)
(8) श्री मोहनलाल जैन, मकान नं. 5/321 धानमंडी, कोटा
(9) श्री डालचन्द जैन, द्वारा गणेशलाल हलवाई, लाडपुरा कोटा
(10) श्री द्वारकालाल पानवाला, आर्य समाज रोड, कोटा
(11) श्री मोहनलाल द्वारा चौबे विनोदचन्द, कोटा जंक्शन
(12) श्री रामबाबू, रामपुरा कोटा
(13) श्री हीरालाल, गोपाल साइकिल स्टोर, रामपुरा कोटा
(14) श्री प्रभुलाल गौड़, कोटा
(15) श्री जगदीशचन्द्र शर्मा, पाटनपोल, कोटा
(16) श्री लक्ष्मीनारायण दइया, कोझी उम्मेद भवन,कोटा
(17) श्री छोटेलाल वर्मा, मंगलपुरा, झालावाड़
(18) श्री मोहम्मद रफीक, सोशलिस्ट पार्टी, कोटा
(19) श्री भँवरलाल, मोड़क स्टेशन (कोटा)
(20) श्री रामकल्याण, मोड़क स्टेशन (कोटा)
(21) श्री गोवरधन गोयल, देवली (अजमेर)
(22) श्री रामस्वरूप कांटिया, देवली (अजमेर)
(23) श्री ब्रजकिशोर एडवोकेट, केकड़ी (अजमेर)
(24) श्री रामचन्द्र सोशलिस्ट पार्टी, देवली (अजमेर)
(25) श्री बाबूलाल अग्रवाल, बारां (कोटा)
(26) श्री धन्नालाल, बारां (कोटा)
(27) श्री ज्ञानचन्द, बारां (कोटा)
(28) श्री मोहनलाल पटवा, बारां (कोटा)
(29) श्री राधेश्याम, बारां (कोटा)
(30) श्री घनश्याम, बारां (कोटा)
(31) श्री बिशनलाल, बारां (कोटा)
(32) श्री जीमल अहमद खान, कोटा
(33) श्री पन्नालाल यादव, रामगंजमंडी (कोटा) बलिदान हुए
(34) श्री चौथमल, रामगंजमंडी (कोटा)
(35) श्री छीतरलाल, रामगंजमंडी (कोटा)
(36) श्री रघुवरदयाल, रामगंजमंडी (कोटा)
(37) श्री प्रतापनारायण तिवारी, मंगलपुरा झालावाड़
(38) श्री रोला रेगो पंचगनी (बम्बई)
(39) श्री शील सागर जैन, सोलापुर (बम्बई)।

दो सदस्य बीमारी के कारण नहीं जा सके थे।

पं.दीनदयाल उपाध्याय के प्रयत्न

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने गोवा सत्याग्रह और कांग्रेस की तत्कालीन गोवा संबंधी उदासीन नीति पर जो लिखा, उससे समाज के विभिन्न वर्गों में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार हुआ।

पंडित उपाध्याय का मानना था कि गोवा की मुक्ति भारत की स्वाधीनता को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

श्री जगन्नाथ राव जोशी, भारतीय जनसंघ के मंत्री तथा श्री अण्णा साहेब कवड़ी, महाराष्ट्र प्रदेश जनसंघ के उप प्रधान 25 जून को सत्याग्रह के निमित्त गोवा में प्रविष्ट हुए। समाचार मिला था कि उनके साथ बहुत मारपीट हुई तथा उन्हें मूर्च्छित अवस्था में किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया। भारत की जनता के लिए यह समाचार चिन्ताजनक था। भारतीय जनसंघ के प्रधान पं. प्रेमनाथ डोगरा ने तुरंत तार देकर केन्द्रीय गृहमंत्री पं. गोविन्द वल्लभ पंत से आग्रह किया कि वे दोनों नेताओं का पता लगाकर सूचित करें। पूना, बेलगाँव आदि स्थानों से गोवा विमोचन सहायक समिति, गोवा नेशनल कांग्रेस, भारतीय जनसंघ आदि के नेताओं के भी तार

गए, पत्र गए और अंत में 29 जून को गृहमंत्री पंडित पंत से संसद सदस्य श्री उमाशंकर त्रिवेदी, श्री दीनदयाल उपाध्याय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, मंत्री भारतीय जनसंघ ने प्रत्यक्ष भेंट कर उक्त दोनों नेताओं का हाल पता लगाने की प्रार्थना की। दोनों ही व्यक्तियों के संबंधियों ने भी तार दिए। उक्त जानकारी पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय खण्ड 3 में उपलब्ध है। **पंडितजी लिखते हैं-''आज जब देश की तरूणाई गोवा में तिल-तिल करके अपने जीवन का बलिदान दे रही हो, तब पंडित पंत (गृहमंत्री) श्रीनगर में ठंडी हवा खाएँ, यह बड़े दु:ख का विषय है। नीरो भी शायद इतना निष्करुण नहीं रहा होगा?''**

गोवा मुक्ति संग्राम पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सतत रूप से न सिर्फ दृष्टि रखी, अपितु समय-समय पर समीक्षा भी करते रहे। 1 अगस्त, 1955 के पांचजन्य में वे लिखते हैं कि- ''गोवा मुक्ति आन्दोलन का केन्द्र इस सप्ताह पूना, बेलगाँव या पणजी न रहकर भारत की राजधानी दिल्ली रहा। ऐसा कोई दिन नहीं बीता, जबकि इस विषय को लेकर कुछ-न-कुछ सार्वजनिक कार्यक्रम न किया गया हो। पिछले कई मास से भारत के विभिन्न दल गोवा सत्याग्रह में भाग ले रहे हैं।''

कांग्रेस के गोवा प्रस्ताव की समीक्षा करते हुए **दीनदयाल उपाध्याय लिखते हैं कि - ''गोवा भारत का अंग होने के कारण गोवा की आजादी भारत की आजादी का ही भाग है, इसलिए यह प्रधानत: भारतवासियों का, जो आजाद हो चुके हैं, कर्तव्य है कि वे अपने उन भाइयों की आजादी के लिए प्रयत्न करें जो अभी भी पराधीनता के पाश में बँधे हैं।** फिर गोवा के 6 लाख लोगों ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में कम बलिदान नहीं किए। अभी तक यहाँ 3 हजार से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किए जा चुके हैं। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि गोवा के लोग और भी बलिदान दे सकते हैं, यदि उन्हें विश्वास हो जाए कि सरकार और जनता उनकी मदद पर रहेंगे।''

तत्कालीन भारत सरकार की गोवा संबंधी नीति पर लगातार प्रहार करते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोवा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते रहे। मुक्ति संग्राम की रूपरेखा पर विचार करते हुए वे लिखते है कि - ''गोवा आन्दोलन को प्रधानत: जनता को ही चलाना पड़ेगा, वह भी विशेषकर विरोधी दलों को।''

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में जनसंघ ने गोवा मुक्ति के मामले में सरकार के उदासीन रवैये को लेकर प्रदर्शन भी किया। अंततः सेना ने 19 दिसंबर,1961 को 'ऑपरेशन विजय अभियान' शुरू कर गोवा, दमन और दीव को पुर्तगालियों के शासन से मुक्त कराया।

(लेखिका राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमंडी में इतिहास विभाग में सहा.आचार्य हैं।)

गोवा मुक्ति के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का योगदान

● संकलित

गोवा मुक्ति आंदोलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों तथा वर्तमान भाजपा के पूर्व रूप 'जनसंघ' का अविस्मरणीय योगदान रहा है, किन्तु इसकी चर्चा नहीं की जाती है।

13 जून, 1955 को कर्नाटक से जनसंघ के नेता डॉ.जगन्नाथ जोशी ने गोवा मुक्ति के लिए सत्याग्रह की शुरुआत की। पहले दिन ही 5 हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया, जिनमें से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीन हजार से अधिक कार्यकर्ताओं ने भागीदारी की थी। उस सत्याग्रह में बहुत सी महिलाओं ने भी भाग लिया था।

सत्याग्रहियों के गोवा की सीमा पर पहुँचने पर पुर्तगीज सरकार ने उन पर जमकर लाठियां भंजवाई, फिर बाद में अंधाधुंध गोलियां चलवाई। 15 अगस्त, 1955 के सत्याग्रह में 51 सत्याग्रहियों की मृत्यु घटना स्थल पर हो गई और सैंकड़ों सत्याग्रही घायल हुए। लेकिन ये सत्याग्रह 1961 तक निर्बाध चलता रहा।

नेहरू जी की आनाकानी

पं.नेहरू ने संसद में साफ कर दिया था कि गोवा को मुक्त कराने के लिए उनकी सरकार हस्तक्षेप नहीं करेगी। राममनोहर लोहिया, जिन्होंने गोवा मुक्ति संघर्ष के लिए कार्य किया और सक्रिय थे, ने निराश होकर कह दिया था कि जब तक नेहरू दिल्ली में बैठे हैं, न तो दिल्ली से मदद मिलेगी और न ही संयुक्त राष्ट्र संघ से, इसलिए गोवा को अपने ही प्रयास से आगे बढ़ना होगा।

बनी सर्वदलीय समिति

ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गोवा मुक्ति के लिए देश में वातावरण का निर्माण किया। 1954-55 में सर्वदलीय समिति बनी। उस सर्वदलीय समिति में जनसंघ के जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में हिंदू महासभा के बीजी देशपांडे, क्रांतिकारी समाज पार्टी के श्रील चौधरी, सोशलिस्ट पार्टी के एनजी गोरे और मधु लिमये शामिल थे।

संघ के स्वयंसेवकों जैसे विश्वनाथ लावांडे, नारायण हरिनायक, दत्तात्रेय देशपांडे, प्रभाकर सीनरी आदि ने आजाद गोमांतक दल की स्थापना की। इनके अलावा एवाग्रय जॉर्ज, डॉक्टर विनायक मयकर, संत कारे, लक्ष्मीदास बोरकर, नीलकंठ बारापुरकर, व्यंकटेश वेरेनेकर, प्रभाकर वैद्य बलराय, करनैल सिंह बैनीवाल आदि ने भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से अपना जीवन दाव पर लगा दिया। राष्ट्र सेविका समिति की स्वयंसेविकाओं सुशीला

ताई पडियार, शारदा सवलेकर, डॉक्टर रत्न क्वांटे वात्सल्य कीर्तनी, प्रमिला जम्बोलिकार आदि ने भी इस आंदोलन में कंधे से कंधा मिलाकर काम किया।

सुधीर फड़के व लता मंगेशकर नाइट से धनसंग्रह

प्रसिद्ध संगीतकार सुधीर फड़के ने अपने गीतों से, एक तरह से कहा जाए तो आंदोलन को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आधार दिया। उन्होंने पुणे में लता मंगेशकर संगीत संध्या जैसे कार्यक्रमों से धनार्जन करके इस आंदोलन को आर्थिक सहायता भी दिलाई। पुणे के नाटककारों ने उस समय 'कुलवधू' नाटक के टिकटों की बिक्री से प्राप्त 1600 रुपये भी दान में दिए जो आज की तिथि में लगभग 20 लाख रुपये होते हैं।

सेविका समिति का योगदान

सरस्वती ताई आप्टे के नेतृत्व में गोवा मुक्ति आंदोलन में राष्ट्रीय सेविका समिति ने भी भाग लिया। वे पुणे में एकत्रित होने वाले सत्याग्रही समूहों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था भी करती थीं।'यूनाइटेड फोरम ऑफ गोअन्स' नामक एक संगठन भी अस्तित्व में आया। उन्होंने दादरा को स्वतंत्र करा लिया। फिर विनायक आप्टे के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 40-50 कार्यकर्ताओं ने नगर-हवेली को मुक्त करा लिया। प्रभाकर विट्ठल सेनारी एवं प्रभाकर वैद्य के नेतृत्व में आजाद गोमांतक दल के कार्यकर्ताओं ने दमन को पुर्तगालियों से आजाद करा लिया।

राजा भाऊ का बलिदान

इसके बाद गोवा को स्वतंत्र करने का दबाव बढ़ता गया। आंदोलन के पहले ही दिन राजा भाऊ महाकाल की मृत्यु पुलिस की गोली से हो गई थी। उस समय यानि 15 अगस्त,1955 को ही सत्याग्रहियों की टोली ने नारा लगाया 'पुर्तगालियों भारत छोड़ो' और वह नारा इतना प्रबल था कि लगातार छह वर्षों तक उसकी गूंज से देश आंदोलित रहा। छह वर्षों तक यह नारा निरंतरता में उस आंदोलन को चलाता रहा। उस आंदोलन की रीढ़ जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे।

भारत में समर्थन सभाएं

एक तरफ जहाँ गोवा की सीमा पर आंदोलन चल रहा था वहीं दूसरी तरफ भारत के कोने-कोने में उसके समर्थन में सभाएँ होती थीं। जनसंघ ने एक तरफ से गोवा की मुक्ति के लिए दूसरा स्वतंत्रता संग्राम छेड़ दिया था। आंदोलन में जो लोग मारे जाते थे वैसे लोगों के लिए श्रद्धांजलि सभाएँ होती थीं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने ऐसी ही एक श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि पुर्तगाली शासन बर्बर अत्याचारों से जनता को भयभीत करके भारतीयों को आंदोलन करने से रोकना चाहता है। परंतु भारतवासी डरते नहीं हैं। वे पुर्तगाली अत्याचारों के सम्मुख किंचित भी नहीं झुकेंगे।

इसके साथ ही पंडित जी ने तत्कालीन गृहमंत्री गोविंद वल्लभ पंत को तार (टेलीग्राफ) भेजकर आगरा के स्वयंसेवक अमीरचंद गुप्ता की गोवन पुलिसिया बर्बरता के कारण हुई मृत्यु की ओर उनका ध्यान खींचा। साथ ही जगन्नाथ राव जोशी पर हुए हमले पर चिंता व्यक्त करते हुए सत्याग्रहियों की सुरक्षा की मांग की थी।

श्री गुरुजी का आह्वान

उसी समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूसरे सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य ''श्री गुरुजी''ने अपने बयान में कहा कि''गोवा को पुर्तगाली बर्बरता से बचाने का इससे अच्छा अवसर कभी नहीं आएगा। गोवा में भारत सरकार द्वारा पुलिस कार्रवाई करके उसे मुक्त कराने के पक्ष में आपने कहा कि इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और आसपास के जो देश हमें धमकाते रहते हैं उन्हें भी पाठ मिल जाएगा। इस तरह अंतर्राष्ट्रीय वातावरण भी गोवा की स्वाधीनता के पक्ष में बनना शुरू हुआ। **प्रधानमंत्री नेहरू की गोवा संबंधी नीतियों पर प्रहार करते हुए गुरूजी ने कहा कि भारत सरकार ने गोवा मुक्ति आंदोलन का साथ नहीं देने की घोषणा करके इस आंदोलन की पीठ में छुरा भोंका है। उन्होंने कहा भारत सरकार को चाहिए कि भारतीय नागरिकों पर हुए इस अमानुषिक गोलाबारी का प्रत्युत्तर दे और मातृभूमि को जो भाग अभी तक विदेशी दासता में सड़ रहा है। उसे अविलंब मुक्त कराने का उपाय करें।** (श्री गुरुजी का यह बयान पांचजन्य के 22 अगस्त, 1955 के अंक में छपा है।)

सैनिक कार्रवाई

भारत के सैनिक कार्रवाई के बाद गोवा मुक्त हुआ तथा 19 दिसंबर को गोवा-दमन दीव में तिरंगा फहराया गया। इसे 'ऑपरेशन विजय' का नाम दिया गया जो 36 घंटों तक चला। पुर्तगाल के गवर्नर जनरल वास्लो ई सिल्वा ने भारतीय सेना प्रमुख पीएन थापर के सामने आत्म समर्पण किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय जनसंघ और भारतीय सेना के संयुक्त प्रयास से गोवा भारतीय गणराज्य का हिस्सा बना। 30 मई, 1979 को गोवा को राज्य का दर्जा मिला। हर साल 19 दिसंबर को गोवा दिवस मनाया जाने लगा जिसे 'विजय दिवस' भी कहा जाता है। ●

भारत विभाजन में हिंदू सिंधियों के साथ अन्याय

● तेजभान शर्मा

भारत विभाजन के समय सभी मुस्लिम इलाके पाकिस्तान में मिला दिए गए, परंतु सिंध के हिंदू बहुल इलाकों को भारत में मिलाने की मांग के प्रति कांग्रेस के नेताओं ने अनदेखी की। विभाजन के समय सिंध के थारपारकर जिले में हिंदू आबादी 80 प्रतिशत तथा कराची में 51 प्रतिशत थी। वीर सावरकर के साथ ही पं.मदन मोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी चाहते थे कि सिंध के हिंदू बहुल इलाकों का भारत में विलय हो, परन्तु कांग्रेस के नेताओं ने इसमें कोई रूचि नहीं ली।

मुस्लिम लीग द्वारा मुसलमानों के लिए अलग देश की मांग को स्वीकार करते हुए 1947 में भारत का विभाजन किया गया था। हिंदू बहुल इलाके भारत में तथा मुस्लिम बहुल क्षेत्र पाकिस्तान में शामिल किए गए। इस विभाजन में सिंध के हिंदुओं के साथ बड़ा अन्याय हुआ। सिंध प्रांत में 27.3 प्रतिशत हिंदू, सिख आदि थे, इनके लिए सिंध का बंटवारा करके किसी भी भू-भाग का भारत में विलय नहीं किया गया।

उस समय सिंध के थारपारकर जिले में हिन्दू आबादी 80 प्रतिशत थी तथा कराची में हिंदू 51 प्रतिशत थे। ठाकुर ओंकार सिंह आईएएस ने अपनी पुस्तक 'एक महाराजा की अन्त कथा'के पृष्ठ 49 पर लिखा है। '' उन्हीं दिनों सिंध के सोढा राजपूतों का एक शिष्टमण्डल जोधपुर के महाराजा हनुवंत सिंह से मिला और उनसे निवेदन किया कि वे उनके जिले थारपारकर को भारत व जोधपुर राज्य में मिलाने का प्रयत्न करें। सिंध के सोढा राजपूतों का सदियों पुराना राज्य उमरकोट (अमरकोट) था। इन राजपूतों ने प्राचीन काल में उज्जैन से आकर थारपारकर में एक नए राज्य की स्थापना की थी। भारत में मुस्लिम साम्राज्य काल में भी इन लोगों ने त्याग और साहस के बल पर अपना राज्य यथावत बनाए रखा था। **उमरकोट के सोढों ने ही बादशाह हुमायूं व उसके परिजनों को शरण दी थी। अकबर का जन्म भी वहीं हुआ था।** सोढा राज्य की सुरक्षा में वहां हिंदू बड़ी संख्या में आकर बस गए थे। सोढा राजपूतों ने इस विषय में एक स्मरण पत्र केन्द्र सरकार को भी प्रस्तुत किया था। उनकी इस मांग का समर्थन ''अखिल भारतीय हिंदू धर्मसभा'' ने किया था। धर्मसभा की मांग थी कि सिंध प्रान्त के दो टुकड़े कर नवाबशाह, हैदराबाद (सिंध), थारपारकर जिला व कराची जिले के एक भाग को निकटवर्ती जोधपुर राज्य में मिला दिया जाए। सिंध प्रान्तीय कांग्रेस अध्यक्ष श्री चौइथराम गिदवाणी ने भी कहा था कि हिंदू बाहुल्य थारपारकर को जोधपुर राज्य में मिलाना न्याय संगत होगा। परन्तु दुर्भाग्यवश केन्द्रीय नेताओं ने इस न्यायोचित मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया।'' यह सिंध के हिन्दुओं के साथ बहुत बड़ा धोखा तथा अन्याय था।

सिंध के साथ पहले भी हुआ अन्याय

यह दूसरी बार था जब सिंध के हिन्दुओं की मांग को कांग्रेसी नेताओं ने अनसुना कर उनके साथ अन्याय किया था। पहला अवसर तब था जब सिंध को बम्बई प्रेसीडेन्सी से अलग कर उसे मुस्लिम बहुल प्रान्त बना दिया था।

सिंध प्रदेश 1936 से पूर्व तत्कालीन बम्बई प्रेसीडेन्सी (बम्बई राज्य) का हिस्सा था। यह प्रेसीडेंसी हिंदू बहुल थी। यदि सिंध को बम्बई प्रेसीडेन्सी से अलग नहीं किया जाता तो आज पूरा सिंध भारत का हिस्सा रहता।

मुस्लिम लीग की मांग– अम्बेडकर जी ने किया था विरोध

मुस्लिम लीग ने सिंध को बम्बई प्रेसीडेन्सी से अलग करने की मांग की। यद्यपि दोनों समुदायों में कई नेता अलग सिंध प्रांत बनाने के विरोध में थे। इसका प्रमाण बाबा साहेब अम्बेडकर के सदन में दिए वक्तव्य से मिलता है, जो उन्होंने सिंध को बम्बई से पृथक करने की मुस्लिम मांग पर दिया था। यह वक्तव्य बाबा साहेब के सम्पूर्ण वाङ्मय के खण्ड चार में पृष्ठ 18,19,20 पर दिया हुआ है। इस भाषण में बाबा साहेब अम्बेडकर ने सिंध के बम्बई में रहने के पक्ष में कई लाभ बताए हैं। उन्होंने कहा था कि– *'' यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेसीडेन्सी के साथ जुड़ने से उसे (सिंध को) कोई आर्थिक हानि हुई है। इसके विपरीत वह प्रेसीडेंसी के सहारे इतनी तेजी से तरक्की करने में समर्थ हुआ है, जितनी वह अपने बलबूते पर नहीं कर सकता था। प्रेसीडेन्सी के साथ मिलने से ही वह उसके विशाल संसाधनों का प्रचुर उपयोग भी कर सकता है।''*

बाबा साहेब ने इस भाषण में मौलाना अबुल कलाम आजाद के मुस्लिम लीग के कलकत्ता अधिवेशन में दिए भाषण का उल्लेख किया है, जो सिंध को पृथक करने की मुस्लिम साम्प्रदायिकता की पोल खोलता है।

1917 के सम्मेलन में सब थे सहमत कि सिंध को अलग न किया जाए

सिंध के स्थान के बारे में विचार करने के लिए नवम्बर,1917 में सिंधियों का एक विशेष सम्मेलन हुआ। सिंध के जाने माने मुसलमान नागरिक श्री जीएम मुरगड़ी सम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। सम्मेलन के अध्यक्ष एक हिंदू सज्जन श्री हरचन्दराय विशनदास थे। सम्मेलन के सामने चार विकल्प थे। अर्थात् (1) सिंध को अलग प्रान्त बनाना (2) सिंध और बलूचिस्तान को मिलाकर एक प्रान्त बनाना (3) सिंध को पंजाब के साथ मिलाना, और (4) सिंध का बम्बई के साथ ही रहना। सम्मेलन में न केवल अलग प्रान्त के प्रस्ताव को ठुकरा दिया बल्कि हिंदुओं और मुसलमानों के समर्थन से एक प्रस्ताव भी पास किया। इस प्रस्ताव के अनुसार सिंध के कमिश्नर का दर्जा कम करके, सिंध और प्रेसीडेन्सी के बीच घनिष्ठ मेल की सिफारिश की गई। हिंदुओं और मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मण्डल भारतमंत्री श्री मोन्टेग्यू और वायसराय लॉर्ड रीडिंग से मिलने गया। कहा जाता है कि प्रतिनिधि मण्डल ने जोर देकर कहा कि सिंध अलग प्रांत नहीं बनना चाहता।

सिंध को अलग करने के लिए मुसलमानों के प्रयत्न

1924 में एक प्रमुख सिंधी मुसलमान नेता शेख अब्दुल मजीद सिंधी ने सिंध के अन्दर इस मुद्दे पर अपने अखबार 'अलवहीद' में किश्तों में एक लेखमाला छापी, बाद में उसे पुस्तक रूप दिया गया। इसमें उसने पहली बार खुले शब्दों में मुसलमानों को आह्वान किया कि इस वक्त सिंधी मुसलमानों के सामने सिंध को बम्बई से काटकर अलग सूबा बनाने का बड़ा प्रश्न उपस्थित है। सिंध की खिलाफत कमेटी ने भी इसका समर्थन किया। बाद में इस अखबार ने गांव–गांव तक इस विषय को मुसलमानों तक पहुँचाया।

मुस्लिम लीग की मांग

दिसम्बर 1925 में कानपुर में खिलाफत कमेटी का सम्मेलन अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में हुआ तथा 31 दिसम्बर, 1925 को ही मुस्लिम लीग का अधिवेशन अलीगढ़ में अब्दुल रहीम की अध्यक्षता में हुआ। इन दोनों सम्मेलनों में, सिंध से शेख अब्दुल्ला मजीद प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित था। इन दोनों सम्मेलनों में सिंध को बम्बई से अलग करने के प्रस्ताव पास किए गए।

मार्च 1927 में 30 प्रमुख मुस्लिम नेताओं की बैठक जिन्ना की अध्यक्षता में हुई। उसमें वे सभी इस बात पर सहमत हुए थे कि पृथक निर्वाचन मंडल वे त्याग देंगे अगर उनकी 4 मांगें मानी जाएं। उन चार मांगों में उनकी पहली मांग सिंध को बम्बई से पृथक करके अलग प्रान्त बनाना था।

हिंदू नेता मिले मालवीय जी से

हिन्दू समाज का पक्ष रखने के लिए सिंध के स्थानीय नेता प्रयत्नशील थे। सिंध की हिंदू पंचायत ने भी सिंध के पृथकीकरण के विरुद्ध प्रस्ताव पास किया। 23 मार्च,1927 को श्री हरचन्दराय पं.मदन मोहन मालवीय से जाकर मिले और उनको सिंध के पृथकीकरण के विरोध में कई कारण बताए। 25 जून,1927 को सिंध में एक जनसभा कर उसमें पृथकीकरण का जोरदार विरोध हुआ। हिंदू महासभा इस विषय में हिंदुओं के पक्ष में आवाज उठा रही थी। 1924 के आखिर में अ.भा. हिंदू महासभा का अधिवेशन श्री एनसी केलकर की अध्यक्षता में हुआ था। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री केलकर जी ने पहली बार अखिल भारतीय मंच से सिंध के पृथकीकरण का विरोध करते हुए कहा था कि इस कारण मुसलमान हिंदुओं को अपने पास बन्धक के तौर पर रखेंगे। (जीएम सैयद की पुस्तक 'सिंध की बम्बई से आजादी', पृष्ठ–32)

लाला लाजपत राय खड़े रहे हिंदुओं के साथ

1927 में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में सिंध हिंदू सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन में भी सिंध को बम्बई से अलग करने का विरोध हुआ। 14–15 जुलाई, 1928 को हैदराबाद (सिंध) में सिंध हिंदू सम्मेलन डॉ.शिवराम मुंजे की अध्यक्षता में हुआ। इसमें भी सिंध को बम्बई से अलग करने के विरोध में जोरदार प्रस्ताव पारित किया गया।

कांग्रेस ने नहीं दिया साथ

दुर्भाग्य की बात थी कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने 31 दिसम्बर, 1925 को

कानपुर अधिवेशन में जिसकी अध्यक्षता सरोजिनी नायडू ने की, उसके बाद दिसम्बर 1927 में मद्रास में कांग्रेस अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता डॉ.मुख्तार अहमद अंसारी ने की तथा बाद में सिंध के कराची शहर में मार्च 1931 में अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता सरदार पटेल ने की, **इन सभी अधिवेशनों में भाषानुसार प्रांत रचना का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। जिसका अर्थ भाषा के आधार पर सिंध को अलग प्रान्त बनाना था।** 1928 में साइमन कमीशन तथा मोतीलाल नेहरू कमेटी के सामने हिंदू व मुसलमानों के प्रतिनिधियों ने सिंध के पृथक करने के सम्बन्ध में अपने-अपने पक्ष रखे। परन्तु दोनों, कमेटी और कमीशन ने मुसलमानों के पक्ष में निर्णय दिया।

16 अप्रैल, 1932 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री, रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 'साम्प्रदायिक निर्णय' की घोषणा की, जिसके अनुसार सिंध को बम्बई से अलग कर मुस्लिम बहुल प्रान्त बनाना था। अखिल भारतीय अधिनियम 1935 के तहत सिंध को अप्रैल 1936 में अलग सूबा बना दिया गया। कांग्रेस नेताओं की उपेक्षा के कारण हिंदुओं (सिंधियों) की आशाओं पर तुषारापात हो गया।

कांग्रेस में सिंध के तीन बड़े हिंदू नेता थे जो विभाजन रेखा खींचने के समय सिंध के हिन्दुओं के लिए कुछ कर सकते थे। इनमें आचार्य कृपलानी, जो विभाजन समय अ.भा.कांग्रेस के अध्यक्ष थे, दूसरे जयरामदास दौलतराम, जो गांधी जी के करीबी तथा स्वतंत्र भारत के केन्द्रीय मंत्री व बिहार तथा असम के गवर्नर रहे तथा तीसरे चोइथराम गिडवानी, जो सिन्ध प्रांत कांग्रेस के अध्यक्ष तथा 'शेरे सिन्ध' कहलाते थे। इन तीनों ने भी सिंध के हिंदू-बहुल इलाकों को भारत में मिलाने के लिए कुछ नहीं किया।

सावरकर ने किए प्रयत्न

उस समय हिंदू महासभा के अध्यक्ष वीर सावरकर थे। वे इस बात के लिए चिंतित थे कि सिंध के हिंदुओं को सिंध का हिंदू बाहुल्य क्षेत्र अलग कर हिंदुओं को दिया जाए। उन्होंने 9 जून, 1947 को सिंध प्रांत के तत्कालीन हिंदू महासभा के अध्यक्ष को एक तार भेजा, जिसका आशय था-

''हिन्दुस्तान संघ में शामिल होने की दृष्टि से सिंध में हिंदू बहुल जिलों को अलग करने की मांग को हर संभव गति और दबाव के साथ आगे बढ़ाएं।''

नेताओं की बेरुखी

इस लेख के प्रारंभ में सिंध के सोढा राजपूतों के एक शिष्टमंडल की जोधपुर के महाराजा हनुवंत सिंह जी से मिलकर सिंध के हिंदू इलाकों को जोधपुर में मिलाने की चर्चा की गई है।

महाराजा हनुवंत सिंह ने सोढा राजपूतों के शिष्टमण्डल को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। महाराजा बाद में जब दिल्ली गए तब उन्होंने अनेक नेताओं से बातचीत की, परन्तु इस विषय में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अतिरिक्त किसी ने भी रुचि नहीं दिखाई।

2 जून, 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने विभाजन की योजना पर कांग्रेस के नेताओं से सहमति चाही थी। तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष आचार्य कृपलानी, जो एक सिंधी हिंदू थे, को सिंध के हिंदू बहुल इलाकों की पाकिस्तान में जाने पर कोई चिंता नहीं थी। उनको चिंता थी तो यह कि 97 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले 'उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत' को विलय के संबंध में जनमत संग्रह की स्वतंत्रता दी जाए। इसके लिए कृपलानी ने सहमति पत्र भेजने से पूर्व माउंटबेटन से पूछा था।

सिंध के लगभग 26 प्रतिशत हिंदुओं की जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान दिए, हजारों पुरुष-महिलाओं ने जेल की यातनाएं भोगी, लाठी-गोली खाई उनका क्या होगा? यह सोचने वाला कोई नहीं था।

जहां बंगाल-असम व पंजाब को बांटने के लिए आयोग बिठाए, सिलहट जिले में जनमत संग्रह कराया, यही प्रक्रिया उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में भी अपनाई, वहीं सिन्ध भारत या पाकिस्तान में से किस देश में मिलेगा इसका निर्णय उसकी विधान-सभा पर छोड़ दिया गया।

अबुल कलाम आजाद ने खेली चाल

इस प्रकरण में मौलाना कलाम आजाद ने गड़बड़ की। '' सिंध विधानसभा के 60 में से 22 कांग्रेस और 27 मुस्लिम लीग के सदस्य थे। सरदार पटेल गैर- मुस्लिम लीग के मुसलमानों को अपने पक्ष में ले आए, जिसमें मुख्यमंत्री गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला तथा उनके दो भाई भी थे। 60 में से 35 सीटों के बहुमत के प्रबंधन के लिए वे आश्वस्त थे। परन्तु आजाद, पटेल की सलाह के खिलाफ और कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मंजूरी के बिना, मुस्लिम लीग के साथ गठबन्धन करने में शामिल हो गए। उन्होंने पटेल के काम को रद्द कर दिया। मुस्लिम लीग ने गठबन्धन कर मंत्री मंडल बनाया और कांग्रेस को बाहर कर दिया।''

इस प्रकार सिंध को पाकिस्तान में मिलाने का रास्ता साफ कर दिया।

(रजनीकांत पुरानिक लिखी पुस्तक ''रिवीलिंग फैक्ट्स अबाउट इंडियाज फ्रीडम स्ट्रगल'' पृष्ठ 207)

(लेखक हिंदी व सिंधी भाषा के साहित्यकार एवं इतिहासकार हैं)

'स्वराज संघर्ष यात्रा—2' विशेषांक प्रकाशन की सभी पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएं
स्वतंत्र बनो। एक स्वाधीन शरीर, एक स्वाधीन मस्तिष्क और एक स्वाधीन आत्मा। यही वह वस्तु है जिसका अनुभव मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन में किया है। आधीनता में भलाई करने से अपेक्षा मैं स्वाधीनतापूर्वक बुराई करना अधिक श्रेयस्कर समझूँगा।
-स्वामी विवेकानन्द
रानीसती निर्यात प्राइवेट लिमिटेड
बी के मार्केट 16 बी, शैक्सपियर सारणी,
कोलकाता-700 071 (प.बंगाल)

भारत विभाजन की विभीषिका और ज्वलंत प्रश्न

● पवन कुमार

भारत को स्वाधीनता मिली, परन्तु रक्तरंजित विभाजन के साथ। गांधी, नेहरू जैसे नेताओं ने देश को विश्वास दिलाया था कि विभाजन नहीं होगा और बाद में यह भी भरोसा दिलाया कि 'हिंदू-मुस्लिम' समस्या का हमेशा के लिए समाधान करने हेतु ही विभाजन स्वीकार कर रहे हैं। वह अपेक्षा और विश्वास कसौटी पर खरा नहीं उतरा। विभाजन के कारणों, विभाजन की दोषपूर्ण प्रक्रिया और परिणामों की चर्चा करने के साथ ही विभाजन से भविष्य का सबक क्या है?- इन सब पहलुओं पर चर्चा करता पवन कुमार का आलेख-

अंग्रेजों द्वारा शासित भारत ही संघर्ष के खून से लथपथ नहीं था, अपितु भारत की स्वतंत्रता भी खून में डूबी हुई ही मिली। 15 अगस्त, 1947 का सूर्य भारतीयों के लिए एक नया सूर्य था। इस दिन अंग्रेजों ने भारतीयों के साथ सत्ता हस्तांतरण किया। अंग्रेजों द्वारा मिली स्वतंत्रता से एक वर्ग उल्लासित था। चारों तरफ उल्लास का वातावरण था। लाल किले को दुल्हन सा सजाया गया था। सभी नेता जिनको देश के भविष्य को संभालने की जिम्मेदारी मिलने वाली थी, वे सभी एक-दूसरे को जीत की बधाई दे रहे थे। भारत को मिली स्वतंत्रता का यह एक पक्ष था।

विभाजन का कष्ट उसे जिसने भारत को माता माना

विश्व के नक्शे पर इस स्वतंत्रता से एक नहीं दो देश प्रकट हो रहे थे। दूसरा देश कोई और नहीं, बस भारत को ही काट कर अलग किया उसका हिस्सा था। भारत माता की दाईं- बाईं भुजा काट कर एक नया देश भारत के साथ ही अस्तित्व में आ रहा था। भारत माता के कष्ट को वही समझ सकता था जिसने भारत को केवल एक जमीन का टुकड़ा नहीं अपितु माता का स्थान दिया हो। वह तो यही कहेगा- ''विभाजन अस्वीकार्य है। ''

वह समूह और वह लोग जो इस विभाजन के विरोध में थे जैसे वीर सावरकर, श्री गुरुजी, संगठन जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिंदू महासभा इन सब को हाशिए पर धकेल दिया गया और कालांतर में सबको ही खलनायक बनाने की कोशिश की गई।

पूछने हैं कुछ प्रश्न

आज जब देश स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है, तब पीछे की ओर मुड़ कर देखने पर कुछ बातें पूछने का साहस करना होगा।

क्या भारत माता का विभाजन अनिवार्य था?
क्या विभाजन रोका जा सकता था ?
विभाजन के कारण क्या थे ?
विभाजन की प्रक्रिया क्या थी ?
विभाजन का परिणाम क्या रहा ?
भविष्य के लिए सबक क्या होगा ?

विभाजन के कारण

1. धार्मिक जनसंख्या का असंतुलन

जिन-जिन क्षेत्रों में मुसलमान ज्यादा थे वह हिस्सा पाकिस्तान में और जहां-जहां मुसलमान कम थे वह हिंदुस्तान में निर्धारित कर दिया। इसका अर्थ यही हुआ कि मुस्लिम आबादी जहां ज्यादा हो गई थी वह क्षेत्र पाकिस्तान बना दिया गया।

पंजाब में इस्लाम 1881 में 47.6% से 1941 में 53.2% हो गया, जबकि हिंदू सिख 1881 से 1941 में 52%से घटकर 44% ही रह गया।

इसी प्रकार हिंदू सांस्कृतिक विरासत का पुरोधा बंगाल, रामकृष्ण परमहंस,विवेकानंद, सुभाष बोस की जननी बंगाल 1947 आते-आते हिंदू अल्पसंख्यक हो गया था। इस्लाम मतावलंबी यहाँ लगभग 55% हो चुके थे।

2. द्विराष्ट्र का सिद्धांत (दो क़ौमी नज़रिया)

इस्लाम के अनुसार विश्व के दो भाग हैं, दार-उल-इस्लाम (जहां इस्लाम की हुकूमत होती है) तथा दार-उल-हर्ब (जहाँ शरीयत विधि नहीं चलती, अन्य आस्थाओं को मानने वाले बहुमत में रहते हैं)। दार-उल-हर्ब को संघर्ष स्थान भी कहते हैं, इसे दार-उल-इस्लाम में बदलना ही लक्ष्य होता है। बस यहीं से प्रारम्भ

भारत विभाजन के समय का एक दृश्य

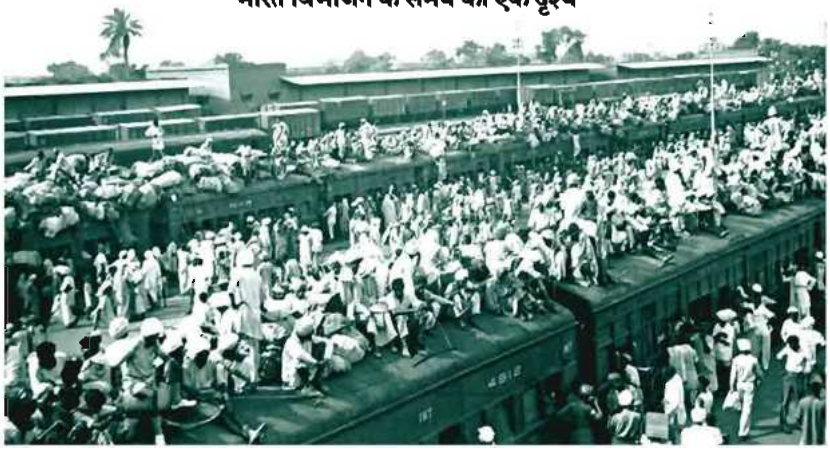

होता है दो क़ौमी नज़रिया। जब मौलवी शाह वलीउल्लाह घोषणा करता हो कि मुसलमान को हिंदुओं से इतना दूर रहना चाहिए कि हिंदू के घर के चूल्हे का धुआँ भी मुसलमान को ना दिखे तो प्रारम्भ होता है दो क़ौमी नज़रिया। इसकी झलक दिखायी देती है जब इस्लामिक शासन में अन्य मतावलंबियों पर जजिया लगाया जाता है।

स्वाधीनता से पूर्व अधिकांश राजनैतिक नेतृत्व को यह अहसास होने लग गया कि इस देश में ये दो समाज साथ नहीं रह सकते। अतः एक सुनहरे भविष्य की तलाश में, शांति से जीवन यापन करने के लिए, समृद्धि, विकास और उन्नति के लिए ही, जिसे हिंदू अपनी माँ मानता है उस मातृभूमि के विभाजन को भी उस नेतृत्व ने स्वीकार कर लिया।

3. तुष्टीकरण

कांग्रेस और गांधी जी लगातार तुष्टीकरण करते जा रहे थे। खिलाफत आंदोलन के दौर से शुरू हुआ यह तुष्टीकरण भारत के विभाजन पर भी जाकर रुका नहीं। स्वाधीनता पूर्व पंजाब विधानसभा में मुसलमानों के लिए अलग से आरक्षण प्रारंभ हो ही चुका था। मस्जिदों में हिंदू देवी–देवताओं पर अनर्गल पुस्तकों के वितरण पर नेतृत्व इसे अभिव्यक्ति की आजादी कह कर टालता रहा। परन्तु इस्लाम के संबंध में अनर्गल तथ्यों की पुस्तक छापने पर हिंदू प्रकाशक के लिए उसी नेतृत्व द्वारा सजा की मांग की गई। इतना ही नहीं, इस प्रकाशक की हत्या पर उसके दोषी मोहम्मद इल्म दीन को सजा से मुक्ति दिलाने के लिए वायसराय को पत्र लिखा गया। स्वामी श्रद्धानंद के हत्यारे अब्दुल रशीद के लिए भी प्रार्थना की गई– जैसे एक नहीं अनेक उदाहरण थे जिनसे स्पष्ट होता जा रहा था मुसलमान विशेष हैं।

> सिरिल रेडक्लिफ ने एक साक्षात्कार में बताया था कि मुझे सीमा रेखा खींचने के लिए केवल 10 से 11 दिन मिले थे। तब मैंने एक बार हवाई जहाज से क्षेत्र का दौरा किया। मेरे पास जिले के अनुसार भी नक्शे नहीं थे। मैंने देखा कि लाहौर में हिंदुओं की संपत्ति अधिक है इसलिए प्रारंभ में मैंने लाहौर को हिंदुस्तान में रखा, बाद में मैंने यह पाया कि पाकिस्तान के हिस्से में कोई बड़ा शहर नहीं है सो मैंने लाहौर को भारत से निकालकर पाकिस्तान को दे दिया।

4. अयोग्य और अदूरदर्शी नेतृत्व

कांग्रेसी नेतृत्व को वृद्धावस्था प्राप्त हो रही थी। संघर्ष करने की शारीरिक और मानसिक सामर्थ्य बची नहीं थी। जिन्ना ने अलग देश की जिद्द पकड़ ली थी और नेहरू की सत्ता की चाह ने उस ज़िद्द के आगे पूर्ण समर्पण कर दिया था। इस सत्ता लोलुपता में जैसा भी मिले वह भारत स्वीकार कर लिया गया। नेहरू ने स्वयं स्वीकार किया है कि हम थक चुके थे तथा संघर्ष की शक्ति शेष नहीं थी, अब तो बस परिणाम चाहते थे।

भारतीय जनता ने जिस नेतृत्व को अपने भविष्य की बागडोर सौंप दी वह कांग्रेसी नेतृत्व 'डायरेक्ट एक्शन' के नाम से ही भयभीत हो गया था। मुस्लिम आक्रमण से लड़ने की तैयारी नहीं थी। स्वप्न में होते गृहयुद्ध रूपी नरसंहार को अपनी जागृत आंखों से देखना नहीं चाहते थे। गृहयुद्ध के समाधान का कोई रास्ता और साहस नहीं बचता देख, भारत माता का विभाजन स्वीकार कर लिया।

क्या थी विभाजन की प्रक्रिया

- सिरिल रेडक्लिफ जो लंदन के एक वकील थे, उनको दोनों देशों के मध्य एक सीमा रेखा निर्धारित करने का दायित्व मिला। उन्होंने 'रिलीजियस मेजोरिटी प्रिंसिपल' के अनुसार हिंदू बहुल क्षेत्र भारत में और मुस्लिम बहुल क्षेत्र पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिए।
- सिरिल रेडक्लिफ ने एक साक्षात्कार में बताया था कि मुझे सीमा रेखा खींचने के लिए केवल 10 से 11 दिन मिले थे। तब मैंने एक बार हवाई जहाज से क्षेत्र का दौरा किया। मेरे पास जिले के अनुसार भी नक्शे नहीं थे। मैंने देखा कि लाहौर में हिंदुओं की संपत्ति अधिक है इसलिए प्रारंभ में मैंने लाहौर को हिंदुस्तान में रखा बाद में मैंने यह पाया कि पाकिस्तान के हिस्से में कोई बड़ा शहर नहीं है सो मैंने लाहौर को भारत से निकालकर पाकिस्तान को दे दिया।
- सिरिल रेडक्लिफ 1947 से पहले कभी भारत नहीं आया। भारत के बारे में जिसको किसी भी प्रकार की कोई जानकारी नहीं थी, उसने भारत का विभाजन कर दिया और ऐसा माना जाता है कि विभाजन

के बाद उसने बंटवारे से संबंधित समस्त मानचित्र और दस्तावेज अग्नि के हवाले कर दिए।

● जैसे घरों में संपत्ति का बंटवारा होता है वैसे इस देश के विभाजन पर संपत्ति का बंटवारा हुआ। आश्चर्यजनक बात यह थी कि छोटी-छोटी चीजें बांट ली गई। 'ब्रिटानिका एनसाइक्लोपीडिया' पुस्तक एक ही थी, उसको बीच में से फाड़ कर दो हिस्से करके दोनों को एक-एक हिस्सा दे दिया गया। पागल खाने 30 थे इस देश में, 27 भारत के हिस्से आए और 3 पाकिस्तान को दे दिए गए। सारी शराब भारत को दे दी गई। भारतीय नेतृत्व इसी में खुश था। इसी प्रकार गवर्नर जनरल बॉडी गार्ड्स रेजिमेंट की मशहूर बग्गी का बंटवारा भी सिक्का उछाल कर हुआ।

● पुनर्वास की क्या व्यवस्था होगी? इतने बड़े जनसमूह की अदला-बदली जो होने वाली है उसमें आवागमन की क्या व्यवस्था होगी? इस बारे में कोई विचार नहीं किया गया। परिस्थिति के कारण जिस समस्या से सामना होना था उसके समाधान पर विचार करना तो दूर, उस परिस्थिति की विकटता के कारण ही घबरा गए और लोगों को मरने के लिए उनके हाल पर छोड़ दिया गया।

परिणाम

1. भारत प्राकृतिक रूप से निर्मित हुआ है। भारत का विभाजन कर एक अप्राकृतिक सीमा का निर्माण करना प्रकृति के साथ खिलवाड़ था। इसके कारण प्राकृतिक रूप से भारत और पाकिस्तान का भविष्य सदैव समृद्धि की पूर्णता के लिए प्रयत्नाधीन ही रहेंगे।

2. 20 लाख लोगों की हत्या, करोड़ों लोग घर से बेघर हुए, बलात्कार, अन्य दुर्घटनाओं में घायल होना, अपने परिवार वालों से बिछड़ जाना, इस प्रकार की कितनी ही घटनाएं हैं जिनका शायद वर्णन करना असंभव है।

3. सेना पर व्यय, अतिरिक्त खर्च भारत और पाकिस्तान के बीच में एक नई सीमा का निर्माण होने से सैन्य खर्च बढ़ गया है। जितनी प्रत्यक्ष युद्धों में जन और धन की हानि नहीं हुई उतनी तो भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर गोलाबारी एवं आतंकी घटनाओं में हो चुकी है। अब तक पाकिस्तान से 4 बार युद्ध हो चुका है, इन सब से बचा जा सकता था। भारत को हर बार रक्षा बजट बढ़ाना पड़ रहा है। आज भारत का रक्षा बजट भारत के कुल बजट का लगभग 25.6 प्रतिशत है। अभी पिछले 5 वर्ष में ही पाक सीमा पर मात्र सड़क निर्माण के लिए 4242 करोड़ रुपए का खर्चा हुआ है।

भारत का विभाजन मात्र एक देश से दो देश का निर्माण नहीं था। यह था एक सभ्यता को खत्म करने का प्रयास, एक संस्कृति को जिन्दा जलाने की कोशिश, एक बहुत बड़े जनसंहार से मानवता के माथे पर लगाया गया कलंक, ईश्वरीय प्रकृति को चुनौती, लाखों स्वप्नों की भ्रूण हत्या, करुणा,दया, प्रेम का गला घोंटने का कृत्य, त्याग और समर्पण के देश का चीर हरण, हजारों बलिदानों को दफना देने जैसा कुकृत्य।

4. जब दो देश आपसी दुश्मन बनते हैं तो उनके नागरिक भी स्वतः एक दूसरे के दुश्मन बनते ही हैं। यह दुश्मनी केवल सैनिक या राजनैतिक स्तर तक नहीं रहती। भारत पाक में दुश्मनी का आधार ही मजहब है। पाकिस्तान की मांग करने वाले मजहबी लोगों की जनसंख्या पाकिस्तान से ज्यादा भारत के पास है । इसका अर्थ सभी के समझ आता ही होगा ।

भविष्य का सबक

एक मजहब को मानने वालों की संख्या बढ़ना और उनका यह कहना कि हम अन्य के साथ नहीं रह सकते, यही तो विभाजन का सबसे बड़ा कारण था । अतः अब इस पर ध्यान देना होगा कि क्या जनसंख्या में वृद्धि के साथ इस प्रकार का असंतुलन निर्माण तो नहीं हो रहा है। वैसे पाकिस्तान में 20% की आबादी वाला हिंदू 2% हो चुका है। परंतु भारत में मुस्लिम आबादी 9.54% थी वह आज लगभग 15% हो गई है। ये कैसे हुआ पता नहीं परंतु जिस असंतुलन की वजह से पाकिस्तान बना उसी असंतुलन की ओर आज देश बढ़ रहा है।

'डायरेक्ट एक्शन' जिसके आह्वान से हमारा तात्कालिक नेतृत्व घबरा गया था उस विषय पर भी इतिहास से सबक लेना होगा और भविष्य के प्रति सजग रहना होगा। क्या 1946/47 जैसी समस्या के निदान के लिए कोई कार्ययोजना तैयार है? क्या अब कोई अंदर के आक्रमण से बचने की योजना है?

भारत का विभाजन मात्र एक देश से दो देश का निर्माण नहीं था। यह था एक सभ्यता को खत्म करने का प्रयास, एक संस्कृति को जिन्दा जलाने की कोशिश, एक बहुत बड़े नरसंहार से मानवता के माथे पर लगाया गया कलंक, ईश्वरीय प्रकृति को चुनौती, लाखों स्वप्नों की भ्रूण हत्या, करुणा,दया, प्रेम का गला घोंटने का कृत्य, त्याग और समर्पण के देश का चीर हरण, हजारों बलिदानों को दफना देने जैसा कुकृत्य।

विभाजन स्वीकार करने वालों से कुछ प्रश्न

इस कृत्य में जिन जिन की भी सहमति थी उन सभी से आज की युवा पीढ़ी कुछ उत्तर जानना चाहती है :-

● जब 1945/46 के सेंट्रल असेंबली चुनाव में नेहरू जी ने कहा था कि हम भारत के टुकड़े नहीं होने देंगे तो बाद में क्यों होने दिए? क्या पहले का वादा केवल चुनाव जीतने के लिए था ?

● गांधी जी ने कहा था कि भारत का विभाजन मेरी लाश पर होगा, तो विभाजन क्यों स्वीकार हुआ ?

● यदि सारे भारत में आग लग जाए तो भी पाकिस्तान का निर्माण नहीं हो सकेगा। ऐसा कहने वाले नेता भारत का विभाजन कैसे स्वीकार कर गए?

● रेडक्लिफ़ का मन हुआ और उसने लाहौर भारत को देते-देते पाकिस्तान को दे दिया। क्यों किसी ने उस पर प्रश्न खड़ा नहीं किया?

● 3 जून,1947 को नेहरू जी ने कहा था कि भारत में विद्यमान हिंदू-मुस्लिम समस्या का सदैव के लिए समाधान करने के लिए ही हम भारत का विभाजन स्वीकार कर रहे हैं, तो फिर इस समस्या के पूर्ण निदान की तरफ बढ़ने के बजाय मुसलमानों को इस देश में रोकने का आह्वान क्यों किया गया?

● विभाजन से पूर्व मुसलमान भारत में 24% थे उसी अनुपात में 30%ज़मीन और अन्य सम्पत्ति पाक को देना तय हुआ था। जब विभाजन के बाद उनको रोकने का आह्वान हुआ तो 9.54% यहाँ रुक गए, तो बँटवारे की सम्पत्ति उस अनुपात में वापस क्यों नहीं ली गयी? डॉ.भीमराव अंबेडकर ने पुस्तक लिखकर चेताया था कि विभाजन होता है तो आबादी की पूर्णतः अदला-बदली होनी चाहिए, वरना ऐसी समस्या फिर उत्पन्न होगी। इस चेतावनी पर ध्यान क्यों नहीं दिया गया?

● जब पाकिस्तान ने स्वयं को इस्लामिक देश घोषित कर दिया तो अपने हिंदू-भाई, बहनों को उनकी दुर्दशा के लिए वहाँ क्यों छोड़ दिया?

● विभाजन के इस दौर में लाखों लोगों की हत्या हुई, हजारों माता-बहनों के साथ दुष्कर्म हुआ था, हजारों शिशु अनाथ हुए, हजारों लोग बेघर हो गए, इन सबका दोषी कौन है?

● संपत्ति के बंटवारे के अनुसार तीन सौ करोड़ पाकिस्तान से लेने थे और 75 करोड़ पाकिस्तान को देने थे। अपने रुपए लेने से पहले पाक को पहली किस्त 20 करोड़ दी गई, उसका उपयोग उसने कश्मीर के ऊपर आक्रमण में किया। शेष राशि 55 करोड़ को रोक लिया क्योंकि नेहरू जी को भय था कि वह शेष राशि का भी यही दुरुपयोग करेगा। उस किस्त को देने के लिए गांधी जी ने उपवास क्यों किया ?

● कबूतर और तोते की पीड़ा से पीड़ित होने वाला हिंदी साहित्य जगत इतने बड़े नरसंहार पर लगभग मौन ही क्यों रहा?

● क्यों केवल आज भी हिंदुओं से ही धर्मनिरपेक्षता की उम्मीद की जाती है?

विभाजन मिटकर रहेगा

महर्षि अरविंद ने कहा था-विभाजन का आधार अप्राकृतिक है, अतः यह अप्राकृतिक विभाजन मिट कर रहेगा, भारत पुनः अखंड बनेगा। एक स्थान पर पढ़ा था-

मेरे देश की जनता के साथ, ये कैसा अन्याय हुआ।
आधी रात की आजादी का, सवेरा अब तक नहीं हुआ।।

भारत अभी भी इस सवेरे का इंतजार कर रहा है। भारत माता अपने पुत्रों की ओर कातर दृष्टि से देख रही है, कब तक ये पीड़ा भोगनी पड़ेगी?

जिन्होंने इस देश के लिए हंसते-हंसते प्राणों की बलि दी थी उनके चक्षुओं के समक्ष सम्पूर्ण भारत माता अपने पूर्ण सौंदर्य के साथ खड़ी रही होगी, ना कि क्षत-विक्षत अवस्था में। जिन कलियों ने भारत बगिया के निर्माण में स्वयं को होम कर दिया, उनके स्वप्नों की बगिया रूपी भारत बनाना ही हम सब का कर्तव्य हो।

नई पीढ़ी इस संदेश को समझ कर उस दिशा में अपने जीवन को और जीवन के प्रत्येक क्षण को लगाए, इसी आशा के साथ।

।।भारत माता की जय।।

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जयपुर प्रांत कार्यकारिणी के सदस्य हैं)

स्वाधीनता दिवस पर प्रकाशित विशेषांक की
हार्दिक शुभकामनाएं
विनय अग्रवाल अजंना अग्रवाल
बी- 103, महिमा पनाश, जगतपुरा,
जयपुर 302033, मो. 9810320109

NATRAJ ROOFING PVT. LTD
NAVEEN BANSAL, PAWAN BANSAL
DIRECTOR
Mob. 9314655850
E-mail : marketing@natarajroofing.com
natarajroofing@gmail.com, website : www.natarajroofing.com
Mob. 8824900842, 8824900857
Work : H-115, VKI Extension Area, Road No. 14, Badarana, Jaipur 302013 (Raj.)

अखण्ड भारत- स्वप्न और यथार्थ

• देवेन्द्र स्वरूप

जहाँ मनुस्मृति में ब्राह्मवर्त आर्यावर्त आदि का वर्णन आता है, वहीं पुराणों में भारतवर्ष का। हमें कौन सा अखंड भारत चाहिए? भारत की सीमाओं का सिकुड़ना क्यों शुरू हुआ? भारत को अखंड बनाने के मार्ग में आज क्या बाधाएँ हैं? इन सब प्रश्नों को स्पर्श करता हुआ यह आलेख 17 वर्ष पूर्व 2005 में लिखा गया था, परंतु आज भी विषय को समझने में उतना ही प्रासंगिक है।

अखण्ड भारत महज सपना नहीं, श्रद्धा है, निष्ठा है। जिन आंखों ने भारत को भूमि से अधिक माता के रूप में देखा हो, जो स्वयं को इसका पुत्र मानता हो, जो प्रातः उठकर ''समुद्र वसने देवि पर्वतस्तन मंडले, विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यम् पादस्पर्शं क्षमस्व मे'' कहकर उसकी रज को माथे से लगाता हो, वन्देमातरम् जिनका राष्ट्रघोष और राष्ट्रगान हो, ऐसे असंख्य अंतःकरण मातृभूमि के विभाजन की वेदना को कैसे भूल सकते हैं? अखण्ड भारत के संकल्प को कैसे त्याग सकते हैं? किन्तु लक्ष्य के शिखर पर पहुंचने के लिए यथार्थ को पूरी तरह जानना-समझना ही होगा।

भारत यानि क्या?

हमारे सामने पहला प्रश्न आता है कि भारत क्या है? क्या वह भूगोल है? क्या इतिहास है या कोई सांस्कृतिक प्रवाह है? यदि भूगोल है तो उस भूगोल को भारत कब मिला, किसने दिया? भूगोल तो पहले भी था पर तब वह भारत क्यों नहीं था? तब उसका नाम क्या था? भारत की अखंडता का अर्थ क्या है? यदि कोई भौगोलिक मानचित्र है जिसे हम अखंड देखना चाहते हैं तो प्रश्न उठेगा कि उसकी सीमाएं क्या हैं?

किस भारत की अखंडता चाहिए?

क्या हम ब्रिटिश भारत की अखंडता चाहते हैं या सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेन त्सांग के समय के भारत की, जिसमें आज का अफगानिस्तान और मध्य एशिया का ताशकंद-समरकंद क्षेत्र भी सम्मिलित था? या उसके भी पहले के भारत की, जिसे पुराणों में नवद्वीपवती कहा है, जिसके श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, जावा, सुमात्रा, बाली, मलेशिया, फॉरमोसा और फिलिपींस जैसे अनेक द्वीप अंग थे? यहां प्रश्न उठेगा कि विष्णु पुराण के **उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रैश्चैव दक्षिणम्। वर्ष तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।** वाला भारत, नवद्वीपवती कब कैसे बन गया?

क्या हम ब्रिटिश भारत की अखंडता चाहते हैं या सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेन त्सांग के समय के भारत की, जिसमें आज का अफगानिस्तान और मध्य एशिया का ताशकंद-समरकंद क्षेत्र भी सम्मिलित था? या उसके भी पहले के भारत की, जिसे पुराणों में नवद्वीपवती कहा है, जिसके श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, जावा, सुमात्रा, बाली, मलेशिया, फॉरमोसा और फिलिपींस जैसे अनेक द्वीप अंग थे?

भारत नाम की भौगोलिक सीमाओं के संकुचन और विस्तार का रहस्य क्या है? उसका आधार क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए हमें देखना होगा कि भारत बना कैसे? क्या भारत एक दिन में बन गया या उसके पीछे हजारों साल की इतिहास यात्रा विद्यमान है?

जम्बूद्वीपे भरत खंडे...

प्राचीन साहित्यिक स्रोत बताते हैं कि कभी इस भौगोलिक खण्ड को केवल हिमवर्ष कहते थे, फिर उसे 'पृथिवी' 'अजनाम वर्ष' और 'जम्बूद्वीप' जैसे नाम मिले। मौर्य सम्राट अशोक को सकल जम्बूद्वीप का राजा कहा गया। आगे चलकर हमारे संकल्प-मंत्र में जम्बूद्वीपे, भरत खंडे, भारतवर्षे, आर्यावर्ते, कुरुक्षेत्रे... जैसे भौगोलिक नामों को गिनाया गया। जिसके अनुसार जम्बूद्वीप, भरतखंड अर्थात् भारतवर्ष से बड़ी भौगोलिक इकाई है और भारतवर्ष आर्यावर्त से, आर्यावर्त कुरुक्षेत्र से बड़ा है। इन भौगोलिक रिश्तों का आधार क्या है? ये एक-दूसरे से जुड़ते कैसे चले गए? इन्हें परस्पर जोड़ने वाली इतिहास यात्रा की प्रेरणा क्या है, लक्ष्य क्या है और उसका वाहक या माध्यम कौन है?

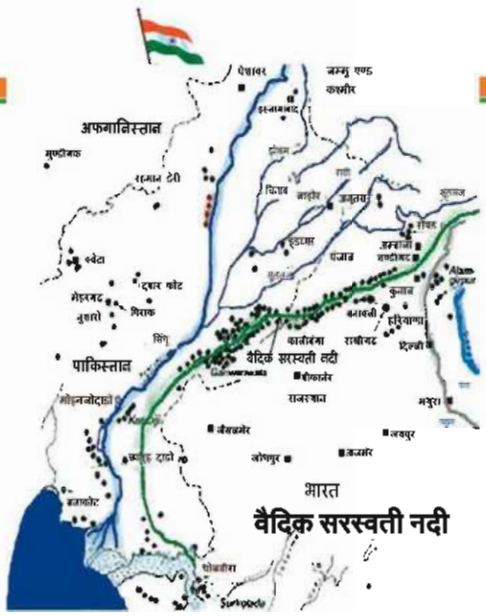

मनुस्मृति का ब्राह्मावर्त

मनुस्मृति में इस लम्बी इतिहास यात्रा के कुछ भौगोलिक सोपानों का वर्णन सुरक्षित है। (अध्याय 2, श्लोक 18-23)। इनमें पहला सोपान था, **दो प्राचीन देव नदियों-सरस्वती और दृषद्वती के बीच का क्षेत्र, जिसे देवताओं ने बनाया और जिसे ब्राह्मावर्त नाम मिला।**

मनुस्मृति के अनुसार इस ब्राह्मावर्त क्षेत्र में परम्परा से चले आए आचार को सभी मानवों के लिए आदर्श माना गया यानी वहां एक महान सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ। निश्चय ही यह वही संस्कृति है जिसका स्रोत वेदों को माना जाता है और जिसका भौतिक शरीर अब पुरातात्विक खुदाइयों में सरस्वती के लुप्त प्रवाह के किनारे-किनारे हरियाणा से गुजरात के समुद्रतट तक प्रगट हो रहा है, **जिसे पुरातत्वशास्त्रियों ने सिन्धु सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता या सरस्वती सभ्यता का नाम दिया है।**

भारत की अखंड साहित्यिक परम्परा साक्षी है कि सरस्वती के तट पर ऋषियों ने वैदिक यज्ञ किए, दृश्यमान सृष्टि चक्र के पीछे विद्यमान देवशक्तियों का साक्षात्कार किया, ज्ञान यात्रा के इस चरण को त्रयी विद्या का नाम दिया। एक उत्कृष्ट विकसित भौतिक सभ्यता का विकास किया और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना की। **इस सभ्यता के निर्माताओं को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ कहा गया।**

ब्राह्मर्षि देश व आर्यावर्त

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' पूरे विश्व को आर्यत्व-श्रेष्ठत्व की ओर ले जाने का सपना लेकर यह संस्कृति प्रवाह ब्राह्मावर्त की सीमाओं से आगे बढ़ा। उसके **अगले भौगोलिक सोपान के रूप में मनुस्मृति ब्राह्मर्षि देश का वर्णन करती है** जिसके अन्तर्गत कुरु, पांचाल, शूरसेन एवं मत्स्य नामक जनपदों का नामोल्लेख है। अर्थात वर्तमान हरियाणा, उससे सटे राजस्थान का कुछ भाग और उत्तर प्रदेश का ब्रजमंडल इस सांस्कृतिक प्रवाह से आप्लावित हो गए। **इस ब्राह्मर्षि देश की महिमा का वर्णन करते हुए मनुस्मृति कहती है इस देश में जन्मे निवासियों से ही पृथ्वी के समस्त मानव अपने लिए चरित्र की शिक्षा लेते हैं।**

यहां भी संस्कृति ही भूगोल की पहचान का आधार है। **अगला सोपान है मध्य देश,** जो उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत के बीच और पूर्व में प्रयाग से पश्चिम में सरस्वती के लोपस्थान विनशन तक फैला है। यही सांस्कृतिक प्रवाह मध्य देश से आगे बढ़कर दक्षिण में रेवा (नर्मदा) तट तक पहुंच जाता है और पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक फैल जाता है।

मनुष्य तो मनुष्य स्वर्ग के देवता भी एक ही गीत गाते हैं कि धन्य हैं वे जिन्हें भारतभूमि में जन्म मिला, क्योंकि वहां स्वर्ग और अपवर्ग दोनों को प्राप्त कराने वाला कर्म पथ उपलब्ध है। विष्णु पुराण भारत को मोक्ष भूमि व कर्म भूमि कहता है।

इस क्षेत्र को नाम मिलता है **आर्यावर्त** और उसकी पहचान है कि वह यज्ञीय देश है और वहां काला मृग निःशंक होकर चरता है। स्पष्ट ही, आर्यावर्त नाम का अधिष्ठान सांस्कृतिक है।

पुराण हमें भारत नाम की उत्पत्ति, उसकी भौगोलिक सीमाओं, उसके नदी प्रवाहों, पर्वतों, नगरों और आसेतु हिमाचल बिखरे जनपदों का परिचय देते हैं।

पुराणों में वर्णित है, 'भारत' देश

मनुस्मृति आर्यावर्त पर आकर रुक जाती है। उसके आगे सांस्कृतिक प्रवाह की यात्रा का वर्णन नहीं करती। यह वर्णन हमें महाभारत व पुराणों में प्राप्त होता है। पुराण हमें भारत नाम की उत्पत्ति, उसकी भौगोलिक सीमाओं, उसके नदी प्रवाहों, पर्वतों, नगरों और आसेतु हिमाचल बिखरे जनपदों का परिचय देते हैं। उनके अनुसार वैवस्वत मनु की वंश परम्परा के नाभि के पौत्र एवं ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर भारत नामकरण हुआ। भरत ने सरस्वती के तट पर अनेक यज्ञ किए। कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णित दुष्यंत पुत्र भरत का उल्लेख कोई पुराण नहीं करता। कुछ प्राच्यविद् भारत नाम का स्रोत सरस्वती नदी के तट पर भरत नामक जन को मानते हैं। यदि सरस्वती तट पर विकसित वैदिक सरस्वती का आधार भरत जन था तो यह बहुत संभव है कि उस लम्बी सांस्कृतिक यात्रा, जिसने उस पूरे भूगोल को जिसे भारतवर्ष नाम मिला, एक सांस्कृतिक व्यक्तित्व प्रदान करने का माध्यम भरत जन ही रहा होगा।

भारतवर्ष का कीर्तिगान

महाभारत ने भारतवर्ष नाम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करते हुए उसका कीर्तिगान किया। भीष्म पर्व के नवें अध्याय में महाभारतकार कहता है कि अब तुम्हारे लिए उस भारतवर्ष का कीर्तिगान करूंगा जो देवराज इन्द्र, वैवस्वत मनु, वैन्यपृथु, इक्ष्वाकु, ययाति, अम्बरीष, मान्धाता, नहुष, मुचुकुन्द, उशीनर,

ओ हिन्द के तिरंगे, फहरो तुम इस चमन में
झुकते रहेंगे मिलकर हम सब तेरे नमन में

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हर घर तिरंगा

13-15 अगस्त 2022

इस वर्ष हम भारत की आजादी के 75 वर्ष, आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। तिरंगा, भारत के मान-सम्मान और समृद्धि का प्रतीक है। आइये, हम सभी 13 से 15 अगस्त तक अपने अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराएं। यह अभियान तिरंगे के साथ हमारे रिश्ते को और अधिक मजबूती प्रदान करेगा।

- डॉ. शैलेश दिगम्बर सिंह
जिलाध्यक्ष - भारतीय जनता पार्टी, भरतपुर

/DRSHAILESHBJP

Dr. Shailesh Digamber Singh

पाथेय कण

पत्रिका

में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में

स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर '

प्रकाशित विशेषांक की

सभी को हार्दिक बधाई और

शुभकामनाएं

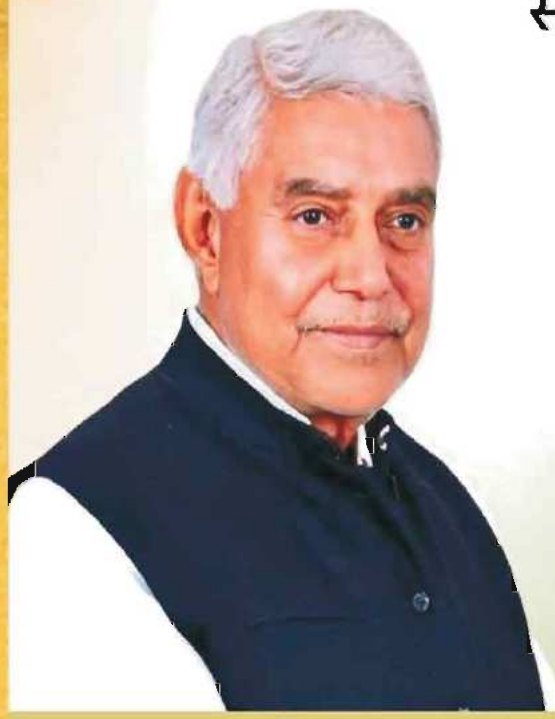

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ताराचंद सारस्वत

जिलाध्यक्ष,भाजपा बीकानेर देहात

श्रीडुंगरगढ विधानसभा -9414142359 राजस्थान

प्रतिष्ठान:-

सारस्वत एग्रोकॉम प्रा लि - बीकानेर

LTC Commercial Co Pvt Ltd

Jaipur-Rajasthan

अखण्ड भारत

ऋषभ, एल नृग, कुशिक, सोमक, दिलीप आदि राजाओं को प्रिय था। ये सभी नाम महाभारत युद्ध से पुराने हैं और एक लम्बी इतिहास यात्रा के सूचक हैं। पुराण ग्रन्थ इस इतिहास यात्रा में से जन्मी-बढ़ी सांस्कृतिक पक्ष को महत्व देते हैं।

विष्णु पुराण कहता है कि भारतवर्ष में ही चार युग (कृत, त्रेता, द्वापर और कलि) होते हैं अन्यत्र कहीं नहीं। इसी देश में परलोक के लिए मुनिजन तपस्या करते हैं, याज्ञीक लोग यज्ञानुष्ठान करते हैं और दान देते हैं। जम्बूद्वीप में भी भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि यह कर्मभूमि है। अन्य देश केवल भोग भूमियां हैं। जीव को सहस्रों जन्मों के अनन्तर महान पुण्यों का उदय होने पर ही इस देश में जन्म प्राप्त होता है। मनुष्य तो मनुष्य स्वर्ग के देवता भी एक ही गीत गाते हैं कि धन्य हैं वे जिन्हें भारतभूमि में जन्म मिला, क्योंकि वहां स्वर्ग और अपवर्ग दोनों को प्राप्त कराने वाला कर्म पथ उपलब्ध है। विष्णु पुराण भारत को मोक्ष भूमि व कर्म भूमि कहता है। (विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, अध्याय 3,श्लोक 19-25)

भूमि माता की अवधारणा

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा कि इस भूमि पर अनेक बोलियां बोलने वाले और अनेक आचार-विचार को मानने वाले लोग रहते हैं पर यह भूमि माता अपने उन सब पुत्रों को समान रूप से दूध पिलाती है। वह मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूं। कृतज्ञता से भरे भारतीय मन ने माता-भूमि सम्बन्ध के द्वारा अपने को इस भूमि से मान लिया। इसके कण-कण में अपनी श्रद्धा के बीज बोए जिनमें से एक विशाल तीर्थ मालिका का जन्म हुआ। यह मातृभमि के प्रति भक्ति की अनेकमुखी विविधता को बांधने वाला सूत्र बन गई।

भारत ने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि, प्रकृति के अनुकूल इष्ट देवता और उपासना पद्धति को चुनने की छूट दी। मनुष्य के आत्मिक विकास की एकमात्र कसौटी है आत्मवत् सर्वेभूतेषु और सर्वभूतहिते रता:। इस प्रकार भारत माता के प्रति पुत्र भाव और एक श्रेष्ठ जीवन दर्शन के प्रति आस्था ने ही हमारी सब विविधताओं को एक सूत्र में बांधे रखा है। इसी को राष्ट्र-धर्म कहते हैं। भूमि के प्रति भक्ति का यह भाव सांस्कृतिक प्रवाह के साथ-साथ आगे बढ़ता गया। संस्कृति और भारत एकरूप हो गए। इसीलिए भारतवर्ष की व्याख्या ब्राह्मावर्त, ब्राह्मर्षि देश, मध्य देश, आर्यावर्त, कन्याकुमारी से हिमालय तक के कुमारी खंड से आगे बढ़कर नवद्वीपवती तक पहुंच गई। भारत ने बृहत्तर भारत का रूप धारण कर लिया।

किन्तु कालक्रम से इन सीमाओं का सिकुड़ना आरम्भ हुआ। आठवीं शताब्दी में भारत में एक ऐसी विचारधारा का प्रवेश हुआ जिसे उपासनात्मक विविधता स्वीकार्य नहीं है, जो अपनी उपासना पद्धति को ही पूर्ण और अन्तिम सत्य मानती है, जो एक पुस्तक और एक पैगम्बर के प्रति अन्धश्रद्धा न रखने वालों को काफिर कहती है।

'काफिर' की अवधारणा

किन्तु कालक्रम से इन सीमाओं का सिकुड़ना आरम्भ हुआ। आठवीं शताब्दी में भारत में एक ऐसी विचारधारा का प्रवेश हुआ जिसे उपासनात्मक विविधता स्वीकार्य नहीं है, जो अपनी उपासना पद्धति को ही पूर्ण और अन्तिम सत्य मानती है, जो एक पुस्तक और एक पैगम्बर के प्रति अन्धश्रद्धा न रखने वालों को काफिर कहती है, जिसकी दृष्टि में काफिरों को येन-केन प्रकारेण अपने रास्ते पर लाना ही सबसे बड़ा पुण्य कार्य है अन्यथा उन्हें जीने का कोई अधिकार नहीं है। इस विचारधारा में देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता के लिए कोई स्थान नहीं है। वह मजहब को ही सामूहिक पहचान का आधार मानती है। वह अन्य उपासना पद्धतियों के पूजा स्थलों के विध्वंस को मजहब की सेवा समझती है। अपने अनुयायियों को काफिरों के विरुद्ध जिहाद (धर्म युद्ध) का आदेश देती है। जिहाद में मारे जाने वालों को गाजी कहलाने व जन्नत में जाने का लालच दिखाती है। जो अपने जन्मदेश अर्थात् अरब प्रायद्वीप की सभ्यता, भाषा, वेशभूषा को भी मजहब का हिस्सा मानती है।

असहिष्णु व विस्तारवादी विचार

इस विचारधारा के प्रवेश के बाद भारत में दो विचारधाराओं का लम्बा टकराव प्रारम्भ हो गया। एक विचारधारा जिसमें देशभक्ति, सहिष्णुता, विविधता एवं मानव सभ्यता के लिए कोई स्थान नहीं है, जो असहिष्णु, विस्तारवादी एवं विध्वंसकारी है। यह विचारधारा जहां पश्चिमी और मध्य एशिया, उत्तरी अफ्रीका में अनेक प्राचीन सभ्यताओं को पूरी तरह लील गई, वहां विविधता भरे विकेन्द्रित भारत में इसको एक-एक इंच आगे बढ़ने के लिए लड़ना पड़ा, यहां उसे भारत की संस्कृति को पदाक्रान्त और नि:शेष करने के बजाय अपनी अलग अस्मिता को बचाने की चिन्ता लगी रही।

अनेक मध्यकालीन मौलवियों और शासकों की पीड़ा रही कि भारत में हमारी स्थिति हिन्दुओं के महासमुद्र में एक दाने के समान है। इस अस्तित्व रक्षा की चिन्ता ने भारत की प्राचीन सभ्यता व सांस्कृतिक प्रतीकों से पूर्ण सम्बंध विच्छेद का रूप धारण कर लिया।

अभारतीय करने के प्रयत्न

जियाउद्दीन बरनी, शेख अहमद सरहिन्दी, शाहवलीउल्लाह से लेकर सैयद अहमद बरेलवी और उन्नीसवीं शताब्दी में स्थापित देवबंद के दारूल उलूम का एकमात्र प्रयास भारतीय मुसलमानों को भारत की वेशभूषा, जीवन शैली, भाषा और इतिहास से दूर करके अरबी सांचे में ढालना रहा। उन्होंने इस्लाम पूर्व भारतीय इतिहास को जाहिलिया घोषित कर दिया। अपने पूर्वजों और महापुरुषों को अस्वीकार करके विदेशी आक्रमणकारियों को अपने महापुरुष मान लिए। उन्हें राम और कृष्ण स्वीकार्य नहीं, बाबर और औरंगजेब शिरोधार्य हैं। पाकिस्तान द्वारा अपने प्रक्षेपास्त्रों के नाम गोरी और गजनवी रखने के पीछे भी यही मानसिकता झलकती है। आखिर पाकिस्तानी मुसलमान भी तो विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा मतान्तरितों की ही सन्तान हैं।

हिंदू विरोध

भारत जैसा संकट इस्लाम को शायद किसी दूसरे देश में नहीं झेलना पड़ा इसलिए भारतीय मुस्लिम मानस का विकास इन तेरह सौ वर्षों में हिन्दू विरोध के आधार पर ही हुआ है। इसीलिए उन्हें वन्देमातरम् से चिढ़ है। सर सैयद अहमद को लोकतंत्र स्वीकार नहीं था, क्योंकि उनकी दृष्टि में लोकतंत्र का अर्थ होगा बहुमत का राज अर्थात मुस्लिम अल्पमत पर हिन्दू बहुमत का शासन। इसलिए उन्होंने मुसलमानों को कांग्रेस में न जाने की सलाह दी। इसी मानसिकता में से 1906 में मुस्लिम लीग का जन्म हुआ, जिसने 1947 में देश का विभाजन कराया।

विभाजन के लिए मुस्लिम समाज जिम्मेदार

विभाजन के लिए जिन्ना नहीं, मुस्लिम समाज जिम्मेदार है। एक मुस्लिम चिन्तक अजीज अहमद ने 1964 में प्रकाशित अपनी पुस्तक स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर इन इंडियन एनवायरमेंट (भारतीय परिवेश में इस्लामी संस्कृति का अध्ययन) पुस्तक में भारत में मुस्लिम पृथकतावाद के विकास का विश्लेषण करते हुए पुस्तक का समापन इन शब्दों के साथ किया है कि जो लोग समझते हैं कि जिन्ना ने मुसलमानों का नेतृत्व किया या उन्होंने पाकिस्तान बनवाया, वे भूल करते हैं। जब तक जिन्ना ने मुसलमानों का नेता बनने की कोशिश की मुस्लिम समाज ने उन्हें स्वीकार नहीं किया, जिस दिन उन्होंने मुस्लिम समाज का अनुयायी बनना तय किया उसी दिन वे उसके नेता बन गए। जिन्ना की भूमिका अपने मुवक्किल (मुस्लिम समाज) की आकांक्षाओं को आधुनिक संवैधानिक शब्दावली में प्रस्तुत करने वाले वकील से अधिक कुछ नहीं थी।

तेरह सौ वर्ष से भारत की धरती पर जो वैचारिक संघर्ष चल रहा था उसी की परिणति 1947 के विभाजन में हुई। पाकिस्तानी टेलीविजन पर किसी ने ठीक ही कहा था कि जिस दिन आठवीं शताब्दी में पहले हिन्दू ने इस्लाम को कबूल किया उसी दिन भारत विभाजन के बीज पड़ गए थे।

जिन्ना को क्यों स्वीकार किया?

यहीं सवाल आता है कि मुस्लिम समाज ने मौलाना अबुल कलाम आजाद के बजाय जिन्ना को अपना वकील क्यों चुना? आजाद पूरी तरह मुसलमान थे, वेशभूषा में अरबी, फारसी व उर्दू भाषा में पांच बार नमाज पढ़ने में, कुरान की विद्वतापूर्ण व्याख्या में, जबकि मि. जिन्ना का इस्लाम से दूर तक वास्ता नहीं था, वे अंग्रेजी वेशभूषा में रहते थे, नमाज नहीं पढ़ते थे, उर्दू पढ़-लिख नहीं सकते थे। मुसलमानों के लिए वर्जित सुअर का मांस उन्हें पसन्द था।

हिंदू विरोध को ही मजहब माना

इस मानसिकता का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि भारतीय मुस्लिम मानसिकता ने हिन्दू विरोध को ही मजहब मान लिया है। इस हिन्दू विरोधी और पृथकतावादी मानसिकता के कारण ही उन्होंने गांधी और नेहरू जैसे नेताओं के होते कांग्रेस का साथ नहीं दिया क्योंकि वे उसे हिन्दू कांग्रेस मानते थे। नेहरू जी ने मार्च, 1937 में मुस्लिम जनसम्पर्क अभियान छेड़ा तो उससे घबरा कर कवि इकबाल ने जिन्ना को मुसलमानों का नेतृत्व संभालने का आदेश दिया। इसी कारण उन्होंने मौलाना आजाद को ठुकराया क्योंकि उनकी दृष्टि से वे हिन्दू कांग्रेस के एजेन्ट थे। आज भी वही मानसिकता है। भारतीय जनता पार्टी को स्वतंत्रता पूर्व की कांग्रेस के उत्तराधिकारी के रूप में देखते हैं। इसीलिए भाजपा के साथ जुड़ने वाले प्रत्येक मुस्लिम नेता को-वह चाहे स्व. सिकन्दर बख्त हों, चाहे आरिफ बेग या आरिफ मुहम्मद, चाहे मुख्तार अब्बास नकवी या शाहनवाज हुसैन इन सभी को वे हिन्दुओं का एजेन्ट मानते हैं।

1947 का विभाजन पहला नहीं

1947 का विभाजन पहला और अन्तिम विभाजन नहीं है। भारत की सीमाओं का संकुचन उसके काफी पहले शुरू हो चुका था। सातवीं से नवीं शताब्दी तक लगभग ढाई सौ साल तक अकेले संघर्ष करके हिन्दू अफगानिस्तान इस्लाम के पेट में समा गया। हिमालय की गोद में बसे नेपाल, भूटान आदि जनपद अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मुस्लिम विजय से बच गए। अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया पर अब वह राजनीतिक स्वतंत्रता संस्कृति पर हावी हो गई है। श्रीलंका पर पहले पुर्तगाल, फिर हॉलैंड और अन्त में अंग्रेजों ने राज्य किया और उसे भारत से पूरी तरह अलग कर दिया। यद्यपि श्रीलंका की पूरी संस्कृति भारत से गए सिंहली और तमिल समाजों पर आधृत

हिंदू विरोधी मुस्लिम दंगाई

है। दक्षिण पूर्वी एशिया के हिन्दू राज्य क्रमश: इस्लाम की गोद में चले गए किन्तु यह आश्चर्य ही है कि भारत से कोई सहारा न मिलने पर भी उन्होंने इस्लामी संस्कृति के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया। इस्लामी उपासना पद्धति को अपनाने के बाद भी उन्होंने अपनी संस्कृति को जीवित रखा है और पूरे विश्व के सामने इस्लाम के साथ सह अस्तित्व का एक नमूना पेश किया।

जिस दिन पहले हिन्दू ने इस्लाम स्वीकार किया

किन्तु मुख्य प्रश्न तो भारत के सामने है। तेरह सौ वर्ष से भारत की धरती पर जो वैचारिक संघर्ष चल रहा था उसी की परिणति 1947 के विभाजन में हुई। पाकिस्तानी टेलीविजन पर किसी ने ठीक ही कहा था कि जिस दिन आठवीं शताब्दी में पहले हिन्दू ने इस्लाम को कबूल किया उसी दिन भारत विभाजन के बीज पड़ गए थे। इसे तो स्वीकार करना ही होगा कि भारत का विभाजन हिन्दू-मुस्लिम आधार पर हुआ। पाकिस्तान ने अपने को इस्लामी देश घोषित किया। वहां से सभी हिन्दू-सिखों को बाहर खदेड़ दिया। अब वहां हिन्दू-सिख जनसंख्या लगभग शून्य है।

भारत की सहायता से बने देश की भी वही परिणिति

भारतीय सेनाओं की सहायता से बांग्लादेश स्वतंत्र राज्य बना। भारत के प्रति कृतज्ञतावश चार साल तक मुजीबुर्रहमान के जीवन काल में बांग्लादेश ने स्वयं को पंथनिरपेक्ष राज्य कहा किन्तु एक दिन मुजीबुर्रहमान का कत्ल करके स्वयं को इस्लामी राज्य घोषित कर दिया। विभाजन

भारत की अखंडता का आधार भूगोल से ज्यादा संस्कृति और इतिहास में है। खंडित भारत में एक सशक्त, ऐक्यबद्ध, तेजोमयी राष्ट्रजीवन खड़ा करके ही अखंड भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ना संभव होगा।

के समय वहां रह गए हिन्दुओं की संख्या 34 प्रतिशत से घटकर अब 10 प्रतिशत से कम रह गई है और बांग्लादेश भारत के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन गया है। करोड़ों बांग्लादेश घुसपैठिए भारत की सुरक्षा के लिए भारी खतरा बन गए हैं।

ब्रिटिश संसदीय प्रणाली के दुष्परिणाम

विभाजन के पश्चात् खंडित भारत की अपनी स्थिति क्या है? ब्रिटिश संसदीय प्रणाली के अन्धानुकरण पर जिस राजनीतिक प्रणाली को हमने अपनाया है उसने हिन्दू समाज को जाति, क्षेत्र और दल के आधार पर जड़मूल तक विभाजित कर दिया है। पूरा समाज भ्रष्टाचार की दलदल में आकंठ फंस गया है।

हिन्दू समाज की बात करना साम्प्रदायिकता है और मुस्लिम कट्टरवाद व पृथकतावाद की हिमायत करना सेकुलरिज्म। अनेक छोटे-छोटे राजनीतिक दलों में बिखरा हिन्दू नेतृत्व सत्ता के कुछ टुकड़े पाने के लाभ में मुस्लिम वोटों को रिझाने में लगा है। कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवी वोट के लिए पूजे जा रहे हैं। शंकराचार्यों को जेल में ठूंसा जा रहा है, अपमानित किया जा रहा है, मंदिर प्रवेश से भी रोका जा रहा है। ईसाई मिशनरियों को पद्मभूषण व भारत रत्न दिया जा रहा है, राष्ट्रीय पराजय और अपमान के प्रतीक बाबरी ढांचे के विध्वंस पर 13 साल से पूरा देश आंसू बहा रहा है। शिखर के नेताओं को अपराध के कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। कोई मुस्लिम नेतृत्व को नहीं समझा रहा है कि भारत के राष्ट्र पुरुष राम के मंदिर के निर्माण में वे सहयोग करें। मुस्लिम-ईसाई जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। देश के अनेक जिले अहिन्दुबहुल हो चुके हैं और वहां पृथकतावादी आन्दोलन चल रहे हैं।

क्या बदलेगी मुस्लिम मानसिकता?

ऐसी स्थिति में अखंड भारत का रूप क्या होगा? उसका मार्ग क्या होगा? क्या इसका वस्तुपरक आकलन आवश्यक नहीं है? यदि मुस्लिम मानसिकता नहीं बदलती है, यदि इस्लामी विचारधारा के प्रति पुनर्विचार की प्रक्रिया मुस्लिम समाज के भीतर पैदा नहीं होती है, यदि हिन्दू समाज इसी तरह विभाजित, आत्मग्लानि और भ्रष्टाचार में डूबा रहता है, यदि उसका नेतृत्व इसी तरह सत्तालोभी और अवसरवादी बना रहता है तो भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के किसी महासंघ का चरित्र भी क्या रहेगा? शायद उसी दृश्य को सामने

भारतीय सेनाओं की सहायता से बांग्लादेश स्वतंत्र राज्य बना। भारत के प्रति कृतज्ञतावश चार साल तक मुजीबुर्रहमान के जीवन काल में बांग्लादेश ने स्वयं को पंथनिरपेक्ष राज्य कहा किन्तु एक दिन मुजीबुर्रहमान का कत्ल करके स्वयं को इस्लामी राज्य घोषित कर दिया।

रखकर आज कल मुस्लिम बुद्धिजीवी अखंड भारत के प्रति ज्यादा उत्साह दिखा रहे हैं।

सशक्त, तेजोमयी राष्ट्रजीवन से निकलेगी राह

भारत की अखंडता का आधार भूगोल से ज्यादा संस्कृति और इतिहास में है। खंडित भारत में एक सशक्त, ऐक्यबद्ध, तेजोमयी राष्ट्रजीवन खड़ा करके ही अखंड भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ना संभव होगा। उसके लिए किसी एक विशिष्ट कार्य पद्धति का बन्दी न बनकर संगठन और अभिनिवेश से ऊपर उठकर विभिन्न नाम रूपों में कार्यरत भारत की सांस्कृतिक चेतना में ऐक्य लाना होगा, विविधता में एकता का प्रत्यक्ष दृश्य खड़ा करना होगा।

(लेखक 'पांचजन्य' के पूर्व संपादक रहे हैं)

With Best Wishes from
Dinesh Porawal
(Director)
SSE
Shree Sai Engineers
Shree Sai Technology (B)Pvt. Ltd.
Shree Sai Infraengineers Pvt. Ltd.
123, Hari Path, Devi Nagar,
Opp. Metro Pillar No. 79,
New Sanganer Road,Jaipur -19
Mob : 98290-54472, 8949899516
E-mail: saico_tech@rediffmail.com
dcporwal28@gmail.com

जो पाया उसमें खो न जाएं

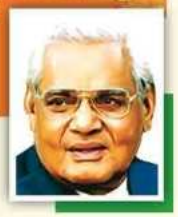

● **अटल बिहारी वाजपेयी**

पन्द्रह अगस्त का दिन कहता–आजादी अभी अधूरी है।
सपने सच होने बाकी हैं, रावी की शपथ न पूरी है।।

जिनकी लाशों पर पग धर कर, आजादी भारत में आई।
वे अब तक हैं खानाबदोश, गम की काली बदली छाई।।

कलकत्ते के फुटपाथों पर, जो आंधी–पानी सहते हैं।
उनसे पूछो, पन्द्रह अगस्त के बारे में क्या कहते हैं।।

हिन्दू के नाते उनका दु:ख सुनते, यदि तुम्हें लाज आती।
तो सीमा के उस पार चलो, सभ्यता जहां कुचली जाती।।

इन्सान जहां बेचा जाता, ईमान खरीदा जाता है।
इस्लाम सिसकियां भरता है, डालर मन में मुस्काता है।।

भूखों को गोली, नंगों को हथियार पिन्हाए जाते हैं।
सूखे कण्ठों से, जेहादी नारे लगवाए जाते हैं।।

लाहौर, कराची, ढाका पर, मातम की है काली छाया।
पख्तूनों पर, गिलगित पर है, गमगीन गुलामी का साया।।

बस इसीलिए तो कहता हूं, आजादी अभी अधूरी है।
कैसे उल्लास मनाऊं मैं? थोड़े दिन की मजबूरी है।।

दिन दूर नहीं खण्डित भारत को पुन: अखण्ड बनाएंगे।
गिलगित से गारो पर्वत तक, आजादी पर्व मनाएंगे।।

उस स्वर्ण दिवस के लिए, आज से कमर कसें, बलिदान करें।
जो पाया उसमें खो न जाएं, जो खोया उसका ध्यान करें।।

('मेरी इक्यावन कविताएं' पुस्तक से साभार)

क्या भारत का विभाजन अटल, सत्य तथा स्थायी है?

1947 में देश का एक बार फिर विभाजन हुआ। पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर मिला कटा-फटा भारत। अंग्रेजों ने इसे सत्ता- हस्तान्तरण व एक उपहार बताया। भारत विभाजन विश्व की एक बड़ी दुखांत त्रासदी थी। यह आस्थाओं, आकांक्षाओं का सबसे बड़ा विश्वासघात था। लार्ड माउन्टबेटन, पं.जवाहरलाल नेहरु, मोहम्मद अली जिन्ना आदि सात व्यक्तियों ने तत्कालीन 40 करोड़ लोगों के भाग्य का निर्णय कर दिया । न कोई जेल गया, न ही विरोध में कोई गोली चली।
(डॉ.राममनोहर लोहिया द्वारा लिखित-विभाजन के गुनाहगार से)

क्या विभाजन अटल सत्य एवं स्थायी है?- विश्व के ऐतिहासिक अनुभव हैं कि किसी भी देश का विभाजन स्थायी अथवा अटल नहीं होता। एक ओर जहां कुछ देश विभाजित होकर पुनः एक हो गये, तो दूसरी ओर कई देश एक होकर पुनः अलग हो गये या होने की स्थिति में आ रहे हैं। कुछ उदाहरण -

- 1905 का बंग-भंग, पुनः 1911 में एक हो गया ।
- 2 हजार वर्ष पूर्व नष्ट इजराइल, मई 1948 में फिर से स्वतंत्र राष्ट्र बना ।
- 'होली रोमन एम्पायर' शीघ्र नष्ट हो गया। न पवित्र रहा, न रोमन और न एम्पायर ।
- विशाल ब्रिटिश साम्राज्य भी स्थायी न रहा ।
- जर्मनी का विभाजन 1945 में, परन्तु 1989 में पूर्वी जर्मनी व पश्चिम जर्मनी को विभाजित करने वाली बर्लिन की दीवार गिरा दी गई। जर्मनी पुनः एक हो गया ।
- दोनों वियतनाम एक हो गए ।
- सोवियत संघ से 15 मध्य एशियाई देश अलग होकर पुनः स्वतंत्र राष्ट्र बन गए।
- शीघ्र ही दोनों कोरिया एक होंगे ।
- शीघ्र ही चीन से तिब्बत पुनः स्वतंत्र होगा ।

प्रसिद्ध विद्वानों के निष्कर्षों तथा कथनों से भी आकलन हो सकता है -

जनरल करिअप्पा : भारत फिर से संगठित (एक) होगा ।

महर्षि अरविन्द : हम स्थायी विभाजन के निर्णय को स्वीकार नहीं करते ।

जयप्रकाश नारायण : मूल राष्ट्रीयता एक होने के कारण उन्हें फिर एक साथ आने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए।

हो.वे. शेषाद्री जी : तीनों टुकड़े फिर एक हो सकते हैं ।

महात्मा गाँधी : दोनों की सांस्कृतिक एकता तथा दोनों में लचीलापन ही दोनों को एक बनाने का प्रयत्न करेगा ।

प्रसिद्ध लेखक-वान वाल्बोनवर्ग : भौगोलिक दृष्टि से भारत और पाकिस्तान का विभाजन इतना तर्कहीन है कि आश्चर्य होता है कि यह कितने समय तक चल सकेगा?

प्रसिद्ध पाकिस्तानी लेखक तारक अली ने अपनी पुस्तक ''Can Pakistan Survive : Little Hope" में माना है कि पाकिस्तान का अस्तित्व नहीं रहेगा। पाकिस्तान का अस्तित्व खतरे में होने के कारण-

- पाकिस्तान में अनेक आन्तरिक विद्रोह : 1947-2001 तक पाकिस्तान में हुए 21 शासकों, डिक्टेटरों में से 02 का वध, 06 द्वारा त्यागपत्र, 06 निलम्बित, 07 का तख्ता पलट हुआ ।
- सिन्ध, बलूचिस्तान व उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांतों में समय-समय पर स्वतंत्रता की माँग ।
- आर्थिक शून्यता - चीन पर निर्भरता ।
- अफगानिस्तान में तालिबानी संघर्ष ।
- बांग्लादेश में आन्तरिक संघर्ष ।

अन्य कारण - देश का सैनिकीकरण, मजहबी जुनून, सांस्कृतिक शून्यता, आतंकवादी शासन का तानाशाही स्वरूप।

- अप्राकृतिक भौगोलिक सीमाएं।

विदेशियों के आकलन -

- CIA (अमेरिका) : पाकिस्तान गृहयुद्ध का शिकार होगा ।
- फरेंगो (फ्रांस) : भारत का पुनर्जन्म हो रहा है ।
- UK : अब भारत का हाथी भी उड़ने लगा है ।

हमारा कर्तव्य -

- **अखण्ड भारत का स्वप्न साकार करें।**
- **राष्ट्रीयता का प्रखर भाव जगाएं ।**
- **'स्व' का बोध पैदा करें।**
- **सामूहिकता के भाव तथा संगठन को दृढ़ करें ।**

(संकलित)

श्री अरविंद जन्म-सार्धशती (15 अगस्त 1872-2022)

भारत के स्वाधीनता दिवस पर श्री अरविंद के पांच स्वप्न

• सूर्य प्रताप सिंह राजावत

इस 15 अगस्त को श्री अरविंद जन्म के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देश उनके जन्म की सार्धशती मना रहा है। अपने जन्म दिन और देश की स्वाधीनता के अवसर पर 15 अगस्त, 1947 को देश के नाम दिए गए संदेश में श्री अरविंद ने अपने पांच स्वप्नों का उल्लेख किया था। प्रस्तुत है पाठकों के लिए महर्षि अरविंद का अमर संदेश उन्हीं के शब्दों में -

15 अगस्त, 1947 स्वाधीन भारत का जन्मदिन है। यह दिन भारत के लिए पुराने युग की समाप्ति और नए युग का प्रारंभ सूचित करता है। परंतु हम एक स्वाधीन राष्ट्र के रूप में अपने जीवन और कार्यों के द्वारा इसे ऐसा महत्वपूर्ण दिन भी बना सकते हैं जो संपूर्ण जगत के लिए, सारी मानव जाति के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक भविष्य के लिए नवयुग लाने वाला सिद्ध हो।

15 अगस्त मेरा अपना जन्मदिन है और स्वभावत: ही यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है कि इस दिन ने इतना विशाल अर्थ तथा महत्व प्राप्त कर लिया है। परंतु इसके भारतीय स्वाधीनता-दिवस भी हो जाने को मैं कोई आकस्मिक संयोग नहीं मानता, बल्कि यह मानता हूं कि जिस कर्म को लेकर मैंने अपना जीवन आरंभ किया था, उसको मेरा पथ-प्रदर्शन करने वाली भगवती शक्ति ने इस तरह मंजूर कर लिया है और उस पर अपनी मुहर भी लगा दी है और वह कार्य पूर्ण रूप से सफल होना आरंभ हो गया है।

इन स्वप्नों में **पहला था** क्रांतिकारी आंदोलन, जो स्वाधीन और एकीभूत भारत को जन्म दे। भारत आज स्वाधीन हो गया है पर उसने एकता नहीं प्राप्त की है। एक समय प्राय: ऐसा दिखता था मानो अपने स्वाधीन होने की प्रक्रिया में ही वह फिर से उस पृथक-पृथक राज्यों की अव्यवस्थापूर्ण स्थिति में जा गिरेगा जो विजय से पहले विद्यमान थी। परंतु सौभाग्य से अब ऐसी प्रबल संभावना हो गयी है कि यह संकट टल जाएगा और अभी पूर्ण न सही पर एक विशाल तथा शक्तिशाली एकत्व अवश्य स्थापित हो जाएगा। विधान परिषद की दूरदर्शितापूर्ण प्रबल नीति ने इस बात को संभव बना दिया है कि दलित वर्गों की समस्या बिना फूट-फटाव के हल हो जाएगी। परंतु हिन्दुओं और मुसलमानों का पुराना सांप्रदायिक भेद देश के स्थायी राजनीतिक विभाजन के रूप में सुदृढ़ हो गया दिखता है। यह आशा करनी चाहिए कि इस तय किए गए विभाजन को पत्थर की लकीर नहीं मान लिया जाएगा और इसे एक कामचलाऊ अस्थायी उपाय से बढ़कर और कुछ न माना जाएगा। क्योंकि यदि यह कायम रहे तो भारत भयानक रूप में दुर्बल और अपंग तक हो सकता है गृह-कलह का होना सदा ही संभव बना रह सकता

भारत फिर से अखंड होगा - श्री अरविंद

• जिस किसी तरह क्यों न हो, विभाजन दूर होना ही चाहिए और दूर होकर ही रहेगा। भारत फिर से एक होगा, मैं उसे स्पष्ट देख रहा हूँ।

• देर चाहे कितनी भी हो पाकिस्तान का विघटन और भारत में विलय निश्चित है।

है, नए आक्रमण और विदेशी राज्य का हो जाना तक संभव हो सकता है, भारत की आंतरिक उन्नति और समृद्धि रुक सकती है, राष्ट्रों के बीच उसकी स्थिति दुर्बल हो सकती है, उसका भविष्य कुंठित, यहां तक कि व्यर्थ भी हो सकता है। यह नहीं होना चाहिए देश का विभाजन अवश्य दूर होना चाहिए।

दूसरा स्वप्न था एशिया की जातियों का पुनरुत्थान तथा स्वातंत्र्य और मानव सभ्यता की उन्नति के कार्य में एशिया का जो महान स्थान पहले था उसी स्थान पर उसका लौट जाना। एशिया जग गया है। उसके बड़े-बड़े भाग स्वतंत्र हो गए हैं या इस समय बंधन-मुक्त हो रहे हैं। इसके अन्य भाग जो अभी परतंत्र या अंशत: परतंत्र हैं वे भी, चाहे कैसे भी घोर संघर्ष में से गुजरते हुए स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहे हैं। केवल थोड़ा ही करना बाकी है और वह आज न सही, कल पूरा हो जाएगा।

तीसरा स्वप्न था एक विश्व-संघ जो समस्त मानवजाति के लिए एक सुन्दरतर, उज्ज्वलतर और वृहत्तर जीवन का बाहरी आधार निर्मित करे। मानव संसार का वह एकीकरण प्रगति के पथ पर है। एक अधूरा आरंभ संगठित किया गया है पर वह बड़ी भारी कठिनाइयों के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। किन्तु उसमें एक वेग है और वह अनिवार्य रूप से बढ़ता चला जाएगा और विजयी होगा। इस कार्य में भी भारतवर्ष ने प्रमुख भाग लेना प्रारंभ कर दिया है और यदि वह उस अधिक विशाल राजनीतिज्ञता को विकसित कर सके जो वर्तमान घटनाओं और तात्कालिक संभावनाओं से ही सीमित नहीं होती, बल्कि भविष्य को देख लेती और उसे निकट लाती है तो भारत की

आशा करनी चाहिए कि इस तय किए गए विभाजन को पत्थर की लकीर नहीं मान लिया जाएगा और इसे एक काम चलाऊ अस्थायी उपाय से बढ़कर और कुछ न माना जाएगा।... (विभाजन के परिणाम स्वरूप) गृह-कलह का होना सदा ही संभव बना रह सकता है, नए आक्रमण और विदेशी राज्य का हो जाना तक संभव हो सकता है... यह नहीं होना चाहिए देश का विभाजन अवश्य दूर होना चाहिए।

उपस्थिति मंद एवं भीरुतापूर्ण विकास और द्रुत एवं साहसपूर्ण विकास में जो महान भेद है उसे प्रदर्शित कर सकती है। जो कार्य किया जा रहा है, उसमें महान विपत्ति आ सकती है और वह उसमें बाधा डाल सकती है या उसे नष्ट कर सकती है, किन्तु तो भी अंतिम परिणाम निश्चित है, क्योंकि एकीकरण प्रकृति की आवश्यकता है, अनिवार्य गति है। इसकी आवश्यकता राष्ट्रों के लिए भी स्पष्ट है क्योंकि इसके बिना छोटे-छोटे राष्ट्रों की स्वाधीनता किसी भी क्षण खतरे में पड़ सकती है और बड़े तथा शक्तिशाली राष्ट्रों का भी जीवन असुरक्षित हो सकता है। इसलिए इस एकीकरण में ही सबका हित है और केवल मानवीय नि:शक्तता तथा मूर्खतापूर्ण स्वार्थपरता ही इसे रोक सकती है; परंतु ये भी प्रकृति की आवश्यकता और भगवान की इच्छा के विरुद्ध हमेशा नहीं ठहर सकती।

चौथा स्वप्न, संसार को भारत का आध्यात्मिक दान, पहले से ही प्रारंभ हो चुका है। भारत की आध्यात्मिकता यूरोप और अमरीका में नित्य बढ़ती हुई मात्रा में प्रवेश कर रही है। यह आंदोलन बढ़ेगा। वर्तमान काल की विपदाओं के बीच अधिकाधिक लोगों की आंखें आशा के साथ भारत की ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओं का अपितु उसकी आंतरात्मिक और आध्यात्मिक साधना का भी उत्तरोतर आश्रय लिया जा रहा है।

अंतिम स्वप्न था क्रम विकास में अगला कदम जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जाएगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारंभ कर देगा जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है, जब से कि उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना-विचारना शुरू किया था। यह अभी तक एक व्यक्तिगत आशा और विचार और आदर्श मात्र है जिसने भारत और पश्चिम में, दोनों जगह दूरदर्शी विचारकों को वश में करना शुरू कर दिया है। इस मार्ग की कठिनाइयां जीती जाने के लिए ही बनी थीं और यदि इस विकास को घटित होना है तो, चूंकि यह आत्मा और अंतर चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा, इसका प्रारंभ भारतवर्ष ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केन्द्रीय आंदोलन भारत ही करेगा।

ये हैं वे भाव और भावनाएं जिनको मैं भारतीय स्वाधीनता की इस तिथि के साथ सम्बद्ध करता हूं। क्या ये आशाएं ठीक सिद्ध होंगी या कहां तक सिद्ध होंगी, यह बात नए और स्वाधीन भारत पर निर्भर करती है।

(लेखक राज.उच्च न्यायालय में अधिवक्ता तथा श्री अरविन्द सोसाइटी, राजस्थान के प्रदेश सचिव हैं)

"जब यह कहा जाता है कि भारत महान बनेगा तब इसका अर्थ होता है कि सनातन धर्म (हिन्दुत्व) महान बनेगा। जब भारत अपना विस्तार करेगा तब इंगित होता है कि सनातन धर्म अपना विस्तार कर सारे विश्व में फैलेगा।"

(30 मई,1909 का उत्तरपाड़ा भाषण' से)

"मैं मानता हूँ कि सनातन धर्म ही राष्ट्रवाद है। इस हिंदू राष्ट्र का प्रादुर्भाव सनातन धर्म के साथ हुआ था, सनातन धर्म ही इसे गति देता है... अगर सनातन धर्म का पतन होता है तो राष्ट्र का पतन भी निश्चित है।"

संस्कृत कवियों ने दी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा

● डॉ. नाथूलाल सुमन

भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक परम्परा से प्रेरणा लेकर ही क्रांतिकारियों तथा अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष किया। अथर्ववेद के भूमि सूक्त में कहा गया है कि यह भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र। श्रीमद्भगवद्गीता विवेकानन्द, तिलक, गांधी, सुभाष, अरविन्द, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे कितने ही देशभक्तों की प्रेरणा बनी। उस काल में संस्कृत कवियों ने भी अपनी कविताओं से घोषणा की - दासता अभिशाप है, पराधीनता से मृत्यु श्रेष्ठ है और युवाओं को ललकारा- कौन कराएगा भारत भूमि को मुक्त?

धर्म और अध्यात्म हम हिन्दुओं के डीएनए में सम्मिलित है। हमारा प्रत्येक कार्य धर्म को दृष्टि में रखकर सम्पन्न होता है।

अपनी धार्मिक और आध्यात्मिक परम्परा से प्रेरणा लेकर क्रांतिकारियों ने भारत को साक्षात् देवी का रूप मानकर इसकी पूजा की तथा स्वतंत्रता यज्ञ में अपना सर्वस्व होम कर दिया। धर्म और अध्यात्म की चर्चा संस्कृत के बिना अधूरी रहती है।

वंदेमातरम् गीत का अथर्ववेद के भूमि सूक्त से संबंध

अथर्ववेद के ऋषि ने 'भूमि सूक्त' में ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ....''

(अर्थात् यह भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ।) और ''पृथिव्या अकरं नमः।।'' (मैं पृथ्वी को नमस्कार करता हूँ) इत्यादि मंत्रों द्वारा मातृभूमि की वन्दना की स्पष्ट उद्घोषणा की है। स्वातन्त्र्यांदोलन काल में क्रांति की आधारशिला बना 'वन्देमातरम्' गीत इसी 'भूमि सूक्त' का आधुनिक संस्करण प्रतीत होता है।

गीता बनी प्रेरणा स्रोत

श्रीमद्भगवद्गीता ने स्वतंत्रता संग्राम की अवधि में स्वतंत्रता सेनानियों को निरन्तर प्रेरणा दी। स्वामी विवेकानन्द के आत्म-विश्वास का स्रोत गीता ही रही। बालगंगाधर तिलक ने गीता को हृदयंगम कर जेल में रहते हुए इस पर 'गीता रहस्य' नामक टीका लिखी और सदैव गीता से प्रेरणा प्राप्त करते रहे। महात्मा गांधी ने तिलक से उत्तराधिकार के रूप में गीता को प्राप्त किया। वे भी सदैव गीता से प्रेरणा प्राप्त करते रहे। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसे कितने ही स्वतंत्रता सेनानी गीता के 'निष्काम कर्म योग', 'आत्मा की अमरता' और 'स्थित प्रज्ञता' जैसे सिद्धान्तों से प्रेरणा लेकर क्रांति के मार्ग पर अग्रसर हुए।

मैकाले ने संस्कृत को ब्रिटिश राज्य विस्तार में बाधक माना। अतः उसने इंग्लैण्ड की संसद में भारत के लिए नई भाषा नीति पारित करवा दी। इसका देश में घोर विरोध हुआ। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, अप्पा शास्त्री राशिवडेकर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महर्षि अरविन्द आदि ने समय-समय पर संस्कृत का पक्ष लेकर घोर संघर्ष किया।

उन्नीसवीं शताब्दी की संस्कृत कविता में यही संघर्ष व्यवस्था के प्रति विद्रोह के रूप में अभिव्यक्त हुआ। कांग्रेस की स्थापना के बाद यह संघर्ष स्वाधीनता संग्राम आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया और प्रायः तत्कालीन सभी प्रमुख संस्कृत कवि इसी एक विषय पर लिखते रहे, दिग्दर्शन मात्र यहां प्रस्तुत है।

दासता व्यक्ति के लिए अभिशाप

(रामनाथ तर्करत्न)

सन् 1840 में बंगाल में जन्मे 'रामनाथ तर्करत्न' ने लिखा है कि- पराधीनता व्यक्ति की वीरता को नष्ट कर देती है, दासता व्यक्ति के लिये अभिशाप है-

हिनस्ति शौर्यं सुरुचिं रुणद्धि,
भिनत्ति चित्तं विवृणोति वित्तम्।
पिनष्टि नीतिञ्च युनक्ति दास्यं,
हा पारतन्त्र्यं निरयं व्यनक्ति।।

(अर्थात् परतंत्रता शौर्य को नष्ट कर देती है, रुचि को नष्ट कर देती है, चित्त को व्याकुल कर देती है, धन का नाश करती है, नीति को भी समाप्त कर देती है और व्यक्ति को दास बना देती है। इस प्रकार साक्षात् नरक को ही प्रकट कर देती है)

पराधीनता से अच्छा है मृत्यु हो जाए–

असुव्यपायेष्वपि नो जहीमः,
स्वतन्त्रतामन्त्रमतन्द्रिणोऽध्य।
उपागतायां परतन्त्रतायां,
यशोधनानां शरणं हि मृत्युः।।

(अर्थात् सजग रहते हुए हम स्वातन्त्र्य मंत्र को नहीं छोड़ेंगे चाहे हमारे प्राण ही चले जायें, क्योंकि परतंत्रता आ जाने पर यशस्वी लोगों के लिए मृत्यु ही शरण है।)

पं.अम्बिकादत्त ने लिखा–'कार्य सिद्धि अथवा मृत्यु'

जयपुर में जन्मे 'पंडित अम्बिकादत्त व्यास' ने सन 1870 में 'शिवराजविजयम्'

नामक उपन्यास की रचना की। संस्कृत भाषा का यह प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है तथा छत्रपति शिवाजी महाराज की जीवनी पर आधारित है। यह उपन्यास सन 1901 में काशी से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के कथानक में शिवाजी (शिवराज) का स्वतंत्रता के लिये संघर्ष, अफजल खान का वध, शिवाजी के मुख से देश की मुक्ति की उद्घोषणा–

कार्यं वा साधयेयं, देहं वा पातयेयम् (कार्य सिद्ध करेंगे अन्यथा अपने शरीर को ही त्याग देंगे– मृत्यु का वरण कर लेंगे) इत्यादि प्रेरक प्रसंगों का प्रभावशाली भाषा में चित्रण किया गया है।

'कार्य सिद्धि अथवा मृत्यु' इसी तर्ज पर महात्मा गांधी के आंदोलन काल में 'करो या मरो' का नारा प्रसिद्ध हुआ। इस उपन्यास की कथा में राजा का प्रजा के प्रति प्रेम, प्रजा की राजभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति आदि भावों की प्रधानता है।

सन 1857 के स्वातंत्र्य समर (सशस्त्र क्रांति) का वांछित परिणाम प्राप्त न होने के फलस्वरूप जब जनता में भय एवं निराशा व्याप्त होने लगी थी तब यह उपन्यास प्रेरणादायी मार्गदर्शक सिद्ध हुआ। कवि ने प्राचीन गौरवपूर्ण प्रसंगों का स्मरण करवाकर जनता में आत्मविश्वास उत्पन्न किया–

अस्मिन्नेव भारतवर्षे यायजूकैः राजसूयादियज्ञाः व्यायाजिषत....।

(अर्थात इसी भारतवर्ष में यजमानों के द्वारा राजसूय आदि यज्ञ किए जाते थे।)

लेखक ने यवनों के अत्याचारों एवं उनकी दमनकारी प्रवृत्तियों का यथार्थ चित्रण किया है–

अद्य हि वेदा विच्छिद्यन्ते, वीथिषु विक्षिप्यन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते....।

(आज वेदों को फाड़ा जा रहा है, उन्हें गलियों में फेंका जा रहा है, पुराणों को पीसकर पानी में गिराया जा रहा है।)

अप्पाशास्त्री की घोषणा– परतंत्रता मृत्यु समान

'अप्पा शास्त्री राशिवडेकर' का जन्म सन 1873 में कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। देश की स्वतंत्रता हेतु इन्होंने अपनी रचना 'पञ्जरबद्धः शुकः' में प्रतीकात्मक शैली में देशवासियों को प्रेरणा दी। ये लिखते हैं कि

परतंत्रता मृत्यु के समान है। इनका राष्ट्र चेतना परक काव्य है–'तिलकस्य कारागृहनिवासः।

हरिदास सिद्धान्त वागीश

'हरिदास सिद्धान्त वागीश' का जन्म फरीदपुर (बंगाल) में 1876 में हुआ। वागीश जी 'शिवाप्रतापम्' नामक नाटक में यवनों को भारतवर्ष से चले जाने के लिए समझाते हैं।

बंगाप्रसाद उपाध्याय– कौन कराएगा भारत भूमि को मुक्त?

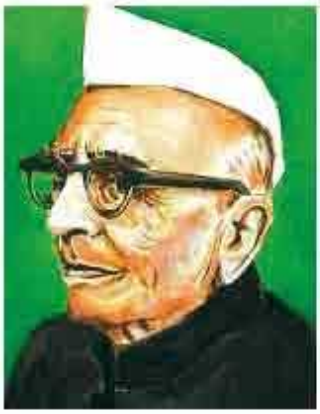

एटा (उ.प्र.) में सन 1881 में जन्मे 'गंगाप्रसाद उपाध्याय' ने अपने काव्य 'आर्योदय' में लिखा है कि हमें आपसी भेद–भाव एवं लड़ाई–झगड़े भूलकर स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करना होगा.... 'को वा भव्यां भरतधरणीं मोचयेच्छत्रुपाशात्।' (भव्य भरतभूमि को शत्रु के पाशों से कौन मुक्त करवाएगा।)

स्वतंत्रता से प्रिय कुछ भी नहीं है– पंडिता क्षमाराव

'पंडिता क्षमाराव' का जन्म 1890 में पुणे (महाराष्ट्र) में हुआ, इन्होंने राष्ट्रभक्ति परक तीन रचनाएं लिखी– सत्याग्रहगीता, उत्तरसत्याग्रहगीता और स्वराज्यविजयः। इन्होंने लिखा है कि मैं अपने राष्ट्र से प्रेम करती हूँ और इसका यशोगान करती हूँ। देशभक्त इसी प्रकार प्रयास करते रहे तो हमारा देश शीघ्र ही स्वतंत्र हो जाएगा,

स्वतत्रता से प्रिय कुछ भी नहीं है– ''स्वातंन्त्र्यादपि भूतानां प्रियमन्यन्न विद्यते।''

राष्ट्र की उन्नति के लिए करना होगा संघर्ष– हरि प्रसाद द्विवेदी

'हरि प्रसाद द्विवेदी' का जन्म 1892 में अलीगढ़ (उ.प्र.) में हुआ। इन्होंने लिखा है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें आपसी भेदभावों से ऊपर उठकर संघर्ष करना होगा –**''भिन्नैरपि जनैर्मिथः सङ्गन्तव्यं सुमतिसुखसिद्ध्यै....।''**

(अर्थात् भिन्न–भिन्न जनसमुदायों को सुमति और सुख सिद्धि के लिए आपस में मिल जाना चाहिए)

मथुरा प्रसाद दीक्षित

'मथुरा प्रसाद दीक्षित' का जन्म 1878 में हरदोई (उ.प्र.) में हुआ। इन्होंने स्वयं असहयोग आन्दोलन में तो भाग लिया ही, साथ ही राष्ट्र गौरव और देश भक्ति की भावना को दर्शाने वाले नाटक भी लिखे यथा– वीरप्रतापनाटकम्, भारत विजयनाटकम्, गांधीविजयनाटकम्।

भवानी भारती, भारत वैभवम् आदि

इसी क्रम में महर्षि अरविन्द का 'भवानी भारती', भट्ट मथुरा नाथ शास्त्री (जयपुर) का 'भारतवैभवम्', चारुदेव शास्त्री का 'गान्धिचरितम् (1930) और रामनाथ प्रणयी के संस्कृत गीतों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी काल में 'संस्कृत चन्द्रिका', 'सुनृतवादिनी', 'ज्योतिष्मती' आदि संस्कृत पत्रिकाओं में भी विचारोत्तेजक लेख लिखे जाते थे। बाद में आंग्ल शासकों ने इन पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लगा दिया।

इस प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों के साथ–साथ संस्कृत कवियों ने भी अपनी लेखनी के माध्यम से देश भक्तों को प्रेरणा देकर राष्ट्र को स्वतंत्र कराने हेतु अपना योगदान किया।

(लेखक संस्कृत भारती न्यास, जयपुर प्रांत के अध्यक्ष हैं)

आप सभी देशवासियों को
स्वाधीनता दिवस
की हार्दिक शुभकानाएँ

श्रीमती रेखा राठौड़
मो. 9602726000
जिला मंत्री भाजपा एवं पार्षद नगर निगम हेरिटेज
वार्ड नं. 47

स्वाधीनता दिवस पर पाथेय कण द्वारा
विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं
राजपुरोहित जोरावर सिंह, बलवंत सिंह,
करणराज, सुरेश सिंह,
रमेश सिंह पुत्र श्री गणेश जी रायगुर

K.G. Enterprisies
21, Kasichtty Street,
Chennai-600079

Baba Ramdev Novelty
8, Kasichtty Street,
Chennai- 600079

Khimani International
6- Sukuraman Street
Chennai- 600001

Balaji Trade Link
34, Kasi Chelty Street
Chennai- 600079

गांव- सियाणा, जिला- जालोर 343024 (राज.)
संपर्क : 9444522579, 9840459747

स्वाधीनता दिवस
पर पाथेय कण द्वारा स्वराज संघर्ष यात्रा—2
विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं

सरिता गौठी
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

राष्ट्र की जय चेतना का गान

वन्देमातरम्

• विजय सिंह माली

वन्देमातरम् भारतीय स्वातंत्र्य समर का बीज मंत्र है। इसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त, क्रांतिवीर, स्वातंत्र्य सैनिक फांसी के तख्त पर हँसते - हँसते चढ़ गए थे। एक दृष्टि से देखा जाए तो वन्देमातरम् का इतिहास परकीय ब्रिटिश अत्याचारी शासन के विरोध में चलाए गए स्वातंत्र्य संग्राम की ही कहानी है। इस देश में वन्देमातरम् का उद्घोष देशभक्ति की गर्जना समझी जाती रही है और रहेगी। भारत के राष्ट्र जीवन में श्रीमद्भगवद्गीता जैसा स्थान व महत्व वन्देमातरम् को प्राप्त हुआ है। वन्देमातरम् ने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया।

वन्देमातरम् गीत की रचना बंकिम चंद्र चटर्जी ने 1875 में की थी। कहा जाता है कि 1875 की दुर्गापूजा की छुट्टियों में बंकिम चंद्र अपने गांव कांठलपाड़ा जा रहे थे। बंकिम गाड़ी की खिड़की से सृष्टि का सौन्दर्य निहार रहे थे। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दृष्टि गोचर हो रही थी। सोनार बांग्ला के इस रमणीय दृश्य को देखकर कवि हृदय भारत माँ के दर्शन से अभिभूत हो उठा। भौतिक विश्व का विस्मरण हुआ और उनका व्यक्तित्व भारत माँ के इस अद्भुत रूप से एकाकार हो गया। इस भावविभोर अवस्था में सिंहवाहिनी, त्रिशूलधारिणी, सुवर्ण किरीटिनी माँ का रूप दृष्टिगोचर हुआ, उसका चेहरा सजीली मुस्कान से आपूरित था। इस दर्शन से उनका रोम-रोम पुलकित हो उठा और भावनाओं ने शब्द रूप लिया -

'वन्देमातरम्, सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्

आनंद मठ में वर्णित संन्यासी विद्रोह

दुर्गा रूप है भारत माँ

आनंद मठ उपन्यास के अभिन्न अंग के रूप में यह गीत संसार के सामने आया। आनंद मठ में वन्देमातरम् 'संतान सम्प्रदाय' का गीत हैं। मातृभू की संतान कटिबद्ध है माँ के लिए...। वन्देमातरम् गीत में मातृभूमि को माँ के रूप में प्रस्तुत किया हैं। **'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'** की भावना को नया परिवेश देते हुए भूमि को अपनी श्रद्धाभक्ति का प्रतीक माता के रूप में देखने का भाव जगा और विजिगीषु जगाते हुए उसे शक्तिशाली दुर्गा अर्थात अजेय शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। 1896 ई. में कांग्रेस का 12वां अधिवेशन मोहम्मद रहीमतुल्ला सयानी की अध्यक्षता में हुआ। रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने वन्देमातरम् गाया। इसके पश्चात लगातार कांग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में इसका गायन होता रहा।

1905 में जब बंग-भंग के विरोध में बंगाल की राजनीतिक आत्मा जाग उठी तो राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी माध्यम

की खोज करने लगा और यह जीवंत नारा बन गया। क्रांतिकारी गीत के रूप में वन्देमातरम् का सृजन युवा बंगाल ने किया। समूचा बंगाल 'वन्देमातरम् की क्रियात्मक अभिव्यक्ति बन गया। वन्देमातरम् स्वदेशी आंदोलन का प्राण बन गया।

"स्वदेशी संग्राम जाई आत्मदान।
वन्देमातरम् गाओ रे भाई।।"

स्वाधीनता का शंखनाद बना 'वन्देमातरम्'

वन्देमातरम् की ताकत देखकर ब्रिटिश सरकार की स्थिति खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली हो गई। अंग्रेजी सरकार ने वन्देमातरम् के उद्घोष पर ही रोक लगा दी लेकिन इसकी जनता में तीखी प्रतिक्रिया हुई। वन्देमातरम् बीसवीं सदी में भारत की राष्ट्रीय अभीप्सा का यथार्थ उद्घोष बन गया। वन्देमातरम् ने मन से अचेतन भारतीय जनता की चिति जागृत कर स्वाधीनता का शंखनाद प्रारंभ किया। भगिनि निवेदिता ने वन्देमातरम् को ध्वज में स्थान दिया। भीकाजी कामा ने 22 अगस्त,1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर में वन्देमातरम् अंकित ध्वज फहराया। वन्देमातरम् अंग्रेजी साम्राज्य की शक्ति को चुनौती देने वाला, निशस्त्र जनता की आवाज को प्रकट करने वाला सामर्थ्यशाली शब्द बन गया। वन्देमातरम् नाम से 6 अप्रैल, 1906 को समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। इस समाचार पत्र ने लोगों के मनों को क्रांति के लिए तैयार किया। अरविंद घोष ने 'वन्देमातरम्' का अंग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने 'इंदु प्रकाश' में वंदेमातरम् विषयक लेख लिखकर उसकी दार्शनिक व्याख्या की। अरविंद घोष के लेखों ने सिद्ध कर दिया कि लेखनी तलवार से भी तीखी होती हैं। 'वन्देमातरम्' समाचार पत्र के लेखों को लेकर अंग्रेज सरकार ने मुकदमा चलाया। जिसने अरविंद को राष्ट्रीय मंच पर अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया। इसी प्रकार का एक मुकदमा बाबा साहब, सावरकर व उनके सहयोगियों के खिलाफ चलाया गया।

वन्देमातरम् के रचयिता बंकिम चन्द्र चटर्जी

बांग्लाभाषा के यशस्वी साहित्यकार बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 1872 में 'बंग-दर्शन' नाम से मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया था। आनंद मठ उपन्यास उसी में प्रकाशित हुआ। बाद में 1882 में वह पुस्तक के रूप में छपा। इस उपन्यास ने बंकिम चन्द्र को कीर्ति के शिखर पर पहुंचा दिया। बंकिम चन्द्र की लेखन शैली से बांग्ला भाषा को नया गौरव मिला। बंकिम के उपन्यास पाठकों के लिए एक नई अनुभूति थे। बंगाल की जनता तो उनके पीछे दीवानी थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास लिखे। जिसमें 'आनंद मठ', 'देवी चौधुरानी' तथा 'सीताराम' में उस समय की परिस्थिति का चित्र हैं। दुर्गेशनंदिनी, कपालकुंडला, मृणालिनी, चन्द्रशेखर, राजसिंह बहुत ही लोकप्रिय हुए। वे उन महान लोगों में से थे जिन्होंने भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनके लेखन से राष्ट्रीयता का अर्थ लोग समझ सके। आनंद मठ राष्ट्रभक्ति पर लिखा गया शानदार उपन्यास है।

आनंद मठ का कथानक

सन 1773 में बंगाल में पड़े भीषण अकाल के समय अंग्रेजी अत्याचार के खिलाफ स्वराज के लिए जो आंदोलन हुआ, उसी की कहानी आनंद मठ में है। आनंद मठ देश के लिए जीने और मरने वालों की कहानी है। सत्यानंद, भवानंद, महेन्द्र, जीवानंद, शांति आदि का मातृभूमि से प्रेम अनुकरणीय है। **महेन्द्र से भवानंद कहते है 'हमारी तो बस एक ही माँ है और वह है मातृभूमि। न हमारी और कोई माँ है, न कोई पिता, न पत्नी, न बच्चे, न घरद्वार। यह सुजलां सुफलां धरती ही तो हमारी माँ है।'**

गीत आगे चलकर देशभक्तों का कंठ हार बन गया। स्वाधीनता संग्राम का शस्त्र बन गया। बंकिम चन्द्र ने उपन्यास लेखन के साथ-साथ अन्य उत्कृष्ट ग्रंथ भी लिखे जैसे कृष्ण चरित्र, धर्मतत्व, देवतत्व, श्रीमद्भगवद्गीता पर विवेचन। अंग्रेजी और बांग्ला में उन्होंने हिन्दुत्व पर लेख लिखे, अंग्रेजी के ग्रंथों का भी उनका अध्ययन गहरा था, वे स्वयं एक सनातन हिन्दू परिवार के तत्व चिंतक थे। उनका लिखा कृष्णचरित्र उत्कृष्ट रचना है। बंकिम चन्द्र ने महाभारत, हरिवंश तथा पुराणों का गहराई से अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि कृष्ण ने जो जीवन दर्शन दिया है, उससे बढ़कर दर्शन कोई नहीं दे सकता। कृष्ण पवित्रता व न्याय की साकार मुर्ति थे। उन्होंने स्वयं के लिए कुछ अपेक्षा नहीं की। कृष्ण सा त्यागी महापुरुष दूसरा हो ही नहीं सकता, इसलिए उनका जीवन अनुकरणीय है, वह हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

8 अप्रैल, 1894 को उनका देहावसान हो गया। सचमुच वे ऋषि थे जिन्होंने हमें नए भारत का सृजन करने के लिए 'वंदेमातरम्' का संजीवन मंत्र दिया।

वन्देमातरम् के आगे सत्ता को होना पड़ा नतमस्तक

वन्देमातरम् एक ऐसा गीत और उद्घोष था जिसने परवर्ती भारतीय युवा पीढ़ी को स्वातंत्र्य चेतना से अनुप्राणित किया था। इस मंत्र का उच्चारण करके असंख्य लोगों ने फांसी के फंदे को चूमा। वंदेमातरम् के आगे सत्तामद को हारना पड़ा, बंगाल विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। पंचनद जाग उठा, दक्षिण भारत भी वन्देमातरम् के नारों से गूंज उठा। घर-घर की दीवारें भी वन्देमातरम् से सुशोभित होने लगी। समुद्र पार भी वन्देमातरम् ध्वनित-प्रतिध्वनित होने लगा।

कांग्रेस का तुष्टीकरण

1923 के काकीनाड़ा अधिवेशन में जब पं. विष्णु पलुस्कर वन्देमातरम् गाने के लिए उपस्थित हुए तो अध्यक्ष सैय्यद महमूद अली ने टोका। इस पर पलुस्कर ने तपाक से उत्तर दिया-'यह कांग्रेस का मंच है न कि खिलाफत आंदोलन का' उन्होंने पूरा वन्देमातरम् गाया। कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति के चलते कांग्रेस ने 1937 में वन्देमातरम् की दो कड़िया ही गाने का निर्णय लिया तो पं.ओंकारनाथ 'गाउंगा तो पूरा गीत वरना गाउंगा ही नहीं' कहकर हरिपुरा अधिवेशन में नहीं गए।

स्वाधीन भारत में गूंजा-वन्देमातरम्

भारतीय स्वाधीनता 15 अगस्त, 1947 के सुप्रभात पर श्रीमती सुचेता कृपलानी ने वन्देमातरम् गाया। स्वांतत्र्य संग्राम में वन्देमातरम् घर-घर का गीत था, राष्ट्रगीत था। गांधी जी भी इस गीत के प्रशंसक थे। उन्होंनें 1905 में लिखा-'इस गीत को हमारा राष्ट्र गीत बनना चाहिए।' फिर 1936 में लिखा-''कवि भारत माता को सुहासिनी, सुमधुर भाषिणी, बहुबलधारिणी, सुफला कहते हैं। मेरी राय में वह समस्त मानव जाति को अपने में समा लेती हैं।'' संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 24 जनवरी, 1950 के दिन वक्तव्य दिया-जन गण मन शब्द संगीत वाली रचना भारत का राष्ट्रगान हैं। वन्देमातरम् गीत जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है, उसे भी जन गण मन के ही समान सम्मान दिया जाएगा। राष्ट्र ने संविधान सभा का निर्देश शिरोधार्य किया।

विश्व का लोकप्रिय गीत - वन्देमातरम्

बीबीसी ने अपनी 70वीं वर्षगांठ पर 2002 में विश्व के दस शीर्ष लोकप्रिय गीतों के बारे में 155 देशों में इंटरनेट पर एक सर्वे कराया। जिसके नतीजों के अनुसार वन्देमातरम् को दुनिया का दूसरा सबसे लोकप्रिय गीत घोषित किया गया।

कौन कहता है माँ, कि तुम अबला हो?

सचमुच वन्देमातरम् गीत में भारत माँ का सुन्दर वर्णन किया गया है। सुन्दर जल से सिंचित धरती सुफलां भी हैं। मलयपर्वत की शीतल वायु वाली भारत माता शस्य-श्यामला हैं। इस शुभ्र ज्योत्सना में यामिनी पुलक से भर जाती हैं। फूलों से लदे सुगंध से भरे सुन्दर लगने वाले और सदैव सुख देने वाले वृक्षों से यह धरा सजी पड़ी हैं। यह सुहासिनी सुमधुर भाषणी हैं। सुखदायक वरदान देने वाली हैं। यह विराट स्वरूपा भारत माँ बोलती है तो करोडों कंठ मुखरित होते हैं। करोड़ों-करोड़ों भुजाओं वाली ऐसी माँ को कौन अबला कह सकता है? बहुत बलों को धारण करने वाली इस माँ को हम नमन करते हैं। यह शत्रु दलों का संहार करने वाली हैं। यही विद्या है, यही धर्म है, यही हमारा हृदय और मर्म हैं। इस राष्ट्र का प्राण ही हमारे शरीर में दौड़ रहा है, हमारी भुजाओं में इस माँ की ही शक्ति हैं। हृदय में भारत माँ की ही भक्ति हैं। प्रत्येक मंदिर में तुम्हारी ही प्रतिमा हैं। तुम ही दुर्गा हो, तुम ही दशप्रहरणधारिणी हो, तुम ही लक्ष्मी का स्वरुप हो, तुम ही वाणी और विद्या दायिनी हो। तुम ही कमला, अमला, अतुला, सुजला सुफला देने वाली माता के रूप में नमन योग्य हो। तुम ही श्यामला, सरल, सुस्मित, भूषित, धरणी-भरणी हो। ऐसी माँ को नमन है, शत शत नमन है।

वन्देमातरम् गीत को समग्र रूप से पढ़ने पर साफ समझ में आ जाता हैं कि देश धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए ही उसकी रचना हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य था आम लोगों में देशप्रेम जागृत करना। वन्देमातरम् का यह उद्देश्य काफी हद तक सफल हुआ हैं। आइए! हम भी गुनगुनाएं-

जन जन के प्रिय कंठ का हो गान वन्देमातरम्।
अरिदल थर थर कांपे सुनकर नाद वन्देमातरम्।।
वीर पुत्रों की अमर ललकार वन्देमातरम्।
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्देमातरम्।।

(लेखक श्री धनराज बदामिया रा.बा. उ.मा.वि.सादड़ी (पाली) में प्रधानाचार्य हैं)

नीरु आई हॉस्पिटल
लेसिक एवम् फेको सर्जरी सेन्टर
डॉ. (श्रीमती) नीरू गुप्ता
एम.एस. (नेत्र) गोल्डमेडलिस्ट
लैन्स (IOL) प्रत्यारोपण विशेषज्ञ
(H) 2343969, (R) 2359900
कालवाड़ रोड, झोटवाड़ा, जयपुर
फोन : 0141-2343969, 9314903675
ना शादी में बाधा, न नौकरी में रूकावट,
हटवाकर चश्मा पाओ, सलौने चेहरे पर मुस्कराहट

भारत के स्वत्व जागरण में संघ गीतों की भूमिका

• डॉ.विपिन चंद्र

स्वतंत्रता-संघर्ष में गीत-कविताओं ने न केवल स्वातंत्र्य योद्धाओं को मां भारती की स्वाधीनता हेतु समर में डटे रहने के लिए प्रेरित किया, वरन् सामान्य जन का मनोबल बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं पर प्रतिदिन ही स्वयंसेवक सामूहिक गीत गाते हैं जो स्वयंसेवकों में राष्ट्र और समाज के लिए सर्वस्व अर्पण करने के संस्कार भरते दिखाई देते हैं। इन गीतों के माध्यम से 'स्वत्व' जागरण का अद्भुत कार्य किया जा रहा है। लेखक ने इन गीतों के संबंध में शोध कार्य कर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। संघ के इन विविध प्रकार के गीतों की एक झलक प्रस्तुत आलेख में पाठकों को अवश्य मिलेगी।

भारत माता को परकीयों से मुक्त कराने के लिए हमारे पूर्वजों ने धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक, प्रत्येक स्तर पर तथा प्रत्येक क्षेत्र में प्रयत्नों की पराकाष्ठा की। स्वाधीनता के अनुकूल वातावरण निर्माण करने के लिए साहित्यकारों ने विभिन्न प्रकार की साहित्यिक रचनाओं के द्वारा जनमानस को स्वाधीनता के पक्ष में खड़ा किया जिसमें गीतों-कविताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का वंदेमातरम् गीत तो जैसे स्वतंत्रता सेनानियों का बीज मंत्र हो गया, वहीं 'वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' तथा 'चाह नहीं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं, मुझे तोड़ लेना वनमाली, देना तुम उस पथ पर फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएं वीर अनेक', 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से स्वतंत्रता पुकारती, स्वयंप्रभा समुज्वला स्वतंत्रता निहारती' जैसे गीत भारतीय जनमानस में प्राण फूंक रहे थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी शाखाओं के माध्यम से राष्ट्र के स्वत्व जागरण संघोष को गुंजायमान करते हुए संपूर्ण भारत में राष्ट्र कार्य करने वाले स्वयंसेवकों की एक विशाल श्रृंखला निर्माण करने में लग गया। संघ की शाखा में चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित स्वयंसेवकों की सेना तैयार होने लगी। संघ शाखा में गाए जाने वाले गीतों ने भारत में तथा समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वत्व जागरण का अनुपम कार्य किया तथा भारत माता के प्रति श्रद्धा भक्ति भाव निर्माण करने से लेकर धार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक ,लोक जागरण, आवाहन, उद्बोधन व अन्यान्य प्रकार के गीतों द्वारा भारतीय जनमानस को देश और समाज के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने का भाव निर्माण किया। आज भी संघ अपने विभिन्न कार्यक्रमों में गाए जाने वाले गीतों के माध्यम से उस प्रकार के व्यक्ति ,समाज तथा राष्ट्र का निर्माण करने के लिए वातावरण निर्माण करने में लगा हुआ है।

संघ में तथा संघ विचार से अनुप्राणित विभिन्न संगठनों में तथा समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गाए जाने वाले उदाहरण स्वरूप कुछ संघ गीतों की चर्चा आगे की गई है-

भारत माता के प्रति श्रद्धा भाव जागरण –

1. **मातृभूमि, पितृ भूमि, धर्मभू महान।**
   यह भरत भू महान है महान है महान।।
2. जन्मभूमि, मातृभूमि,पितृ भूमि वंदना।
   देव भूमि, त्याग भूमि, भाग्य भूमि अर्चना।।
3. **मूर्तिमान हो गई जहां स्वरूप कामना।**
4. जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है।।

राष्ट्र सर्वोपरि–

1. **तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित।**
   चाहता हूं देश की धरती तुझे कुछ और भी दूं।।
2. आज तन मन और जीवन धन, सभी कुछ हो समर्पण।
   राष्ट्रहित की साधना में, हम करें सर्वस्व अर्पण।।
3. **हम करें राष्ट्र आराधन, तन से मन से धन से,**
   तन मन धन जीवन से...

आवाहन गीत–

1. अयोध्या बस्ती है आह्वान, ठाठ से कर मंदिर निर्माण।
सजग हो रघुवर की संतान, बिठा दे वहां राम भगवान।
2. हो जाओ तैयार साथियों, हो जाओ तैयार।
अर्पित कर दो तन मन धन, मांग रहा बलिदान वतन।।
अगर देश के काम ना आए, तो जीवन बेकार...
3. चलो जवानो, बढ़ो जवानो मां ने हमें पुकारा है, दुश्मन ने ललकारा है।

स्वत्व जागरण–

1. करें प्रतिज्ञा भारतवासी, वस्तु स्वदेशी लेंगे हम।
माटी से सोना उपजाएं, जाल विदेशी काटे हम।।
2. स्वाभिमान का भाव जगाने, ग्राम नगर अभियान चले।
लिए स्वदेशी मंत्र आज फिर, बालक वृद्ध जवान चले।।
3. नमस्कार व्यवहार स्वदेशी, शिक्षा का आधार स्वदेशी।
जीवन का दर्शन अपना हो, निराकार साकार स्वदेशी।।
4. ज्ञान तथा विज्ञान स्वदेशी, भाषा भूषण ध्यान स्वदेशी।
ऐसा भारत भव्य बनाएं, जिसकी हो पहचान स्वदेशी।।

वीर व्रत जागरण–

1. फिर आज भुजाएं फड़क उठी, भारत के वीर जवानों की।
हम पर प्रहार करने वालो, चिंता कर अपने प्राणों की।।
2. आज पुनः आक्रांत हुई है, मातृभूमि हम सबकी प्यारी।
उठो जवानों खींचो फिर से, कोषों से अब खड्ग दुधारी।।

नैतिकता प्रबल–

1. निर्माणों के पावन युग में, हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आंधी में, वसुधा का कल्याण न भूलें।।
शील, विनय, आदर्श, श्रेष्ठता, तार बिना झंकार नहीं है।
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी, यदि नैतिक आधार नहीं है।।

अनीति, अत्याचार, अन्याय का विरोध

1. निशिचर हीन करूंगा धरती, यह प्रण है श्री राम का।
जब तक कार्य न पूरा होगा, नाम नहीं विश्राम का।।
2. पापियों के नाश को धर्म के प्रकाश को,
एक नई ज्योति जली, श्रीराम जी की सेना चली।।
3. हम पत्थर को हाथ लगाकर, संजीवन कर सकते हैं।
मर्यादा बनकर असुरों, का बल मर्दन कर सकते हैं।।
4. काल यवन का काल बने, जो योगेश्वर की गीति लिए।
हिरण्याक्ष का वक्ष चीर दे, नरसिंह की दहाड़ लिए।।
चक्र सुदर्शन की छाया में गीता अमृत बरसाने....।

जागरण गीत–

1. भरत भू संतान जागो, देव भू जागो।
देश के हित गरल पीने, आज डमरु तान जागो।।
3. हिंदू जगे तो विश्व जगेगा, भारत का विश्वास जगेगा।
भेदभावना तमस हटेगा, समरसता का अमृत बरसेगा।।

शक्ति उपासना–

1. स्वतंत्रता को सार्थक करने, शक्ति का आधार चाहिए।
हिंदू युवकों आज का, युग धर्म शक्ति उपासना है।।

इतिहास गौरव–

1. पोरुष की वीरता को, झेलम तू ही बता दे।
यूनान का सिकंदर, था तेरे तट पर हारा।।
2. शत्रु हृदय दहलाने वाला, मुगलों से पहले ही पाला।
चमक उठा था जिसका भाला, उस प्रताप की सुनी नहीं,
क्या रण में जय जयकार।।
3. देख लड़ाई मोहम्मद गोरी, करने लगा विचार।
भारी गलती मैंने की, जो आया 16वीं बार।।

संस्कृति गौरव–

1. संस्कृति सबकी एक चिरंतन, खून रगों में हिंदू है।
विराट सागर समाज अपना, हम सब इसके बिंदु हैं।।

लक्ष्य चिंतन –

1. मातृ मंदिर का समर्पित दीप मैं।
चाह मेरी यह कि मैं जलता रहूं।।
2. इस पूजा की थाली में मैं, क्या-क्या भेंट चढ़ाऊं?
जो कुछ भी है सो तेरा, तेरी सेवा में लाऊं।।

परिवर्तन–

1. नव चैतन्य हिलोरे लेता, जाग उठी है तरुणाई।
हिंदू राष्ट्र निज दिव्य रूप में, उठा पुनः ले अंगड़ाई।।
2. अरुण गगन पर महा प्रगति का, अब फिर मंगल गान सजा।
घरघट बदली, अंगड़ाई ली, सोया हिंदुस्तान उठा।।

लोक जागरण–

1. सावधान! पांचजन्य बज रहा,
सावधान गांडीव तन रहा।
2. मदन दहन की तृतीय दृष्टि खुल गई,
हिंदू राष्ट्र की प्रचंड शक्ति जब रही।।
3. जाग उठा है आज देश का, वह सोया अभिमान।
प्राची की चंचल किरणों पर, आया स्वर्ण विहान।।

सामाजिक समरसता–

1. हिंदू हिंदू एक रहें, भेदभाव को नहीं सहें।
   संघर्षों से दुखी जगत को, मानवता की शिक्षा दें।।

इस प्रकार भारत के स्वत्व जागरण में संघ की महान भूमिका अपने गीतों द्वारा अनवरत चल रही है। संघ के विचार से अनुप्राणित आज सैकड़ों संगठनों में ये गीत गाए जाते हैं। आज व्यक्तिगत, संस्थागत तथा राष्ट्रीय– अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से संघ गीत संपूर्ण विश्व में मानवता के उद्घोषक हैं। वे अपने दिव्य संदेशों से मानवता, भारतीयता, हिंदुत्व तथा राष्ट्रीयत्व के जागरण के महायज्ञ की आरती स्वरूप हैं। ये गीत अनवरत रूप से भारतीय जनमानस में 'बने हम हिंद के योगी, धरेंगे ध्यान भारत का' तथा 'मन मस्त फकीरी धारी है, अब एक ही धुन जय जय भारत' का भाव जगा कर 'ऐ माँ करता हूं प्रतिज्ञा कि तेरे रूप खंडित को अखंडित करके दम लूंगा' तथा 'दिन दूर नहीं खंडित भारत को, पुनः अखंड बनाएंगे। गिलगित से गारो पर्वत तक, आजादी पर्व मनाएंगे।।' का संकल्प दृढ़ कर रहे हैं।

आज स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहे भारत तथा उसके नव–निर्माण में सहायक इन गीतों के कारण भारत की विशाल जनसंख्या इन पंक्तियों को जीवन ध्येय बनाकर अपने शरीर का कण–कण तथा आयु का क्षण–क्षण राष्ट्र देव के चरणों में अर्पित करते हुए मात्र यही भाव रखते हैं–

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में, मांगे मातृभूमि से यह वर।
तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहे ना रहे।।

भारत माता की जय – वंदेमातरम्।

(लेखक अखिल भारतीय साहित्य परिषद के केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य व क्षेत्रीय संगठन मंत्री हैं)

वंदेमातरम् के नारे ने...

● डॉ. शिवराज भारतीय

वंदेमातरम् के नारे ने तुड़वा दी जंजीरें।
आओ हम सब मिलकर गाएं ले हाथों में शमशीरें।।
मातृभूमि की स्वतंत्रता का प्रहरी वंदेमातरम्।
वंदेमातरम् वंदेमातरम् वंदेमातरम्।।

निज गौरव को विस्मृत करने का कैसा षड़यंत्र रचा।
जीवन मूल्यों को झुठलाने का कैसा दुष्चक्र चला।।
हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्तान का हामी वंदेमातरम्।
वंदेमातरम् वंदेमातरम् वंदेमातरम्।।

आज राष्ट्र की प्रज्ञा का भटकाव राष्ट्र को जला रहा।
पश्चिम की काली छाया के घोर तिमिर में डुबा रहा।।
संस्कृति के पावन आलोक का साक्षी वंदेमातरम्।
वंदेमातरम् वंदेमातरम् वंदेमातरम्।।

भारत मां के हर रजकण को पावन तीर्थ बनाएं हम।
दुखित दलित हर व्यथित हृदय को माणिक सा चमकाएं हम।।
अखिल राष्ट्र की अखंडता–अनुगामी वंदेमातरम्।
वंदेमातरम् वंदेमातरम् वंदेमातरम्।।

(कवि अ.भा.सा.परिषद, जोधपुर प्रांत के सह प्रांत संयोजक हैं)

हर घर तिरंगा होगा

घर घर तिरंगा होगा

हर घर तिरंगा

सभी प्रदेशवासियों से अनुरोध है कि आजादी के 75 वे वर्ष के
उपलक्ष्य में सभी अपने घर पर तिरंगा लगाएं
तथा सभी अधिक से अधिक पेड़ लगाएं जिससे हमारे
आसपास का वातावरण शुद्ध हो सके.....

कुँवर जगत सिंह | जिला प्रमुख, भरतपुर

76 वें स्वतन्त्रता दिवस
के पावन पर्व की समस्त देशवासियों को
हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं
शत्रुघ्न गौतम
पूर्व संसदीय सचिव राजस्थान सरकार
एवं पूर्व विधायक केकड़ी

स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी की भूमिका

● कश्मीरी लाल

'स्वदेशी' आंदोलन ने भारत को स्वाधीनता दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई। 1857 के जन-विद्रोह का एक बड़ा कारण विदेशी कंपनियों द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण था। परम्परागत अर्थव्यवस्था पूरी तरह नष्ट कर दी गई थी। 1872 में बंकिम चटर्जी ने तथा 1874 में शम्भू मुखोपाध्याय ने 'स्वदेशी' के लिए आवाज बुलंद की। 1905 के 'बंग-भंग' आंदोलन की सफलता में स्वदेशी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। गांधी जी के सभी आंदोलनों का आधार स्वदेशी ही था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वदेशी जागरण मंच आरंभ से ही 'स्वदेशी' को आगे बढ़ा रहे हैं। इन सभी पहलुओं की चर्चा इस लेख में की गई है।

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव का यह समय इस बात का मूल्यांकन करने का भी है कि स्वाधीनता की लड़ाई में स्वदेशी का क्या महत्व रहा है। 'स्वदेशी' का अर्थ है–'अपने देश का'। इस रणनीति का लक्ष्य ब्रिटेन में बने माल का बहिष्कार करना तथा भारत में बने माल का अधिकाधिक प्रयोग करके साम्राज्यवादी ब्रिटेन को आर्थिक हानि पहुँचाना व भारत के लोगों के लिए रोजगार सृजन करना था। यह ब्रितानी शासन को उखाड़ फेंकने और भारत की समग्र आर्थिक व्यवस्था के विकास के लिए अपनाया गया साधन था।

एक आम सहमति है कि स्वदेशी आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण आंदोलन था जिसने भारत को स्वाधीनता दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई थी। परन्तु ज्यादातर लोग स्वाधीनता के आंदोलन में स्वदेशी की भूमिका की शुरूआत करने का श्रेय गांधी जी को देते हैं। यह सर्वज्ञात है कि उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और खादी आदि को प्रचारित करने में लंबा संघर्ष किया। परन्तु गांधी जी से पहले भी 'स्वदेशी का आंदोलन' चलाया गया था।

हम भारत में स्वदेशी आंदोलन को तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। पहला,1857 से 1900 तक। दूसरा भाग 1903 से 1911 तक यानी बंगाल विभाजन विरोधी आंदोलन और तीसरा 1915 से प्रारंभ होकर 1947 की स्वाधीनता तक का आंदोलन जिसमें गांधी जी की बड़ी भूमिका रही। आइए देखें कि आज भी इन आंदोलनों से वर्तमान संदर्भ में क्या प्रेरणा ली जा सकती है।

1857 का स्वदेशी आंदोलन

1857 के विद्रोह का एक प्रमुख कारण कंपनी द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण भी था। कंपनी की नीतियों ने भारत की पारम्परिक अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। इन नीतियों के कारण बहुत से किसान, कारीगर, श्रमिक और कलाकार कंगाल हो गए। इनके साथ साथ जमींदारों और बड़े किसानों की स्थिति भी बदतर हो गयी। सन 1813 में कंपनी ने एक तरफा मुक्त व्यापार की नीति अपना ली। इसके अन्तर्गत ब्रितानी व्यापारियों को आयात करने की पूरी छूट मिल गयी। परम्परागत तकनीक से बनी हुई भारतीय वस्तुएं इसके सामने टिक नहीं सकी और भारतीय शहरी हस्तशिल्प व्यापार को अकल्पनीय क्षति हुई।

रेल सेवा के आने के साथ ग्रामीण क्षेत्र के लघु उद्यम भी नष्ट हो गए। रेल सेवा ने ब्रितानी व्यापारियों को दूरदराज के गांवों तक पहुँच दे दी। सबसे अधिक क्षति कपड़ा उद्योग (कपास और रेशम) को हुई। इसके साथ लोहा व्यापार, बर्तन, कांच, कागज, धातु, बन्दूक, जहाज और रंगरेजी के उद्योगों को भी बहुत क्षति हुई। 18वीं और 19वीं शताब्दी में ब्रिटेन और यूरोप में आयात कर और अनेक रोकों के चलते भारतीय निर्यात समाप्त हो गया। पारम्परिक उद्योगों के नष्ट होने और साथ-साथ आधुनिक उद्योगों का विकास न होने के कारण यह स्थिति और भी विषम हो गयी। साधारण जनता के पास खेती के अलावा कोई और साधन नहीं बचा।

भारत में स्वदेशी का पहले-पहल नारा बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने 1872 ई. में ही विज्ञानसभा का प्रस्ताव रखते हुए दिया था। उन्होंने कहा था– ''जो विज्ञान स्वदेशी होने पर हमारा दास होता, वह विदेशी होने के कारण हमारा प्रभु बन बैठा है, हम लोग दिन ब दिन साधनहीन होते जा रहे हैं। अतिथिशाला में आजीवन रहने वाले

अतिथि की तरह हम लोग प्रभु के आश्रम में पड़े हैं, यह भारतभूमि भारतीयों के लिए भी एक विराट अतिथिशाला बन गई है।''

इसके बाद भोलानाथ चन्द्र ने 1874 में 'शम्भुचन्द्र मुखोपाध्याय' द्वारा प्रवर्तित मुखर्जीज़ मैग्जीन में स्वदेशी का नारा दिया। उन्होंने लिखा–'' किसी प्रकार का शारीरिक बल प्रयोग न करके राजानुगत्य अस्वीकार न करते हुए तथा किसी नए कानून के लिए प्रार्थना न करते हुए भी हम अपनी पूर्व सम्पदा लौटा सकते हैं। जहाँ स्थिति चरम में पहुँच जाए, वहाँ एकमात्र नहीं तो सबसे अधिक कारगर अस्त्र नैतिक शत्रुता होगी। इस अस्त्र को अपनाना कोई अपराध नहीं है! आइए हम सब लोग यह संकल्प करें कि विदेशी वस्तु नहीं खरीदेंगे। हमें हर समय यह स्मरण रखना चाहिए कि भारत की उन्नति भारतीयों के द्वारा ही सम्भव है।

जुलाई, 1903 की सरस्वती पत्रिका में 'स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार' शीर्षक से एक कविता छपी। रचनाकार का नाम नहीं था किन्तु वर्ष भर के अंकों की सूची से ज्ञात होता है कि वह पत्रिका के सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी की रचना थी। कविता का कुछ अंश उद्धृत है–

विदेशी वस्त्र हम क्यों ले रहे हैं?
वृथा धन देश का क्यों दे रहे हैं?
न सूझै है अरे भारत भिखारी!
गई है हाय तेरी बुद्धि मारी!
हजारों लोग भूखों मर रहे हैं;
पड़े वे आज या कल कर रहे हैं।
इधर तू मंजु मलमल ढूंढता है!
न इससे और बढ़कर मूढ़ता है।

यह स्वदेशी भाव लगातार बढ़ता गया।

बंग–भंग विरोधी आंदोलन

जब 1905 ई. में बंग–भंग हुआ, तब स्वदेशी का नारा जोरों से अपनाया गया। उसी वर्ष कांग्रेस ने भी इसके पक्ष में मत प्रकट किया। देशी पूँजीपति उस समय मिलें खोल रहे थे, इसलिए स्वदेशी आन्दोलन उनके लिए बड़ा ही लाभदायक सिद्ध हुआ।

भारत में बंग–भंग के विरोध में सभाएँ तो हो ही रही थीं, विदेशी वस्तु बहिष्कार आन्दोलन ने भी बल पकड़ा। वंदेमातरम् इस युग का महामन्त्र बना। 1906 के 14 और 15 अप्रैल को स्वदेशी आन्दोलन के गढ़ वारीसाल में बंगीय प्रादेशिक सम्मेलन होने का निश्चय हुआ।

इसी आन्दोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर पिकेटिंग शुरू हुई। अनुशीलन समितियाँ बनीं जो गोरी सरकार द्वारा दबाए जाने के कारण क्रान्तिकारी समितियों में परिणत हो गयीं।

राष्ट्रीय नेताओं ने लोगों से विदेशी वस्त्रों एवं वस्तुओं के बहिष्कार की अपील की। जनसभाओं में एक वर्ष तक सभी सार्वजनिक पर्वों पर होने वाले उत्सव स्थगित कर राष्ट्रीय शोक मनाने की अपील की जाने लगी।

इन अपीलों का व्यापक असर हुआ। पंडितों ने विदेशी वस्त्र पहनने वाले वर–वधुओं के विवाह कराने से हाथ पीछे खींच लिया। नाइयों ने विदेशी वस्तुओं के प्रेमियों के बाल काटने और धोबियों ने उनके कपड़े धोने से मना कर दिया। इससे विदेशी सामान की बिक्री बहुत घट गयी। उसे प्रयोग करने वालों को हीन दृष्टि से देखा जाने लगा। 'मारवाड़ी चैम्बर ऑफ कॉमर्स' ने 'मेनचेस्टर चैम्बर ऑफ कॉमर्स' को तार भेजा कि शासन पर दबाव डालकर इस निर्णय को वापस कराइए, अन्यथा यहाँ आपका माल बेचना असंभव हो जाएगा।

योजना के क्रियान्वयन का दिन 16 अक्तूबर, 1905 पूरे बंगाल में शोक पर्व के रूप में मनाया गया। **रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा अन्य प्रबुद्ध लोगों ने आग्रह किया कि इस दिन सब नागरिक गंगा या निकट की किसी भी नदी में स्नान कर एक–दूसरे के हाथ में राखी बाँधें। इसके साथ वे संकल्प लें कि जब तक यह काला आदेश वापस नहीं लिया जाता, वे चैन से नहीं बैठेंगे।**

16 अक्टूबर को बंगाल के सभी लोग सुबह जल्दी ही सड़कों पर आ गए। वे प्रभात फेरी निकालते और कीर्तन करते हुए नदी तटों पर गए। स्नान कर सबने एक–दूसरे को पीले सूत की राखी बाँधी और आन्दोलन का मन्त्र गीत वन्देमातरम् गाया। स्त्रियों ने बंगलक्ष्मी व्रत रखा। छह साल तक आन्दोलन चलता रहा। हजारों लोग जेल गये। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक, पंजाब में लाला लाजपतराय व बंगाल के बिपिन चंद्र पाल (लाल, बाल, पाल) की त्रिमूर्ति ने इस आग को पूरे देश में सुलगा दिया।

इससे लन्दन में बैठे अंग्रेज शासक घबरा गए। ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम ने 11 दिसम्बर,1912 को दिल्ली में दरबार कर यह आदेश वापस ले लिया। इस प्रकार स्वदेशी राखी के धागों से उत्पन्न एकता ने इस आन्दोलन को सफल बनाया।

दिल्ली दरबार (1911) में बंग–भंग रद्द कर दिया गया, पर स्वदेशी आन्दोलन नहीं रुका। अपितु वह स्वतन्त्रता आन्दोलन में परिणत हो गया। बताते चलें कि इस आंदोलन की शताब्दी पर 2005 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पूरे देश में इस बंग–भंग विरोधी आंदोलन की शताब्दी कार्यक्रम को देश के कोने–कोने में मनाया और वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता से अवगत करवाया।

1920 से 1945 का युग

महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए ही 1909 में 'हिन्द स्वराज' पुस्तक लिख कर मेनचेस्टर आदि के बने कपड़े का विरोध शुरू कर दिया था।(लगे हाथ बताते चले कि 2009 में स्वदेशी जागरण मंच ने सौ से अधिक स्थानों पर हिन्द स्वराज पुस्तक की शताब्दी के उपलक्ष्य में अच्छे कार्यक्रम सम्पन्न किए थे।) 1915 में जब वे भारत लौटे तो उन्होंने इस को आगे बढ़ाया। गांधी स्वदेशी आंदोलन के केन्द्र बिन्दु ही बन गए। उन्होंने न केवल स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी बल्कि उन्होंने हर समय भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठता दिलाने का प्रयास भी किया और विश्व व्यवस्था के सामने भारतीय सभ्यता का प्रतिनिधित्व भी किया था। पश्चिमी सभ्यता के वर्चस्व वाले उस युग में गांधी जी ने भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठ बताते हुए उसे पूरी दुनिया के लिए एक विकल्प के रूप में पेश किया।

गांधी जी ने एक के बाद एक आंदोलन प्रारम्भ किए परन्तु सबकी जड़ में स्वदेशी था। गांधी जी के अनुसार–

''स्वदेशी का तात्पर्य उस भावना से है जो हमें अपने आसपास में निर्मित वस्तुओं के उपयोग करने को प्रेरित करती है। यह बाहर की वस्तुओं के प्रयोग का निषेध करता है। स्वदेशी एक धर्म है, एक कर्तव्य है जो हमें पैतृक धर्म की सीमा में अनुबंधित करता है तथा पड़ोस में बनने वाली वस्तुओ की गुणवत्ता में सुधार व उपयोग की प्रेरणा देता है।''

संघ व स्वदेशी

स्वतन्त्रता आंदोलन में स्वदेशी की भूमिका में कुछ लोगों व संस्थाओं के योगदान को उतना स्थान नहीं मिला जितना अपेक्षित था। उनमें गिनती करनी हो तो सबसे पहले वीर सावरकर जी का नाम आता है। कॉलेज से स्वदेशी के मुद्दे को लेकर वे निकाल दिये और विदेशी वस्तुओं की होली जलाने में उनके महती योगदान को जानबूझ कर भुलाने का प्रयास हुआ। 1930 में स्वदेशी को लेकर बलिदान हुए बालक बाबू गेनू सईद का वर्णन भी नहीं होता है, यद्यपि स्वदेशी को लेकर बलिदान होने वाले वे इकलौते वीरपुरुष थे। इसी प्रकार से स्वदेशी विज्ञान को बढ़ाने वाले वैज्ञानिक जगदीश प्रसाद बसु से लेकर प्रफुल्ल चंद्र राय भी और अधिक प्रचार प्रसार के हकदार हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता डॉ. हेडगेवार का योगदान बहुत बड़ा रहा जिसकी ज्यादा चर्चा अपेक्षित है। 'राष्ट्राय स्वाहा' नामक पुस्तक में पत्रकार मोरेश्वर गणेश तपस्वी ने विस्तार से डॉ.हेडगेवार जी के स्वदेशी के लिए योगदान की चर्चा की है। जिसमें कहा गया है कि बहुत पहले से ही डॉ.हेडगेवार ने स्वदेशी पर जोर दिया। म.न. वंहाड पांडेय की लिखी आधारभूत पुस्तक 'संघ कार्यपद्धति का विकास के एक अध्याय (पृष्ठ 81) पर शीर्षक 'स्वदेशी का व्रत' की अवधारणा में विस्तार से वर्णन है कि संघ के स्वयंसेवकों के लिए स्वदेशी के क्या महत्व है। कई रोचक उदाहरणों से उसमें समझाया गया है कि राष्ट्र जीवन में स्वदेशी का क्या योगदान है।

अंत में दो इतिहासकारों की टिप्पणियों को उद्धरित करना जरूरी समझता हूँ।

आर सी मजूमदार का मत था कि स्वदेशी आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन के दायरे को 'सिद्धांत से पूर्ण व्यावहारिकता' की ओर ले आया।

आधुनिक इतिहासकार सुमित सरकार ने कहा कि स्वदेशी आंदोलन की उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक 'लोगों के जीवन को आकार देना' था।

(लेखक स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठक हैं)

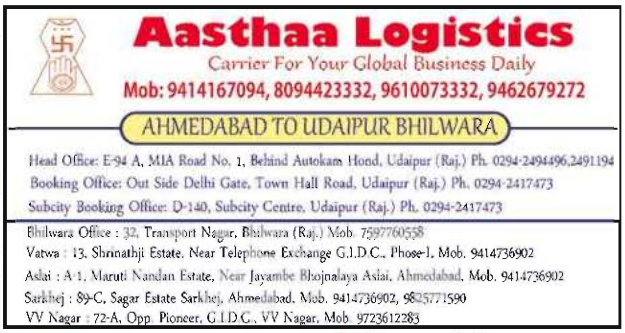

'स्व' के संघर्ष में भारतीय विज्ञान यात्रा के अल्पज्ञात नायक

● डॉ. नारायण लाल गुप्ता

पराधीन काल में अंग्रेजों के भेदभाव और शोषण वाले वातावरण में भी भारत के कई वैज्ञानिकों ने 'स्व' के लिए संघर्षरत रहते हुए बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की, परन्तु धूर्त अंग्रेज ने उसका श्रेय उन्हें न देकर उन उपलब्धियों को अपने नाम से जोड़ लिया। ऐसे ही पांच अनाम या अल्पज्ञात भारतीय वैज्ञानिकों के संघर्ष और उनके कार्यों पर विद्वान लेखक ने प्रकाश डाला है।

भारत के 'स्व' की प्राप्ति के संघर्ष में प्राय: राजनीतिक आंदोलनों की चर्चा सबसे अधिक होती है, वैज्ञानिकों के योगदान की सबसे कम। भारत में अंग्रेजों का शासन मात्र आर्थिक उपनिवेशवाद तक सीमित नहीं था, बल्कि इस प्रक्रिया के केंद्र में बौद्धिक और सांस्कृतिक दासता की कालिमा घुली थी। भारत की प्रचुर प्राकृतिक संपदा के महत्व को पहचानते हुए ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1767 में 'सर्वे ऑफ इंडिया' की स्थापना की ताकि वैज्ञानिक ढंग से भारतीय संसाधनों का उनके पक्ष में अनुकूलतम दोहन हो सके। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य का उद्देश्य मात्र धन संपत्ति का अर्जन ही नहीं था। 'द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश एंपायर' के संपादक रोजर लुईस ग्रंथ की भूमिका में लिखते हैं कि उनका बड़ा लक्ष्य भारतीय पहचान के स्थान पर ब्रिटिश विचार और कल्चर को प्रतिस्थापित करना था और इसका एक बड़ा हथियार विज्ञान के रूप में उनके पास था।

इन सर्वेक्षणों में स्थानीय प्रतिभाशाली भारतीयों को नौकरियां तो दीं, लेकिन उनका दर्जा द्वितीय श्रेणी का ही रखा।

दुर्भाग्य से इस बात को भारतीय विज्ञान के इतिहास के संदर्भ में बहुत अच्छी तरह से नहीं समझा गया है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद पूरी तरह नस्लवाद पर आधारित था।

जबरदस्त भेदभाव और शोषण के वातावरण में विज्ञान और उद्योग को साधन बनाकर भारत के स्वाभिमान की पुनर्स्थापना करने में सक्रिय विज्ञान जगत के लोगों के संघर्ष की यात्रा अत्यंत रोमांचक और प्रेरणादायी है। भारत के इन वैज्ञानिकों में से भी चंद नाम ही प्रकाश में आए तो कुछ अज्ञात–अल्पज्ञात ही रह गए; स्व के संघर्ष–यज्ञ में विज्ञान के माध्यम से आहुति देने वाले ऐसे ही कुछ वैज्ञानिकों के योगदान की चर्चा यहां है–

डॉ. महेंद्र लाल सरकार, जिनके बिना शायद दुनिया रमन को ना जानती

भारतवर्ष में विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे 'स्व' के संघर्षमय वातावरण को देखते हुए युवा वैज्ञानिकों के मन में भी इस प्रायोजित मिथक को तोड़ने की टीस थी कि भारतीय तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से सोच नहीं सकते, ना ही मौलिक शोध आदि कर सकते हैं। उन्होंने उपनिवेशवादियों की इस मानसिकता के विरुद्ध विद्रोह किया तथा सीमित संसाधनों के साथ ही विज्ञान में

ब्रिटिश साम्राज्य का उद्देश्य मात्र धन संपत्ति का अर्जन ही नहीं था। 'द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश एंपायर' के संपादक रोजर लुईस ग्रंथ की भूमिका में लिखते हैं कि उनका बड़ा लक्ष्य भारतीय पहचान के स्थान पर ब्रिटिश विचार और कल्चर को प्रतिस्थापित करना था और इसका एक बड़ा हथियार विज्ञान के रूप में उनके पास था।

'स्व' के स्थापना की अपनी महत्वाकांक्षी यात्रा को प्रारंभ किया। इन प्रयासों में अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रभावी कदम था– डॉ.महेंद्र लाल सरकार द्वारा इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस (IACS) की स्थापना।

1863 में कोलकाता मेडिकल कॉलेज से एमडी डॉ. महेंद्र लाल सरकार बंगाल के एक बहुत लोकप्रिय एलोपैथिक प्रैक्टिशनर थे। वे ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन की बंगाल शाखा के सचिव भी चुने गए थे। बाद के कुछ वर्षों में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कुछ बीमारियों का इलाज एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति में प्रभावी ढंग से नहीं किया जा सकता, साथ ही भारत के सामान्य व्यक्ति के लिए अंग्रेजी दवाइयों का इलाज महंगा पड़ता है। उन्होंने कोलकाता के होम्योपैथिक चिकित्सक राजेंद्र लाल दत्त के साथ शोध करके पाया कि कुछ बीमारियों में होम्योपैथी अधिक सुरक्षित, प्रभावी एवं सस्ता विकल्प है। जब उन्होंने इन निष्कर्षों को ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन की बैठक में रखा, तो उन्हें जबरदस्त विरोध झेलना पड़ा । अंग्रेजों के लिए होम्योपैथी की तरफदारी करना जर्मन खेमे में जाने जैसा था, जो उन्हें कतई स्वीकार नहीं था। डॉ.सरकार को इस 'दुस्साहस' का परिणाम झेलना पड़ा । उन्हें ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन के सचिव के पद से हटा दिया गया। कई जर्नल्स में उनके शोध पत्र छापने बंद कर दिए गए तथा उनकी चिकित्सकीय प्रैक्टिस पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए गए।

डॉ. सरकार ने हार नहीं मानी । लेकिन इस घटना से उन्हें समझ में आ गया था कि भारतीय शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों में विज्ञान की सच्ची भावना का विकास करने और उनकी योग्यता को एक उचित राष्ट्रीय मंच प्रदान करने के लिए अपनी स्वयं की वैज्ञानिक संस्थाएं होना जरूरी है। उनके आह्वान पर भारतीय राष्ट्रवादियों और दानदाताओं द्वारा एकत्रित 61 हजार की राशि से 15जनवरी, 1876 को 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस' (आईएसीएस) का श्रीगणेश हुआ । संस्थान के उद्देश्यों में ब्रिटिश सरकार से स्वायत्तता तथा विज्ञान में आत्मनिर्भरता के राष्ट्रीय लक्ष्य शामिल थे। डॉ.सरकार 'Calcutta Journal of Medicine' में लिखे अपने लेख में स्पष्ट करते हैं –'the institution should be entirely under native management control ...we may begin to learn the value of self-reliance'. भारतीय ज्ञान–विज्ञान के संरक्षण को भी संस्था के उद्देश्य में जोड़ा गया।

इधर तिरुचिरापल्ली के मेधावी सीवी रमन, जिन्हें देश में वैज्ञानिक शोध के लिए कोई प्रमुख आजीविका उपलब्ध नहीं हुई, असिस्टेंट अकाउंटेंट जनरल होकर कोलकाता आए। वित्त और वाणिज्य संबंधी फाइलों की यांत्रिकता से उकताए उनके मन को अपनी रचनात्मक–वैज्ञानिक ऊर्जा का उपयोग करने का अवसर तब मिला जब उन्हें अपने निवास स्थान के पास में ही स्थित 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस' के परिसर में अपनी रुचि का वैज्ञानिक शोध करने का मौका मिला । ऑफिस के कार्य के घंटों के अलावा बाकी संपूर्ण समय रमन आईएसीएस परिसर में सीमित संसाधनों वाली स्पेक्ट्रोस्कोपी लैब में काम करने के

डॉ.महेन्द्र लाल सरकार द्वारा स्थापित इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस (आईएसीएस) के स्वतंत्र और स्वदेशी वातावरण में अंततः रमन के शोध को नोबेल पुरस्कार तक पहुंचाया। यदि महेंद्र लाल सरकार द्वारा स्थापित आईएसीएस नहीं होती तो क्या पता सीवी रमन अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा को दबाए हुए एकाउंट्स का कार्य करते-करते ही सेवानिवृत्त हो जाते..!

लिए स्वतंत्र थे। आईएसीएस के स्वतंत्र और स्वदेशी वातावरण में अंततः रमन के शोध को नोबेल पुरस्कार तक पहुंचाया। यदि महेंद्र लाल सरकार द्वारा स्थापित आईएसीएस नहीं होती तो क्या पता सीवी रमन अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा को दबाए हुए एकाउंट्स का कार्य करते–करते ही सेवानिवृत्त हो जाते..!

माउंट एवरेस्ट या राधानाथ पर्वत कहानी कुछ और है

आज जिसे हम माउंट एवरेस्ट के नाम से जानते हैं, उसकी ऊंचाई की गणना की कहानी कुछ और ही है, जो भारत के प्रतिभाशाली गणितज्ञ राधानाथ सिकदर से जुड़ी हुई है । राधानाथ सिकदर 'ग्रेट

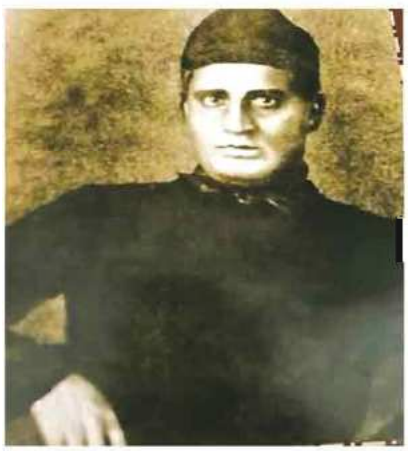

राधानाथ ने अपनी असाधारण गणितीय प्रतिभा का उपयोग करते हुए पर्वत चोटी (जिसे वर्तमान में माउण्ट एवरेस्ट कहा जाता है) की ऊंचाई 29 हजार फीट निकाली। कर्नल वॉ ने इस खोज को अपने नाम से प्रकाशित कराया, जिसमें बेईमानी की चरम सीमा पर जाते हुए राधानाथ को कोई क्रेडिट नहीं दिया गया। कर्नल वॉ ने अपने शोध पत्र में उक्त पर्वत का नाम अपने पूर्ववर्ती सर्वेयर जनरल जॉर्ज एवरेस्ट के नाम से माउंट एवरेस्ट रखा। ...और दुनिया की सबसे ऊंची चोटी को मापने वाले राधानाथ सिकदर इतिहास में हाशिए पर धकेल दिए गए ! हम आज भी उस चोटी को माउंट एवरेस्ट के नाम से ही पुकारते हैं।

ट्रिग्नोमेट्रिकल सर्वे ऑफ इंडिया' में संगणक के पद पर कार्यरत थे और स्फेरिकल ट्रिग्नोमेट्री में उन्हें विशेषज्ञता हासिल थी। राधानाथ का काम भू गणितीय सर्वेक्षण करना था-आकाश और गुरुत्वीय क्षेत्र में पृथ्वी के ज्यामितीय आकृति के अभिविन्यास का अध्ययन। उन्होंने न केवल स्थापित विधियों का उपयोग किया बल्कि इन कारकों को सटीक रूप से मापने के लिए स्वयं की नई विधियों का आविष्कार किया। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी (जो उस समय पीक XV कहलाती थी) की ऊंचाई की गणना की थी।

1851 में तत्कालीन सर्वेयर जनरल कर्नल वॉ के निर्देश पर राधानाथ ने पहाड़ों की ऊंचाई नापना शुरू किया था। प्रतिभाशाली गणितज्ञ, जिन्होंने शायद कभी पीक XV(जो बाद में माउंट एवरेस्ट कहलाया) को नहीं देखा था, ने पाया कि कंचनजंगा, जिसे दुनिया में सबसे ऊंचा माना जाता था, वास्तव में ऐसा नहीं था। पीक XV के बारे में विभिन्न अवलोकनों से डेटा संकलित करते हुए, वह अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह दुनिया में सबसे ऊंचा था। राधानाथ ने अपनी असाधारण गणितीय प्रतिभा का उपयोग करते हुए इस पर्वत चोटी(जिसे वर्तमान में माउण्ट एवरेस्ट कहा जाता है) की ऊंचाई 29 हजार फीट निकाली। कर्नल वॉ ने इस खोज को अपने नाम से प्रकाशित कराया, जिसमें बेईमानी की चरम सीमा पर जाते हुए राधानाथ को कोई क्रेडिट नहीं दिया गया।

कर्नल वॉ ने अपने शोध पत्र में पीक XV का नाम अपने पूर्ववर्ती सर्वेयर जनरल जॉर्ज एवरेस्ट के नाम से माउंट एवरेस्ट रखा। ...और दुनिया की सबसे ऊंची चोटी को मापने वाले राधानाथ सिकदर इतिहास में हाशिए पर धकेल दिए गए ! हम आज भी उस चोटी को माउंट एवरेस्ट के नाम से ही पुकारते हैं।राधानाथ को और भी कई मौकों पर नस्लीय भेदभाव का शिकार होना पड़ा। 1851 में सर्वेक्षण विभाग द्वारा एक सर्वेक्षण नियमावली (संपादक- कैप्टन एच.एल. थुलियर और कैप्टन एफ. स्मिथ) का प्रकाशन किया गया था। मैनुअल की प्रस्तावना में उल्लेख किया गया कि मैनुअल के तकनीकी और गणितीय अध्याय बाबू राधानाथ सिकदर द्वारा लिखे गए थे। यह नियमावली सर्वेक्षकों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई। हालाँकि, 1875 में प्रकाशित तीसरे संस्करण, यानी सिकदर की मृत्यु के बाद, में ब्रिटिश शासकों ने भेदभावपूर्ण ढंग से उनका नाम प्रस्तावना से हटा दिया। वे जानते थे कि मृत व्यक्ति विरोध नहीं कर सकता। 1876 में फ्रेंड ऑफ इंडिया समाचार पत्र ने इसे 'robbery of the dead' कहा।

राधानाथ अपने भारतीय साथियों के स्वाभिमान और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध थे। **अंग्रेजों द्वारा सर्वेक्षण के कर्मचारियों के लिए अभद्र शब्दों का इस्तेमाल करने तथा उन्हें 'पहाड़ी कुली' कहने के खिलाफ राधानाथ ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। हालांकि ब्रिटिश मजिस्ट्रेट वैनसिटार्ट ने उनके इस 'आपराधिक कृत्य' पर 200 रुपये की राशि का जुर्माना लगाया पर वह समाज की नजरों में नायक थे।** स्वाधीनता के 75 वर्ष बाद भी हम एवरेस्ट पर्वत चोटी को राधानाथ पर्वत चोटी कहने का संकल्प नहीं जुटा पाए हैं।

'आत्मनिर्भर भारत' के उद्घोषक – प्रमथ नाथ बोस

जमशेदपुर, शायद आज वो जमशेदपुर नहीं होता, यदि प्रमथ नाथ बोस (पीएन बोस) नहीं होते। 24 फरवरी 1904 को टाटा समूह के संस्थापक जेएन टाटा को एक पत्र मिला, भारत के अत्यंत प्रतिभाशाली भू गर्भवेत्ता प्रमथ नाथ बोस का। पत्र में वे टाटा को अपनी खोज के बारे में बताते हुए लिखते हैं कि मयूरभंज जिले के गोरुम हिसानी की पहाड़ियों में अच्छी गुणवत्ता के लोहे के अकूत भंडार है। साथ ही झरिया में कोयला भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। टाटा उन दिनों भारत में स्टील उद्योग की संभावनाओं को जर्मन भू गर्भवेत्ता रिटर श्वार्ज की रिपोर्ट के आधार पर महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में तलाश रहे थे, किंतु वहां के लौह भंडार की गुणवत्ता बहुत अधिक अच्छी नहीं पाई गई थी। पीएन बोस का पत्र मिलने

प्रमथनाथ बोस ने खोज की थी कि मयुरभंज जिले के गोरूम्म हिसानी पहाड़ियों में अच्छी गुणवत्ता के लौह का भंडार है (टाटा ने यहीं देश का पहला स्टील प्लांट लगाया) बोस ने भारत के प्रारंभिक स्वदेशी औद्योगिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पहली बार आसाम में पेट्रोलियम की खोज की। भारत और म्यांमार में कई खनिजों और कोयला भंडारों का उन्होंने पता लगाया। भारत में पहली स्वदेशी साबुन की फैक्ट्री लगाई । उन्होंने भारतीयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए नेशनल बंगाल इंस्टिटच्यूट, जिसे आज जादवपुर यूनिवर्सिटी के नाम से जाना जाता है, की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । प्रमथ नाथ बोस स्वदेशी आंदोलन में अत्यंत सक्रिय रहे।

के बाद दोराबजी टाटा एसीएम वेल्ड के नेतृत्व में एक सर्वेक्षण टीम का गठन करते हैं, जिनके द्वारा प्रमथ नाथ बोस द्वारा दी गई जानकारियों के आधार पर स्थल की जांच की जाती है। प्रमथ नाथ बोस सही सिद्ध होते हैं। इसके बाद साकची (1919 से परिवर्तित नाम- जमशेदपुर) में देश का पहला स्टील प्लांट लगता है.. जिसे हम टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) के नाम से जानते हैं।

12 मई, 1855 को बंगाल के एक गांव गायपुर में जन्मे प्रमथ नाथ बोस ने 1877 में लंदन में रॉयल स्कूल ऑफ माइन्स से 'जीवाश्म विज्ञान' में 'सर्वाधिक' अंकों के साथ स्नातक किया। युवा प्रमथ नाथ के सामने दो विकल्प थे। वह इंग्लैंड में एक शानदार करियर की ओर आगे बढ़ सकता था, या भारत की बेहतरी के लिए अपनी शिक्षा का उपयोग कर सकता था। बोस ने दूसरा विकल्प चुना। इंग्लैंड में रहते हुए, उन्होंने सीखा कि औद्योगिक उत्थान ही एकमात्र तरीका था जिससे भारत इंग्लैंड के चंगुल से बाहर निकल सकता था और यह केवल वैज्ञानिक तरीकों से ही संभव था। बोस भारत लौट आए और 'ज्योग्राफिकल सर्वे ऑफ इंडिया' में सहायक अधीक्षक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। लेकिन अंग्रेजों के मन में रंगभेद भीतर तक जड़ें जमाए हुए था।

उस समय के जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के प्रमुख एचबी मेडलिकॉट का सार्वजनिक रूप से कहना था – प्राकृतिक विज्ञान में किसी भी तरह के मौलिक शोध के लिए भारतीय अयोग्य हैं। भारतीय प्रतिभाओं के प्रति उनकी इस भेदभावपूर्ण मानसिकता को झेलने की चरम सीमा पी एन बोस के सामने तब आई जबकि 1903 में जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के निदेशक पद पर बोस से 10 साल जूनियर अंग्रेज टी हॉलैंड को नियुक्त कर दिया गया। स्वाभिमानी प्रमथ नाथ ने एक कम सक्षम कनिष्ठ सहयोगी की अधीनता को स्वीकार नहीं किया और अंग्रेजों द्वारा अपने साथी देशवासियों के खिलाफ भेदभावपूर्ण नीतियों का हवाला देते हुए जीएसआई से इस्तीफा दे दिया। वह इस तथ्य से अवगत थे कि उनकी पिछली सभी भू वैज्ञानिक खोजों का उपयोग ब्रिटिश राज द्वारा किया जाएगा। **जब उन्होंने स्वतंत्र रूप से मयूरभंज में लौह अयस्क के समृद्ध भंडार की खोज की तो द स्टेट्समैन, द इंग्लिशमैन और माइनिंग जर्नल ऑफ लंदन आदि प्रमुख पत्रिकाओं के द्वारा उनकी इस खोज के बारे में दुनिया को बताया गया। यह समझते हुए कि उनकी खोज का लाभ विदेशी ले सकते हैं और भारत को भविष्य के लिए स्वदेशी उद्योगों के तीव्र विकास की जरूरत है, प्रमथ नाथ तुरंत इसे स्वदेशी उद्योगपति जमशेदजी टाटा के ध्यान में लाए और यह भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का एक पन्ना बन गया।**

बोस ने भारत के प्रारंभिक स्वदेशी औद्योगिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पहली बार आसाम में पेट्रोलियम की खोज की। भारत और म्यांमार में कई खनिजों और कोयला भंडारों का उन्होंने पता लगाया। भारत में पहली स्वदेशी साबुन की फैक्ट्री लगाई । उन्होंने भारतीयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए नेशनल बंगाल इंस्टिटच्यूट, जिसे आज जादवपुर यूनिवर्सिटी के नाम से जाना जाता है, की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । प्रमथ नाथ बोस स्वदेशी आंदोलन में अत्यंत सक्रिय रहे। उन्होंने भारत के इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन पर गंभीर शोधपरक लेखन भी किया, जिनमें तीन खंडों में लिखी गई ग्रंथ माला 'हिस्ट्री ऑफ हिंदू सिविलाइजेशन ड्यूरिंग ब्रिटिश रूल' उल्लेखनीय है।

रॉस को नोबेल पुरस्कार लेकिन किशोरी मोहन अनिर्दिष्ट रहे

सत्य को बहुत लंबे समय तक नहीं दबाया जा सकता और प्रायः वह

अप्रत्याशित दिशाओं से भी प्रकट हो जाता है। ऐसे ही एक सच को प्रकट करते हुए 2013 में साइंस एंड कल्चर पत्रिका के 22वें वॉल्यूम के पहले अंक में प्रकाशित पत्र 'The Flying Public Health Tool: Genetically Modified Mosquitoes and Malaria Control' में डॉ. बीज़ल और डॉ. बोएटे लिखते हैं –

....भले ही रॉस मलेरिया के संबंध में एकमात्र नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता थे, किंतु वे ही अकेले नहीं थे जिन्होंने यह परिकल्पना की थी कि मलेरिया का संचरण मच्छर द्वारा होता है । उनके भारतीय शोध सहायक किशोरी मोहन बंद्योपाध्याय के शोध कार्य के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। किंतु उन्हें रॉस के साथ पुरस्कार प्राप्त करने के योग्य नहीं माना गया, इसके पीछे औपनिवेशिक कारण थे।

औपनिवेशिक शासन के दौरान ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने सफलता प्राप्त करने के लिए भारतीय प्रतिभाओं का सहयोग तो लिया लेकिन उन्हें उनका न्यायोचित श्रेय नहीं दिया गया । रोनाल्ड रॉस मलेरिया परजीवी की खोज के लिए 1902 में नोबेल पुरस्कार के एकमात्र प्राप्तकर्ता थे । रॉस ने अपना संपूर्ण शोध कार्य भारत में ही किया था । इस शोध कार्य में उनके प्रमुख सहयोगी थे–किशोरी मोहन बंद्योपाध्याय। लेकिन उन्होंने ना तो अपने शोध पत्र में और ना ही अपने नोबेल भाषण में उनके प्रतिभाशाली भारतीय शोध सहायक किशोरी मोहन के वैज्ञानिक योगदान का कोई उल्लेख किया।

किशोरी मोहन के योगदान को सम्मान दिलाने के लिए जगदीश चंद्र बसु, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, प्रफुल्ल चंद्र राय, उपेंद्रनाथ ब्रह्मचारी, बृजेंद्र नाथ सील, शिवनाथ शास्त्री आदि राष्ट्रवादियों ने संघर्ष किया । जिसके फलस्वरूप 1903 में दिल्ली दरबार के दौरान ड्यूक ऑफ़ कनॉट ने किशोरी मोहन को किंग एडवर्ड VII गोल्ड मेडल से सम्मानित किया । भारतीय वैज्ञानिकों और स्वतंत्रता सेनानियों ने कोलकाता में उनके कार्य की महत्ता को दर्शाने के लिए एक बड़ा समारोह भी आयोजित किया । हालांकि देशवासियों ने उनके कार्य का सम्मान किया लेकिन रॉस ने 1923 में छपे संस्मरण ग्रंथ में, जिसमें मलेरिया के संबंध में स्वयं के शोध का विस्तृत ब्योरा था, किशोरी मोहन के नाम का जिक्र तक नहीं किया। किशोरी मोहन स्वाभिमानी भारतीय थे, 1927 में जब प्रेसिडेंसी जनरल हॉस्पिटल में रोनाल्ड रॉस का आना हुआ, तो किशोरी मोहन ने उनसे मिलने के लिए साफ मना कर दिया।

बाद का जीवन किशोरी मोहन ने समाज की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने बंगाल के गांवों में मलेरिया उन्मूलन के लिए बड़े पैमाने पर सामाजिक अभियान चलाए । बंगाल में काम कर रहे स्वतंत्रता सेनानियों के साथ जुड़कर उन्होंने स्थानीय लोगों में 'स्व' की चेतना जगाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। मलेरिया उन्मूलन और स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल के विभिन्न स्थानों के भ्रमण के दौरान हुए शोषण के अनुभवों के आधार पर उन्होंने गरीब और निम्न–मध्यम वर्ग के लोगों की वित्तीय सहायता के लिए, अपनी लगभग संपूर्ण संपत्ति बेचकर 'पनिहारी को ऑपरेटिव बैंक' की स्थापना की। यह बैंक आज भी कार्यशील है। पनिहारी नगरपालिका द्वारा उनके सम्मान में एक सड़क का नामकरण किशोरी मोहन बनर्जी रोड किया गया है ।

भारत के टेलीग्राफ मैन शिव चंद्र नंदी

इतिहास में 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष की असफलता के कई कारण हम पढ़ते हैं लेकिन इसके एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण 'टेलीग्राफ' की ओर इतिहासकारों ने समुचित ध्यान नहीं दिया है। यदि संघर्ष में इसके महत्व को भारतीय पक्ष द्वारा समझा जाता तो शायद ब्रिटिश राज 1947 से 90 वर्ष पूर्व ही समाप्त हो जाता। 14 जुलाई, 2013 को टेलीग्राफ सेवाएं भारत में आधिकारिक रूप से समाप्त कर दी गई। दुर्भाग्य से भारत में प्रारंभिक टेलीग्राफ सेवाओं का संपूर्ण श्रेय ब्रिटिश शासन को दिया जाता है किंतु इस ढांचे को विकसित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रतिभाशाली भारतीय तकनीशियन शिव चंद्र नंदी (आधिकारिक रिकॉर्ड्स में स्पेलिंग seeb chunder nandy) का नाम इतिहास से प्रायः लुप्त ही मिलता है।

शिवचंद्र की कार्यपद्धति बहुत रचनात्मक और आर्थिक-वैज्ञानिक दृष्टि से अनुकूलतम थी। ओवरहेड टेलीग्राफ लाइंस का कार्य पूर्ण होने के पश्चात पद्मा नदी में पानी के नीचे विद्युत केबल्स की स्थापना की चुनौती थी। स्टीमर कंपनियां सीमा से अधिक पैसे मांग रही थी। नंदी ने मछली पकड़ने वाली नावों का उपयोग करके बेहतर ढंग से काम संपन्न किया। उन्होंने ही पहली बार ताड़ के पेड़ों को टेलीग्राफ पोस्ट के रूप में उपयोग करने की डिजाइन प्रस्तुत की, जिसे बाद में टेलीग्राफ मैनुअल में भी शामिल किया गया।

भारत में टेलीग्राफ की कहानी प्रारंभ होती है 1849 में; जब भारत के गवर्नर जनरल, जेम्स एंड्रू ब्राउन रामसे, जिन्हें प्राय: लॉर्ड डलहौजी के नाम से जाना जाता है, कोलकाता में कार्यरत आइरिश चिकित्सक एवं केमिकल इंजीनियर विलियम ब्रुक ओशॉघनेसी को राजनीतिक और प्रशासनिक प्रबंधन की दृष्टि से अत्यंत महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट सौंपते हैं– भारत में इलेक्ट्रिकल टेलीग्राफ लाईंस की स्थापना का। ओशॉघनेसी इस कार्य के लिए कोलकाता मिंट के प्रतिभाशाली

एवं जिम्मेदार भारतीय शिव चंद्र नंदी को अपने सहयोगी के रुप में चुनते हैं और यह आइरिश-भारतीय जोड़ी 1850 में अलीपुर से डायमंड हार्बर तक 27 मील लंबी पहली टेलीग्राफ लाइन के दोनों छोरों पर संदेशों का सफलतापूर्वक आदान-प्रदान करती है।

इस सफलता से उत्साहित इस जोड़ी में से शिव चंद्र संपूर्ण भारत में टेलीग्राफ सेवा की स्थापना के लिए कंपनी के डायरेक्टर्स के समक्ष कोलकाता, आगरा, मुंबई, पेशावर, मद्रास, ढाका आदि को जोड़ने वाली 5 हजार किलोमीटर टेलीग्राफ लाइन का प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं। शिव चंद्र के आत्मविश्वासपूर्ण और तार्किक प्रेजेंटेशन से प्रभावित होकर कंपनी द्वारा एक बड़ी राशि स्वीकृत की जाती है, और भारत में तीव्र संचार की इस नई विधा को स्थापित करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

1856 तक ब्रिटिश भारत में 4हजार किलोमीटर टेलीग्राफ लाइन और 46 टेलीग्राफ ऑफिस स्थापित हो चुके होते हैं और वह भी प्रति मील लाइन पर होने वाले यूरोपीय व्यय से लगभग आधे पर शिव चंद्र के निर्देशन में संपन्न इस कार्य में उस समय यह खर्च 550 रुपये प्रति मील आया था। शिवचंद्र की कार्यपद्धति बहुत रचनात्मक और आर्थिक-वैज्ञानिक दृष्टि से अनुकूलतम थी। ओवरहेड टेलीग्राफ लाइंस का कार्य पूर्ण होने के पश्चात पद्मा नदी में पानी के नीचे विद्युत केबल्स की स्थापना की चुनौती थी। स्टीमर कंपनियां सीमा से अधिक पैसे मांग रही थी। नंदी ने मछली पकड़ने वाली नावों का उपयोग करके बेहतर ढंग से काम संपन्न किया। उन्होंने ही पहली बार ताड़ के पेड़ों को टेलीग्राफ पोस्ट के रूप में उपयोग करने की डिजाइन प्रस्तुत की, जिसे बाद में टेलीग्राफ मैनुअल में भी शामिल किया गया। 1857 की क्रांति के समय भारतीय सेनानियों के पास संचार का इतना तेज और प्रभावी माध्यम नहीं था, जबकि मात्र कुछ समय पूर्व स्थापित टेलीग्राफ लाइन्स से ब्रिटिश पक्ष संग्राम से संबंधित सारी जानकारी को तुरंत और बेहतर ढंग से साझा कर पा रहा था और उसके अनुसार अपनी रणनीति बना अथवा बदल रहा था। परिणाम अंग्रेजों के पक्ष में आना ही था।

टेलीग्राफ लाइन की स्थापना के लिए विलियम ब्रुक ओशॉघनेसी को रानी विक्टोरिया द्वारा 'नाइटहुड' से सम्मानित किया गया तथा उन्हें टेलीग्राफ विभाग का डायरेक्टर जनरल बना दिया गया, एक अन्य अंग्रेज को सुपरिंटेंडेंट बनाया गया लेकिन रंगभेद और औपनिवेशिक मानसिकता के चलते प्रतिभाशाली भारतीय इंजीनियर को मात्र असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट तक ही पदोन्नत किया गया। बाद में जो कुछ लिखा और किया गया उसमें नंदी का नाम अंधेरे में खो गया और इतिहास के पन्नों में भारतीय टेलीग्राफ तंत्र पर ब्रिटिश सर्वोच्चता का ठप्पा लगा दिया गया।

(लेखक अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अतिरिक्त महामंत्री हैं)

राम हमारे 'स्व' के प्रतीक हैं

विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री आलोक कुमार का साक्षात्कार पाथेय कण के संपादक रामस्वरूप अग्रवाल द्वारा

विश्व हिंदू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एवं सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आलोक कुमार 23 जुलाई,2022 को परिषद के कार्य से जयपुर आए थे। पाथेय कण के संपादक रामस्वरूप अग्रवाल द्वारा लिए गए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि रामजी हमारे 'स्व'के एक बड़े प्रतीक हैं। रामजी का जितना अध्ययन हम करते हैं उतना ही हम अपने 'स्व' के निकट पहुँचते हैं। उनका मानना था कि अयोध्या में श्रीराम का मंदिर राष्ट्र मंदिर का काम करके पूरे समाज में चेतना पैदा करेगा। 2047 तक भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने की तथाकथित योजना के बारे में आलोक जी ने दृढ़ता से कहा कि ऐसे स्वप्न देखने वालों का उचित स्थान जेल में है। हिंदू समाज जाग रहा है। उन्होंने महर्षि अरविंद को स्मरण करते हुए कहा कि यह शताब्दी हिंदुओं की है।

प्रस्तुत हैं, श्री आलोक कुमार से पाथेय कण संपादक की पूरी बातचीत

संपादक – देश का विभाजन मुस्लिम लीग की मांग पर मजहब के आधार पर हुआ था। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर जी का कहना था कि यदि विभाजन होता है तो सारे मुसलमान पाकिस्तान जाएं और सारे हिंदू भारत में रहें। इस पर आपका क्या कहना है?

आलोक जी– उन्होंने इस पर बहुत आग्रह किया था, पर उस समय के भारतीय नेतृत्व ने इसको स्वीकार नहीं किया। पाकिस्तान के संविधान में भी लिखा है कि पाकिस्तान एक मुस्लिम राष्ट्र है। उस प्रावोकेशन के बावजूद भारतीय संविधान सभा ने सर्वसम्मति से तय किया कि भारत सेकुलर रहेगा। उसमें सब लोगों के अधिकार एक से होंगे चाहे वे किसी भी धर्म के हों। थोड़ी विडंबना यह हुई कि अल्पसंख्यकों को ज्यादा अधिकार दिए गए। मैं समझता हूँ कि अब यह विषय पुराना हो गया है।

आज तो केवल यह बताने की जरूरत है कि सब लोग भारत में रहेंगे। सबके समान अधिकार होंगे। सबको भारत के संविधान के अनुसार रहना है। इसलिए कोई एक वर्ग जुलूस निकाले और उसमें यह घोषणा कर दे कि आंख फोड़ दी जायेगी, जीभ काट ली जायेगी, गर्दन को धड़ से अलग कर देंगे, यह तो शरिया का कानून है, ऐसा कोई कहेगा तो उसे जेल जाना चाहिए। अगर कोई नबी के अपमान के कारण चाकू लेकर किसी की हत्या करता है तो उसको फांसी चढ़ना चाहिए। जल्दी चढ़ना चाहिए। विशेषाधिकार समाप्त हों, तुष्टीकरण समाप्त हो। सब समझ लें कि उनको संविधान के अंतर्गत रहना पड़ेगा तथा देश की सनातन संस्कृति का आदर करना पड़ेगा। आज यही मार्ग उपलब्ध है।

संपादक– हिन्दुओं के ऐसे प्रमुख आराध्य स्थलों को जिनको आक्रांताओं ने ध्वस्त करके मस्जिद बना दिया था, क्या देश की स्वाधीनता के बाद स्वतः ही उन प्रमुख स्थानों को हिन्दुओं को सौंप दिया जाना चाहिए था। आप क्या सोचते हैं?

आलोक जी – बहुत अच्छा कहा है, यह होना ही चाहिए। ये गुलामी के निशान हैं। इंडिया गेट पर ब्रिटेन की महारानी की मूर्ति थी, उस समय की कांग्रेस सरकार ने वो मूर्ति वहां से हटा दी क्योंकि वह हमारा अपमान कर रही थी।

राष्ट्रपति भवन को जाने वाले रास्ते का नाम था किंग्स वे और एक दूसरी सड़क का नाम था क्वीन्स वे। सरकार ने नाम बदलकर राजपथ और जनपथ कर दिया। गुलामी के ऐसे चिन्हों को कोई स्वीकार नहीं करता। जो मंदिर तोड़े गए, अपमानित करने के लिए तोड़े गए। वहां की देव मूर्तियों को चुराकर फर्श में और सीढ़ियों में लगाया था कि जो कोई भी इबादत करने जाए वो इन पर पैर रखकर जाए। ये निश्चित ही वापस होने चाहिए।

हिन्दू समाज को रामजन्मभूमि वापस प्राप्त हुई है। हम विश्वास करते हैं कि काशी और मथुरा का भी ऐसा ही निर्णय आने वाले कुछ वर्षों में हमें प्राप्त होगा और हम मूल काशी विश्वनाथ के स्थान पर तथा भगवान कृष्ण के जन्म स्थान पर भव्य

मंदिर बनाकर पूजन कर सकेंगे।

संपादक- पिछले दिनों पटना में पीएफआई के जिन दो कार्यकर्ताओं को पकड़ा गया उनके पास से ऐसे कागजात प्राप्त हुए हैं जो स्पष्ट करते हैं कि 2047 तक भारत को इस्लामिक राज्य बनाने की योजना पर ये कार्य कर रहे हैं। इस पर आपका क्या कहना है?

आलोक जी- आज का भारत एक हजार साल पहले का भारत नहीं है। यह शक्तिमान भारत है। यह सामर्थ्यशाली भारत है। यह संगठित भारत है। इस तरह के स्वप्न कभी भी पूरे होने की संभावना ही नहीं है। हिंदू समाज जाग रहा है। हिंदू समाज पर कहीं दंगे थोपे जाते हैं तो वह आत्मरक्षा के अधिकार का उपयोग करता है। आगे बढ़कर करता है। मार नहीं खाता है न मार खाएगा। इसलिए इस तरह का स्वप्न देखने वाली शक्तियों का जो उचित स्थान है यानि जेल और चक्की, वो उनको प्राप्त होगा। पूर्ण तेजस्विता के साथ समाज उस दिशा में आगे बढ़ रहा है कि महर्षि अरविंद की भविष्यवाणी- ''यह शताब्दी हिंदुओं की है'', उसको सफल करके दिखाएगा।

संपादक- वर्तमान भारत में मुस्लिम मानसिकता को आप कैसा देखते हैं?

आलोक जी- मैं समझता हूं कि मुसलमानों में दो वर्ग हैं। एक वर्ग थोड़ा शांत है। यह वर्ग बोल नहीं पाता, उसको वाणी नहीं है। दूसरा वर्ग उन कट्टर जिहादियों का है जो ये मानते हैं कि दुनिया में समाज के दो हिस्से हैं, एक मुसलमान और एक काफिर। वे यह मानते हैं कि जो काफिर हैं उनको मारा जाना चाहिए और वे जिहाद में यह उचित मानते हैं कि उनकी संपत्ति लूट ली जाएं, उनकी महिलाओं का अपहरण करके उनका भोग करें। उस मानसिकता से हमको लड़ना है। उस मानसिकता को हमें परास्त करना है।

जो लोग ऐसा मानते हैं उनके बारे में मैं ये नहीं कह सकता कि वे अल्लाह के रास्ते पर हैं। वे देश के शत्रु हैं। वे मानवता के शत्रु हैं और शत्रु के साथ शत्रु जैसा व्यवहार करके उनको परास्त करना, यह भारत की स्वाधीनता के लिए, भारत की प्रभुसत्ता के लिए, भारत के लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

संपादक- प्रसिद्ध ज्योतिषी संत बेत्रा अशोक ने भविष्यवाणी की है कि भारत 2030 में हिंदू राष्ट्र घोषित हो जाएगा और योगी जी उसके प्रधानमंत्री बनेंगे। इस पर आपका क्या कहना है?

आलोक जी- मैं तो ज्योतिषी नहीं हूँ पर मैं ये कहूँगा कि हिंदू राष्ट्र एक सांस्कृतिक परिकल्पना है। यह हिंदू राष्ट्र पहले से ही अस्तित्व में है। इसकी कल्पना की जरूरत नहीं है। यह अपनी तेजस्विता के साथ फिर से खड़ा होगा। 2030 तक होगा, इसके तो सब चिह्न भी दिख रहे हैं। हम सब अपने पुरुषार्थ से इसको संभव करेंगे।

संपादक- देश तो स्वाधीन हो गया था 75 वर्ष पहले, परंतु कहा जा रहा है कि स्वतंत्रता अभी नहीं मिली है। स्वाधीन हुआ है भारत, 'स्व' 'तंत्र' नहीं। इस पर आप क्या कहेंगे?

आलोक जी- इस प्रश्न पर अब देश गंभीरता से विचार कर रहा है। वर्तमान में सब काम अंग्रेजी में होते हैं। हमने जो ब्रिटिश पार्लियामेंट्री सिस्टम अपनाया था और 1935 के गर्वमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में संशोधन करके ये जो संविधान बनाया था, इन सब में भारतीय तत्व को बढ़ाते रहना-यह हम सबकी जिम्मेदारी है। अब देश में इसका प्रयत्न भी हो रहा है। अपने दिमागों को डीकॉलोनाइज्ड करें। अब समय है अपनी भारतीय जड़ों को खोजने का, अपनी संस्कृति के आधार पर अधिष्ठान करने का और मैं विश्वास करता हूँ कि यह प्रयत्न उत्तरोतर बढ़ेगा और हम लोग स्वतंत्र भी होंगे।

संपादक- भारत के लोगों में 'स्व' का जागरण करने के लिए विश्व हिन्दू परिषद की क्या योजना है?

आलोक जी- मैं सोचता हूँ कि हमारे 'स्व' के एक बड़े प्रतीक हैं रामजी। उन रामजी के जीवन का जितना अध्ययन करते हैं, विचार करते हैं उतना हम अपने 'स्व' के नजदीक पहुँचते हैं। आज लोग इसलिए हिंदू हैं क्योंकि उनके मां बाप हिंदू थे। केवल मां-बाप का हिंदू होना पर्याप्त नहीं है। अपने जीवन में भी हिंदुत्व होना चाहिए। वह हिंदुत्व छोटी-छोटी बातों से सिखाया जा सकता है। अगर हमने अपने बच्चे को कहा कि नाश्ता तैयार है, पहले तुलसी को पानी दे आ, तो वो तुलसी से जुड़ता है, वनस्पति जगत से जुड़ता है कि पहली रोटी गाय के लिए है, तेरे को नहीं मिलेगी, तो वो गाय से जुड़ता है और संपूर्ण बाहरी जगत से जुड़ता है। हम कुटुम्ब प्रबोधन के द्वारा अपने घर, परिवार, अपने बच्चों, बहुओं, पोते-पोती, नाते-नातिन में हिंदुत्व के संस्कार भरने के व्यावहारिक प्रयत्न में लगे हैं।

संपादक- अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारत के भविष्य के लिए कितना महत्वपूर्ण है?

आलोक जी- मैं सोचता हूं कि जैसे-जैसे मंदिर बन रहा है हम लोगों के हृदय में भी एक मंदिर बन रहा है। ऐसे दो प्रसंग है मानस में, जिनमें जाति के कारण छोटा और बड़ा होने की कल्पना की है। जब केवट को रामजी ने बुलाया और कहा कि आओ गले मिलो, तो उसने अपनी जाति की बात कही कि मैं छोटी जाति का हूं। राम ने नहीं माना, राम ने उन्हें आगे बढ़कर गले लगाया और कहा कि मैं जाति में छोटा-बड़ा नहीं मानता, मैं तो केवल प्रेम का रिश्ता मानता हूँ। उनको अपना भरत जैसा भाई माना। उनको अपना मित्र माना।

जब राजतिलक के बाद केवट ने विदा ली तो कहा, मित्र आते रहना। दूसरी बार जब माँ शबरी ने कहा-मैं छोटी जाति की हूँ और महिला हूँ। उसके उत्तर में भगवान ने उनको भामिनी माता कहा। भामिनी माने जो ज्ञानवान है, माँ कहा। तो रामजी माने वे जो जाति में छोटे, बड़े को अस्वीकार करते हैं, अहिल्या के आश्रम में जाकर महिलाओं को उनके अधिकार और गौरव वापस दिलाए, हड्डियों का ढेर देखकर हाथ उठाकर ये घोषणा करने वाले कि मैं संपूर्ण आतंकवादियों का नाश करूँगा। मैं मानता हूँ कि अयोध्या का मंदिर राष्ट्रमंदिर का काम करके पूरे समाज में चेतना पैदा करेगा। ●

भारत के अमृत काल का संदेश

● डॉ.निमिषा

भारत का स्वाधीनता संग्राम 'स्व' के लिए ही था। इस 'स्व' की प्राप्ति का संघर्ष आज तक निरन्तर है। स्वत्व का यह आंदोलन स्वाभिमान, स्वदेशी, स्वभूषा, स्वभाषा, स्वराज, स्वधर्म, सामाजिक, जैविक कृषि, ग्रामाधारित विकास, आध्यात्मिक अर्थात् समग्र व सम्पूर्ण आन्दोलन था जो 'स्व' के तन्त्र पर पूर्ण होता है।

स्वतंत्रता-संघर्ष को मात्र सत्ता प्राप्ति के राजनैतिक आन्दोलन तक सीमित कर दिया गया। यह पराजित मनोविज्ञान की अवधारणा है। हमें इस मानसिक व बौद्धिक पराधीनता से निकालने के लिये यह काल आया है। इस कारण यह भारत का अमृत काल है, युगप्रवर्तक सुअवसर है।

15 अगस्त, 1947 को हम भारतवासियों ने भोर की वेला में स्वाधीनता के दर्शन किए-लाल किले पर तिरंगा फहराया गया। सामान्यत: हमारी पीढ़ी अपने स्वाधीनता के संग्राम की अवधि को 1857 से 1947 तक ही मानती है, जबकि इसका वास्तविक काल खण्ड 1757 अर्थात् प्लासी युद्ध से सन् 1961 में गोवा मुक्ति तक है यानि 205 वर्ष अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए संघर्षरत रहे।

इस अमृत मंथन में रानी चेनम्मा, मातंगिनी हाजरा, रानी मां गाइदिन्ल्यू व काली बाई जैसी अनेक अनाम महिलाओं की भी भूमिका रही है।

यह आन्दोलन सम्पूर्ण भारत भूमि में हुआ। पूर्वोत्तर व सुदूर दक्षिण का भी योगदान रहा। लाहौर से लेकर गांव तक स्वाधीनता के महा मंथन में जनजाति, युवा, महिला, बच्चे, किसान, सन्यासी, राजा, विद्वान, नेता, सभी जुटे थे। गांव से नगर, खेत-खलिहान तक कोई अछूता नहीं रहा। इसकी व्याप्ति विशाल थी।

किन्तु दुर्भाग्य से स्वाधीनता के आनन्द व व्यापकता की अनुभूति हम लोग नहीं ले पाए। दूरदृष्टि के अभाव में मातृभूमि के विभाजन की विभीषिका झेली। राष्ट्र का भाव ओझल था। परम्परा, भाषा, इतिहास, धरोहर व संस्कृति पर गर्व की अपेक्षा हीनता करने लगे।

स्वाधीनता के 75वें वर्ष में देश के प्रधानमंत्री ने इस अभाव को मात्र समझा ही नहीं अपितु एक दृष्टि दी कि हम जिन तत्वों, तथ्यों, इतिहास व सम्पूर्णता को छोड़कर मुट्ठी भर लोगों को ही इसका श्रेय दे रहे हैं वह ठीक नहीं।

हमें अपने सम्पूर्ण स्वाधीनता के संग्राम का सिंहावलोकन कर 'स्व' के गौरव का विराट समारोह कर यह अमृतकाल पहचानना चाहिए।

इस महोत्सव में अब तक जिन क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों की उपेक्षा हुई, उन ज्ञात, अज्ञात, अकीर्तित, विस्मृत हुतात्माओं, महापुरूषों व संस्थाओं के अवदानों का समावेश कर उनके त्याग को सम्मान प्रदान करें, जिससे नयी पीढ़ी स्वाधीनता के मूल्य को समझकर प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

साथ ही यह अमृतकाल हमारे लिए संकल्प का अवसर भी है। जैसा कि माननीया राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू जी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में कहा कि भारत अपनी स्वाधीनता के 100वें वर्ष तक सम्पूर्ण विश्व का अग्रणी राष्ट्र बने, एक नया भारत बने, अर्थात् स्वाधीनता के 75वें वर्ष का समय तो संधिकाल है, 100वें वर्ष में अमृत सम्पूर्ण विश्व को चखाना है, यही है अमृत महोत्सव, अमृत वर्षा, अमृतकाल का संदेश। ●

www.rakam.in
+91-98290-70055
+91-963636-3768
रकम
रोटी . कपड़ा . मकान
इंटीरियर डिजाइनर व अभियांत्रिकी सलाहकार
इंटीरियर कन्स्ट्रक्शन सुपरविज़न वास्तु
व अन्य आर्किटेक्चरल सहायता
Email:-rakamajmer@gmail.com

'स्व' के आधार पर विचार हो– आंबेकर

अ.भा.प्रान्त प्रचारक बैठक के समय सरसंघचालक जी ने किए राणी शक्ति व खेमी शक्ति मंदिर दर्शन

अमृत महोत्सव के कार्यक्रमों में संघ लेगा बढ़-चढ़ कर भाग

प्रांत प्रचारक बैठक के पश्चात् संघ के अ.भा.प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि स्वाधीनता के 75 वर्ष के संदर्भ में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव में संघ के स्वयंसेवक देशभर में बढ़–चढ़कर भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में 'स्व' के आधार पर विचार हो एवं अज्ञात व अकीर्तित नायकों के बारे में समाज की विभिन्न संस्थाएं कार्यक्रम आयोजित कर रही हैं, उनको और अधिक प्रचारित करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि युवाओं को स्व रोजगार का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ज्ञात हो कि संघ के विचार से जुड़े अनेक संगठन 15 जुलाई से 21 अगस्त,2022 तक स्व रोजगार–प्रशिक्षण पर कई कार्यक्रम कर रहे हैं।

राणी शक्ति मंदिर में पूजन करते हुए सरसंघचालक जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत पिछले दिनों संघ के एक कार्यक्रम में झुंझुनू पधारे थे। अपने प्रवास के दौरान डॉ.भागवत ने राणी शक्ति मंदिर पहुँचकर मंदिर में पूजा की और सोडष मात्रिका, नवग्रह एवं लक्ष्मीनारायण मंदिर के दर्शन किए। इस अवसर पर मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष सतीश झुंझुनूवाला, ट्रस्टी देवेन्द्र झुंझुनूवाला, पवन केजड़ीवाल, सीए मनीष अग्रवाल, राजकुमार मोरवाल व मंदिर के प्रबंधक विनोद शर्मा भी उपस्थित थे। डॉ.भागवत झुंझुनू के खेमी शक्ति मंदिर परिसर में सम्पन्न संघ की अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक में भाग लेने के लिए पधारे थे।

राणी शक्ति मंदिर द्वारा संचालित सेवा कार्य

- बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देते हुए 12वीं तक का विद्यालय संचालित।
- राज्य सरकार द्वारा जनहित के निर्माण कार्यों में आर्थिक सहयोग।
- आगन्तुक श्रद्धालुओं को न्यूनतम दर पर भोजन की व्यवस्था।

खेमी शक्ति मंदिर में सरसंघचालक जी

खेमी शक्ति मंदिर के सेवा कार्य

- मंदिर में 'आशा का झरना' नाम से दिव्यांग बच्चों के लिए अध्ययन की व्यवस्था।
- वेद विद्यालय का संचालन।

राणी शक्ति मंदिर ट्रस्ट एवं खेमी शक्ति मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों के साथ सरसंघचालक जी

With Best Wishes
August 15
स्वाधीनता दिवस
पर पाथेय कण द्वारा
विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं
RAMA TRADERS
Dealers in: S.S. Re-Rolling Pattas,
Patties, Strips, Rods, Cutpieces-Circle Non-Ferrous
All Materials & Commission Agent

31, Amman Koil Street, Chennai- 600003
Ph. 044-25350928, 044-23465115,
Mob. 9444186470, 9444894134, 8939700928

With Best Wishes
August 15
स्वाधीनता दिवस
पर पाथेय कण द्वारा
विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक
शुभकामनाएं
SANTOSH STEEL CENTRE
Dealers in : Stainless Steel Raw Materials
New 14, (Old 9), Kesava Lyer Street
Chennai- 600003
Ph. 23465639, Mob. 9444307805

बड़ा रामद्वारा की ओर से
सभी को
स्वाधीनता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
संत श्री राम प्रकाश
मो. 9461119991
बड़ा रामद्वारा सुरजपोल, बांसवाड़ा (राज.)

आप सभी को 76 वें
स्वतंत्रता दिवस
की
हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएँ
दयाराम चौधरी
पार्षद
वार्ड नं. 1, न.पा. निवाई
शुभेच्छु : तेजा एन्टरप्राईजेज, निवाई 9414440052

नामूलं लिख्यते किंचित।
बाबा साहब आप्टे
मत्स्य क्षेत्र इतिहास संकलन समिति,
जयपुर प्रांत की ओर से स्वाधीनता के अमृत महोत्सव की
सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. गोपाल शरण गुप्ता
प्रांत अध्यक्ष
डॉ. जयन्तीलाल खण्डेलवाल
महामंत्री
डॉ. अशोक कुमार सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष
श्री धर्मपाल यादव
संगठन मंत्री

With Best Wishes
स्वाधीनता दिवस
पर पाथेय कण द्वारा विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक
United Traders
Shree Enterprises
शुभकामनाएं
S-25-28, 2nd Floor, Mayur Tower, Nehru Bazar, Jaipur-302003
We Deals In
* Writing & Printing Paper * Creamwove Paper * Maplitho Paper
* Art Paper * Copier Paper * SBS Board *
Cup Stock Paper * Poly Coated Paper/Board * Ecosip Paper
* Tissue Paper * Carry Bag/Bleach Kraft
Mr. Mohan Kumar Dalmia
Mr. Ashish Dalmia
E-mail: info@shreeunitedpapers.com, Jipurashishdalmia@yahoo.co.in
Web.: shreeunitedpapers.com, Ph. 0141-2323448, 2326706, 4009519, 4901220

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव,
आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम
76वें स्वाधीनता दिवस की सभी देशवासियों और प्रदेशवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

नारायण सिंह देवल
विधायक,
रानीवाड़ा एवं प्रदेश उपाध्यक्ष,
भाजपा (राज.)

स्वाधीनता दिवस

पर पाथेय कण द्वारा स्वराज संघर्ष यात्रा–2

विशेषांक प्रकाशन की

हार्दिक शुभकामनाएं

लवेश मीणा

जिला परिषद सदस्य, उनियारा, टोंक

प्रदेश महामंत्री

जनसंख्या समाधान फाउंडेशन राजस्थान

High Class Multicolour Printing on
Latest High Speed Brand New Heidelberg
4-colour press with online coating

WE SPECIALISE IN MULTI-COLOUR PRINTING & DESIGNING OF
MAGAZINES, BROCHURES, NEWSLETTERS, ANNUAL REPORTS, SOUVENIRS, CONFERENCE MATERIAL ETC.

KUMAR & COMPANY

OFFSET & WEB OFFSET PRINTERS

9 Hathrol, Ajmer Road, Jaipur
Phone : 2375909, 2374916

A-10, 22 Godown Industrial Area, Jaipur
Phone : 2212773, 2210171

Mobile : 8696903181
email :kumar.companyjpr@gmail.com

सुरेन्द्र जिंदल
मो. 9829285106

गजेन्द्र जिंदल
मो. 9829285105

अगस्त 15
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं...

सुशीला ओवरसीज
(सैंड स्टोन एवं स्लेट स्टोन निर्यात)

जी.के. स्टोन इंडस्ट्रीज

मार्बल मिनिरल्स इंडस्ट्रीज

औद्योगिक क्षेत्र

पुराना अजमेर रोड, देवली, टोंक (राज)

नि : सन्तानता का एक मात्र हॉस्पिटल
फोन : 02906-294476

आयुष्मान हॉस्पिटल

(A MULTISPECIALITY HOSPITAL)

• स्त्री रोग विशेषज्ञ • नोर्मल डिलीवरी • बच्चेदानी का ऑपरेशन • सिजेरीयन
• शिशु रोग विशेषज्ञ • जनरल फिजिशियन • खून व पेशाब की सभी जाँचें
यहां पर सभी प्रकार की सोनोग्राफी की जाती है।
24 घण्टे मेडिकल स्टोर, एम्बुलेन्स एवं लेब की सुविधा उपलब्ध।

सम्पर्क सूत्र : करण सिंह पंवार 9950835535, विजय मण्डावत 7023944488

डाल चौराहा, उदयपुर रोड़, सलूम्बर – 313027

अर्जुन जैन 9414169236
हजारी जैन 9024709408

SUPER PARAS PRODUCT

Sale
सामान की लिस्ट व्हाट्सअप करें।

मै. पारस ब्रदर्स
उत्पादनकर्ता : सुपर पारस प्रोडक्ट

नूडल्स, गेहूँ आटा, मक्की आटा, बाटी आटा, गेहूँ, दलिया, मक्की दलिया, बेसन, हल्दी, मिर्ची एवं धनिया पाउडर के निर्माता व विक्रेता

2, कृषि मण्डी यार्ड, किसान गोदाम के पास, उदयपुर 313002 (राज.)

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएं

Lotus HI-TECH INDUSTRIES

PRAVEEN SUTHAR

India's Leading Manufacturer of Pre-Engineered Buildings

www.lotushitech.com Mob. 9001970333

सभी देशभक्त बन्धुजन को स्वतंत्रता से स्वाधीनता की हार्दिक शुभकामनाएँ

अमित कुमार अरोड़ा
+91 941 333 7712

SHRI BALAJI UDYOG

GB PVC Insulated Heavy Duty Wire & Cable

Manufacturer : PVC Insulated Wire & Industrial Cables

Naval Agrawal
Mob. 9829008243
9414070601

Beyond Electrical Excellency

अगस्त 15
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं...

285, Malhotra Nagar,
Near VKI Road No. 1, Jaipur (Raj.)
E-mail : shreebalajiudyog1@gmail.com

15 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं...
भारत

भूरालाल पटेल

मण्डल अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी, सलूंबर छप्पन मण्डल
(विधानसभा क्षेत्र सलूम्बर)
मो. 7568200696, 9950866993

महालक्ष्मी ट्रेडिंग कंपनी, झल्लारा
सीमेंट व पत्थर के विक्रेता | गांव- काइयों का गुड़ा

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

विद्या भारती शिक्षा संस्थान, बून्दी
आदर्श विद्या मन्दिर उच्च माध्य. विद्यालय, नैनवां रोड़, बून्दी
मालनमासी बालाजी, लाल गोठी एवं गुरूनानक कॉलोनी, बून्दी
बून्दी जिला - हिण्डोली, लाखेरी, के.पाटन, नैनवां, दबलाना

With Best Wishes
स्वाधीनता दिवस
पर पाथेय कण द्वारा विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं

ASHOK HOSPITAL

August 15
Dr. Ashok Singh
Mob. 89520134435
Hira Das Infront of Bus Stand, Bharatpur (Raj.)

With Best Wishes
स्वाधीनता दिवस
पर पाथेय कण द्वारा विशेषांक प्रकाशन की
हार्दिक शुभकामनाएं
August 15
SURESH CHANDRA JINDAL
Mob. 9829015295

AGRAWAL MARBLE INDUSTRY

282, Shopping Centre, Kota (Raj.) 324007
Ph. 0744-2362025, 2363057, Mob. : 9829060051

अमृत महोत्सव

विश्व भारती महाविद्यालय
जयपुर रोड, सीकर (राज.)
फोन नं. 01572-295659

डॉ. कमल सिखवाल
निदेशक
मो. 9414057159

श्री मनसा कन्या पी.जी. महाविद्यालय
उदयपुरवाटी, सीकर (राज.)
फोन नं. 01594-233949

RK JEWELLERS

R.K. JEWELLERS

RAJENDRA KUMAR SONI
9929471547 9414334981

Manpur, Teh.Sikrai, Distt: Dausa (Raj.)

आप सभी देशवासियों
स्वाधीनता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ

भंवर लाल सुशील कुमार
मो. 8108642340

सुनील कुमार मांधना
मो. 9920010528

135/12 उषा सदन, बी विंग,पहला माला, गारोडिया नगर, घाटकोपर (पूर्व) मुम्बई 400077

आप सभी देशवासियों स्वाधीनता दिवस की
हार्दिक शुभकानाएं

नव भारती शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

मान्यावास, मानसरोवर मेट्रो स्टेशन के पास, जयपुर 302020
डॉ. प्रभात शर्मा (प्राचार्य)
मो. 9314502030

With Best Wishes

SOHAN LAL OJHA

Mob. 9414055581, 9414055591
SHREE SHIVAM PROPERTIES
Real Estate Agent
Office : Royal Plaza, F-3, 1st floor, Amarpali Circle, Vaishali Nagar,Jaipur - 302021
E-mail: ojha_shivamproperties@yahoo.co.in

आपको एवं आपके परिवार को
स्वाधीनता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

मास्टर मदनलाल वर्मा
सेवक निवाई पीपलू विधानसभा क्षेत्र

आजादी का अमृत महोत्सव
स्वतंत्रता दिवस
एवं
कृष्ण जन्माष्टमी
की हार्दिक शुभकामनाएँ

रामजीलाल बैरवा
जिला परिषद सदस्य
M. 6378341572, 9610059695

रामजीलाल बैरवा

जिला परिषद सदस्य टोंक, निवाई पीपलू विधानसभा क्षेत्र

महादेव हॉस्पिटल

नागौर (राज.)
आज़ादी का अमृत महोत्सव
आप सभी देशवासियों को स्वाधीनता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. हापूराम चौधरी
मो. 9982130162

RAS-2018 में 650+ Selections

Springboard ACADEMY

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

- 5 Ranks in TOP 10
- 22 Ranks in TOP 50
- 54 Ranks in TOP 100

Online/ Offline Batches are Available

3 Years Integrated Course After 12th Pass

IAS/RAS

IAS Foundation

(18 महीने का कोर्स)

RAS Foundation

(18 महीने का कोर्स)

PSI

Recorded Batch Available

Exclusive Live Batch Direct Live from Classroom

Springboard ACADEMY

ऐप डाउनलोड करने के लिए QR Code स्कैन करें

GET IT ON Google Play

Connect with us- Springboard Academy Online | Springboard Academy Jaipur

Gopalpura Bypass, Jaipur

Ph.: 9636977490, 0141-3555948

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रणाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7619010054, 7300134518

पाक्षिक
पाथेय कण
16 अगस्त,2022(संयुक्तांक)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

CBSE Affiliation No : 1730614

द पैलेस स्कूल

द सिटी पैलेस, जयपुर

Pre Primary to Class XII

20 Years of Excellence

STREAMS
Science, Commerce, Humanities

Tel: 4062847, 4062848 (O)
E-mail : info@thepalaceschool.com
www.thepalaceschool.com, www.instagram.com/thepalaceschool,
www.facebook.com/thepalaceschool, www.twitter.com/thepalaceschool

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द्
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 अगस्त, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,